# অথ কাশীখণ্ড।

পুরাণ

-

বড়ানন বক্তা ও অগন্তামুনি আছ।।

জীৰুক ভ্ৰদানন্দ গাদেশে

अधिका मिवानी

এণুত দীভানাথ বসু মজিত কত্ত

শহারাদি ছেন্দে নির্চিত হ শ্বা

ক্ৰিকাত:

ननीत्। विकास म्याकित वर्ग।

क्र अक्रा १८७५७ त्याण

可事的 これのり

### स्हीभव !

#### -

প্ৰৱণ	•	र् की
छक्रदाद वामना ५ महादादवर	নিবশর্মার বায়ুপুর দরশন	۶ ۹
रहु कि	শিবশর্মার कूटवव भूती मत्रभन	28
विकार्शित इकि विवर्ग मौत्रम	निजनमात वसन्ति पत्रमम	74
সৃদ্দ ক	गिनमधीत नक्त है नुवी प्रतमन	iq
লোবায়ুদ্রা সভীর প্রায়ঞ্চ	गिरमणात्र दूषटलाक वतमन	24
िक्षाश वटळव मर्गिष्ट्रमं शत्रः धात्र-	मि रमर्गात खक्तश्वी महमन	73
ए. प्रसित् प्रक्रियोग्टन शमम 🔞	শিবশর্মার নঙ্গললোক দ।শা	ı
प्रशास्त्रामिक द्वमाश्वास्त्राम्बी बर्खाच १	শ্নিপুরীর র হাস্ত	1
रेम्हाश्रमाण्ड याहाड जनसादक	গপ্তথাবির রূপার	3.0
गणात कारी छिलाटकमा (मन क	<b>क्ट</b> बाशाशान	Ą
ाथमः अर्रः न्यासः ।	মহলোক কথন	24
	रेरकु% वर्गन	ag <sub>a</sub>
<del>~;} 46=</del>	শিব শর্মার মুক্তি	42
	कि डोज कर्नः गरा सः।	91
শিব শৰ্মাত বিশ্বল	I doly due states	
ও গামিত <b>তুক্র</b> পথিত মলুবাদি-	<b>₩</b>	
াত্যসপুরীতে ভোলের বিবরণ ১ং		
१५व मार्गात जागुरात श्रृती क्लेन ५०	नगन्धा कार्डिद्यमा : श्वाम	88
भित मार्चा प्रश्वीद्यम्ब प्रश्मेष वे	द्धः वर्षेत्रः याच्या का का का क्षेत्रम	8 <b>4</b>
	महाविष्ट्र जातांधमायनिकर्ति दशम	
गिरमार्था व धर्म होता महोताह ३६	्रस्ता व्यास्तित्व । इ.स.च्या क्षा क्षा क्षा व्यास	8
	कानी निर्माण कथन उ शक्त	84
िन न गांत वका भारती करणका । ११	ক্ৰি লেখন ক্ৰম <u>তে সক্ষু</u> ক্ৰিচাল	
יות אייי של איי אויי איי איי איי איי איי איי איי אי		· :

### क्रुडीशब ।

প্রকরণ			70
ধনঞ্চ বণিকের উপাধ্যান	đa	অরুণার্ক বিবরণ	5-0
<b>কান</b> চনবের উপা <b>খ্যান</b>	63	বৃদ্ধাৰ্ক কথন	3.5
मुख्यानि देशायान	93	কেশব আদিতা কথন	349
<b>कानव</b> शांव या श्राचा	७२	বিষ্টার্ক বিবরণ	3.4
সুলোচনার উপাখ্যান	<b>ಿ</b>	গঙ্গাদিতা ও यमापिত। कथन	
কৃতীয় স্বৰ্গ: সমাপ্ত:।	ÄÄ	सर्व रुर्गः नमाखः।	304
		<b>†</b>	
नहां हो इंक्श्रम	৬৭	্ৰদাৰ কাশী আগমন	<b>53</b>
माजीत लक्ष्य	95	ক্ত গণের কাশী গমন	\$5.
বিবাহ নির্ণয়	98	क्लाफीश्रव कः न	\$54
धृत्यञ्ज निकादम् ।	<b>(a)</b>	निक्रमाकांकि शर्पट जिक्र कथ	
महारमस्त्र मण्ड शर्राफ शमा	न् १७	গণেশের কাশী গমন	550
एक र्थ उसे श्रे गगालः।	46	কাশীতে বিষ্ণুর আগমন	\$25
		বৌদ্ধনত প্রচার	255
mild: 7 silen		क्रिक्मादम् व भिक्सीप	<b>ડે</b> રે 8
راها ي		निसम चर्नाः नमासः ।	>20
ভাবিমুক্ত কথন ও ভক্ষণভক্ষ			
বিধি	9 12		
বণিপ্ৰাস্থ কাৰ্য্যে কখন	7:		
भा घा दश्ज कथन	₩ ₹	शक्षतमी कीर्थ कथन अवर छह	可任
মূড়া লকণ	b in	हमा खेलागान	\$3.5
मिनमार्गत दोला भागन	24	विक्र नीयव छेशाशान	25%
इष्ट्राविक रयाशिमीत कानी शमन	78	आहि क्मवानि दौर कथन	300
क्षामः वर्गः नमानुः।	26	মণিকৰিকা কথ্য	1,63
		্কশবের চতুবিংশতি মৃত্তি	
man from		444	4 · 40
		STRIP TOWN TOWN THE PROPERTY OF STRIP	333
प्राचीत का नी तमन	86	কপিল ভীৰ্য কথন যোগী যৰ্কেশ্বর কথন	204
সুধ্যকণার উপাধ্যান	ימ	খোগী সংক্ষেত্ৰ কথন	500
	, ****	দুপুৰাত উপাধ্যান বিস্তৃতিক পাল উপাধ্যান	383
1	• •	ार्यक्राङक्षां स्थान	73=
भोक्रेंद्रण्यत छेला थानि	7 6.5	हिमालत शिंउ त्मनकात कथ	M .

### স্চীপত্র।

i i	٠, ٠		
প্রকরণ			পূৰ্বা
দৈলেশ্বর উপাধ্যান	288	কামেশ্বরোপাখ্যান	
রভেশ্বর উপাধ্যান	289	' বিশ্বকর্শেশ্বরোপাশ্যান	
কলাবতী কনার উপাখান	784	मक्यम ও मक्ष्यदार्श्यान	124
श्रहेभ सर्ग ममार्थः।	343	সভীর দক্ষালয়ে গ্রমন	192
গঙ্গাসুরের উপাখ্যান	542	<b>एक्स्य ५५</b> ५४९ व	200
इश्मकीर्थ कथन	5'00	মেনকার গভে সভীর ক্রম	₹•8
অফ্রফি তীর্থের জাগমন	3	পার্বভীর বিবাহ	<u>Z</u>
শক্তি স্থান কথন	589	হর পার্বতীর কাশী যাত্রা	2018
ছুর্গাস্কুরের উপাখ্যান	ser	एक अणि दत्रमान	À
मवभः चर्त गमार्थः	5 83	একাদশ স্থগঃ সমাপ্তঃ	ર્-૧
4444444444	-		
-1:212-		-3:34-	
,		• *	
শিবলিক্ষের বর্ণনা	:48	পাৰ্কভীশ্বরোপাখ্যান	5 . p.
প্রণবেশ্র কর্থন	780	शुद्धभारताभाषान	4
पग नागक जिल्ला डेशांशांन	339	সতীশ্বরোপাথ্যান	₹°a
ভেকিব উপাখ্যান	760	অমৃতেশ্রোপাখ্যান ও অনুহি	<b>1</b> -
ত্রিপিষ্ট পীঠ কথ্ন	390	(अंद कथन	À
<b>ত্রিলোচনেশ্</b> র কথন		বেদবাসের কাশী যাত্রা ও	
পার্বিতাধ্যান	393	<b>कृष्</b> स्य स	2:0
কেদারেশ্বরোপাখ্যান	395	ব্যাস কর্ত্ত ভীর্য প্রসংশা চাম	71-
যমের তপস্য		য়ণ এত কথন	₹\$%
যমের বর প্রাপ্ত ও পক্ষীরমুক্তি	396	ঝাদের ভিক্ষাবারণ	<b>२</b> ३8 -
ধর্মপীঠ উপাখ্যান	363	কাশীতে বা:বের শাপ ও জন	
ধর্মপীঠ মাহাত্মা	342	ভিকা	7:4
দম রাজার উপাখাান	-98	বাাদের কাশী চ্যাগ	>5 br
समागः सर्गः सभाशुः।	SHE	रइविध लिझ कथन	ð
	!	রঙ্গমণ্ডে হরপার্বভীর গমন	. ३२६
	2 1	कामण कर्नाः मगास्यः	२७४ -
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	, .l		
ৰীরেশরোগাখান	: 64:	>1316	
মল্যাগিকানীর ত্রীয়া ব্র	, השנ		
वात क्षांक महारम्दवत जीर्थ	· •	्र <b>है छि यूही शब म</b> मानुद्र।	
कशन	57.5		

### **बिधिकशी थराइनम**ें।

# অথকাশীখণ্ড৷

### অথ গুরুদের বন্দনা এবং মহাদেবের স্থাতি।

প্রার। এগ্রন্থর পাদপ্র করিয়া বন্দন। যাহার প্রকাদে ভব বন্ধন মোচন। অজ্ঞান তিমির নাশি বিদ্যার প্রকাশ। নাধনের মূল সংস্রাতে বার বাস। বিশের <mark>মাধৰ চুপ্তি আ</mark>র ছণ্ডপাণি। কালরাক গুহু গলা বন্দিয়। ভবানী।। কাশী মণিকর্ণি কাশীবাদী দেবগণ। ভক্তি-ভাবে নকলের বন্দিয়া চরণ।। কাশীধাম ব্রজাণ্ডের সংস্রার স্থান : বিশেষর নিজকরেপ গুরু অধিষ্ঠান।। গুরু স্থান কাশীধাম এন্ত ভিন্ন নয়। ত্রিজগতে ভাহার তুলনা নাহি হয়। শিব তুলা কাশীংয় জান-ময় রাশি। সদাশিব শুরুরপে নদানক্ষে ভানি॥ পদতলে রজ্ঞণে রবিতে প্রকাশি। ভার উর্চ্চে দশনথে প্রকাশিত শশী॥ ততি শোভা শুভ আভা তমঞা নাশি। ব্যাশ্ত হর্মা পবিধান রুষোপর বসি। সর্বাময় লমোরর জন্মমাথা রাশি। হাড্মালা কণিজাল কঠে বিষ বালি।। বিশ্ব-মূল হস্তে খূল মৃদ্ধ মৃদ্ধ হাসি। ত্রিলোচন বিভূষণ ভালে কর্মশী। **म्कृ** पृत्नु पृत्नु करत धृष्ट्या ध्ययामी। क्रोडाडात शक्रारमवी मनाहे উল্লাসী। বামভাবে গৌরী সদা অন্নদাতা কাশী। বিশু। জিনিয়া রুপ বর্ণেছে অতসী।। সদানন্দ সদা সুধে শক্তি সহ বাসি। ননি ভাজিগণ সঙ্গে প্রেম অভিলাঘী॥ গর্ক ভীর্ষ সর্ক দেব স্থিতি বারাণসী। মুক্তি-मांठा नर्क कौटर मिर शक्ष**का**मि॥ कांत्रन इट्टेंट प्रथम ऋूल कश-ভাষী। যোগিগণ ধা**ন জন্য কম্পিত প্ৰকাশি।। সংধনেতে** িছি হৈলে কারণে এবেশি। এক বস্তু ভিন্ন নছে উত্তম ৰূপসী।। কাশী বাসী এশা-निष्म सम्भाषा यति। छोहात क्रभाष्ट छत्व कानीयश्व छाही । शीलामाय वस्रांत अधिका निवाती। कानीवंख छांचा त्रक्ति कृतिन अकारित।

### কাশীখণ্ড।

### অহারম্বঃ।

#### -318HE-

### विकाशितीत इक्षि विनत् नांत्रम मशाम

প্রার। শিবা তরে শিব কহে কাশী বিবরণ। মাত্কোলে বসি অহ আরিল আবর্ব।। কার্ডিকের দেই কথা কহে অগস্ত্রেরে। দেই কণা বেশ্বাল কাহন স্তেরে।। কাশীখণ্ড পুরাণীয় এবট্ সংবাদ। সর্ব-শান্ত্র সারোদ্ধার অভুত আস্থাদ।। প্রথম অধ্যায় বিদ্ধা নারদ স্থাদ। স্থাতেরে কহিল বাপ করিয়া আহলাদ।। তীর্থ যাত্রা করিয়া নারদ তপো-ধন। নর্মালাকে স্থান করি বিদ্যা জাগমন।। বিষয়া পর্বতের শোভা কে পাবে বৰ্ণিতে। জন্ধ লভা ফল ফুল জন্তু নানামতে।। নানদ দেখিয়া বিদ্ধা প্রশাস করিল। পাদা ভর্মপুঞ্জি আননোত বসাইল।। পদ নেবা করি পুর করে প্রজম। শুভ আলাপন পরে করে উপক্রম। নানামতে স্তুতিবাদ করে বিরিবর। একতেকোমর ভূমি পরম ঈশর।। তব পাদ-পদ্ম রক্ত পাইত: আমার। বুচিল চিত্তের বত ছিল ক্যাকার।। মুনি আগ্রামে বিশ্বা মনে অভিয়াম। সংগাত্র নিন্দিয়া ফরে জাপনা বার্থান।। ধর্ধির কাজে কেল্ সোর ভুল্য নয়। শিবের শক্তর এক মান্য দ্যালয়।। এত শুনি নিশ্বাস ছাড়িল তপোধন। কর্যেত্ত বিদ্ধা জিলাদিল বিব-त्रवा। कि एवज् छाज्जिना अन् सुनीर्घ नियोग। ना क्टेल उर्व किनो शुर्व व्यक्तिवार ॥ सुनि वटन राम शिति जागात वच्न । এक किन सूरमङ्गरक ছিল আগমন।। আমার সাক্ষাতে োল ভোমাকে নিন্দায়। ভোমাকে (पश्चित्र) महन (म कथा छेम्स । कामि उन करन जात किया आहर हु:रा । বিশাস কারণ এই কহিল সম্যুখ।। এই মতে আলাপ করিয়া মুমিবর। विषाय क्रेंग्र। लाल रेक्छ नगत।। सूबिट्ट विषाय क्रि विका महायस्टि। নানামতে আল্লাকে নিলিলেক অভি। থিক মোর জীবন যৌবন পরাজনা জাতি হৈতে পরাজর না রহে সভাম।। সুমেক পর্বত গক थर्क अति किरम। मर्कमा मरमर्ख रूम छिखिल विस्थरम।। निकामिति সদা মনে উপায় ভাবয়। ভূমেক্লকে কি ৰূপে করিব পরাব্যয়।। সুমে-ক্লকে প্রদক্ষিণ করে দিয়াকর। এইড গৌরব ডার ভাঙ্গিব সন্থর।। যে बार्भ द्वार्रात क्लांक्य माहि ६४। कतिय अमन क्रिकी खाविल काम ॥

দ্বিতীর অধ্যার বিদ্ধা বাজিল বিস্তর। রুদ্ধ হৈল যেই পণে চলিবে हाक्टर ।। सूर्या श्रथ करि ताथ विकाशितितता । कुरुशि शहेन दिन कार्निन অন্তর।। কভকণে इইবেক ভারুর উদয়। ভাবিরা ভারুল বিশ্বা ব্যাকুল रुष्य । तुक्रमी श्राज्ञां किया करते व छेम्स । भुवन भीवन मान कहि भश्-भारता अक एक व्रथान अक्रम गांतिथा नहां स्था है। तन तथ हाल में छ -গতি।। কত পথ ছাড়াইয়া জাইল সন্থয়। আদিষা ঠেকিল যথা বিজা-जिबियत । श्रथ मा शाहेग्रा कानाईरलक मार्दाथ । स्थका कवि वर्षमान বিদ্ধা মহামতি।। রথ পথ রুদ্ধ করিয়াছে বর্তুমান। দাঁডাইল খোডা চলিবার নাহি স্থান। নিনম্থি এত শুনি হইল বিস্ময়। একি অন্যন্তব নব বিধি বিপর্যায়।। একক আকাশে কিবা করিব উপায়। স্থকিত হইয়া ভাবে না দেখি সহায় ।। দ্বিসহত্র দ্বিশতক যোজনের পথ। নিসি-बार्क छाष्ट्रोहेश यात्र रात तथा। वन्न देश्या भाष एकँ राह कडकान । অক্রলে ব্রক্ষাণ্ড সাঝে ঘটিল জ্ঞাল।। পশ্চিমে রক্তনী সদা পুরে সদা मिन। (यम विधि जिल्ह्याका<u>) इट्</u>रेलक हीन। सूरासूत सहनव हडेन কম্পিত। ঘটিল প্রমাদ অতি একি চমকিত।। সৃষ্টি লোপ হ্য দেখি যত দেবগণ। একতা হইয়া চলে ব্রহ্মার সদন।। ভূমে গড়ি গোড় করে প্রণাম করিয়া। নানামত স্তুতি করে ভাক্তভার হৈয়া। ভূমি আদি জনাদি বিধাত। নৃষ্টিকারি। জগৎ পালনকারি মোহনমুগারী।। সংহঃ রক জগতের তুমি তিপুরারী। সৃষ্টিরকণ কর প্রভু হইয়া কাণ্ডারী। खिंचिम कांत्र करह विक्षा विकास। ब्राह्मि विकास करते सूर्या भय मिनायस ।। শুনিয়া দেবতা বাক্য করিয়া স্বাস্থাস। উপদেশ করে ত্রন্ধা মুখে মৃদ্ধবাস ।। কাশীবাসি তপত্তী অগস্থা মহায়ুনি। যাহ তথা এই কাৰ্য্য মাৰিবেন তিনি। পিতানত মুখে শুনি অগন্তা সম্বাদ। দেবগণ মনে বড় হইল অহ্লাদ।। वामनात खडिमात्र कामीभूती लाख । अकार्या माधन खात कार्यक धडाव ।। প্রণাম করিয়া সবে হইয়াবিদায়। কাশীপুরী উদ্দেশিয়া চলিল দ্বায়।। তৃতীয় অধ্যায় তবে শুন বিবরণ। আহলাদ হইয়া চলে যন্ত দেবগণ। পথে পথে নিক্তাগ্য প্রশংসন করে। ত্রিতে মিলিচহইল মণিকণি তীরে। স্লান করি হরিক্ষরি জিন্মাকাও করি। বিশ্বেশ্বর দরশন করে বাঞ্জাপুরি।। करम करम नव शैर्थ कतिश्व लगन । मिलिल नचुरत पथा श्वामत आधार।। মিষ্কভরু তৃণ লতা শান্ত জন্তুগণ। মুনি শিহ্য বিশিয়াছে করিয়া বেইনি।। कार कार मक्त कवि (एवका नमान। खेरकः यति वरण प्रकृति कृति स्विताक।।

#### কাশীখণ্ড ।

নানামত হাতি কৰে দত দেবগা। সম্ভাষ করিয়া মুনি দিলেন আদন। প্র-ভ্যাকে প্রণাম করি আদানে বদিল। আগমন কারণ অগস্তা জিজ্ঞাদিল।। ভবে বৃহস্পতি কথে হেরি পুরন্দর। ইঙ্গিতে বৃঝিরা গুরু কর্মে উত্র।। ইন্দ্র আদি দেবের প্রভাকে প্রিচয়। অগস্তাকে কহিলেন গুরু মহাশয়।। চতুর্থ অগ্যাম লোগামুদ্রার প্রস্তো। স্তী প্রিভ্রতাধ্যা বণে নানারকে।।

#### ---

### লোপায়ুক্রা সভীর প্রসঙ্গ।

পরার। লোপামুদ্রা পভিত্রকা পতি আঞাকারী। পতিসেকা নিযুক্ত নতত সদাচারী। প্রতি সুথে সুখী প্রতিভূগে অভিমানী। ছালে মেন পতি সঞ্জে ্রণ জরিণী।। এতির অধিক কারো প্রতি নাতি জান। প জি ও পরম জ্ঞান মনে করে খ্যান।। ত্রন্ধা বিশ্ব শিব প্রাদিখত যেখেগ।। প্তির অধিক নাহি হয় কোন জন। প্রতির চর্ণোদক নিজ্য করে পান। পতির উচ্ছিন্ট মাত্র ভোজন বিধান। তব পূলী গুল কক করিব নির্ণয়। প্রভীরপা শ্রিত্রী ভাষার সদ্ময়।। কগ্রা কহিব ভব মহিমা অপার। নত। পত্রী জনে হয় পতির নিস্তার ॥ খনপি পুরুষ পাপ জাজেনে ছতি। সভীর পুলেতে পতি লভয়ে সুগতি।। সভী পতি পরে নাছি মম অবিভার সতী সঙ্গে প্ৰিলোকে বস্তি তাহার।। বিল হৈতে বলে যেন যাদিয়া ভূত ক্ষম। উদ্ধার কর্মে ধীর কবিয়া আতক ।। সেই মত পজিলভা মর্ব খইতে উদ্ধার করিয়া প<sup>্</sup>্রসংয় স্বর্গে**ডে।** পিকু মাতু পতি তিন কুলের উদ্ধার পতিলভা ফলে হয় শাস্ত্রের বিচার। পুহুম্বের ধর্মে কর্মে ভার্য্য হয় মূল । ভার্ম। বিনা গৃহস্থের নাহি অন্তুমুল।। ভার্য্য বিনে যক্ষ আদি কর্মা আধিকার शृहास्वर नार्वि इस भारत्व खारह नाव।। कर्धवरण यसानि विधवा इस नाती যাবত জীলন মুম্ন জুংখ অধিকারী।। আহাবের **অস্পতা করমে ক্রমে** ক্রমে শাক পীক তিনিত খাইয়া রাখে প্রাণে।। বৈশাগ কার্ত্তিক মার পুণ্য তিন মান । বিশেষ সমুম ভাতে করিবে প্রকাশ।। বৈশার্থেতে স্বলছন্ত নিবেক নিএড। জল ভাত্রশুকু বস্ত্র ছত্র আদি যত।। যথাশক্তি ভাজাণেতে করি-বেভ দান। কাৰ্ত্তিকে বিশেষ জান প্ৰদীপ প্ৰদান।। ব্ৰাহ্মণ ভোজন মাঘে আর প্রাভঃস্থান। বিহিত সকল কর্মা করিকে বিধান।। বিধবার কেশবক্ষে পতির বন্ধন। অতথ্য করি বাদ চিকুর মুগুন।। খট্টা আরোহণে হয় প-

তির প্রতম। তেকারণে করিবেক ভূমিতে শ্রম। সদাচার আচরিয়া পাটেক স্ক্রিক। প্রজ্ব অভিমত কর্মা করে আচ্ত্রণ। এইন্যথে করি নারী বৈগত। প্রালন। প্রতিলোকে প্রতি সঙ্গে পান্ন দরশন॥ শীল ভঙ্গে প্রতি সঞ নবকে প্রভন্। প্রতিবাক্য লজ্জনেতে নরকে গমন।। জ্রোধ মুখে প্রতিকে त्य कृत्य छेत्रद। सूनांनि कृत्रुती किना इस स्थाएत।। शकि मनःशीए। করি বাজা যেবা কছে। পেচক হইরা রুক্ষ কোঠরেতে রহে । ভর্ত্তার ভাড়নো ভারে চাংহ ভাজিবার। বাাঘ্র কি বিডাল যোনি লাভ হবে ভার ।। পাত পরিত্যাগ করি অন্য করে মতি। শুকরী বাছরী কিবা হয়ে ছুওঁ অতি।। छक्षांत कतित्रा कथा करह एम পতित्र। (वांता हरस कत्या सूर्य माका मार्नि স্ববে। শপত্নীকে যেই নারী কেষ সদা করে। পতি প্রুবিধীনা হইবে জ্ঞা-স্করে। পতি সঙ্গে বশি জন্য পুরুষ দেখায়। বিমুখী কৃষ্ণা কালা হয়ে জন্ম লয়। কুল ভঙ্গ করে নারী যদি কে।নমতে। তিল্লে;তেও একেকালে ফেলে নরকেতে।। প্রতিব্রহা পুনা কথা গুনি মুনিসর। বুহুস্পতি প্রতি ভূষ্ট হইখ श्राचा । इता चाल क्षक्र अधिमारम्य कृष्य । एक। भारक स्थाहिका कोल्स्ट्र ্দবর্গণ।। যাচক হইয়া হেখা দেবতা আইল। বিস্কোন রুত্ত স্ত যত গেড্ড করিল। সৃষ্টি রক্ষা কর করি নিজে।র দমন। ্রান্ত বলি নিংশক হইল দে বগ্ৰা। মুনি বিশ্বেষ্টৰ খ্যানে করি আলোচন। কহিল করিব বিদ্ধা রুছি মিবারণ।। অঞ্চীক্ষত হৈল মুনি হানী দেবগণ। বিদার হট্যা গেল লাপন ভবন।। প্রথম অধ্যায় মুনি চিস্করে অস্তরে। বিশ্বেশ্বর বিমুখ ২ইল মন্ত পুরে।। দেবতার চরিত্র কে বুঝিবারে পারে। ছল করি কাশ্য ছাড়া করিল আমারে।। লোপাযুদ্র। সম্বোধিয়া কররে বিলাপ। অলিল অন্তরে এই বিচ্ছেদ সম্ভাপ॥ অধিক: নিবাসি সীকানাথ বসুদাস। কাশীখণ্ড ভাৰা রচি করিল প্রকাশ।।

#### ---

বিশ্বা পর্বতের দর্গচূর্ব এবং অগস্তা মুনির দক্ষিণদিগে গমন।

ত্রিপদী। সোপযুদ্র। শুন কই, দেখ দেবরাজ অই, গিবি পক্ষ করেছে ছেদন। দেখ অগ্নি দাবানলে, এ তিন ভুবন ছলে, সুর্গা আদি আর দেবগণ।। অতি পরাক্রম বরে, ব্রহ্মাণ্ড নাশিতে পারে, বীর দর্পে কেহ নহে মূল। বিহ্না রৃদ্ধি নিবারিতে: না পারিল কেহ তাতে, আহা বিধি হইল বিশ্রণ। না রাখি কাহার দার, তপস্যাতে কাল যায়, প্রতি

সঙ্গে আছি কাশী পুরে। বিধির বিপাক তাম, হইল বিষম দাম, ফাশী ছাড়া করিল আমারে॥ পণ্ডিতে শাস্ত্রেতে রটে, কাশী বাবে বিশ্ব ঘটে, সাধু শান্ত জনে আবশাক। ঘটিল আমারে তাই, বিভিন্ত দেব নাই, ज्ञि विश्व नकल कांतक॥ ब्लाशास्त्रा हल य है, हेशारक छेलाय नाहे, বিমুখ হয়েছে বিশেষকে। পড়ী সংস মুনিবরে, াতি দেব ঘরে ঘরে, বিলাপ করয়ে উক্তিঃম্বরে !৷ আহা প্রস্থু কালরাজ, রাথ কাশীরাজ কায়, কিছুমাত্র না কর বিচার। কিবা অপরাধ মোর, কর কাশী হৈতে দুর; কুপালেশ নাহিক্ ছোমার।। আহা প্রভু দণ্ডপাণি, কাশীতে নায়ক ভূমি, মোর ভরে জ্ইলা নির্দিয়। আহা ঢুভিগণরাজ, রাথ যুধরাজা কাষ, অবিচাতে মোর দণ্ড হয়।। আহা বিশেশর ভূমি, বারাণসীপুর-স্বামী, কিছুমাত্র লাভিক শাসন। তোমার নগর কাশী, থাকে যার পুণ্যরাশি, সেই পায় শুল দংশন।। মণিকণি স্থান করি, আবি নিতা তব পুরী। ম্থাশক্তি পুল্ল তব লিক। নিয়ম করিয়া কাশী, বাস করি হবিষ্যাশি, কি দোৰে কবিলা ভাতে ভঙ্গ।। আহা অনপূৰ্ণা মাই, তোমাকৈ বলিয়া धारे, मीन ही स्न ना कतिला भन्ना। मञ्चले। विकले। आणि, स्वती आत দেব ন<sup>া</sup>, ক্রমে সকলেরে জালাপিয়া।। সীমাচর ভূতগণ, জনে জনে ্রন্ত্রাষণ, কহিলেক ক্রান্যিতে কান্দিতে। সন্ত্র্যাসী তপস্থী থাবি, আর যত কাশীবাসি, সন্তাম করিল ধরি ছাতে । গুন কাশী দেবগণ, করি কিছু নিবেদন, সাক্ষি মাত্র থাকিবা ভোমরা। নিজ প্রয়োজন বশে, নাহি ছাভি কানীবাদে, কি করি যাতিল দেবতারা॥ পর উপকার তরে, কাশী ए। ए यारे पुरान छे था का करना कि ना करता मिर्वित खास्त हिल, নিত আন্ত ভিক্ষা দিল, প্রাণম্ভ গণনা না করে।। চাহিলেন ভগবান, जिल्लाक कतिल मान, विलिवाका शत्रम इतिरव। मधुरैक छे एक नित्र, मिलक হুইয়া স্থির, নারায়ণ ছেদিলেন শেষে॥ গরুত্ব পক্ষীর রাজা, বলে দর্পে মহা ভেজা, হইলেক বিষ্ণুর বাহন। ভবে আসি ভীরে বসি, পতি সঙ্গে মহাঝবি, শিরে করে নীর অভ্যুত্থান।। কহিছে চকুর তরে, দেখ দেখি কাশীপুরে, স্থানে স্থানে যে আছে মন্দিরে। তবে শিব শিব বলি, পতি গত্নী গলাগলি, করি কান্দে হইয়া জন্মিরে॥ ছুই কনে মোহ পায়, थांक तक वकी क्षांस, किছू कांटन इहेन एडका। भूनः भित भित्र विल, वटल श्रित्त एल हिल, वेष्ट्रे किंग दनवश्रण।। हिलटलक एटलायन, थाल বহু ছনরন, কিরি ফিরি দেখে বারে বার। পতি পাছে নতী যায়, শরী-

রের ছারা প্রায়, অবলার নহায়, চমৎকার !! হইয়া পাগল প্রায়, করে বৈসে ক্ষুণে ধায়, করে কথে ক্রিরিং চায় । ছই তিন পায় চলে, শিব বিশ্বেশ্বর বলে, বলে কাশী দেখি হেড়া জায় ।। এই মতে চলে য়য়, যাবত দেখয়ে কাশী, ক্রেমে ক্রেমে গেল বছ দূর । তপো যান আরোহণে, চলিলেক ক্রোধ মনে, বিদ্ধা গর্ম্ব করিবারে চুর ৷৷ নিমিষ অর্জ্বেকে মুনি, বিশ্বোর নিকটে পুনি, সভী সঙ্গে উপন্থিত হয় ৷ অলস্ত জনল প্রায়, ক্রোধে চক্ষু রাঙ্গা ভায়, যম যেন দেখি লাগে ভয় ৷৷ পত্নী সঙ্গে মুনিবত, দেখিয়া লাগিল তর, থর থর কাপে গিরিবর ৷ অভি থর্ম হৈয়ে গিরিক ছই কর যোড় করি, দশুবৎ প্রণামে সন্থর ৷৷ আশীর্ষাদ করি মুনি, বিদ্ধানে বলিল পুনি, আমাকে সন্থর জান ডুমি ৷ থর্ম হৈয়া কতকাল, এই কপে থাক ভাল, যাবত না ফিরি আসি আমি ৷৷ এই বাকা বলি মুনি, দক্ষিণে চলিল পুনি, কাশীর বিছেদ ভ্রান্ত মতি ৷ সীতানাথ বসুদাসে, কাশীরপন্ত ভাষা ভাষে, ত্রপদী রচিল তাতে ইতি ৷৷

পরার। কত দূরে পেল যদি মুনি মহাশয়। আপনাকে মনে বিদ্ধা প্রশংসা করয়।। জদ্য মোর পুনর্জনা হইল ভাগোতে। অভিশাপ না করিয়া মুনি গেল যাতে। জদ্য কলা পরশ্ব আসিবে মুনিবর। এই মাত্র চিন্তা করে গিরি নিরস্কর।। যদাপি না আইসে মুনি নাহি বাড়ে গিরি হইলে থলের রৃদ্ধির থাকে দিল চারি।। বাল্যকালে বিধবার যেন প্রো-ধর। উঠিয়া কদরে লয় হয় নিরস্কর।। দরিত্রের মনোরথ বেমত নিক্ষল। যে মত খলের মনোরথ যে সকল।। স্পর্কা করি পরে যেবা অতি রৃদ্ধি হয়। সেই বৃদ্ধি দূরে পুর্ক রৃদ্ধির সংশয়। পত্নী সঙ্গে করি মূনি কোলা পুরে গেল। মহালক্ষী দেখি দোঁহে প্রগাম করিল।। নানাবিধ স্কৃতি করি-লেন মুনিবর। কাশী বিরহের আলা মুচিল অস্তর।।

----

### अत्रक्षा मृति कर्डुक मश्तकातेत क्षित्र।

লছ-ত্রিপদী। ভূমি নিরাকারা, ভূমি সে সাকারা, ভূমি সে সংসার নার। বভ ইভি সব, ভোমার বিভব, ভূমি সে তবের ভার।। ব্রহ্মা ভব নঙ্গে, ভূমি করে রকে, ভূমি প্রাপর ভারা। ভব সহকারে, হরি ক্লা করে, ভূমি হরি মনোহরা।। ভব ঘোনো শিব, সংহারে এ বর, ভূমি ক্রিভুবন ভরা। নম্ননের কোণে, ছের ধার পানে, ক্রুটার্থ হয় যে তারা।।
ভূমি বায় জল, আকাশ জনল, ভূমি ধরাধর ধরা। অপার সহিমা,
কেবা পাবে সীমা, সর্ব্ব ঘরে ভূমি ছিরা। ভোমার বিরহে, কিছু নাহি
রহে, এ সংসারে সব মরা। পুণ্য অভিশয়, ধাহার থাকয়, তাহার
নয়ন তারা। ভূমি লোকমাতা, সকল ছহিতা, ভূমি সে সকল দারা।
স্তুতি করি মুনি, রহিল অমনি, ভূনয়নে বহে ধারা।।

শৈল পর্বতে নাইতে অগন্তা মুনিকে মহাক্ষী উপদেশ দেন।

পায়ার। স্তৃতি শুনি মহালক্ষী প্রসন্ধা হইলা। লোপাযুদ্রা আলি-ক্রিয়া তথা বসাইলা।। ভবে পতিত্রতা ধর্ম করে প্রশংসন। সভীকে দিলেন দিব্য বসন ভূষণ।। অগস্তা মুনিরে তবে বর দৃশি করে। কাশী বিরংহের ছুঃখ যাইবেক দুরে।। বেদবাস হৈয়া পরে কাশী লাভ হবে। সম্প্রতি শুনহ ত্রুংখে যেই মতে যাবে।। দক্ষিণে এটিশল আছে দেব বড়ানন। ভাঁর সজে ঘাইয়া করছ দর্শন।। বাশীর মাহাত্ম কহিবেক ভোমা ভানে। তাহা হৈতে হবে তব ভাপ নিবারণে।। মহামুনি লক্ষী मुद्ध शहिमा छिश्रातम। शङ्की मत्म मिक्कारिक करिन अदर्भ। वर्ष অধ্যায়েতে মুনি দক্ষিণে গমন। পথে হৈতে হইল এটিশল দরশন্।। ই শৈল শেখর দেখি মুনির হৃদয়। সন্তাপ শুচিয়া অতি আনন্দিত হয়। তবে মুনি লোপামুদ্রা সমে।ধিয়া **বলে। জিলৈল শেধ**র প্রিয়া দেখ কুতৃহলে।। টোরাশী যোজন এই গিরির বিস্তার। প্রদক্ষণ করি यि त्यथेत देशत ।। आदताह व कदत सिम श्रूनक्या नाहै। शिक सूर्य শুনি হেন বলে সতী মাই।। প্রাণনাথ কোন কথা জিজাসিতে চাই। জিঞানিতে পারি যদি তব আজা পাই।। পতি অনুমতি বিমানাহি কোন কর্ম। পভিত্রতা নারীর আছয়ে হেন ধর্ম। মুনি বলে বল যাহা বলিবারে হয়। সভীর বচন মনে খেদ কড় নয়।। পতি অমুষতি মতে নতী কহে বাণী। অভি বিলক্ষণ কথা কহিলা আপনি।। এইশল দর্শনে यां भूनक्त्र नाहै। जत कानो हेका करह शाँगाहै।। अंशखा वरणन खिरम कर अवधान। वायका हैशत राहे भारत्वत्र खमान।। बकाए ভাণ্ডেতে তীর্থ সাড়ে-জিনকোটি। বিশেষিয়া কছি শুন তার পরিপাটা।। अल्य दिनिष्य कुक्र किन एव नधुना। क्रविक्राः करणायाः किरेनन जात

धर्ता।। बाता भन्ना मागदमञ्चम शामायती। कांकि मात्रा कांनी मिन्तू अवांग কাবেরী।। ব্রায়ক একেজ বদরিকা কালঞ্জর। সরস্বতী ময়না অসর। ভীর্থবর।। সেতৃবন্ধ একামর ঞীচন্দ্রদেশ্বর। ভৃত্তকর্ণ ভৃত্তভুক্ত গোলব্ शुक्रत ।। शया शक्रा व्यापि क्रक क्रिन श्वन । नस्क्रिश क्रिन वसू छीर्थ विवन ।। यानम और र्गत खन कहि विवतन । दिन भूतारगढ गोहा करतरह গণন।। ক্ষমা সভা ইন্দ্রিয় নিগ্রহ ভূত দয়া। শম দম সভোগ আজগ বাণী প্রিয়া। তপ্র্যা বিজ্ঞান আদি পরিসীমা নাই। তীর্থ যাত্রা বিধি শুন কৃহি ভোষা ঠাই।। পুর্ব দিন উপবাস করিবে নিয়ম। পর দিন প্রাদ্ধ করিবেক যথাক্রম।। ত্রাহ্মণ ভোজন করাইয়া তার পর। পারণ করিয়া যাত্রা করিবে সহর।। ভান দান প্রান্ধ আদি তীর্থের বিহিছ। कतिरक कर्म यह देश्या मार्किङ । धारे मत कीर्य मना विमुक्ति है में है। ত্তে হবে কাশীলাত নিৰ্বাণ নিস্তার।। জৈমিনি স্মৃতিতে হেন সাছে নিরপণ। বরণা পিঞ্চলা আদি ইজানাড়ী ঘেন।। ভদন্তরে অবিমুক্ত কু युधा त्य नाको । किन नाको कांनी भूती कांभडायराती ॥ कांनी भूत्र कीर अह रवह तर भरत । श्रीनार्थ छात्रक खन्ना छेलरनम करत । छरव छीर इहेरदक মৃক্তির ভাজন। আছি স্মৃতি পুরাণেতে এই নিৰূপণ।। প্রসঙ্গত তীর্থ যদি পাপেতে মিলম। তথাপি তীর্যের অর্জ ফলভাগী হয়।। সপ্তম আগ্রায় মুনি কংহ ইতিহাস। শিবশ্রা মথুরাতে যেমতে প্রকাশ। ভার্থ যাতা আদি তার যত বিবরণ। লোপাযুক্ত স্থানেতে কংহন তাে।বন।। মুধাভাগু কানী-খণ্ড ব্যাসের বছন। ভাষা করি বলিখারে পারে কোনজন। শ্রম্বিকা নিবাসী नीकानाथं वर मान। बना क्यूनिका इत्र इहेता ऐसान। कानीबंख कथा खनभारते कतिया। ভाষাতে ভाষিत **তাश तरकाश क**तिया॥ नाथु बदन अंवर्टन इंड्रेटन अधिनाच। इति इतं श्रुजन कतित्व मन आना। त इश् শ্রবণ করে কিবা করে গাঁন। কাশী লাভ হবে তার পাইবে নির্মাণ।।

> है कि कानी बंध जाया जनसा मूमित कानी कांग विश्वा शक्ति बंब जीतिन श्रीक मर्गन अध्यम बर्गः।

### অথ শিব শর্মার বিবরণ।

পরার। মধুরা নিবাসী শিবশর্মা ভিজবর। শাস্ত্র অধ্যয়ন ভেঁহ করেন বিস্তর।। বেদ বিধি জ্ঞান ধর্মশাক্ত পুরাণেতে। ধর্ম কর্মা মিমংসা-কারক প্রমাণেতে।। তর্ক শাস্ত্র ধমুর্কেদ জার জায়ুর্কেদ। তন্ত্র শাস্ত্র জন্য শাস্ত্র যত নাট্য বেদ।। এই রূপে সর্বশাস্ত্র পড়িয়া ব্রাহ্মণ। তার পর হই-লেক পুত্র উপাত্রন। ভদশুরে চিন্তে দ্বিক করি উপায়। না বলিল শিব বিষ্ণু গণ মহাশয়।। সুর্যা দেব তুলস্যাদি ব্রাহ্মণভোক্ষন। দেবালয় লিক্সন্থিত ভীর্থ দরশন । গোধের গোবৎস আর ভুম্যাদি কাঞ্চন। পথে বৃক্ষ আলোপণ তড়াগ খনন।। গোঞান পতিত পত্নে গাভীর উদ্ধার। ব্রুলার অমবস্ত্র গয়া-আন্দ্র আর ।। অতিথি সেবন আর ত্রত চান্দ্রায়ণ। পুরুষ উত্তিম জান্য ভীর্য দরশন।। এই সর্ব কিছু মোর না হইল ক্রিয়া। কিলে ভব পারাবারে যাইব ভরিয়া।। অবশেষ চিন্তি ভিত্ত করিল বিচার। সপ্তপুরী তীর্থ দরশন মোর সার।। যাহা হৈতে ভবসিন্ধু হইব নিস্তার। यशास्याता निवय कविन धर्माठात ॥ अथरम मधुदा देश्ट प्रदेशांशा धमन । বেই যে অযোগা পুরি মহা-মোক্ষধাম।। সেই স্থানে বিরাজিত আছেন 🕰 রাম। নির্মে সর্যুভীরে শর্মার বিশ্রাম।। সাক্ষ স্কান আন্ধ করি পঞ্চ-রাজ বাস। এরাগে চলিল পুরাইতে অভিলাষ।। যথা ওলা রজোগুণে বনুনা মহেশ নিজ জপা। তমোপ্তণে ব্যুনা মহেশ নিজ জপা। ভাগির্থী সত্ত্ব ৰূপে বিষ্ণু যে আসিলা। ত্ৰিগুণেতে তিনবেণী প্ৰয়াগ হইলা॥ গুণ্ডেৰ জ্ঞারবট তথার আছর। যার মূলে এলবে মার্কণ্ড মুনি রয়।। শল্টক সব বেণী মাধ্য আহ্বায়। সুখ্যবাধা সর্ভতী তথাতে মিলয়। মাঘ মানে প্রতিঃ প্রান কিয়া বাস করে। তার খানারাণে মুক্তি কে খণ্ডিতে পারে।। ঐ क्षार्टन (क निवनमा प्राच मान हिल। এक मार्टन यथार्याता नर्स कर्म टेकल ভার পর কাশীতে চলিল গুণধাম। পঞ্চকোশ প্রথমেতে গণেশে প্রণাম।। शास्त श्विकिनिकांत्र हिलालन सुनि। यथा शकाटमयी आटइन छेडतवाहिनी।। मिनिक्नि (घतिशा वरगरह (सर्वश्रा) ज्यानश्री (यमन ख्रश्री सत्रमा।। मिनि-কর্ণি খ্যাত যেই কারণেতে হয়। শিবের কর্ণের মণি ভখাতে পভ্রা। এইত নিমিতে মণিকর্ণি অর্থ হয়। আর এই স্থানে আছে অনেক নির্ণয়।। সাক্ स्रोन खोक्त कापि कति तारे खाटन। हिल्लिन शद्त शक कीर्य पत्रमाटन।। পরে ভিন্নবর সম্বংসর বাস করি। ক্রমাগত নিভ্য নৈমিত্তক করে কিরি।।

वीद्राचत्र आत यक आहर निक्रमम्। मर्सद्बद्ध मिर्नर मर्भन कत्रम्। हिन्द-ক্ষোভ কোন মতে নির্ত্তি না হয়। তার পরে ভাবে তবে উপায় নির্ণয়॥ अथरम वामना मराभुती मत्रभरन। उथा देशक विलालन कावसिक्वरन।। যেই স্থানে মহাকান আহে অবস্থিতি। মহাপ্রনায়েতে জগং সংহার শক্তি কোটি শিবলিক যথা আছে নিরন্তর। হাটকেশ ভারতেশ মহাকালেশ্র ক্রমাগত স্বর্গমর্তা পাতাল উদয়। স্বরাধুত অঙ্গ প্রভৃতি হত হয়।। অওলাভ সর্প পক্ষি আদি জীব যত। আছেন তথায় সেই সব বিরাজিত। উদ্ভিক্তাত তকু সুধে তুণ আদি যত। স্বেদকাত দংশ মশকাদি নানায়ত ইহার। সকলে ভথা হয় লিক্লময়। পঞ্চরাত্র শিবশর্মা নিয়মেতে রয় । পরে কাঞ্চিপুরে প্রবেশিল দ্বিত্ববর। কি কহিব সেন্থানের মহিমা অপার।। লিব লক্ষীকান্ত আর হরি হর প্রিয়া। গোদাবরি নদী তথা আছেন বাা-পিয়া।। যথাবেংগ্য সর্ক কর্মে করিয়া ভ্রাহ্মণ। সপ্তরাত্ত রহিলেন ধর্ম আচরন श्रात्मन मध्रत यथा भूती खातावको । त्मरे खात्म नाताध्र मणा अवस्थिति ।। **त्रहे जात्न शादन प्रक्रि अवनाहे इस। मश्यक्रांश कहिल भारत विखाद**तत उस যথাবিধি দ্বিজ্বর অত্যেবণ করি। ক্রিয়া আদি করিলেক শাস্ত্র অনুসারি ।। शक्षमा मिन विक तरित्रा ज्यात्र। मीरति चात्रम कति विकास सात्र।। चर्त देश्टक शका यंथा शृथी जानमदन। इतिहात विन सान कन्नरक वाधारन অপার মহিমা তাঁর জীবের নিস্তার। ধর্ম অর্থ কামমোক্ষ চারি প্রসার পূর্বাদন ঐস্থানে অনশন করি। ক্রিয়া আদি যথাবিধি পূর্বক জাচ্রি।। ভদস্তরে পারণ করিবে হেনকালে। মহান্তর উপস্থিত কন্পিত হিল্লোলে কি হইল বলি থেদ করেন বিস্তর। বাটীঘর স্ত্রী পুজা ভাবে নিরস্কর।। তার পর চিত্তবিদ্ধ কৈল মনোনীত। এ সময়ে জন্য চিত্তা না হয় উচিত।। হরি হর অরণেতে যাহাতে নিভার। ঐ নাম বিধিমত করিল সম্বর।। মৌনী হৈয়া রহৈ ছিকশর্মা মহাশয়। আনতৃষ্টি চকু আর ভাবের উদর।। ক্ষণেক कांत्मार एवं क्वांकि विद्यानश्या । मकन विश्व कि देशन मन क्यान अश्या शास्त्र मांशाचा मर्कार्थ पृथ्वि कटन । देवकूर्थ रहेटच तथ आहेटम श्रुगावटन तथसरकाशदारक अञ्चल श्राद्याहरू। (भवक्या करत तथ हामत वाक्सा भूगामीन स्मील य छङ्क कथाती। नियमका देनश् हत्ल देवक्छन्त्रती चिनवत छ्लूक् भातग कदिया। तथमत्या विमित्तन विक्रुक् टेर्या। भे यव विमाधिती हामत हुवास । अन मट्रंक करणाशकथरम काल याम ॥

### সুকর্মান্তিত এবং কুকর্মান্তিত মনুষ্যদিগের যমপুরেতে ভোগের বিবরণ!

পহার। জারীম আধার লোগায়ুক্রা জিঞাসন। অগস্তা কহেন গরে मण विवत्तव ॥ त्ला भारकः। कहित्यन खन कत्भावन । भिवसमा महाभूती ক্রি দরশন। ছরিছারে প্রাণভ্যাণ কৈল তার পরে। মোক্ষ না হটল কেন **গুনিব্ বিস্তারে। অগস্থা** কত্ন প্রি**য়ে গুন বিবরণ্। শুনিলে** য'ছাতে হয় **क्षमुक (महन।) अन् यदक मदत हिन्द क्रिकरः।** एक पूर्व (क्रिया) शिष्ठांन क्रवारत। हेराप्त हुयान्त मधी बिक्यारम्न **१८**९। अने करह **धन** স্থা ইহার কারণে। ধন উপার্জন করি সঞ্চয় যে করে। স্ত্রীপুত্র কুটুম্ব আত্ম পোষণের ভয়ে। অন্য ধর্ম কর্ম তারা কিছু না করম। ইহলোকে বে দব রা-ক্ষস যোন হয়। তার পরে কন্ত দুরে রথ চলি যায়। স্কুলাকার কান্তি সব तिथितादः श्रीप्र ॥ लाद्यामञ्जू स्थातं त्य एमिश भविकायः । ইश्वितः एमिश शत्यः জিঞ্জাদে শূর্যার।। এ হেন গঠন মূর্ত্তি কোন লোক হয়। পুণাশীল বলেন लनः व्याकमस्याः अष्टे मत्व मर्लात्वात्क मध्यस्य ना करत्। छेलाम्बन कर्ति পন সর্বাদা বিভরে।। সংক্রান্তি পুর্ণিমা স্মাদি পর্ববতে এ জনে। গুরু পুরো-হিত বাকা দৃঢ় করি মানে।। পরেতে গন্ধর্ম লোক দরশন হয়। ইহার হুত্তান্ত কহ গণ মহাশয়।। নুপতি ঐশ্ব্যমন্ত দিলের ছারায়। গন্ধর্মণণের थहे वावशत रहा।। अलिक शार्ठ मजनानि चाठतप यक । हेटारक कीविका হৈয়া থাকে অনিরক। এই মত অর্থ আহরণ করি সব। দানাদি আক্ষণ कमः करत व्यवस्थित । रे यन लाक व्यापि वह श्वात तम् । वह व्यापा वर्षा-त्तर्छ (मद्दल्योक कश्रः। **छमञ्चद्ध (मधि विमाधितश्रुती श्राम। शिवशर्या**। ক্ষিক্ষাদেন ইহার বিধান।। পুণাশীল স্থশীল কহেন বিবরণ। বিদাশী-मिशक जन (मग्र गर्नकः।। नदव**ञ्च कश्रनामि (मग्र दिमार्थी**द्ध। शीखा हत्व अयथ कातांत्र रमचा कदत्र ॥ विषय शर्क हाष्ट्रिया रय नाना लिका रमञ्जा শিষ্যকে ভোষ্ম আহারাদির ছারাম।। পুত্র প্রায় শিষ্যগণে স্নেহ ছভি-भग्न। कना। गोलकारत शार्खः मान स्व कत्र।। यन अভिनारि हेस्रेरमर्व পুকা করে। এই বাপে অবশেষে বাস বিদাধির।। ভদন্তরে উপস্থিত ৰমের পুরীতে। অগ্রে উপস্থিত যম দুহতর সক্ষেত্য। শিষশর্মা বিভূগরণ क्षणांग कतिल। अदल बान मृद्दान चित्र रुक्तन्त ।। कन्न क्षरमानम चालमन यग घटत । तक काल खब टेकल यम क्लिबट्र ॥ जाशनात शुगावटल टेहला

वृक्ष वर्ग । अपू पारम कहिरवन पामात प्रकर्म। अर्मतास कृषा तथि-(उन एशामझा अहे गाका कहि अर्था विकास कत्रत्र।। शिवगर्या मर्खायश খুম হান ঘর। পরে বিষ্ণু গণে জি**কাসিল ভি**জবর ।। শিবশর্মা বলে স্বা कृति निर्देशन। धर्मति। य मस्ति। य मस्ति रहेन प्रतिभाग । यिक मान्य खत्रीकाती माधूत लक्कन। धर्म वाका जात खनिएक इंटब्रे मून।। यहमत नशत त्यहें अकि সুলোভনে। যার নাম শুনি পাপী ভয় গায় মনে।। যুসের স্থাকা লোক ব্রুল কেন্দ্রে। অন্যুত্তক জন দেখি তাহার সাক্ষাতে,।) কোন কোন 🕒 🗆 এই পুরী নাহি দেখে। এ স্থানে বসতি করে কোন কোন লোকে।। ্রার স্বৰূপ এই স্থার কেবা আছে। বিস্তার করিয়া ইহা কহ যোর কাছে। গণে বলে শুন শিবশর্মা মহামতি। স্বভাবত ধর্মামূর্ত্তি সাম্যভরাক্কতি।। ুণ্যরাশি ভোমাদের হয় দরশন। ভয়ঞ্কর জন্য কথ দেখে পাপী। জন।। क्लार्य इन्क्र नरव रचन शिक्रम लाइन। विक्रि मन्नन रहेड् क्रांन वरमना ললিত বিভাত যেন দেখি লাগে ভর। উর্জ কেশ ব্রক্তবর্ণ মহাছোরময়।। প্রলয় দেবের মত করবে নিনাদ। কাল দণ্ড হাতে ঊর্জ আছমে বিষ্কাট ক্রাকুটি করাল মুর্থে করতে শাদন। আনহ ইহাকে ধরি করহ বল্প ।। **अरुति क्तर मार्ट्य क्लारात ग्रह्मात । পरिप्त पति शायरत काछा**ङ् এই नत् ॥ পদ দিয়া গলে জ্ফু কর উৎপাটন। ফুলা গা**ল ফু**রে ডার করছ ছেমন। পলে দাড় দিয়া গাছে টাঙ্গাহ ইগারে। কাউ যেন কথাতে বিনার ভার শিবে।। পদার্ঘাতে ইহার বদন চূর্ণ কর। **ছই** হাত কাট ভার পরত। হর।। পরদার গৃহধানী কাটছ চন্ন। পরনারী সদাকাল কটচে এছ।।। লে।মন্ত্রপে স্থতি বিশ্ব করি**য়া বন্ধন। অন্তথ্য এই পা**পী কর্ত্ব শ্লেন।। श्रिकात है क्या कित करारा भगन। है श्रात वषन परस्य केत्र व प्रश्नन । (यह মুখে বলিরাছে পার অপাবাদ। সেই মুখে হান খোঁটা বান্ধ চুই খান্ত। এই পাপী করিয়াছে পুর সন্তাপন। তপ্ত বালি মধ্যে ভাজ চনক যেনন। নির্দোষ পুরুষে দোষ করে জারোপন। রক্ত পু'জ ফর্দিমেতে ভুয়াও বছন। পদত পরের দ্রব্য করমে গ্রহণ। ৩৫ তৈকে পুরাইরা করহ দাহন।। ওর जनवाम कति एक निका करता छश्च लोहमना छति यमस्तर् छति॥ পর মর্যাভেদ প্রছি**ত প্রকাশর। তুত্ত লোহা**র **স্থুচ** শ্রীরে বিন্ধর !। **प्रत्य पान क्रंट्स घटना क्रेस्स विरोध । समना समना कांग्रे मे**स द्रांख देहन । াব ত্রান্সাণের দ্রব্য কর্মের ভোজন। উদর বিদারি বিষ্ঠা ক্রমিতে পুরণ। নেবভার তরে কিম্বা ভাক্ষণের জরে। ছতিথির তরে কর্তু পারু নাহি

করে। স্থাপনি থাইতে পাক বিশেষিয়া করে। কুন্তিপার নমকেতে পাক কর তারে।। শিশু হতা। করি করে বিশ্বাস ঘাতন। কুতল্প পাতকী মহা-বৌরবে পতন।। নরক অন্ধতামিশ্রে ব্রহ্মঘাতী স্থান। পূঁজ শোণিতেতে গাঁড়ি তার সুবাপান। কাল সুত্র নরকে সুগাঁ চুরি কবি। মরিচি নরকে াত্রে গুরুপদ্ধী হরি।। পূর্ণ সম্বংসর যদি সংসর্গ করম। অসিপত্র নরকেতে ভার বাস হয়। এই পঞ্চ মহাপাপী বড় ছ াচার। তথ্য তৈল কড়ায়েতে ফেল বারে বার । লোহার মুফারে দুঢ় করিয়া প্রহার । এক কণ্পা রাহ নরকের ফারাগার।। স্ত্রীহত্যা গোহত্যা আর নিত্রহত্যাকারী। শিস্ত-্র গাছে বান্দ উর্জ পদ করি।। অধোত্রথ করি ভারে রাথ চিরকাল। দংশিয়। শরীর চর্ম ছিড্ছ বিশাল।। মিত্রপত্নী এই পাপী করে আলিজন। ছুই বাছ উপাভিয়া করহ তাত । পর গৃহ পর ক্ষেত্র পুবে অগ্নি দিয়া। জালা কিবা নরকেতে বাথ কেন্ট্য়া।। বিষ খাওইয়া মারে মিথ্যা সাক্ষী দেয়। ভব্য ফৌক্সার কালে ছলনা করয়।। গলে বস্ত্র দিয়া লৈয়া কালকুটে ক্ষেত্র তিথি ওলে করে অন্চার যে সকলে।। লালাপির নাম নরকেতে লহ ভারে। দুর্ভীপাকে কেল গর্ভাঘাত হেবা করে।। অন্যতাপি পাগিকে र केर प्राथम । हे**कू** यद्ध **शिरम तम**विकाशी विश्व कि ॥ अला शीख़ा करत ভুষ কেল ভদ্ধ কুপে। গোভিল সুবৃদ্ধ সোণা বেচে কোন কপে।। ছেন বৈশ্য উথলিতে ফেলি নিরস্তর। মুখলে কুটিয়া দূণ করহ সম্বর।। গুদ্র হৈয়া ছিলবর্গে ক্যক্তা কর্য়। বিজ্ञ অগ্রে উচ্চাসনে যে জন বসর।। অংধাযুখ নরকেতে ফেল্ছ ভাগতে। মহতে ভাঙ্গহ ভার মুদ্ধর প্রহারে।। ত্রাহ্মণ বিলয়ী পুত্র বৈশা বিপ্রদানি। জৃত্রিয় যাজক বেদ বেচে **ছিজমণি।৷ লোহা**-লাবৰ মাংসারস তৈল আর মৃত। অস্ত্রগুড় আদি দ্বিজ করয়ে বিক্রীত।। এই মর প্রাপী যত দুঢ় বান্ধি পারে। চারুক মারিয়া রাথ কনিমে কেলায়ে॥ এই নারী কুলটা পাপিনী অভিশয়। সেই উপপতি ভার তপ্ত লৌহময়।। তুই জনে আলিজন করাহ এখন। এই মত চিরকাল করহ ভাড়ন।। আপুনি দিয়ম করি লোভে ভাগি করে। এমর দংশক নরকেতে কেলে ভারে।। অতি ভয়কর যম এ সব জম্পান। পাপীলোক দুরে হৈতে করছে দশ্র। উরুষ ভরুষ যের প্রজাকে পালর। ধর্মত বিচার করি প্রজাকে দওয়।। হেন নৰ রাজা ধর্মরাজ সভাসদ। যমপুরে নিরাপদে ভুঞ্জে সম্পদ।। যে রাজার রাজে।তে যে হর্ণের আশ্রাম। স্থাপনার ধর্মা কর্মা করে। উপজ্য। কালজনে মৃত্যু হৈয়া যার যুমপুরে। শোক নাছি পায় সভ'-

नम इस भरत। य ताकात तारका अका मातिल मा इस। छुत्र कि काशम শোক তুঃখ নাহি পায়।। দেই দব নরপতি ধর্মের সভার। সভাসদ স্ইয় পরম সুখ পায়।। ত্রাজ্বণ ক্ষত্রিয় বৈশা জন্য আর যত। যমপুরে বাস 🕸 ে স্বধর্মো নিয়ত। উদিনর সুধন্ধা নামেতে নরপতি। রুষপর্কা জয়ত্রধ রাজ মহামতি।। সহস্রাজিত**রুক্টা দৃঢ় ধর্মা** রিপুঞ্জয়। **যবনাস্থ** দত্তবক্র **নাভাগ** মহাশয়।। রিপুমর্দ্দন করন্ধ অধর্মদেন আর। পরমন্দি পরাত্তক সহিত্র। व्यभात ॥ এहे यव बात यक तांकात व्यथान । धर्माधर्मा विहात सुनी जिल्हा মান। ধর্মরাজ সভাতে এ সব নরপতি। ভুঞ্জরে পরম তুখ কররে ইন্সভি। গণ কহে শিবশর্মা কর অবধান। অন্য আর কিছু কহি পুণা উপাধান। य बदल ना इस लांदक यम महनन। मिं लाहि दांदा पूछ ना प्रदर्श कथन ॥ पृष्ठभए। भगरन भिषात्र नपाकान । इति इत मांगाविन पूर्य तरन ভাল।। সেই সব জনে নাহি মোর অধিকার। তে: লিরা সে বব জন করি। नगंकात ॥ रेशाविष्प्र माधव इति मुक्तन मुदाती । निदशक क्रेश समिनियंत প্লধারী:। দামোদরাচ্যুত বাসুদেব জনাত্রি। ত্যাজিয়া এ বর লাম যে करत मनन ॥ अवाधत खंखकाती रत्न नीलकर्छ । देकडेखाँदि खळ्ळालि अपर्क বৈকুঠ।। চপ্তি কেশ মৃত্ খণ্ড পরশু ভুতশ। বে জ্ন এ সব নাম স্থান্ত্রে विरमय।। विकू मभूष्टमन मृतिश्रह ठक्तभत् । तोहीशक्ति ठक्कर क विहीस শক্ষর।। নারায়ণ শত্মপাণি দৈত্য নিবর্হন। যে জন এ স্ব নাম কর্যে न्यत्र ।। উ अ विषयांशा मृजुङ्कत्र कांगरेवति । शोष्यांत्र 🗐 वास्त्र काल प नील সৌরী।। ত্রিদশৈকনাথ কুত্তিবসন উপান। যে জন এরের নাম করয়ে যে গান।। আদা লক্ষ্মীপতি মধুরিপু নরোন্তম। জীবান্ত থিনাকগাণি শান্ত वियोगन ।। शब्दमां जानिक कक्त ४३गी थाइग । एव क्रम थ मन ग्रांम करदन ममन ।। एतत एतत मर्द्सभेत जिश्रतस्थान । शाकता जन्तकार पत शत्रक वार्य ।। वां क्षा क्षा को लिखा के खेरत क्षा क्षा क्षा क्षा का नाम देश करत समस्य। রামেশ্বর জীরাম রাঘব রাবণারী। ভূতেশ সম্বরপু প্রমধাবিকারী ।। মুরারি ঝবিকপতি চা**ন্থর মন্ত্রন। অপুর্ব্ব এ নব নাম যে** করে মনন।। চম্রকলা গিরীশ করাল পুলধারী। কেশীনাথ সনাতন কংস প্রাণবৈরি।। ভূতপতি প্রবীর ত্রিনেত্র ভর্গভব। অপূর্বর এ সব নাম লপে যেই সব।। গোপীপতি यছপতি वसूरमव शूख। क्ष्रूति शोताक इवस्तक जानुरमञ ॥ গোপধর্ম ধুরীণ গোবর্জন ধারণ। অপুর্ব এ সব নাম যে করে স্মরণ।। স্মরারি পিনাকধর স্থাণু ত্রিলোচন। ক্লফ জনিরুদ্ধ পালাকর পাপ্ছীন !!

### कामी थे है।

ালালের বেটি ভাটাজুট বিশেষতা। যে জন এ সর নাম জাণে নিরস্তর।।
নাম্বিক্তিল লাজ নাম দিবা রক্তমান । চূল্কালে গাঁথি মালা লালে যে ধরম ।
কালাল কি লাজ দুল্লেরে লিথার। চরমে স্ইবে শিব বিদ্যা নারাধান।। এই
কালাজ দুল্লেরে লিথার। ছরি ছর চিক্ত যেবা সর্বাধান জুবজ
কালাজন করিবে বজ্জন। আনার জানিক জানে সেই সম্বভাল পর্যারভা
কুছ প্রিম্র নামাবলি। পটিলে লভকে বুক্তি জিনে কালকাল।। লিবশর্মা
কালাকথা কলিয়া জাবল। অপ্রান্ধান ভাটে হৈল দরশন।। জুক্তিন অধ্যার
কালাল বিদ্যা জাবল। প্রাচালি কালাজনাল লাভিকা নিবানী
ক্রিন্তা বসুদান। প্রাচালি প্রবন্ধে কালীথপ্রের প্রকাশ।।

#### · mallitation

## লিবশর্জার অংসরাপুরী দুর্শন।

শারার। শিবশার্মা পুণাশীলে করিল রাজান। নকলি অপুর্বি হেরি

বিক্ ভাব। ভপের নাহিক গীলা কহেন না যার। পণে কহে দেব

বিশ্বঃ এই সব হল ।। কীরোদনন্তন পরে উঠিল নকল। যকিহাজার বেশা।

অভি ব্রুলামল ।। হার মধ্যে প্রধানা বে রম্ভা ভিলোভমা। যেনকা উর্বিদী

বিলারেখা দ্লারমা।। ইত্যাদি ভানেক আছে কুন্দরী প্রধানা। প্রস্ত বিজ্ঞানর ছেল করি বর্ণনা। দেবলোক সর্বিত্রেকে ভ্রমণ করে। মনোরক্ষ

যোগন্তক ক্টাজ্লেতে হয়়। নৃত্যানীক রুলোজান করি অহর্নিশি। দেব
তার সভালেক ক্টাজ্লেতে হয়়। নৃত্যানীক রুলোজান করি অহ্নিশি। দেব
তার সভালেক প্রতিক্তির হাক কানত্রত গনি।। মাস উপবাস ভ্রমা চর্যায় ভ্রামাণী।

ক্রিনিণ্ড ভিল্লিকে রক্ত কানত্রত গনি।। হে সকল ভ্রত নারী আরম্ভ করয়।

ইমবাদীন ভ্রত ক্লান্তিক গনি। কর্লিকলে এই স্থলে আনি বাস করে।

এনত জনেক আছে সংসার ভিত্রে।। বছ্রিধ সুখ ভোগ করমে অপরে।

অপরা পুনীতে বাস নিরন্তর করে।। সনাপ্ত হইল ভবে নকম অধ্যায়।

শুনিলে নকল পাপ নিবারণ হয়।।

#### 21015

### जन यूर्वात्वाक मर्नन्।

পরার । জার পর স্বর্ধোলোক হয় দরশুন শিবশর্মা একা ভাবে কৈল নিক্রপণ।। জাবশেষে গণ স্থানে জিক্ষানা করয়। কোন স্থান হয় এই

चर्डि एटकामत्र।। গণে कटर् मोत्रदमव स्त्रः **चरिश्चकि।** कम्म श्रूरश्यतः क्षांत्र हर्जुर्फिता ब्झांछि॥ यूर्न मर्छ। नर्स युद्धित एक क्षेत्रानिक। नग्न হাজার ক্রোশ রথচক্র পরিমিত।। অরুণ সার্থি হার বিচক্ষণ মতি। ছুই হাজার ছই শত নিমিষার্জে গতি॥ পুনরায় গণে কৃছে শুন মহাশয়। জন্ধ क्र स्वारमव रमरवत छम्।। अनरवत पूर्ति गव मुक्त खरनरक । नामकी ভূঙীয় ৰূপা হয় বিকালেতে।। ব্ৰাহ্মণ বিকালে সন্ধ্যা করেন আচার। আর আর যত আছে নিয়ম তাহার।। বিধি পুর্ব ব্রহ্ম অনুষ্ঠান করে যেই। অবশেষে ফুর্মলোকে বাস করে সেই।। ব্রাহ্মণ কব্রিষ বৈশ্য বেচে অধিকারী। উদয়ান্ত অর্থ্য দের দরশন করি॥ সভ্যের নামেতে ভব পাঠ করে যেবা। প্রত্যেক মন্ত্রেতে অর্থা করে সুর্বা দেবা।। জবা আদি তুর্বা तक ज्यान कत्रवी । पञ्च त्यति पित्रा अर्घा श्रृ किट्वक् त्रवि ॥ वात मारम मध्य-মেতে যেবা পুলা করে। পৌষে যথা সপ্তমীতে আর অর্কবারে।। নিয়ম বরিয়া করে ব্রুত চাম্রাকাণ। ইহাতে সকল লোক হু:খ বিমোচন।। যাব-দীয় শরীরেতে শান্তি হয় রোগ। ভক্তিতে পুজিলে প্রাপ্তি সুর্যালোক ভোগ ॥ রবি সংক্রমেতে সূর্য্য গ্রহণ যে হয় । সার বস্ত্রগোস্বর্ণদান যেকরয় ॥ , অতিশয় কল প্রাপ্ত হয় সেই নর। এই স্থানে বাস তার থাকে নিরস্তর।। অন্য নিয়মেতে আছে অনেক সাধন। সে সকল কেবা পারে করিছে। বর্ণন। দশস অধ্যায় তবে সমাপ্ত হইল। কাশীখণ্ড অমৃত স্থাদ প্রকাশিল ॥

## ् निवनकात रेख भूत वर्गम ।

পরার। একাদশ জ্বার কথা শুন বিবরণ। ভাহার রুপ্তান্ত করি বন গণ।। সুর্বা পুরি হইতে লিবদর্মা যে চলিল। তদুর্দ্ধে অপুর্ব পুরী দরশন হৈল। ইহার জারণ শিবদর্মা জিজ্ঞাসয়। গণে করে সহস্রাক্ষ্ণ পুরী এই হয়। দেবরাল বসতি করেন এই স্থানে। পুরীর ঐশ্বর্যা কত করিব বর্ণনে।। চন্দ্রকান্ত সুর্বাকান্ত নীলকান্ত মানি। পারিজাত পুঞ্চা আর শচী বার রাণী।। সভাকাল আছে কাম্বেল্ফ কম্পর্ক। তারন্ত্রিংশৎ কোটি দেবে শোভে সহস্রাক্ষা। গল্পর্ব জ্ঞানার বিদ্যাধরী বে অনেক। নৃত্য গীত লানা বাদ্য বর্ণিব কতেক।। জ্যাকলা দিনে চন্দ্র প্রকাশ ইন্দ্রালয়। চন্দ্রের

কিরণ অবশেষ নাছি হয়। উতৈঃপ্রবা এরাবত হস্তী বিরাজিত। নারদ প্রভৃতি সব মুনিতে বেন্টিত।। এই ইন্দ্রবাজ পুরী স্বর্গ স্থান নাম। বিশ্ব-কর্মা নির্মাণ করেন অনুপাম।। অথনেধ অগ্নিহোত্ত অগ্নিত্রত সার। ভুকা পুরুব দান করে অনশন আর।। আর আর নিয়ম আহরে বহু মত। ত্রাক্ষ-ণেরে ভুক্তিভাবে পুত্তে অবিরত।। এই পুরী বাস করে শচীর সহিত। ইহা সম লিভুবনে আহে কি কিঞ্চিৎ!।

#### ---

### भिवनचांत अधि दान मर्नन।

श्वात । कांधे होन मतभारन जिल्लांत्रिल जिला कि अंकांद्र लगा रेहत অ্ত্রি মহাতেজ।। গণে কতে শুন স্থা ইহার উৎপতি। নর্মাণা নদীর উটে নশ্বপুরে স্থিতি।। দ্বিজ্ঞবংশ আন বৈশ্বাসর যেনামেতে। বিচার করুরে তেঁহ লর্বিভে। ভাবেতে।। ত্রক্ষাচর্বাগৃত্বী বাগঞান্থবনগভ। ইতি মধ্যে সেক্ষোনআ-প্রান আচরিত। এতিন আন্তামহতে ভাল গৃহাত্রার।। গৃহা আগ্রমেতে সকলের লাত হয় ॥ অতএব বৈশানর গৃহত্ব আশ্রয়।। এই মত সূচীসভী বিবাহ ক-রিল। পরেবৈশ্বানররুনি যোগ আরিজিল।। মহাদেব পরায়ণ চিন্তিত ক্রদয় এইৰেপে বছদিন কাল গত হয়।। স্চীর সন্তান না হওয়াতে ভাবিত। পতি ্স্থানে বছুমতে হইয়া থেদিত।। করুগোড়ে কছে বাণী করিয়া বিনর। তব পাদপত্রে গ্রন্থ কিছু নিবেদয়। হেন বাকা পত্নীর শুনিয়া মহামুনি। অনু-মতি ফরিলেন কহ জিলা শুনি। স্থানীর যে আতা লইয়া স্চীসতী কয়। পুজাসন্তানের লাগি বড় খেদ হয়।। বৈশ্যানর করে প্রিয়া করহ প্রার্থন।। খাবশা হইবে পুজ না কর ভাবনা ।। প্রার্থনা করেন দতী পতির জাজাতে। লিছ সম পুজ হবে জামার গর্ট্গেডে।। বৈশ্বাদর পরী বাক্য অসম্ভব শুনি। गमापि यारगरक विन जारक जाशिन।। उरके आर्थना देशन जाविक আন্তর। ক্ষণে মৌন থাকি ছিজ করিল উত্তর।। মুখ গভ বাকা ঈশ্বরের উক্ত হয়। তব পুজ শিব হুলা ইইবে নিশ্চর।। এই বর দ্বিজ দিয়া চলে काली भूती । अधरमरक मनिकर्निकां स्थान कति । आह आहि एर्नन कतिहा श्रुनिवत । विरुष्णक मिश्र जांत्र मिलिन विश्वतः। मुर्बरुक मर्भन कृति इतिय ছইল। সম্ভানের লাগি মুন চিস্তা যে করিল।। কাহার সাধনে শিব সম शुक्ष १८व । कटनक विषात माथि निरुद्धभन्न गिरुन ॥ हेश्रंत माथरेन करनटकत নিদ্ধি ভন্ন। বিশেষদরে জারাধনা করিব নিশ্চর।। মণিকর্গি পঞ্চিমে

পিত শির্মিক। যোগ আরম্ভিলা মুনি নাহি যোগ ভক্ষ। বাধনেতে বৈশ্বা নর নিরম করিল। মাসাত্রত জ্বনাগত ক্টেতে রহিল।। এই নভ ক্রের্ড্র मान গত इहा। हम्मकूट खान कति छशना। कत्र । मिनक्रिकां हा स कहि আইনে দ্বিজ। নিদ্ধেশ্বর মন্দিল্লেডে শিবের বিরাজ।। অভবংশরের শিশু শিরে জটাভার। ত্রিনেত্র ত্রিপুল হাতে ফণি ভুষা হার।। ব্যায়চর্মা পরি-ধান ভস্ম মাথা গায়। ওষ্ঠ লাল মৃদ্ধহাস ললিত যে কার্য। পাদপঁল ক্লিবা क्ष वर्गत अभात । क्षभ प्रविध मुनिवत देहन हमरकात ।। आंग्हर्या प्रिविद्या বৈশানর মহায়ুনি। গদ গদ প্রেমভাবে ভাবেন অমনি।। ভাতি ঐক্য স্তব তবে করি তার পর। এক ত্রন্থ অন্য কিছু না হয় বিচার।। শুনতি এই মুনি কহে ব্রহ্মক্তময়। নানা বস্ত কিছু নহে অব্যয় সে হয়।। জলে যেন চন্দ্র রূপ দ্বিতীয় দেখায়। অ্বর্প রজ্জুতে বর্প ভ্রমেতে বুঝায়।। বিস্কৃকেকে মুক্তাঞ্চান সে যে কিছু নয়। অসমাত্র দরশন দ্বিতীয় নাহি হয়।। ত্রহ্ন এক क्ष वश्च क्रांनिश निम्हम । अहे क्रांन मनि व्यक्ते खर रा क्रमा क्रां क्रिन মহাদেব তৃষ্ঠ হৈয়া তবে। সতী গৰ্ৱে শিব পুত্ৰ নিশ্চয় হইবে॥ এই বর বৈশ্বানর পাইয়া সত্র। চলিলেন নিজালয় সভীর গোচর।। ছাদশ অ-থা। স্ব ইছা কহিব বিস্তার। যে মতে সতীর গর্মে শিবের সঞ্চার।। জগস্ক কংখন শুন লোপায়ুদ্র। বভী। তৈথানর ঘরেছে শক্ষর ছারান্ধতি।। সূচীর যে গব্ধ হৈল অনেক সাধনে। চক্তকলা প্রায় গর্ৱ বাড়ে দিনে দিনে।। গর্ভ বাদ দশ মাস যে যে কর্মা ছিল। বিধিমতে মুনিবর স্কলি করিল।। গণে কহে শিবশর্মা শুন অভঃপর। অমৃত আখ্যান তবে কহিব বিভারে। শুভ দিনে শুভক্ষণে গ্রহ যে উত্তন। বৈশ্বানর মুনির যে পুজের জনম।। স্বর্ম মতা পাতাল হইতে দেবগণে। खजा विकू मर्ट्यत स्वकी वहरन।। ह-लापि (प्रवका आंत सूनि अधिक्षण। मकटलत कथाहा (ग्र देशल आजमन।। ভগবতী লক্ষ্মী যে সাবিজী শচী কার। বিদ্যাধর গন্ধর্ম অপসরী যে অপার । मक्रम जाहादत गटव धानीस्ताक करत। जानक छेरत्रव देश्य देवसानत ঘরে।। গ্রহপতি নাস তার করিল জাখানে। জাতকর্ম লাকি বন্ধা করিল व्याभरन ।। ब्यांनीर्साम कडिया मकल (प्रवर्ग)। अञ्च श्वारन मकल्वत भरद्रहरू গমন।। अञ्चासन कर्नट्रां हुज़ाफि कदन। शक्ष्म वर्श्नट्र मोक्ना ह्या असा-য়ন।। বৈশ্বানর পুত্র কইয়া মহত উল্লাস। লালন পালন করে আর বিদ্যা-जाम।। अस्त्रेम वर्गद्र देवन गार्ख्य छ । श्रीष्ठ । श्रीष्ठ श्री द्वारे देवन পুজ खगांचिक।। नवम व बगदतहरू महत्र करशांचम। देवसासूत्र गृटक्टक

कतिना कार्यम् ।। खार्शिष्ठ (मश्चि मूनि मस्ति । स्टैल । स्निमीकाम कति ডবে কহিতে লাগিল।। যার খবে পুত নাহি রখার সংসার। পতি পুত ছীন পত্নী ছর্ভাগা ভাগার।। পুজ মুখ পিতা মাতা না দেখে যাবত। নর-क्तिएक नाम क्षीत थाएक एर कारक।। शुक्क प्रथ पृष्ठ देशक मत्के ना इत्र। ঐিক পারব্রিকের যে নিস্তার নির্ণয়।। ছেন্ডাঞ্চ উরস জাত আরু করে ক্ষে। দ্বা আর গড়ে পাওরা দৌহিত্র যে হয়। আপদেতে ত্রাণ করে নেহ পুজারত। এই মত সপ্ত পুজা শাস্ত্রের সমত।। পিতা মাতা সময়ে পুল্লের কেহ নাই। পিতা গুরু মাতা তার তীর্থ যে দর্শাই।। পালনে ধা-त्र १ शर्द्ध माला (अर्थ एस। यह माल अरमक अर्कारत सूनि कस।। अहलिल অত্যে আনি হস্তাদি দেখার। ওর্ছ দস্ত ভালুকা দেখিয়া মুনি কর।। শুভ-ক্ষুণে উদয় যে হয় পুজা তব। ইহার লক্ষণ আমি কতেক কহিব।। শরী-েকে স্ত্র ধবি তিন গুণে দেখে। শতাঙ্গুলি হইল স্ক্র থাকিবেক স্থান। নেত্র ভুঞ্ নাগা বক্ষ হয় দীর্ঘ বার। চাঁচর চিকুর হস্তাঙ্গুলি দীর্ঘ আর॥ হস্তাদি পাছু হা তালা তালুকা মুন্দর। নেত্র গলা জিহ্বা ওঠ নথ যে অ-ধর।। এই সপ্ত স্থান যার রক্তবর্ণ হয়। বক্ষ কুক্ষি হস্ত পুতি কর্ণ নাসিকার ঃ এই ছয় উজ্ন কপাল কোটি আর। গ্রীবা জানু শরীরেতে শ্রেঠ হয় যার।। এইড বত্রিশ আছে অঙ্গের বর্ণন। ইহাতে সন্তান সুধ নৃপতি লক্ষণ। কিন্তু ज्क स्माव समिष चोमम वर्गदत्र। विद्यार व्हेट्ड विश्व **चाह्र**स महीदत्र॥ ছেন বাকা কহিয়া নারদ বাদ চলি। গণে কছে ফিঞ্চ মহাশর শুন বলি দারদের হেন বাকা শুনি পিতা মাতা। শোক **ছঃখে মগ্ন হৈল** কি কহিব কথা।। বৈশ্বানর সূচী সভী থেদিত অপার। নিবারণ নাহি হয় কি কব বিস্তার।। গ্রহণ্পতি দেখি পিতা মাতা খেদান্বিত। পিতা মাতা প্রবোধ করিল যে উচিত।। জামাকে কাহার শক্তি আছে মারিষারে। তব আজা হইলে পিতা ভলিব শঞ্চরে॥ তবে যত বিদ্ধ আছে হইবে বিনাশ। মাতা পিতা পুত্র বাঞ্চা শুনিরা উল্লাস ।। প্রসর হটুয়া পরে কহে পুত্র তরে। স্থির করিয়াছ পুঞ্জ পুঞ্জিবে শল্করে।। ইহা সম কর্ম নাহি সংসার ভিতরে। বিল্ল নাশ করিবেন দেব বিশেষরে ।। পিতা মাতা প্রণাম করিয়া গ্রহ-পতি। যোড় হভে দণ্ডমান বহুবিধ স্কৃতি।। আজা কর প্রসম যে ইয়েন गर्म। अक दलि खर्भिक कामीएक अरवन।। विस्थात लिक भूका छ-**खारक करह**ी एनशिएनम निक य रक्तिन थाछिमहा। धेरै निक कर्फना क्रेंद्र निवयदे । अवना इस्टि निश्चि कामना एए करते ॥ अङ्गेष्ठि धात-

তর কঠোর করিল। এই ব্রপে শতেক বৎসর গত হইল।। তার পরে ইন্দ্র-प्तिय जातिया ज्यास । तत लह तत्न **ज्याश हेक्**न हम ॥ **अहश**ि तत्न ইন্দ্র বরে নাহি কায়। বরদাতা আমার শঙ্কর মহারাজ।। গ্রহপতি দেব-রাজে বিবাদ হইল। ইন্দ্র বজ্ঞতাাগে গ্রহপতি মৃদ্ধা গেল।। হরগোরী নিজ ভতো কাতর দেখিয়া। র্যভ বাহনে দেঁহে তথ'র আসিয়া।। গাল্লে হস্ত বলাইয়া করি অচেতন। শিব দেখি বালক উঠিল ততক্ষণ।। শিবলিঞা পরি শিব গৌরীর সহিতী স্তবকরে গ্রহপতি যথা যে উচিত।। তুই হৈয়া মহাদেব কহেন সম্বর। স্বর্গে ভাগ্নিপতি হৈয়া থাক নিরস্তর। পিতা মাতা সমিভারে তথায় যাইয়া। নানাভোগ কর অগ্রি পতি যে হুইয়া। ভোমার স্থাপিত শিব নিক অগ্নীশ্বর। মণিকর্ণি পশ্চিমেতে ঘাটের উপর।। এই লিঙ্গ ভক্তিভাবে যেজন পুজিবে। মনোনীত সিদ্ধি যে কামনা পুৰ্ণহবে।। শিবপদে গ্রহ পতি প্রণাম করিল। প্রভু জাজামতে পিতা মাতা স্থানে গেল। পিতা মাতা চরণেতে প্রাণাম করিয়া। শিব আন্তা যত কহিলেক বিস্তারিয়া। পিতা মাতা সহিতে আনিয়া অগ্নিপুরে। অগ্নিপতি হইয়া ভোগ করে নিরস্তরে।। অগ্নীশ্বর শিবের অর্চনা করে যেই। অব্শ্র অগ্নির थाटम वात्र करत रमञ् ॥ अधित नाधना विधिभुक्कि कतिरव । मन्द्राधि इ-ইতে অগ্নি বৃদ্ধি যে হইবে।! আছমে অনেক মতে অ্থির সাধন। অগ্নি-লোকে বাস তারা করে অনুক্ষণ।। সমাগু **হইল একাদশ অ**ধ্যায়ন। ভক্তি ভাবে শুনে যেই পাপ বিমোচন।। নীতানাথ বসুদান অম্বিকা নিবানী। ভাষা প্রকাশিল কাশীখণ্ড সুধারাশি॥

#### -31314-

### निय-मंत्रीत रेनथां छ रमभं शहरन।

পরার। তদন্তরে কহে শিবশর্মা ভিজবর। ক্রমেতে নৈশ্ব ত বাস কহ অতঃপর।। গণে কহে শুন শর্মা প্রথম নৈশ্ব তি। বিদ্ধা পর্কতে ছিল চণ্ডালপল্লিপতি।। অতি ধর্মশীল হর অথমা না করে। সর্বনা লোকেরে দস্যা হস্তে রক্ষাকরে। আর যত লোক পল্লিপতি। সৌরবেতে। সেই পথে নিঃশন্ধা হইরা যায় পথে।। এমনি সৌরব পল্লিপতির যে হয়। দস্যা-স্থানে পল্লিপতি নামে নাহি ভয়।। চণ্ডাল হইরা মাত্র ধর্ম আচরণ। এইনপে বহুকাল করেন জাপন।। একদিন বহুলোক যায় কাশীপুরী। নির্তরে রহিল বিদ্ধা পর্কত উপরি॥ রাত্রি যোগে তাহার পিতৃচ্যো একছার চলিল যাত্রিক জনে করিতে নিধন।। দেখিল সকল লোক সংহার নিশ্বরা প্রান্থিতি কোথা তুমি উলৈংস্বরে কয়। তব যশে বিশ্বাস করিয়া এইস্থানে
দক্ষিক্তে মৃত্যু হৈল কাশী অদর্শনে ॥ উলৈংস্বরে কহে সবে রোদন করিয়া। পলিপতি তথা গেল ক্রন্দন শুনিয়া। ভয় নাহি ভার নাহি ভাকদিয়া কয়। দক্ষ ৰল্যান তথা যাইয়া দেখায়।। পারউপকারে দক্ষা সঙ্গে যুদ্ধ
করে। উভয়ে বিহাদে ভাল হৈল সব নরে।। দক্ষা সব একষোণে মারে
পলিপতি। কাশী ধাত্রি প্রাণ রক্ষা হইল সংপ্রতি।। এই পুণো পলিপতি
নৈখিও ঈশার। বীনজাতি যেবা করে পার উপকারা। অনায়ানে এইস্থানে
বাস হয় তার। বড়াণ পুরির কথা শুন অভংপর।।

#### --

### व्यथ यज्ञनश्रुति मर्लम !

পমার। ফুপদীঘি পুঞ্জরিণী দে করে ধর্মেতে। জলছত্র ধর্ম ঘট ত্রত মির্মেতে।। অশ্বর্ণা রোপণ থেঁবা কর্মে পথেতে। বিশ্রামের ঘর দেয় পথের মধ্যেতে। ছায়ামণ্ড তাল পাধা জার দান করে। শীতল সামগ্রী মিউ দেয় বিজ্বরে । অভি ষত্ন করি বিপ্রে ভোজন করাবে। বৈশাবেতে **८ मर्वार्फना जात बाहा मिट्य ॥ छोर्थटकत छेशकात कटत टाइ नटत । छोटर्थत** क्रिंग शर्थ सूराम य करता। उन्नां जिल्ला करनदा याता जाउन राज्याता বিনিমূলে পারাপার মৌকাতে ফরয়।। এইসব কর্মকরে শ্রন্ধান্ত চ্ইয়া। বরুণ পুরির প্রা**ন্তি কটিতি আদিয়া।। তা**র পর **শুন স্থা রুত্তান্ত অ**পার। বরুণ বেদতে অধিপতির বঞ্চার।। কর্মন মালির পুজ শুটিগন্ত নাম। ম্নিপুত্র সঙ্গে ক্রীড়া করে। অংবি**ন্তাম**।। একদিন সকল বালক সঙ্গে হলে। জলক্রীড়া করিয়া ভাশেষ মতে খেলে।। ইতিমধ্যে শুশকে ধরিল শুচিমত্তে लहेश यात्र खल मध्या (मध्यानाहि व्यत्य ॥ जावज वालक त्मलि कन्मन करिल শুচিনর পিতা আবে সংবাদ করিল।। জলক্রীড়া জনা সবে গিয়।ছি অলেতে। তব পুত্তে গ্রহণ করিল শুশকেতে।। নমাধি ঘোলেতে মুনি ছিলৈন তথ্ন। যোগভঙ্গ না করিল মুনি তপোধন। ভারপরে স্যাধিতে দেখে মূনিকর। শুশকেন্ডে পুজাধরি জলের ভিতর । সমুদ্র নিকটে লইয়া दिश्च गर्लान्द्य। द्रगकाटन इष्टेब्ट्श पून पित करत्र॥ ममूखंटक कन ক্লিদ্ৰ ওন সাবধান। এই ভাচিমন্ত্ৰ পুজ বৰুণ আখ্যান।। সমুদ্ৰ বলেন প্ৰভু কিছুই না জানি। অশকেতত ধরিরা দিয়াছে মোরে আনি।। গুণকে তা-্রিক কবে পুত্র কৈন কোলে। স্বর্ণ অলকার দিল শক্ষরের বোলে॥ খ-किंगरक मामाहित। कुर्फाभरम मिल। शहर कुछ देवलाटम लहेत। करन शाला।

হরগোরী দেখি পুত্র আদন্দ অন্তর। যাহ পুত্র হবে জুলি বরুণ জ্লাপর।।
তৎপরে শুনাক জন্ত বৃদ্ধনে থাকয়। গুচিমন্ত আইল গুনিবরের আলর।
স্লাধিতে ভঙ্গ হৈয়া মুনি দেখি পুত্র। সন্তান কোলেতে করি জলে ভাসে
নের।। তারপরে পুত্রের মন্তক ধরি করে। আশীর্কাদ কৈল লুনি অনেক
প্রকারে।। কত দিন পরে শুচিমন্ত তবে বলে। তিজিব ঈশানে পিতা তৃমি
আক্রা দিলে।। শুচিমন্ত বিচন শুনিয়া মুনিবর। আনন্দিত হৈয়া কহে
ভজ্জহ শক্ষর।। শুচিমন্ত পিতা আক্রামতে কাশী গিয়া। বিশেশর নিকটেতে একাগ্র শুইয়া।। কঠোর তপ্যা। করে ছাজার বংসর। প্রদান স্ট্রয়া
শিব কহেন সন্তব।। বামণেশর লিক্স শ্বাপন করিয়া। লোলকব বৃক্তণের
পতি যে হইয়া।। বরুণেশ্বর লিক্স শ্বাপন করিয়া। লোলকব বৃক্তণের
তাহার এইবে।। বরুণেশ্বর লিক্স যে জন পুজিবে। প্রশ্বরণাতে মুখতোগ
তাহার এইবে।। বরুণের পুরী এই শুন বিবরণ। ছাদশ অধ্যায় তবে হৈল
স্বাপন।। বাশীর্থত সুখাভাও অমৃত সম্বাদ। সীতা লথি বন্ধ কহে শুনে

#### -3434-

# यश वांशुभुत पर्वन ।

প্রার। গণে তহে শুন শিবশর্মা মহাশর। যে প্রকারে বাগু পুরী হইল নির্ণয়। পুতাআ নামেতে হয় কশাপ তনয়। কাশীপুরী যাইরা পুতাআ মহাশয়। বছ যে তপসা করে করিয়া কঠোর। এই করেপ গত হৈল অযুত বংলর। পরেতে প্রস্থানাথ প্রসম ক্ষময়। স্বর্ণ ধারণে হইলেন যে উদয়॥ বর লহ যথা ইছে। কশাপ তনয়। যোগে দেখে অস্তর্নাহ্য রূপ এক ময়। তদন্তরে স্তব করে পুতাআ যে য়নি। পরাহপর স্বয়ং প্রস্থা লোকালা। নিরাকার সাকার আপনি হরিছার। ইছা শক্তি হৈতে সৃষ্টি গালহ সংহার। শিবজান শক্তি ইছা একত্র উনয়। লগতে হা প্রস্থার হেতু এইত নিশ্চয়। বায়ুরপে হও প্রস্থা লাকার উনয়। স্বয়রণে তান তুমি হও শরীবেতে। প্রস্থার স্বর্গতে করহ গ্রমা। কর্ম নাছি শুর বর্ণির কি আমি। চক্ষু নাহি দেখ তুমি সকল সংসার। কর্ম নাছি শুর কুমি মহিমা লগার। হাল নাহি হয় বর্ণির কি আমি। চক্ষু নাহি দেখ তুমি সকল সংসার। কর্ম নাছি শুর কুমি মহিমা লগার। কর্ম নাহি কর করি কয়। আমা নারীর নাছিক মুর্ভি পুরননোহনী। এইবিলে বছবির শ্বন করি কয়। কমা বর কি আর ঐ পদে ভক্তি রয়। কহিলেন মহাদেননিত্রত হয়য়। সম্বারী পতি তুমি জেনি কর নিয়া। বায়্র য়ম্পর লিক স্থাপিত জেনি।

এই শিবলিক যেই পু. তে একবার ॥ ঐহিকে ঐশ্বর্য অন্তে শিবপুরে বাস এই বাক্য বলি অন্তর্ধ্যান ঞীনিবাব।।

### जय कूररदत्त भूती मर्गन।

প্রার। কহিব কুবের পুরী শুন বিষরণ। শর্মা কছে কছ সখা পুরীর বর্ণনা। বজ্ঞদন্ত ভাজাণের গুণনিধি পুজা। মাতার নিকটে থাকে সর্বদা একরা। লালন পালন করে মাতা বছ রূপ। পিতা সন্নিদানে পুজ হয়ত বিরপ।। সর্বদা যে যজ্ঞদন্ত পত্নীকে জিজ্ঞানে। গুণনিধি আমার নিকটে নাছি আনে। কি করে কোখার থাকে জিজালে না দেখি। পত্নী কছে সদা বিদ্যা অভ্যাসেতে রাখি।। দুতকর্মে কেবল পালন গুণনিধি। খেলায় সর্বস্ব ছারি রহে নিরবধি।। ক্যানের এই রূপ হইল চরিত্র। পিতৃ সমিভারে বাস না হয় একত্র । পরে যজ্ঞদন্ত পুজ বিবাহ যে দিয়া। এই রপে কিছু কাল যাপন করিয়া।। কোন রূপে ছিল্প পুজ চরিত্র জানিল। জোধভারে রমণীকে কহিতে লাগিল।। ভোমা স্থানে নবরত্ব আহিরে আমার। খেখনি জানিয়া দেহ প্রয়োজন তার।। পতির এমন বাক্য শুনিয়া ভাজাণী। স্থামীকে প্রবোধ করি বুঝান তথনি।। জোধ হৈয়া জিজ্বর কহেন ভাগাকে। বভনতে প্রভারণ করিবা জামাকে। পুজ আর তব মুখ না দেখিব কছু। দ্বিতীয় বিবাহ করে যজ্ঞদন্ত বিভু।। ক্রন্দন করমে পত্নী স্থামীর লাগিয়া। গুণনিধি পরে আইল সমান শুনিয়া।।

জিপনী। মাতার দেখিয়া থেদ, কি কহিব শুনি ভেদ, তারণো চলিল গুণনিধি। দিবা হৈল অবসান, কুণায় আকুল প্রাণ, কিনে নিবারিব যে প্রবাধি। দিবদ হইল ক্রণ, শিবরাজ দেই দিন, শিব পুলা হেতু কেহ যাম। মিন্টায় প্রগন্ধ পায়, গুণনিধি হৃষ্ট ভায়, সঙ্গে সঙ্গে চলিল তথায়॥ বন মধ্যে শিবলিজে, পুলিডেছে নানারজে, নিজাগত হইল সবার। গুণ-নিধি থিলে দিবে, তথায় মাইয়া ফিরে, দেখে দীপ নির্বাণ আকার॥ পরিধান বস্ত্র চিরি, সলিতা দিলেন করি, প্রক্রেলিত প্রদীপ হইল। মুডেক নিন্দীর্ম ছিল, সকলি কাপড়ে নিল, গুমনেতে নিজিক জাগিল।। চোর বলি, গোর করি, উঠিয়া সকলে ঘেরি, মার মার বলিয়া চলিল। প্রথ মধ্যে ধরি কেনে, কেহ মারে ক্রিদেশে। গুণনিধি প্রাণ ক্লে ভাজিল।। মুম্বুত জাসি

र्घाटतः यद्भ हिड मध्यकरनः, वाक्षिया सङ्घा गांग (भारत। दननादन नियमुङ শদ করে অনুষ, ছাঁড ছাড লিব্ভত কেলো। তব দগুনীয় নহ. मम खिलित त इस, का विकास पारानाच्या । " : पृष्ठ तरम ७८६, धारम धामखा नाद, भाभी बन कर यांना किट ।। यन यमकूठ इन, भरे गांचि भूगात म, कि क्रिन हेहा। विट्नरण। म'न्टरनन सूनमीट्रम, अविक देकन भीत्य, मोश हांश्रा निवादव मटहरण।' खां। पुत्र खाटह रमय कि कव दाई বিশেষ, শিবরাত্র ভানশন বছে তার পরে কর্লাক্রমে, ভার্কিল ফালন ত্রমে, শিবদক্ত উহ্'কে যে কচে । যম্পুত পালা শুনি, বন্ধা ছাড়ে আ मनि, खननिधि निवज्ञ यस। निवार ब्रिएटिन विधा, किलिल फननि एएफ भुक्तं कर। क्रिन निम्हात जाव र इन स्वर्गमान, लोलझ सम्भनिभाष, सम्भ ाक देवन भागवरमा प्रमाक अध्यान, देव्हर्य विकास हा जायह, करेरा बन থানি িছু বলো। শিবাশ্য আতে াা, মুভ দীপ নিবে কথা, ইঞ্ছ र शा नि वि । प्रताः श्रुवि । तः, श्रवत्यः धनवा**रकः**, उद्देशः । . े : ( P6 + 1) व्या अंग ' देश्या, भारत क्रांमी तृती जिए . लक्क रहन क्रा - বে। বাংকা শ্লেক 🖒 শ, ব্যান্যে গে ভন্নু শেষ, দিন শিব মনে সম্বা শ্ববে।। কাশীশ্বর অবলেয়ে, রাজে ফিরি বারাণ্ডে, ২ব গোরী একজ ÷ইয়া। কুবেনের দেখি যোগ, অতি অসম্ভব ভোগ, রুপা কবি হস্ত বু-লাইয়া। কুবের চেতন পাইয়া দেখি হর সঞ্চে প্রিয়া গৌরী বাম চক্ষতে र्ट्स्तल। दर्शय शोवी दर्शाण्यांक, शत थत कम्भवन्ति, धरमध्य हक्क् हेरूल । सक्ष १८क चम्छन, ८६वि - धन्छी श्रद्ध, छद्द लोनी लिद्दद्ध क्ट्रहरू। किया एक इस्किति, कामाद का क्रिक कटन, आदक मधकत शक्षांतन।। হাসিয়া কতেৰ ভব, শুন িয়, পু। তব, কোপ দুক্তি ন' হণ উচিত। নত কাল ভপ কৈল, একাস্ত যে ওক্ত হৈল, দরা বর ইহাকে বিহিত।। কুলেবে कतिया मया, कहित्लन महामाथा, श्वार्थना क्वर महनानीक। कवित्नन ধনেশ্বর, আর কিবা লব বর, তব পাদ পত্মে রহে চিত।। পরে তবে ক্লপা रम, क्रमण आ मान भय. जूमि ७ छ कारण नथा स्मात । नथांकण देउस, उमि যকপুরে হও স্বামী, ধনেশ্বর হৈয়া বাস কর।। হাশীতে ভব স্থাপিত, শিষ শিক্ষ চমকিত, কুবের ঈশ্বর নাম হৈল। ভিক্তিভাবে যে পুঞ্জিনে ক্রি धनवन्त करत, वक्क रक्षांश कतिरव गक्या। बास्य मम श्रुरत वाम रक दरत थश्चन जान, धरे बाका जामात निक्छ। छात शद्य निक्छाम, मश्राद्यन

অন্তর্গাল, নিজপুরে কুবেরের স্থিত।। গণে করে শুন সধা, চতুর্দিণে পূরী দেখা, ঐ পরী হয় ক্লেনগা। শিব ভক্তি সতংপর, শিব পূজা নিরস্তর, শিবপ্রত করে সর্বর্ধ ক্ষণ।। শিবভক্ত সম্পেরত, কাশীপুরী আসি যত, যথা তথা মরে কাশীস্থানে। তবে এই স্থানে বাস, করয়ে সুথ বিলাস, শিব ভক্ত শিব প্রায়ণে।। শিব পাদ প্রভাবন্দ, ত্রিপদী করিয়া ছন্দ, সীতা নাথ বস্তুদাসে ভাবে। কহিলেন বিরচিয়া, মূলগ্রন্থ বিস্তারিয়া, ভাবা করি পাচালী প্রকাশে।

প্রার্থ শিবশর্ম। কহে দখা করি নিবেদন। কি কর্ম করেন যভ পুলধারীগণ। গণে কছে শুন দ্বিজ ইচার বুর্গন। জটা যে মকুট মাথে স্থেক যে ববণ। পুল হস্তে একাদশ একত্র গমন। নিজ ভক্ত রক্ষা করি করের অমণ।। সদাকাল কাশীনাথে অর্জনা যে করে। দেবগণ রক্ষা আর ভক্তগণ পরে।। ইহারা কাশীতে বিশেশর স্তব করি। শিব পদে লিগু হয় ক্লক্ত মূর্ত্তি ধরি। কাশীপুরী ক্লক্রেশরে পুলে যেই নরে। এই স্থানে অবশেষে সদা বাস করে।। সমাপ্ত হইল অরোদশ অধ্যায়ন। শুনিলে লভ্রে মুক্তি ক্যাসের বচন।।

#### -31216-

### ण्य हुन्द्रभूती पर्नग।

ভাব কিরে মূচ মন আর কি ভোর ভাল হবে। দিনে দিনে
মারাজাল তাহে মুগ্দ হরে রবে। বাল্যকালে জ্রীড়াছলে
কাটাইলে কুড়ুহলে, যৌবনে মদন জালে, জ্বাম ক্রমে মন্দ
হবে। জাইল বার্দ্ধ্য দশা, এখন করিছ আশা, করে রামচন্দ্র ভাষা, চল কাশী শেষে রবে। গ্রা।

পরার। গণ সক্ষে শিবশর্মা চন্দ্র পুরী হান। ক্রমে ক্রমে উর্কৃ উঠি
পার চন্দ্রন্থানা। সুপ্রকাশ স্থাতল স্নিম্ব যে করণ। গণে কহে শুন স্থা
কহি বিবরণ।। চন্দ্র যে প্রকাশে হৈল কহিব বিস্তার। ব্রহ্মার মানস পুরু
অত্রি মুনিবর।। হোরতর তপস্যা করিল মুনিবরে। অনোন্তম নামে নিরক্রম তপক্রে । নির্কি উর্কে সুর্বাস্থান হয় তেকোরানি। অনর চন্দ্রশাস্থান
ক্রমেন প্রকাশি।। চন্দ্রন্থ হৈতে তার বাহির হইল। স্ক্রিণ স্লিশ রস

প্রকাশ করিল।। দোমরূপ বছ ভেজ হইল বিস্তর। দিক দব গ্রহণ করিল তার পর।। ধারণে অশক্ত হৈয়া ফেলিল ভুতলে। মহৌষ্ধি হৈন माम পृथियोमधाल।। তার श्रुत खन्ना माम्म রখে করি লয়। खन्मलाक যথাস্ত্রে গমন করম।। রথ যে অশক্ত ছৈল সোম ধারণেতে। সর্দ্রে প-জিয়া ভেন্স রহিল নিশ্চিতে।। সমুদ্র-মস্ত্রকালে সোম উপজিল। পরের সোম রাজা হরে বাজপের কৈল।। স্বর্গ মর্ত্য পাতাল দক্ষিণা দিয়া দান। অবশেষে কাশীপুরী করিয়। পয়ান ॥ সণিকর্নি পশ্চিমেতে লিঙ্গ যোগে-श्वरत । य श्वारमण्ड मध्य रकांति खाख निक्रवरत ।। मावदारम मादिन भकाख চিত্ত হৈয়া। সোমেশ্বর শিবলিঞ্জ তথাতে স্থাপিয়া।। তাহার সন্মুখে কুগু कति त्रामताक। त्यातकत ज्ञानमा माथि निक क्षा। ज्ञास्तत इतत्रीती প্রদান হইয়ে। সোমরাকে কহিলেন সম্ভাষ্ট হৃদয়ে।। তোমার স্তবেতে ভৃষ্টি হইল আমার। যেই বর চাহ মনোনীত যে তোনার।। সোমরাজ তপভক্ষে দেখে বিশেশরে। বছবিধ স্তব করি কহিল সম্বরে॥ তব পাদ-शर्षा क्षणु कति निरंतनन। जाहला जिल्हारू रयनना द्य थंखन।। रिगरिय जूसे महात्मत देश्या जात शदत । हक्क्टलांटक ताजा जूमि इस नितस्रदत ॥ ভুমি মোর বড় ভক্ত ভাহার কারণ। ললাটেতে এক কলা করিব ধারণ।। তব তপস্যার স্থানের ফল কি কহিব। ঐ কুত্তে মান তর্পুণাদি যে করিব 🕫 নিজ পিতৃ দেবঋণে সে হইয়া মুক্ত। তব পুরে বাস সদা হইবে নিযুক্ত।। আর শুন শিবলিঙ্গ ভোমার স্থাপিত। পুজিবে যে এই লিজ টংগা আন-**फिछ ॥ कुक्थ शत्क जात्रामिनी मश्यम क**हिया । हजूक की मिटन छेशवादनाट পাকিয়া।। অমাকলা দিনে চক্ত্র কুণ্ডে স্লান করি। দান আক্ষ তর্পণাদি শিব-পুজা সারি।। এইক্সে বিধিমতে সকল সাধিবে। ভারপরে ভারশেষে পারণ করিবে।। ঐশ্বর্যান্বিত হৈয়া নানা ভোগ করে। শ্রীরাম্বে তার ৰাস হবে ভৰ পুরে।। এভেক বলিয়া শিব হৈল অন্তর্গ্যন। তদন্তরে চন্ত্র **দেব নিজপুরে যান।। দ্বিজবর ক্রমাগত রথেতে** গমন। চতু**ত** শ অধ্যায় इहेल गुमालन ॥

一种公子

### व्यथ नुक्त भूती मन्म।

পরার। লোপায়ুক্রা নিকটে অগন্তা গুনি কন। শুন প্রিয়ানক্ষর প্রবীর বিবরণ্যা তার পুরে শিবশর্মাগণে কিজানয়। জতি যে আশ্চর্মা

#### BIN PART

शूनी क्लांग फांग इस ।। शक्त करहर मक्क क शूनी हमक्का । सूचित इहें सा खन त्र हा स्कृत हस कर्म कर कर्म हहें कि । एक अकाशिक मान देश अक्र हिंदा। खन ते प्रकित हस कर्म हरें का हस। मक्क परश्र कर्म कर अकाशिक मान देश अक्र हिंदा। मक्क परश्र कर क्षेत्र श्री कर कर ।। के जातांश मन कर में कि या है सा। वक्षण शक्रा कर कर स्कृत कर सा कर कर सा

### व्यथ तुभालाक मर्गन।

পরার। পিরশ্রা নুধলোক দেখি অবশেষে। চন্দ্রপূর তেজ ন্যার
ভাতৃশ প্রকাশে। পুনর্কার শিরদর্শা গণে জিজ্ঞানয়। বর্ণনা করহ স্থা
কোন স্থান ইয়।। গণে করে শুল জিজ্ঞার মহাশয়। আশ্চর্না নির্মাণ পুরী
ব্ধলোক কয়।। যে প্রকাশের বুধ গ্রহ হইল বিজ্ঞার। বিশেষ করিয়া কহি
শুল ছিল্ল ভার।। গুরুলালী হরিতে চন্দ্রের মাত হৈল। দ্বেতা সকলে
নিলি চন্দ্রে নির্মোল । গুরুলালী ভারা সব গুরু মধ্যে হয়। হরণ করিলে
পাপ হবে অভিশয়।। দেবভার বাক্য চন্দ্র হেলন করিয়া। অবহেলে
গুরুলালী গাইল হরিয়া।। নিজন্থানে চন্দ্রদেব ভারা লইয়া গেল। দেবগুরু
বৃহস্পতি থেদিত হউল।। পেরে রুক্রগণ সব থেদিত কারণ। চন্দ্রের সহিত
বুদ্ধ অনেক বর্ণন।। বিপক্তর দেখি ক্রের্মা মধ্যন্ত হৈয়া। বুদ্ধ নিবারণ পরে
ভারাকে লইয়া।। রুপ্রতি স্থানে আনি ভারাকে যে দিল। ভারা দেখি
দেবগুরু স্থিরচিন্ত কৈল।। ভার পরে ভারাকে দেখিয়া গর্রকটা। ইবিক
ব্রিক্রেন্ডে গর্ম্ব ভারেন্দ্র, শীন্তগ্রিভা। দেবভার তেজ কন্মু বার্থ নাহি হয়।
বুধ্রাই লক্ষ লইয়া ঐ স্থানে রুয়।। এবড় আশ্বর্ঘা যে স্কল দেব কয়।

**टास्य रात एक भट्टी आंग्टर्श ना रहा।। हेन्ह्रांकश याह्रा किनि नर्सना रा**। भ-ক। সূর্যা তেজ দীপ জ্যোতি না হর পাবক।। কাম ক্রোধ আদি করি ছয় রিপুহর। ইহারা সর্বদা জীবে আছেয়ে নিশ্চর।। এই ছয় নিবারণ যে পারে করিছে। দেইজন হয় জানি জানিবে নেদেভে। চন্দ্র ছিজরাজ रेश्न अहेरत कार्त्त । अक्ववं हस्स रेश्ट शावक खनम ॥ विधित माश्क्रि দোৰ কর্মেতে ঘটার। নির্মাল চল্লের কুলে সকলক্ষ হয়।। ভার পরে তারাকে বলেন দেবগণ। বুধের জনক কেবা করিব আবণ।। ১এই বাক্য শুনি তারা লজ্জিত হইল। অধোমুধে বসি দেবী নিঃশব্দে রহিল।। মৌন দেখি কার্ত্তিকের কুপিত অন্তর। দেহ বাক্য তারা ভূমি গ্রাহ্ম নাহি কর।। কোপাবিষ্ট কার্ত্তিকের দেখি ত্রন্দা কয়। মথার্থ কহিবে তারা পুত্র কার एत्र।। हर्ष्ट शुख्य तुव (प्रती कम खर्धायुर्ध) एक मिर्काल हाल निर्माल हा সুখে।। বুধদের পিতঃভানে অসুজ্ঞা লইরা। তপভা করিতে কাশী গেলেন চলিয়া।। বৃধেশ্ব শিবলিক **স্থাপন করিয়া। কঠোর জ**পত্তা যোগ করেন বসিয়া। ঐ লিজে মহাদেব হইয়া উদ্য়া বুণ ভূমি বর লহ পাহা ইচ্ছা रशा तूपरमव रगांगकरक रमशिला **मक्ट**रत। दिनश श्रृतिरक खत नांनाविध করে।। তুমি স্থক্ষ সুল হও রূপার সাগর। মানার স্বারায় সৃষ্টি পালন সংহার।।তোমার মহিমা দেব কে কহিতে পারে। বলি ইন্দ্র হৈল পুঞ্জি যে পিণাকেশ্বরে ।। ধুর্জটে নীলকণ্ঠ নহা স্মাশানের প্রতি। আনন্দ কানন হৈরা জীবে কর গতি।। তব পদে মতি মোর থাকে অনুক্রণ। স্তব শুনি -মহাদের বলেন তথন।। ভূনি যে হইবে অধিপতি বুধপুরে। বুধগ্রহ তব নাম আদশ্ চক্ররে।। সকলের প্রদীয় হইবে সম্ব। বুবপুরে কুখভোর কর নিরপ্তর।। আর এই বুবেশ্বর লিফ যে পুজিবে। বুদ্ধিমস্ত সুখভোগ অনায়ানে হবে।। অত্যে তব পুরে নাস ইথে মাহি আন। এতেক কহিয়া महारमच अखर्कान ॥ शक्षनम अधाय हरून नमाभन। , श्वनित्त नखरत मुख्लि পাপ ৰিশেচন। 🤏 -

#### खाश खड़ाशूत मर्नम।

প্রার। তদত্তর শুক্রপুরী হৈল দরশন। গণে কহে শুন স্থা কহি
বিবরণ। সহত্র বৎসর ভূঞ তপজা করিল। ভক্ষণ গোধুম রেণু নিয়মে
রহিল। তাতিশন ঘোরতের তপ্তা করম। তাহা দেখি ভূতনাথ হইমা
সদয়। মৃত বিজ্ঞবনী মস্ত্র ভূজকে দিলেন। হরপৌরী কার্ত্তিক গণেশ না
জানেন। অন্য কেই এ মন্ত্র না জানে ভূবনো হেনমন্ত্র মহাদের দিলেন

पृथ्वचारन । पृथ्वदम्य **बसू**य कूटलत खद्गकन। मक्किननी मञ्ज शहिता मन इर्य मन ।। श्रासूत निश्नारक्ष गव धारक शुक्र वरल । छात शरत श्रासक असूत কোন কালে।। শিবগণ সঙ্গে যুদ্ধ ঘোরতর কৈল। একদিন অনেক অনুর নতী হৈল।। অন্ধক যে ভৃগুন্তানে নিবেদন করে। তব রুণা হৈতে জাছি নির্ভর শরীরে।। আদাকার যুদ্ধেতে অনেক দৈতা মরে। ভূমি ও**ল্লা**না করিলে কেবা রক্ষা করে।। এই বাক্য শুনি শুক্রাচার্য্য বিচক্ষণে। তব বৈনা এক্ষাকর দেখ বিজ্ঞানে।। শুক্রাচার্য্য মন্ত্রপুত করিয়া তখন। প্রত্যে-কেতে নাম ধরি করিল স্মরণ।। তবে যত মৃতাসুর বাঁচিত সম্বরে। শিব-গণে মার মার **ঘোর শব্দ করে।। শিবগণ সঙ্গেতে** যে মহাযুদ্ধ কৈল। না পারিরা শিবগণ পরাজয় হৈল। তদস্তরে শিব দৈন্য নন্দিকে লইয়া। শিবেরনিকটে সবকহিল আসিয়া।। শুক্রাচার্যা অসুরের হইয়া সহার। মৃত দৈভাগণে অবহেংলেতে বাঁচায়।। মহাদেব শুনিয়া নন্দিকে আজা হয়। গুক্রাচার্যে। ধরি তুমি **স্থানহ নিক্ষয়। স্থাক্তা**যাত্র যায় নন্দী নহাহর্য टेश्या। स्निन कट्या ভার্মবেরে काशिल ধরিয়া। एउट्यागर्पा प्रिये स्निन উদরে রাখিল। সম্বংসর শুক্রদেব উদরে রহিল।। বিশ্বরূপ দর্শন করে। সর্ম্বক্ষণ। বাহির হইতে নাহি পার নিদর্শন॥ লিঙ্গদ্ধার দিয়া শুক্র বাহির হুইল। স্তব স্তুতি মহােেরে অনেক করিল॥ তুর্যু হৈরা মহাদের ব্রদিলা ভারে। যাহ তুমি শুক্র গ্রহ হইবে অচিরে॥ অবশেষে দেবতা অস্তুরে বুদ্ধ হয়। দৈত্যগণ লা পারিয়া হৈল পরাজর।। শুক্রাচায্য আনন্দ কাননে গিয়া পরে। লিজ যে স্থাপনা করি পুজরে শক্করে॥ পুপ্রজাদি বিল্পত্ত সমিধ বতেক। পঞ্চাজার বৎসর অর্চনা অনেক॥ ইহাতে যে রুপা না হইল মহেশ্বরে। আহার গোগুলি রেণু করে ভার পরে॥ এই মত হাজার বৎসর তপ করে। তুই হৈয়া মহাদেব বলে ভার্গাবেরে ৷৷ বর লহ গুকা-চার্য্য ভব মনোনীভ। প্রভু দেখি শুক্রাচার্য্য হৈল আনন্দিত।। বছবিধ স্তব করে পর্য ভক্তিতে। স্ব্য সোম আদি করি অফীম মূর্ত্তিতে। তার পরে শুক্রাচার্য্য কতে মহাদেবে। শুক্রপুর অধিপতি তুমি যে হইবে॥ আর কহি তোমার স্থাপিত শুক্রেখরে। শুক্রবার অইমীতে পুরে বেই নরে। সুথজোগ করি অন্তে তবপুরে যায়। বর দিয়া অন্তর্জান হইল দরামর॥ শোড়ব অধাার যে অমৃত বিবরণ। কতদূরে মঙ্গলের পুরী দর-শন । সীতানাথ বসু দাস অমিকা নিবাসী। কাশীখণ্ড সুধাজাণ্ড ভাষাতে প্রকাশি ।

#### ष्थ मझलालाक पर्नन।

প্রার। গণে কংছ শিবশর্মা ভূমি ধীরবর। মঞ্ল পুরীর কথা শুনহ সম্ব।। उन्हात मानन পুজ সপ্তথ্য খাত। সৃষ্টির প্রথমে হয় করে থাৰ মাত।। সপ্তমধ্যে অজীরার পুত্র অঙ্গারক। দিভীয় মঙ্গল নাম জানে সর্ফলোক।। অঙ্গারক কাশীপুরী গিয়া তার পরে। সর্ফ তীর্থ ক্রমে ক্রমে मत्रभनाखरतः।। भिवनिय स्थाना कतिया कुछ देवन । भरखदर्भत धात তপ্রা। করিল।। তার পরে প্রমন্ত্র ক্রদয়ে গঙ্গাধর। মুনি অঙ্গারকে শিব দিলেন যে বর । **অঙ্গারকপুরে বা**দ তোমার হইবে। তব শিবলিঞ ভৌমেশার যে ঘুষিবে॥ ভৌমহারে চতুর্থীতে যে পুজে একান্তে। মন দিয়া শুন কহি ফল যেই অভে।। তব পুরে বাস হয় মুক্তি পদ পার। আর কল কহি শুন ভিজ মহাশয়।। ঐ স্থানে ঐ দিনে শ্রাদ্ধ যেই করে। সমৎসরের আক্ষকন প্রাপ্তি হয় তারে।। পরে শিবপুরের ঋনহ বিবরণ। গণে কহে শিবশর্মা করি নিবেদন।। রহস্পতি বারাগনীপুরীতে ঘাইয়া নিজ নিমে শিবলিঞ্স স্থাপিত করিয়া।। সন্মথেতে কুণ্ড করি তথ জার**্** ভিল। সহস্রবংশর **অনাত্রভেতে** রহিল।। তারপরে চিন্তামণি প্রসত্র হইর।। লিঙ্গহতে তেজোময় ৰূপ প্রকাশিয়া।। শিব দেখি রুহম্পতি স্তব করি কয়। ভূমি হও মুক্তিদাতা জ্ঞানের বিষয়।। অইম শ্লোকেতে স্তব করি এই মতে। মহাদেব ভুকী ধরে কহিলা সাক্ষ ভে।। রুংপেভিপুরে ভব বাস যে হইবে। তোসার স্থাপিত লিঙ্গ ভক্তিতে থুজিবে।। ভব পুরে বান ভার অবশ্য হইবে। অন্তেমোক সুপভোগ ঐথিকে করিবে॥ আর यिन द्रश्र्णां विदारत शुरुष इत। श्रृष्ठा रेक्टन धर्रे मिर्न श्रिन् ह तह।। कि विकस्त महारम्य बक्तांटक शामिल। व्याक्कामिटल स्मर्वक्त मुह्म्यकि হৈল।। তোমরা সকলে আচরিবে বিধিমতে। ভছুপরে ভ্রহ্মানি দেবতা ভাৰতে।। यथाविध दृश्म्भिंछि भूषः। भरत करतः। ভার-শধ্যে সকলে গেলেন (एकपूरत ।। उपखरत सर्वात्पव देश्य अख्यान । इश्यां के प्रवरत काहेंगा. विकश्वा ---

### অথ শনিপুরীর হতান্ত।

িপ্রার। অভঃপর শনিগ্রহ পুরীর র্ত্তান্ত। অত্যার মানস পুত্র মরীচি সুর্ত্তিবন্তা। তার পরে পুঞ্জ কলাপ দক্ষকনা। বিভা কৈল। তার পরে সুর্বাদের উদস্ব বে হৈল। প্রতিপত্তি কনা। তার সুর্বাদের রমণী। বৈবস্তভাস্তরে হৈল

कनम निक्ति । यसून। इट्टेन कना शुक्त देश्य समा शदा ककी युर्गाटक পারণে অক্ষম।। কি করিব ইহার যে উপায় চিন্তিল। ভারপরে স্বৰূপাকে নিজে প্রকাশিক।। অরুপাকে কহে তথ্য গোপন বচন। সূর্যাতেক আমার ভাষহা যে ধারণ।। জোপান কইব আমি কিছু কাল ভরে। ভূমি এই বুকান্ত मा करिएव सूर्याहत । अक्षा करूम स्मिती जनमा ताथित। स भर्या ह সুর্যান্তদর শাপ না করিব।। ইহা কৃত্রি ভ**ন্তাদেবী** পিভাস্থানে যায়। পিভা क्षिश करता श्रुतः कृतिल विषेश्च । **यांगीयात गृह (**मरी विषय ना इस्। এইবাকা পিতাস্থানে শুনিত্না জানয় ! চিস্তা করি ছদস্তরে অশ্বিনী হুইল। গহনকাননে গিয়া তথ্য। ব বিলা। শুরু পর আহার ফেবল করি রয়! স্থাতের ধারণ অন্তরে নদা তর।। শেধেতে অরপা গরে সন্তান জন্মায়। সাধশক মুনি শনি কন্যা ভদ্রা তায়।। নিজ সম্ভানের পক্ষে স্নেহ অতিশয়। মতু বৈবস্বত আনে রুত্রান্ত নিশ্চর।। আপন আগর যম নাহিক জানায়। ক্রোধ করি নিজ্ঞাদ মাতারে দেখাও।। সপত্নীর পুত্ত বলি স্বরূপা ক-হিল। তব পদ ক্ষয় হবে নিশ্চয় বলিল।। শাপের রুত্তান্ত কথা পিডাকে জানায়। ধূর্যোর সংশর অন্দ্রে কিছু স্বকপার। শনিকে শ্বরূপা করে শাপ নাহি যায়। কিঞ্চিৎ পদের মাণ্য পড়িত্র। অভয়।। তার পরে মুর্যানের স্বৰ্ধণা অনায়। নিরীক্ষণ করি মুর্যা স্বরূপাকে কয়।। সভ্য কহিবেন দেবী রুষ্টান্ত ইহার। নত্রা শাপিন আমি কহিলাম সার॥ স্বৰূপা রুষ্টান্ত ভয়ে কহিলেন পরে। ভদন্তরে সুর্য্য জাম তথ্যী পিতৃয়বে । কোপদুষ্টে সুর্যাদেব ्पर्य अञ्चि পতि। कनाति वृक्षेष्ठि यव क**रित्यन अञ्चि। एपस्ट**व सूर्याटमय অংশক্রপ হৈয়া। অধিনীর ক্রপে, 🎁 তথার যাইয়া। অশ্বদেখি ভষ্টাদেরী फुडशंडि हला। शार्ष शार्ष सूर्यात्मव खमन कहिला। सूर्यात खमरन তেক চইল পভিত। অসিনী কুমার তাতে হইল উদিত।। অভঃপর শনি গ্রহ কাশীতে যাইয়া।। শিবলিঙ্গ স্থাপনাদি তপ আর্ডিয়া।। আদিনাথ महुके इहेमा भनि श्राल । भनिभूत याम ख्व इहेरव मुखेखि॥ भनिवाद শনীখরে যে জন পুজিবে। শনিপুরে বাস তার অচিরে হইবে। অষ্টাদশে সন্ত্রপ্রবি পুরীপরে দেখি। গণে জিঞাসিল দ্বিজচিত্তে হৈয়া সুখী ৷৷ গণে কছে শিবশর্মা তব ছক্তি মন। জেনে কর সপ্তশ্ববি পুরী দরশন।। জন্মার মানস পুত্র সন্ত থাবি হয়। পৌলস্তা পৌলহ কেতৃ অকি মরিচয়। অ-ক্সিরা বশিষ্ঠ এই সর প্রজাপতি। দৃষ্টির কারতে হয় অকা **ভবছি**তি।। काभी थ्र ७ प्रांकाव काग्रुक नमान । महामूम कथान हरेका नमायाम ॥

## जाथ महाक्षशित इंडास कथन।

পরার। অনস্থা ক্ষেমা শ্রুতি সঙ্গত শর্মান্ত। মৃতি লক্ষা এই
সপ্ত সতী অবন্ধিতি।। মরিচি আদির প্রতি ক্রমে সপ্ত সতী। সর্ব প্রেষ্ঠ
উত্তম বে হয় অরুদ্ধানী।। বৈকুপ্তিতে লক্ষার সহিত ভগতান। প্রশংসা
সভেক অরুদ্ধানীর আথ্যান।। তারপরে সপ্তশ্ববি বারাণ্দী গিয়া। স্থানা
মতে শিবলিঙ্গা স্থাপিত করিষা।। মন্তুনাথ প্রসংলতে সৃত্তিকর্ত্তা হয়।
এই সপ্ত পুরী সুণাবন্ত অভিশয়।। সপ্ত থাবির সংস্থাপিত লিঙ্গ কাশীপুরে।
ভক্তি ভাগে বেজন পুজিবে লিজ্বরে।। ভাত্র তুল্য তেজঃ পুঞ্জ তাহারা
হইরা। এই স্থানে বাসকরে স্বকর্ষ্মে থাকিয়া। অন্তাদশ অধ্যায় যে হইল
বর্ণনা শুনিলে লভয়ে মুক্তি শিবের বচন।। দীতানাথ বস্তুদাস অন্থিকা
নিবাস। শিব প্রদে ভক্তি থাকে এই অভিলাব।।

#### অথ ধ্রুবোপাখ্যান।

প্রার। শিবশর্মা ধ্রুবপুরী নেখি চমৎকার। প্রবন্ধ হইয়া কহ রুপ্তান্ত ইহার।।

ত্রিপদী। বিন্দ করে শুন স্থা, কি আশ্চর্যা হৈল দেখা, একপনে

ত্রমণ করয়। যেন মেরুদণ্ড কায়, পুণা এজ্বলিত হয়, তেতেতে

দেরব না ধরম।। চক্র ভামু একস্তরে, কিবা ফান্তি শোভা করে, কি কহিব

বর্ণনা অপার। একি অপরূপ স্থা, কভু নাহি চক্ষে দেখা, এই পুরী হয়ভ
কাহার।। শুন স্থা গণে কয়, নাম প্রব মহাশয়, বিস্তার শুনহ নহামতি।

স্বাস্তু,-মনুর পুত্র, উন্তানচরণ চিত্র, তলা পত্রী সুফাচি সুনীতি।। মূরুচি
হয়েন ত্রেষ্ঠ, রাজ পাটেশরী জার্চ, ভার গর্রে উন্তম তনয়। সুনীতির গর্মের

ক্রম, উন্তম লক্ষণ সব, ছই পুজ্র উন্তানের হয়।। সুনীতি ছঃখিতা অভি

বিভিন্ন স্থানে বসন্তি, প্রন লইয়া রহে নিরন্তর। একদিন প্রন মাতা, রাজার
সমিধি যথা, পুত্রকে পাঠান জভঃপর।। কি কব ছঃথের দেখি, বালকের

বান্ধি কেশ, ছঃখি বলি নাহি আভরণ। প্রবের দেখিয়া ভাব, মুনীভির

বান্ধি ভাপা, বিধাতা জামাকে বিভ্রম।। প্রাতঃস্থর্য ভেন্স মেন, মণ্ডিয়

বীপ্ত হেন, ইহার যে নাহিক তুলনা। প্রবে মাতা আইয়া, চলিহনে

इर्स देश्या, शिकुशरम अगाम क्रामना।। अना खना निस्तरक, हत्न क्षत প্রতি রঙ্গে, যথা বৈসে পিতা সিংহাসনে। রা<del>ছ</del>-সিংহাসনে বসি, কোলে शृक्ष मृष्ट् शति, উउंग नहेबा इर्ष मत्न ॥ शिक्षमत्त्र कूजुश्त, क्षत् यान হেন কালে, দিংহাসনে উঠিতে উদ্যত। সুকুটি দেখিয়া ধ্রুবে, ক্রোধকরি ৰলে ভবে, নহ বিংহাসন যোগাবত।। উত্তম পুত্ৰ আমার, সিংহাসনে বসি যার, ছঃথিপুজ বদিবে কেমনে। বিমাতার কটুবাণী, শুনি ধুব অভিমানী, क्रभगात कितिल क्रश्त ॥ सूर्का (क्राप्यक त्राह्, त्राका किছू नाहि करह, দুখংমনে ভাবি অভিশয়। দেখিয়া যে মহারাজ, ধ্রুবের মলিন সাজ, ম-त्माकुः च मत्माग्रदश तथा। क्षत नामात्कत मत्म, किरत यान मान-जत्म, বিংহে যেন হস্তী অপুমানী। এসতি বালক ধ্রুব, মনে করি অসম্ভব, মাতা द्यारम हिल्ल व्यालिम ॥ व्यवपादन युश्चह्म यदन यदन शादक श्रम, यनिन यमन रेहल (कन । পুজের দেখিরা মুখ, সুনীতির কাটে বুক, দ্রুবে কোলে করিয়া ভাবেন।। মন্তকের আণ লয়, মুখে ঘর্যা অভিশয়, অঞ্চলেতে মুখ মুছি কর : রাজা হৈয়া বৃদ্ধিহত, তোমাকে না হৈল রত, তব সমাদর যা ক্রম্ন। দ্রুব করে শুন মাতা, একি বিপরীত কথা, এইৰূপ কিনের কারণ। স্থক্ষতি যেগত রাণী, তেমতি নহ আপনি, রাজা ভাবে ভিন্ন দেখি কেন।। সুনীতি কছেন ধ্রুব, আপনার কর্ম সব, বিধাতা সকল মূল হয়। মাতৃবাকা শুনি ধ্রুব, মনে জুঃখ অসম্ভব, মাতাকে বিনয় করি কয় ॥ শুন করি নিবেদন बा कहित्व खना मन, छलना कहित्छ यात वरन। छव लप कहि लिति, ছঃধ না ভাবি অন্তরে, তুনি চিন্তা না করিবে মনে ॥ হেনবাকা শুনি নাতা, একি অসম্ভব কথা, তপ্রসার কাল তব নয়। কহি পুত্র তব কাছে, সময় অপেকা আছে, হেনবান্তা না কহ আনায়।। থেলিবারে যাহ তুনি, পথ मित्रिक्या आिय, गरत आहेरल शतान जुष्यात्र । विलय प्रिथित रहा, खरम-छुब श्रात्रात्रम, व्यातित्व (य हु:श नित्रात्रम् ॥ जुमि प्रतिराज्य धन, जीवरनम যে জীবন, যেমতি অন্ধের যফিবল। প্রাব করে শুন নাছা, কৃহিলে মূল বিধাতা, ভবে কেন গত কর কাল।। মাতা জানিল নিশ্চিত, বিধিমোরে বিভাষিত, বাহা ইচ্ছা আচরণ কর। সেই কালে আক্সাপায়, ধ্রুব প্রণান্ত্রা মায়, চলে শিশু নির্ভয় শরীর ॥ পথে যাইবার কালে,বায়ু পথে দুটিচলে, অরণ্যেতে করিল প্রবেশ। অতি ঘোরতর বন, চলে ধ্রুব অমুক্ষণ, মহিব ব্যাস্ত দেখনে অনেব। সপ্ত ঋষি হেন কালে, তাহার অদুই ভালে, প্র-ণাম করিয়া নিবেদয়। বিধি সামুকুল হৈল, তব দরশন পাইল, কছ

1

উপদেশ মহাশয়।। মরিচাদি সপ্তথ্যবি বালক দেখিয়া হাসি, কি আঁদটো বচন ইহার। কে ভূমি কাহার পুজ, কই শুনি সব সূত্র, সপ্তশ্নবি কহিলা সম্বর।। শুন প্রভূ ধ্রুব কয়, উত্তান রাজ্তনর, সপ্তার্তীপ অধিকার যার। পিতৃ রাজ্য নাহি চাহি, উচ্চপদ দিতে কহি, যেন ঐ পদে হর অন্তর।। **এই উপদশ দেহ, ভত্ত্বজ্ঞান মোরে কহ, জনায়াসে বাঞা সিদ্ধি হয়। ধু বে** मञ्जूशांचि कया, मुकुन्म (कमावमया, नांत्राया क्योटकम कथा।। विकू क्रूप मार्टमा-দর, মাধব মুরলীধর, স্বাস্থদের জ্ঞীরাম রাঘব। এইরূপ স্তব করি, সপ্তথাবি वरण इति, श्वामण अकत शक्कित ॥ सूमि वरण कहि आमि, श्वाम कति आ-ইস তুমি, উপদেশ করাব তোমায়। গুনি ধ্রুব শীঘ্রগতি, স্নান করি শুক্ষ-মতি। মুনি পদে প্রণাম করম।। ভার পারে ঋষি সবে, প্রদন্ত ইইরা প্রবে। ছাদশ অক্ষর মন্ত্রদের। কুতার্থ হইয়া ধ্রুব, মুখে জপে বাস্থ্রদব, গুরু পদে প্রাণাম করয় ৷ পরে ধুব মহাশয়, মধুবনে চলি যায়, ধথয়ে য়য়না বিয়া-জিত। দরশনে মধুবদ, পুনর্জন্ম নাহি হন, কি কহিব বনের বর্ণিত।। মধুবন সঞ্চ হয়, মধুত্র বাব ভার, পুর্নের আছ্যে নির্দারিত। একাস্ক করিয়া মন, তথা করে বিচক্ষণ, আঅভাব সকলি বঞ্চিত ৷ অশেষ ভক্তির পার, তাবে পা,ব তদস্তর, কাদে দেবেই প্রক্র দয়াময়। শুক্লবর্ণ মর ছিন্নি, ব্ৰহ্মা বিষ্ণু শিব পৌরী, স্থাবর জন্ম বিষ্ণু ময়।। স্পতি ঘোরভর তণা, দেবতা কম্পিত সব, উলপ্রধাশ জলায় বিষয়ণ। পুরের দেখিয়া তপ্ত ভাবিত দেবতা সক, স্বন্ধ পদে করেন জ্বন।।

जिशनी। वास्त हेल (प्रवर्शक, निष्णार किया कांग, पूर्व छर्श नाहिक त्रकार। हेल्य कांगांचाद्य, कांधांग्र याहेव छद्य, धुर्व छर्ग खरक्ष कांत्रना। हेल्य कांत्र शद्य, धर्मक विवाद कर्य, छर्गछरक शांशिक एय कांत्रना। हेल्य कांत्र शद्य, धर्मक विवाद कर्य, छर्गछरक शांशिक एय क्रिंग महाप्त धुर्व यथा, जुन्जगर्याम ज्ञा, याहारक छर्ममा इत्र हर्छ। श्रित छद्य ज्ञान अञ्चल प्रविचाद कर्या आहिल श्रित छद्य ज्ञान अञ्चल प्रविचाद कर्या आहिल प्रविचाद प्रविचाद कर्या आहिल प्रविचाद प्रविचाद मात्रा प्रविचाद कर्या आहिल प्रविचाद मात्रा कांत्र मात्रा कांत्र मात्रा कांत्र मात्रा कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र मात्र कांत्र कांत्र मात्र कांत्र कां

निक तरक, क्षराम कतिहा गर कहा। कि खक्को (परातीक, धु, र गार्थ নিজ কাষে, ভোষাদের নাহি ভয় তায়। বরং উপকার হবে, পশ্চাতে कानित्व गत्व, शुनि स्मव श्रश्नात विमाश ॥ कमस्रद्धा बांगूरमव, यथा क्र করে ধু,ব, কেইস্থানে দিল দরশন। সন্মুখেতে গদাধর, তপ ভাঞ্চি ধুুৰবর,প্রজু দেখি প্রণামে তখন ॥ বহু দিন অস্তে যেন,পিতা করি দরশন, বালক কিলাপ করি কান্দে। তেমতি যে ধ্রুবরর, ক্রেন্সনেতে উজৈঃস্থর, खूमि পाफि श्वित माहि वाटक ।। यु त्वत, क्रम्मत्म इति, हक्कू खरत शाताधित, काटन करत वालक वित्रा। भाटक धुला छात्र कर्तत, टेव्डमा कतिहा हित, कक्षमाटेंड बहन कि सां।। एम विश्व तुर प्रशाममः अधीरक अगान इत्र, विविध প্রকারে শুক করে। ভূমি এদা হর হরি, চক্র স্থর্গা আদি করি, পুরুষোত্তন **ঞ্জিকান্ত জ্রীকরে।। পর্মত সমুদ্র হয়, ভাগ্নি বায়ু তেজোমর, বরুণাদি পতি** ধনেশার। জীব অস্ত জাদি যত স্থাবরাদি আর কত, এক সংশে সর্মত্তে বিস্তার।। ভূমি গুণ গুণাভীত,সূল স্থক্ষ হঙ চিত, বেদাভেতে ভূমি সারাৎ সার। নর্ক স্থানে অধিষ্ঠাতা, অকারেতে বিষ্ণুগতা, ভূমি নর্কময় চরাচর।। शांत्र अपि युनि यक, এक जश्रां विदािक्षक, नातांत्र विस्तु स्व नात्र । आपि অস্প শিশু মডি, নাজানি ভক্তি স্তুতি, প্রতু তব মহিমা অপার।। করে এইরপে স্তব, বিভৃতি যোগেতে সব, সর্বত্ত সমান দরাময়। ভক্ত প্রেমে টেহর। বশ, কহিছেন শ্রীনিবান, ধ্রুব মৌর পরম ভক্ত হয়।। দকলের উচ্চ-স্থান, তোমার পুরী নির্মাণ, হইরাছে অতি মনোহর। সুনীতিরে সঙ্গে লবে, ঐ পুরী বাদ হবে, এই বাকা কহিলাম সার॥ স্বাভি মনোহর স্থান, বু বপুরী সু জাধান, বিশ্বকর্মা নির্মাণ করম। ধু,বে কহি নারায়ণ, वाजां भनी विरुद्धान, भित यथा जला विजी अहा। हिन्स स्र्या आहि यह, वाह् বক্লণ সভত, যাহাকে যে তথ্যা করয়। স্বপদে নিযুক্ত হয়, আরাধনা করি ভার, তাহার মহিমা কত কব।। যাহার রূপাতে আমি, হয়েছি देवजूछ जायी, खन धु व जात विवत्र । कानी भूतीत माशाला, वर्गन ना হয় সভ্য, ভুমি যে চলহ সেই ছ:নে।। কার্ত্তিক মাসেতে যেবা, কাশীনাথে করে সেবা, দান আদি বতত করয়। সেই দর মহাধনা, কহনে মা থার श्रुश, भिव छात्त इंद्यून महत्र ।। शिवृतिक मेश्याशन, वाम कत्त कत्त कान, পুষ্করিণী কুপাদ্রি যভেক। কার্ত্তিকেতে করে দান, সেই রাজি পুণাবান, নীয়া ভার কলের নাহিক॥ গঙ্গা বহুং উত্তরেতে, প্রবাহ শত গুণেতে, মুলিক্রি বলি হয় স্থান। কার্ডিকেতে চতুন্দ্র নী, স্নান করে যেবা আসি,

ভার পুণ্য কে করে বাধান।। জার কহি শুন ধুুব, কাশীপুরে তত্ত্ত্যান্দ ८व कीटवत एम जानाटण। श्रिष खरू कानी इन, जात न्यका मञ्ज पनन নির্বাণ সে হয় অনায়ানে।। ধুরুর শুন কহিলাম, তুলসী আর শালগ্রাম, শঙ্খ চক্র গোপী মাটি আর। এই পঞ্চ বার ঘরে, কক্ষী স্থি হয় তারে, ঈশার যে তার সাক্ষাৎকার।। য়ে গলে তুলসী মালা,ভার দেহে নাহি মলা। হরিহর প্রেক্স ভাহায়। ভার পরে নারায়ণ, গরুড়েতে আরোহণ, লইনা কাশীপুরে চলি যায় । মণিকর্ণিকাতে স্নান,পঞ্চক্রোশেতে ভ্রমণ, বিখেপরে কররে প্রণাম। ধুরুব রহে কাশীপুরে, নারায়ণ ভদন্তরে, স্বস্থানেতে করমে গমন।। পরে ধুরুব মহাশয়, কাশীপুরে রাদ হয়, শিবলিঞ্চ করিয়া স্থা-পন। ঐ স্থানে কুণ্ড করে, তপকরে নিরন্তরে, কি কহিব তপের বার্থান।। পরে ধুবে রূপাহয়, ধুব পুরী চলি যায়, দেই ছানে বাস নিরস্তর। পুঞ্ त्यवा यु ्त्वयदत्र, यु वत्वादक वामकदत्र, अमाया त्य नाहिक हेशात ॥ यु व চরিত্র আলাপ, শুনিলে যে খণ্ডে পাপ, পদে গদে অমৃত সম্ভা। ভাক कृति व्यया श्वरन, जनायारम कानाश्वरण, मक्तिमाश रयुक मार्न । चित्रमणी গণ সলে, মহলোক চলে রঙ্গে, সমাপন একুইশ্ অধায়। কাশীখণ্ডে भु तकथा, रह मदा खदम नर्ममा, छात भूग करूरत मा यात्र॥ अवस्थिय ধুুবপুরে, বাস তার মিরস্তরে, ছির বাকা জানিবে নিশ্চর। 'একান ল পদ আদে, সীতানাথ বস্তভাবে, ভাষায় ভাষিল সমুনমু॥

#### -#816-

#### मश्रामाक कथन।

শারার। ধু বলোক পর্যান্ত যে মব লোক হয়। তার পরে মহজোক শিবশর্মা যায়।। গণে কহে শুন পুণাবার দ্বিজ্ঞার: এই লোক দেখ যত নিম্পালের পর।। ক্লক্তির সীমা নাই তপক্সা জনেক। এক কম্পেক্ষ ভোগ হয় আবশ্রক।। বদা কাল বিষ্ণু প্রতি মনের ভাবন। দেবতা স্বৰূপ মহাভোগ পুণাবান।। তানস্তরে জনলোক উপস্থিত হৈল। ব্রহ্মার মানস শুজ সনকাদি ছিল।। তাবতের রেছ বছ উর্লুগামী হয়। যোগেন্দ্র সকল ইন্দ্র করি রয়।। তাবতের রেছ বছ উর্লুগামী হয়। যোগেন্দ্র সকল শাসেন করয়। যাহার দিগের পাপেন কর্মা। বাস্তুদেবে সর লার বাস্তুদেব ধ্যাম। কেবল গোনবিন্দ কিন্তু স্বাভিনাৰ হন।। যাহারা এইছ করে যোগ জাচরণ। ঐ স্থানে সদাবান হয় জন্ত্বণ। শীর্ণ পর্ণ ভক্ষ আর পঞ্চ জানিত্বপ। হেনস্ত শিশিরে

थात्क वर्श करन क्रमा। कूनार्वाटक क्रमनीन मेनि वनमन। अंत्रु करक কভু হর মাসেতে ভক্ষণ।। সম্বংসর যার নিশি করে জাগরণ। শরীরেতে গুলালত। অন্তি চর্মাহীন।। মাধার জটাতে পক্ষবাস নিরস্তরে। রক্ষজানে शांटक मृत धतियन करत ॥ अके शर्टम छेर्च, वाष्ट्र नित्रसत थारक। छेन्द्रास खर्क **इटक यूर्गारमदव रमरथ ॥ अ**ष्टेकरश ब**ष्टकान छशमा राकरत । जवर**मरव শরীরাত্তে আইনে এই পুরে ।। তার পরে শীশ্র রথ সভাপুরে পেল। দুরে तथ तीथि मत्त खन्ता व्यवगिल।। भर्प मत इष्ठास करहन विधानांक। ন্তদ্মা কৰে শিবশৰ্মা ভূমি ধন্যলোকে।। বেদ অঞ্চ আর শাস্ত্র করিরা অল্যাস। ধর্ম আচরণ আর সপ্তপুরী বাস।। যথাবিধি সর্কন্থানে আচরণ করি। তমুত্তার কৈলে ভ্নি হরি ছারাপুরী।। তদন্তরে গণনকে চড়ি দিবার্থে। সর্বস্থানে দ্রশন করি জনাগতে।। প্রমাণতঃ ভূমি দেখি বড় পুণাবান। অবশৈষে অনানাদে পাইবে নির্বাণ। ওচে পুজ দেখ ডুমি ব্রহ্মাও যভেক। ক্রিয়া ছারা গতায়াত করে অভিরেক।। চারি প্রকারেছে জীব যত হয় **বায়। নিজ নিজ কর্ম**ফলে ভ্রমণ করায় ॥ বিশেষ**ত শু**ন শি বশর্মা ভিজবর। পৃথিধীর মধ্যে কর্ম তুনি ত্রেষ্ঠতর।। স্বর্গপুরী হৈতে উক্ত कट्न सूनिश्व। क्रिक्सांशाक्र देश्या शदत अदर्श आश्रमम ॥ विकाशिति উखदर मिक्ति (हमानम् । आर्यावर्त्त नमस्म आत माहि रम् ।। भूती मत्या का-শীপুরী লিজেতে মহেশ। আর বভ কহি শুন র্জান্ড অশেষ।। নারদ স্থা-নেতে শুনিয়াছি একদিন। জ্মাদ্বীপ হৈতে শ্রেষ্ঠ রসাতল হন।। চন্দ্র সূৰ্যা তেও যথা নাহিক প্ৰকাশ। কণি মণি সৰ্বদা প্ৰশ্বলিত আভাষ।। দানব নাগেতে যথা আছে বিপরীত। পর উপকারে সদা হয় আহলা-দিত।! সুধ রূপে সকলের প্রদর হৃদয়। হাটকেশ শিবলিক উদয় তথার।। এইমতে অশেষ বিশেষ রমাস্থান। সভালোক ভূল্য স্থান হয়ত वर्गम । मंगांश इहेल बाहेन अथान्न कानीश्रंश । अमितन गांशांक नर्स शांश EN FO II

পরার! কার্ত্তিক বলেন শুন মুনি তপোধন। তদস্তরে কহি কর্ম ভূমির আ্থান। ইংার বিশেষ আছে ভূগলে কথন। সমুদ্রের মধ্যে মধ্যে সন্ত্রীপ হন। শুনা শ্রনা দ্বীপেতে যে দেবতা গমন। লম্মনীপ কর্ম শ্রমে করে আচরণ। সুমের্মার চতুর্দিগে ইলাস্ত হয়। ইহার উত্তরে মেরা শাক হিরপার। উত্তর কুমা সমুদ্রে লগ্ন যে আছর। দক্ষিণেতে ক্রিবর্ষ কিম

পুরুষ হয়।। ভারতবর্ষ পূর্ব ভজাগ তার পরে। কেতুমাল বিকিয়নব খণ্ড বিচারে।। জন্মছীপ এইনত হয় নির্মেতে। ভূগলেতে সর্ক বর্ষ মেরু উত্তরেতে।। ব্রহ্মাপ্ত মধ্যেতে মেরু এক বস্তু হয়। শরীরের মধ্যে মেরু এইমত কয়। এক চন্দ্র মুর্য্য জিনি সর্বত্তে প্রকাশ। ভারতবর্বের মধ্যে শু-नर तिरमय । शका यमूंनात भर्धा अखदत निर्मात । ইर्शत अधिक देनियात्रगा ভীর্য আর। ভার পর প্রয়াগ যে নর্ফ তীর্থরাজ। যথা গেলে পাপ্রধংন নাহি কালবাকে।। জার শুন জীর্থরাকে মহিমা অপার। ভারতবর্ষের মধো নর্ক তীর্থ সার।। অনা তীর্থ কামা করি প্রাণত্যাগ করে। তাহার উদ্ধার নাই শান্তের বিচারে।। ভীর্থরাজে মৃত্যু কিমা দাগর দঙ্গমে। কান্য করি যেট নর সরয়ে সজনে।। অনারাদে তার মুক্তি কে থণ্ডিজে পারে। জার শুন জীর্থরাজে মহিমা সম্বরে।। জীবের পাতক পাকে মস্তকের क्तरम । अवार्ष मूखन केरल मर्सभाभ नारम ॥ पह छीर्थ साम मान আদ্ধি যেব। করে। কি কর জাহার ফল বাস সোমপুরে॥ ভাহার অধিক कानी नर्स चौर्य नात । शृथिवीत्क कानी नरह महिमा अशात । जिन्हा अ-ত্রেতে বারাণনী স্থিতি হয়। প্রলয় কালেতে কাশী নাশ নাহি পায়।। জলমগ্র ভূমি মবে যে কালেতে হয়। কাশীপুরী ধংস নাহি শুনহ নিশ্চয়॥ ७९कालाङ काली वामि क्लानानत्म डॉमि। आमन कानन इम भविमुक কাশী।। তরুগুলা জীব জন্তু সবা জ্ঞান রাশি। পঞ্চ জ্ঞোশ মধ্যে যার হয় वित्रवामि ॥ किलाम खक्ता म्हिक मग्निम विन । श्रीयत निस्तीन एम्म निक ঘাত্ত আসি।। আর কহি শিবশর্মা কাদীর মাহাজা। তথা যেবা গাপ করে না হয় নিরুত্তা।। তার দণ্ড করে কাল তৈরব অপার। পরদার পর शीजा मानमा आहा। शहत अनियो हिन्छ। शहबन इत्ता अहैमक दल्विध পাপের বিস্তারে।। কর্ম দোধেপ্যে ভোগ হয়ত নির্বাদ। নরক অধিক দেশু করে যে পিশার।। রুদ্র পিশার ছইয়া বহু জন্ম বাস। বিধিসতে যোগ তপ यে করে অভ্যাস।। বহু কালজেনে আন হয় যে উদয়। কাশী প্রাণ-भाग कर्मकरण मुक्त दश्रा। खन्ना कर्म भिन्ममा सन्द वहन। कामीत महिष्या गव न। इष्ट्र वर्गन ॥ शिवभन्दा वस्त विवि कृति निर्वणन । नकुरलव পিভানহা টহ অপিন।। জিজানা ক্রিতে কিছু মোর মনে লয়। না পারি विक्तिः । त्रातः सदन वार्षा जस्म जन्म वर्षा वर्षा वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः নে সকল ক । আমি জানিসু সম্ভর।। তোমার নির্বাণ বার্ছা কিজানিতে মন। বালিকে বিস্তারিয়া মব বিষ্ণুগণ।। বিষ্ণু ভক্তজনে কিছু নাহি স্থ-

গোচর। একাণ্ড গোলক শত দেখে নিরম্ভর দ একবলি একা সম্ভাবিল বিকুগণে। গণেনা প্রথাম করে একার চরণে।

#### -113H

## याथ देवकुछं दर्गन ।

श्रवात । विभारम विज्ञा अन देवकुरर्श्व मात्र। मिवलमा नन स्ट्रह वटन भूनताय !! फिल बटन कछ हुत खारेसू व्यामता। याहेरछ इहेटन जात কভদুর ভারান। এ সকল আর যাহা জিল্ডাসা করিব। বিস্ফারিয়া বল গণ রস্কাত সে নব।। কাঞ্চি অবলিকা ছারা অবেগা। নগরী। কাশী মাগ্রা মন্ত্রা ম্কিন। সন্তপুরী।। হম পুরী ছাড়িয়া কাশীতে মাত্র মুক্তি। প্রতিষ্ঠিত বিশ্বেশ্বর শত্রে হেন'উক্তি॥ ভবে কি সম্প্রতি মন নাহি মুক্তি বর্জা। विकारित। क्ष भारत जगरकत कर्छ। ।। अठ खनि जांबरत करिएक दिक्तान । ষ্বার্থ কহিব ভাষা শুনহে ভাষাণ।। বর্ত্তমান ভূত ভবিবাতি ফালত্রয়। বিষ্ণুব কুণাতে জানি শুনেহি নিশ্চয়। চন্দ্র সূর্যা কিরণে একাশে যত স্থান স্বামে ভারত ছান দেবের প্রমাণ।। ভূমগুল সম উর্ছে গ্রন মগুল। ভূনি হৈতে লক্ষ্ণ বোজনেতে ভানুস্থল।। ভানু হৈতে লক্ষ্ণ যোজনেতে নিশাকর। তা হৈতে নক্তা লক্ষ ধোজন উপর।। নক্ষত্র হইতে বুধ দ্বিলক फेशदा वृथ रेज्टच प्रहे नटक अक वान क्दा। एक रेड्टच प्रहे नटक মণ্ডলের বাস। ভিলক্ষ মলল হৈছে গুরুর প্রকাশ।। গুরু হৈছে চুই লক উপরেতে শনি। সপ্তর্ধি মণ্ডল শনি হৈছে এক গণি। সপ্তথায়ি মণ্ডল হৈছে াক ধ্রুবস্থান। ছুছু বস্থাভিন লোক হইল প্রমাণ।। পাদগান্য বস্তু গভ ধন্ন শশুৰো। ভূ হ'কে বলিয়া তাকে সৰ্বব্যাক বলে।। ভূলোক হইতে लाजू मखन यावल। जूटराक दशन बागड जानर जावन।। महस्ताक किलि देश्या त्वांकि यान्यत्मरक। समस्तांक विस्कृति रशक्य कृषि देश्य ।। চতু হোটি ভূমে হৈতে তপলোক জান। কিভি হৈতে অই কোটি পত্য-लाक भाग। महात्माक देशक केंब्र देवकुर्शनमत्। जूलाक कहें कि कालि ৰেড়িল প্ৰহর।। যেথানে বসতি করে শ্রীসতী সাক্ষাত।। সক্ত প্রতর দানে আছে উদ্ভ হাত।। বিৱশ কোটি যোলনেতে কৈলাদ পুরি হয়। यथा विश्वनाथ राटम् शोती वितासत्त। अह भन्नां लाटक नगुर्व नम्ही-गता करोजातं भन्ना कम कम अपि कता। अर्थान्य त्या मकता जिन ৰেত্ৰ বিশাল। ওঠ সাল মৃত্হাস প্ৰকাশ অনল।। গলে । ।লে সর্পহার

কণি ভূবা আর। হত্তেতে ভদুর আর ভন্মালা সার।। বাজচর্ম পরিধান র্যভ বাহন। লয়োদর অভি সুললিত দরশন।। পাদপতে কিবা শোভা বর্ণনা অপার। ত্রকা আদি দেবে অন্ত না পার যাহার। সকলের সার বেদে চকিতে না পায়। লীলার কারণ মাত্র শরীর ধরয়। জগতের এক বস্তু সাধনে না পার। হৃদ্ধে থাকিয়া সব প্রকাশিত হয়।। नकल प्रम कर्डा गर्स खुगांकीक । नषु तक कमः किन खुर वितालिक।। গুণক্রমে সৃষ্টিপালে সংহার করম। সর্ব্দ কর্ত্তা সেচ্ছা বিনে সব প্রকাশর।। প্রবৃত্তি নিরৃত্তি মাত্র কিছুতেই নয়। অমূর্ত্তি প্রম ত্রন্ম সদা আচিকর।। বাাপ্ত ব্রহ্ম নিত্য শুদ্ধ সর্ক বিপর্যায়। সকল কারণ কর্ত্তা পরাৎপর হয়।। আনন্দ স্বৰূপ ব্ৰহ্ম হয় নিরাময়। সমাধি ষোণেতে যাতে নির্ত্তি লাব্রয়।। क्षेत्रत शतम त्क्यांकि क्षमत्रक त्रहा यांत्रतमा वक वक्ष नामां मूर्खि करहा। সর্ব্ব গোপনীয় চিত্ত আনন্দ অপার। বেদ বিধি সর্ব্ধ শান্তে হয় সারাৎসার মহা প্রলয়েতে তিনি অন্ধকার ময়। ইচ্ছাশক্তি ছারা তেজ উদিত করয়। কৈলালেতে পঞ্চবক ত্রিনেত্র ধরর। শক্তিকে তাজিরা শক্তি ভাবাতীত হয়। তারপর মহাদেব বৈকুণ্ঠ আদিয়া। ব্রহ্মান্সাদি ভাষত দেবতা আ-नाष्ट्रेता।। जाशन अधर्मा गर नातात्रत्। मिल । मर्क कर्छ। कति वाका कचि-বিক্ত কৈল।। দেবলোক গত্মর্কা অপ্যরা আদি যত। মঙ্গলাচরণ করে বিধি বিধানত।। স্বৰ্গ মৰ্ত্য পাতালের এক কণ্ডা স্কুল। জগত কারণ সেই সকলের মূল । সর্বৈশ্বর্যা মহাদেব হরিছে অর্পিয়া। আনন্দে অপার প্রেমা-নন্দেতে ভাষিয়া।। যথা বিধ নমস্কার শিবকে করিল। ভার পরে ভক্ষানি হরিকে প্রণমিল।। শস্কর সারক ধকু দিল গদাধরে। একাত্মক এক অঞ্চ হৈল হরি হরে।। নারায়ণ প্রতি বর দিলেন শক্তর। জামাকে যুক্তেত জয়ী হইবে সম্বর।। ইচ্ছাশক্তি জানশক্তি ক্রিয়াশক্তি দবে। বিষ্ণুর মা-ब्रांट सूच क्रवं क्ट्रेंट्रा। कर जलकरम आति सुक्लिम मित्। नात्रांत्र প্রতি এই বর দিল শিব।। ভার পর বাস্থুদেব করি আলিজন। কৈলালেতে नमानिर प्रतिन भगने ॥ निकानिक दूर्थमत्र जानरक छातिल । इर्ध्युक नर्क दिव श्र शहर ताम ।। देवकुर्श्वमारथत तामा कान्तिक कथा। दावा कटन स्वतं भाठे त्रात नर्सथा ॥ इंडकाटन सूथट्डांश खाट पर्शवान । भिव विकः এই স্থির । নিহ নির্যাস।। এই পধ্যা যত্র করি গুছেতে রাথয়। তার গুছে वक्कीशिक के हा विद्रावदा। तकक जानमा भाकि केथिंग एव वार्ख। अर्थ STATE OF STA

### অথ অগস্তা কার্ত্তিকের সংবাদ।

পরার। ব্যাস বলে শুন তুত অগস্থাের কথা। যে কথা শুনিলে পাপ নাশরে সর্বাধা। প্রদক্ষিণ করিলেক শ্রীশৈল শিখর। কার্দ্তিকের রুম্য স্থান দেখে মুনিবর। মুকল সুপুষ্পা তক্ষ লভাতে শোভিত। নানা পশু পক্ষী তথা অতি সুচরিত। কুপা বাপি ভড়াগের কাহিক গণন। লোহিত নামেতে গিরি অপুর্ক দর্শন। কৈলাদের সমাস্থান অভি চমৎকার। সেখানে দেখিল মুনি বসেছে কুমার।। প্রত্নীর সহিত দশুবতে প্রণমিল। যোড় করে নানাবিধ স্তবন করিল।। স্তুতিতে হইরা ভূষ্ট দেব ষ্ডানন। মুনিকে বসিতে দিল উ-গুম থাসন। কুশল জিজাপা করি কহে মুনিবরে। অবিমুক্ত ক্ষেত্রের কু-नल कर भारत ।। जिस्कार भर्या कानी नम शूती मारे। धर्म अर्थ काम মোক চত্বৰ্গ চাই।। পাৰ্নতীর নিকটে কছিল পঞ্চানন। এ তিন উপায় হয় নির্মাণ কারণ।। পশুপত যোগ আর ভীর্ণ সিভাসিত। বারাণনী নগরি মুক্তির অধিষ্ঠিত।। এপর্বত হিমালয় আদি যত পিরি। যত যত আরো-ব্দন আছে দিবা পুরী।। ত্রিদণ্ড ধারণ সর্ব্ব কর্ম্মের সন্মাস। তপ্তা নির্ম যত ত্রত উপবাস।। সিন্ধুর সঙ্গম আর অরণ্য কিন্তর। মানস পার্থিব ধারা ভীর্থ মনোহর।। উসরাদ্বিবিধ পীঠ আলায় পঠন। মল্লের যপন আর অ-গ্নিভে হবন।। নানা দান যজ দেবতার আরাধন। ত্রিরাত্রাদি সাঞ্চ যোগ বিষ্ণু উপাসন।। মুক্তির উপায় এই নব নিরূপণ। শ্রুতি স্মৃতি পুরাণেতে আছরে গণন।। ভার সপ্ত মুক্তি পূরী সর্বান্ত প্রধান। মুক্তির সাধন এই সব मृक्ति द्वान ॥ किन्ह धरे यह ठीर्थ द्वानी প্রाপ্তিকর । কাুনী পাইয়া মুক্ত হয় জঙ্গম স্থাবর।। অভএব কাশীকেত্রে বিখেশর প্রিয়। কাশীকেত্র. কুশল 'প্রভার হেডু হয়।। কাশী হৈছে আসিয়াছে দেহ আলিক্সন। কাশীবাসি স্পর্মে পাপ সঞ্চয় নাশন।। উত্তরের বায়ু যদি করে আগমন।। কাশীর সম্পর্কে তাকে করি আলিকন।। ভুমি কাশীবাসি মহাঋষি পুণ্যবাদ। পা-- কিছে মাথার কেশ করি গঙ্গাস্থান।। অগস্তোর সমীপে অগস্তি ও তব। স্ত্রান দান দেব পিতৃ কর্মা করি সব।। ক্লুতর্ত্তা হয়ে জীব কাশী ःল পায়। কার্ত্তিকের হস্ত দিল অগস্তোর গায়।। অতি সুখী হৈল ৩২ প: শয়া ঋষি। नम्रन मुक्तिक टेश्मा थानि कद्ध वित्र ।। धारनत विद्वारम विश्व व का व्यवमत । কার্ডিকে যে ছবে জিঞ্জাসিল মুনিবর।। পুর্কে ভগবৃতী তে র দেব ভগ-খান। যে ৰূপে কাশীর গুণ করিছে বাখান।। বসিয়া মায়ে। কোলে করেছ- শ্রবণ। শেই বাপে কহ মোরে কাশীর বিবরণ।। কার্ত্তিক বলেন শুন অগস্তা তাপন। বলেছি কাশীর কথা অমৃত সরন।। অবিমৃত্ত ক্ষেত্র অভি গুপ্ত ব্রিজগতে। যথা নিত্য সিদ্ধি সকে বসে সিদ্ধিনাথে।। আদেহ পতন যেবা করে কাশীবান। তাহাতে বিরাজ লক্ষ্মী করত্তে নিবান।। অনায়ানে ভক্তি মৃত্তি কাশী বানে পার। জানিয়া কাশীর গুণ না ছাড়িনে তার।। অবিমৃত্ত গুণ হয় মুখে কব কত। সহত্র বদনে তাতে হয় পরাভূত।। নীতা নাথ বসু দান মনোতৃংখে গার। কাশীখণ্ড ভাবে পঞ্চবিংশতি অধ্যায়।

#### -11316-

### वर्थ कविशुक्त क्थन।

আরে মন জামার। তবু তোরে করি গাধবান। দেখির। দেখনা আয়ু হৈল অবসান।। করিছ কি সুখ ভোগ, শরীরে জন্মিল রোগ, না করিতে পাবে যোগ, চল মন কুতৃহলে, সীতানাথ বস্কু বলে, পাইবে নির্মাণ।। ধ্রু।।

পদার। অগন্তা বলেন কল করি নিবেদন। প্রসন্ন হইরা কহ কাশী বিবরণ।। কি কপে হইল কাশী অবিমুক্ত নাম। কোন কপে হইলেক মহালক্ষী থাম।। ত্রিলোক পুজিতা মণিকর্নি কেন হয়। যথনে না ছিল গঙ্গা তথাতে উদয়।। কি ছিল তথনে তথা কহ ভগবান। বারাণ্যী কাশী রুদ্র বাস কেন নাম।। কেনবা হইল মহাল্যশান আখ্যাত। এ সকল কথা মোরে কহ জগন্নাথ।। কার্ত্তিক বলেন পুর্বে এই প্রশ্ন ভার। জিজ্ঞানিল শিবা শিবা অতি চমৎকাব।। জগত জননী তবে শিবের উত্তর। শুনেছি যেকপ সব শুন মুনিবর।। না ছিল প্রলন্ন কালে স্থাবর জঙ্গম। চন্দ্রসূর্য গ্রহ তারা সকলি বিগম।। না ছিল প্রদন্ন জল সলিল ধরনী। না ছিল গলণ কিবা ছিন্বস্বা, জনী।। প্রধান রহিত মহা অক্সকার মন্ত্র। বিল্যু মহেশব্র ক্ষেত্ত নাহি ।। কপ রস গন্ধ স্পর্শ শন্ধ বিবজ্জিত। দিগিদিন নাহি ছিল অভি চমকিত । কেবল তৎ সৎ ব্রক্ষ শুন্তির বিদিত। বচন মনের অগোচর শুক্ষ ছিল ।। কপ নাম বর্ণ হীন নহে স্ক্ষে স্কুল। ক্রন্ত নাহি লামু গুলু হন সর্ব মুল।। উপ চন্ন নাহি তার নাহি জপচন্ন। সচকিতে শ্রুভি যারে আছে বলি কয়।। সহ জান জনস্ত আনন্দ্র তেজোমন্ত্র। প্রমাণের বাহ্ন যার নাহিক

गःगात । विकल्म त्रहिक मात्रा नाहिक याहात । क्मिमाट्स मीमा नाहै म-হিমা তাহার ।। দ্বিতীয় রহিত তেঁহ সদা বিহারয় । দ্বিতীয় ইচ্ছায় ভাতে इहेन छेन्य ।। जमुर्जि इहेया मृखि कतिन कण्णना । नकन अधरा छन कल मद्यावना । मर्स छानमश्री गर्स गठा मर्सक्या । मकन काति गे मर्स मृष्टि मर्स कुला ॥ नकत्नत अक मुक्ता नकत्नत आपि । नकन मान्निनी नकी नकन नः-হতি।। অমনি ঈশর মুর্ত্তি করিয়া কণ্শন। অন্তর্ধ্যান হইলেন একা সনাতন পরাখ্য অমূর্ত্তি জিনি তার মূর্ত্তি আমি। সর্বাচিন প্রাচীন ঈশ্বর নামে নামি একক পুরুষ জামি সক্রা বিহারি। নিজ দেহ হৈতে দেবী ভোমা সৃষ্টি-কারী। প্রধান প্রকৃতি ভূমি মায়া গুণবভী। বৃদ্ধি ভত্ত জননী পরম নি র্জ-ক্ষতি।। আমি আদ্য পুরুষ মান্দে করি ধ্যান। ক্ষেত্রের সহিত করি ভো-মার নির্মাণ।। কার্ত্তিক বলেন শুন লোপাযুক্তা সভী। যে পুরুষ ঈশর সে শক্তি সে প্রকৃতি।। পরম আনন্দ রূপ সেই ছুই জন। সে আনন্দ ধাম সদা করমে রুমণ।। প্রত্যর কালীন সেই ক্ষেত্র কদাচন। শিব শিবা দোঁতে নাহি ছাভ্যে সঙ্গন । যেখানে না ছিল জল জলাধি উদয়। শিব শিবা প্রেয়কে-खे त्नरे कारल रहा। क्लाब्बत तर्स अरे क्रिनारि **बार्टा अ**वक्रता अब्हा-ন নান্তিক ভক্তি হীনে। শিবভক্ত বাস্ত মূর্ত্তি ইচ্ছা আছে যার। ক্ষেত্রের রহস্ত তারে করিবে প্রচার।। সে অবধি অবিমুক্ত ক্ষেত্র একে কয়। শিব শিব। শয়ন পর্যান্ত সুখময়।। শিব শিবা সম্ভাবেতে ক্ষেত্রের সম্ভাব। শিব শিবা অসম্ভাবে ক্ষেত্রে অসম্ভাব।। না পুজে মহেশ কাশী নাহি যদি পায়। ব্যানিবে নির্মাণ যাত্রা নাহি আছে ভার ॥ আনন্দ ধামের নাম আনন্দ কা नन । अधिल जानम वन नाम जिल्लाहन !! जानम कानरन लिक जानरम-র মূল। আনন্দের জীব সেই আনন্দ অতুল।। এই মতে ক্ষেত্র অবিমুক্ত খ্যাত হয়। শুনহ ত্রাহ্মণ মণিকর্ণির উদয়।। আনন্দ কাননে শিব শিবা ছুই জন। শরত সভত আছে হইরা মিলন।। ইচ্ছা করিলেন সৃষ্টি করিতে অ-পর। তাতে সর্বভার রাখি হবে শৈৰচর।। তবে দোঁতে বামভাগে সুধ'দুষ্টি করে। অপুর্ব পুরুষ এক জন্মিল সম্বরে।।

---

# जब मंश्रविक जात्रायमा मगिकनि कथन।

পরার। সর্ব গুণধাস নিলমণি ছাতিধর। পরিধান পীত ব্র পুরুষ প্র-বর ॥ চতু জ শতাচক্র গদাপত্ম ধারী। বিরাট পুরুষ দেখি: .ল ত্রিপুরারী

মহাবিষ্ণু নাম তথ্য পুরুষ প্রধান। তোমার নিঃগানে বেদ হতে আগুয়ান। त्वन देश्टक मकन क्वानित्व महागत्र। त्वन पृत्ते शद्य मृत्ति क्वन् छेन्द्र॥ যুদ্ধি ভন্ন স্বৰূপ বিষ্ণুকে হেন বলি। শিব শিবা জানন্দ কাননে সে মিলিল মহাবিকু সেই আঞা ধরিয়া মস্তকে। তপ্যা করিব হেন ভাবিল কৌ जुरक।। श्रृञ्जतनी अनम कदिया ठक्कभरत । निजरमञ्जूष वार्ति मित्रा छोटा ভরে। পঞ্চাশ হাজার বর্ষ উগ্রতপ করে। চক্র পুঞ্জরিণী তীরে ন্তুস্থির শরীরে।। মৃড়ানীর সঙ্গে মৃড় করমে বিহার। দেখিল তপায়া বিষ্ণু করে চমৎকার। মৌলি আব্দোনিয়া শিব প্রসংশা বচুনে। কহিলেন বর লহ সেই নরায়ণে। ছুই ভিন বার হেন কহিল শক্ষর। চঁকু মেলি উটিরা বলি-ছে গদাধর যা প্রসন্ম হইয়া থাক দেহ এই বর । ভবানী সহিত তোমা দেথি সিরস্তর।। তোমার চরণ পাতে চিত্ত মধুকর। মধুপানে মত্ত হৈয়া রহে যে তৎপর। এবমস্ত বলি শিব বরদান করি। শুন বিষ্ণু এই সব বরের বিস্তারি বিষুদ্ধ তথা ভাষে হেলাইল মাথা। প্রবণ ভূবণ অহি মণি পড়ে তথা। এই হেতু চক্র পুদ্ধরিণী মনোহরে। মণিকর্নি নামে খ্যাত চইবে সংগারে। বিষু বলে প্রভু তব কুগুল তপনে। মুক্তিক্ষেত্র শুভ ভীর্থ হউক এখানে। চক্র পুষ্করিণী তীর্থ সহ'ক্যোতির্মর। প্রকাশ এখানে কাশী নাম এতে 更明 11

# ত্তথ কাশীর মাহাত্ম্য **কথন।**

পয়ার। আর এক বর দেহ না কর বিচার। পর উপকার তরে প্রার্থনা আমার। আরেজ স্তন্ত পর্যান্ত জন্ত দংজ্ঞা যার। চারি ভূত গ্রামকেরে
মুক্তি হয় তার। য়ান সন্ধা। জপ হোম বেদ অধ্যায়ণ। সন্তর্প। পিশুনান
দেবতা পুজন। গো ভূতল স্বর্ণ অশ্ব জার বিভূষণ। দীপ অর বস্তু কন্যা
আদি দান ধন।। রুষোৎ স্বর্গ ব্রতাৎ স্বর্গ লিক্সাদি স্থাপন। এই ক্ষেত্রে যে
করেছে নর্বাণ সাজন। আর আরিক্তিত কর্ম আদি করি যত। দেলি,যে
মুক্তি ে পাল্রেতে বিনিত। শাঙ্খাযোগ জ্ঞান দৃটি ব্রত তপ দান।
বিনা ক, পুরে ছউদ জন্তুঃ নির্বাণ। শশক মসক কীট সরপ
উরগ। প চক্ষ কাশীতে মৃত সংসাধি পরাগ। কাশী নাম মারে
সদা হবে পি কর। কাশী পুরে সদা সত্য মুগের উদয়। সদা উত্তা-

কর্ম পবিত্র সকল। কাশীপুরে করিলে হইবে মহাকল। বিষ্ণু বাক্য হেন শুনি দেব ত্রিলোচন। বিহিত বিবিধ সৃষ্টি কর নারারণ। সর্ব পিতৃ সম ভুত করহ পালন। ছুক্ট নিষ্ঠা চেষ্টা সদা করিবে জাপন। বলে মর্ভে থেবা ভোমায় অবিজ্ঞা করয়। ভাহার সংহার আমি করিব নিশ্চয়। পঞ্চক্রোশী कांगीटकव मम् तांक्थानी । এখানে आमात आक्का मकटलटक मानि । कांगी বাসি শাসিতে আমার অধিকার। কাশীতে কথন আঞা নাহিক কাহার। कांभी महानान कृति भरत जाना स्मर्तन। शतकरमा कांभी भति भूक इरव रगरव। বিহু বলে প্রস্থু কেত্র মুহিমা না জানে। ভক্তি হীন কাশী মরে কি গতি গে জনে। মহাদেব বলে বিষ্ণু কর অবধান। অন্যত্ত করিয়া পাপ অভক্ত আক্রান। আশীতে মরিলে কাশী মহিমার গুণে। যা গতি হইবে তাহা ক-রহ অবং । কাশীতে প্রবেশ করিবার কালে পাপ। কাশীর বাহিরে থাকে ভাবিয়া সন্তাপ । মণিকর্ণিকার স্নান দেখে বিশ্বেশ্বর । অনামাসে হয় সেই ক্সভ্রতনু ধর। অন্যত্তে করিয়া পাপ কাশী যদি মরে। কাশীর প্রসাদে সেই ভবনিত্ব তরে। মিথ্যাবাদী ভক্তিহীন অবিমুক্তে মরে। প্রসন্ন হইয়া কাশী मुक्ति (पन छाद्र ॥ कुर्गा विना पिनकर्छ। नट्ट अना अन । कामी विटन (करा করে মুক্তি বিতরণ। প্রাক্ত পাশেতে বদ্ধ ভ্রন্মা আদি যত। ত্রিগুণ চর্মিশ পাশ ত্রিগুণে জড়িত।। হেন দৃঢ় পাশে বদ্ধ এ ভিন সংসার। কাশী বিনা পाम काटि का बाह्य बात। वह दूम गांधा यांश वहन वाांघांछ। যোগ হৈতে ভ্রম্ট হৈয়া গার্ত্তবাস তাত।। কাশীতে করিয়া পাপ কাশী যদি মরে। বে রুদ্র পিশাচ হৈয়া মুক্তি হয় পরে।। কাশীতে মরিলে পাপী ন-রক্র না হয়। তৈরব যাভনা ভার শান্তি মাত্র যায়। সভত না পার কার গর্ভ ছংখ স্মরি। তাজিয়া পরম রাজ্য শেষে কাশীপুরী।। কখন যমের দুডে লয় বনপুরী। কর্ণন বিষ্ণুর দুতে লয় স্বর্গপরী। এই ভয়ে কাশী সেবা করিবে সম্বরে। পাপ যম গর্ত্তবাস এই তিন ছরে।। কাশীতে নাহিক কাশী করিলে আন্তার। অদ্যাকল্য পরস্থ বা মরণ নিশ্চর।। ভাবত বিলয় কাশী করিবেআপ্রর। সাবধানে করবাস পাপনাহি হয়। মরিলে জনম ভ 🕫 छ-শ্মিলে মরণ। কাশীতে মরিলে জন্ম হয় নিবারণ।। পুজ্ঞ ক্ষেত্র ক' এ বৈক্ষ-বী সায়া ধত। ভাকিয়া জীবেতে হবে কাশীবাদে রভ। মরণ দু ্তে আছে। यता नहि आमि। सप्टाप्त अमेि कान ना कतिरव जूमि॥ यटमह महिस्सरी भन्दात्र ठेन ठेनि । नहिक्दक शांकित्वक कृद्व यम धनि ॥ च जिहा यदक हैं छि काभीरंक आंखेन। यह बरन कतिरंक ताहे गांधु हन 🗀 बांग करह

শুন মুক্ত অগস্তোর তরে। কহিরা এসর কথা স্থার কহি পরে।। মলিক আখান সীতানার্থ দীন হীনে। হরিহর কুপা কাশীবন্ত ভাষা জনে।। ব্রহানন্দ সঙ্গাশ্রমে ভাষে সমুদর। ভাষিত মুখ্য ভাষা ছাল্পি লগ্যার।।

#### -31816-

## কাশী নির্মাণ কথন ও গঙ্গার মাহাত্ম।

প্রার। আনন্দ্রান্ন থেই প্রকারে হইল। বিস্তারিয়া অগস্তাকে কার্ত্তিক কহিল।। বিফ জিজানিল মহাদেবের গান্ধানে। অবিভ্রুক বারা-ণসী আখ্যান কি মঙ্গে।। শিব কভে শুনতে ব্রিজ্ঞাত ঈশ্ব । সারায়ণ বিশ্ব-कर्ण नकी পরাৎপর।। सूर्य। रुएमा नगर दोखांत भूख मत। खग्रायध सख्ड আরম্ভিল অসম্ভর ৷ দৈৰয়েলে অশ্বমেধ পূর্ণ নাহি হয়৷ কপিল মুনির শালে বংশ ধ্বংস পায়।। নিজ পিতামহ কুল উদ্ধার লাগিয়া। ঘোর তপ আর্ডিল হেমত্তেজেগিরা। গঙ্গাদেশী অভিব্যাপ্ত নিজৰূপে হয়। স্বর্গ মর্ভ্য পাতাল ত্রিলোকেতে আলয়।। ত্রন্মাণ্ডেতে ধারারপে এক্তির পর 🕻 काममा अवाशा इन गर्स भारा १ मा जिल्लाक कवनी मर्स कांतरगर माद १ ক্ষান শক্তি ক্রিয়াশকি ইচ্ছাশক্তি আর ॥ শুদ্ধবিদ্যা শুদ্ধ বর্মা রূপাত্মিক। কার। একা মহর্ষি বছচিত শক্তিময়। বিশের নিভাত লাগি আগমন হয়। যত্র করি জানি ভারে মস্তকে ধরয়। ত্রৈলোক্যেভে জন্য যে স্কর্ ন্তীর্থ শত। পুণাক্ষেত্র ধর্মকেত্র যজ্ঞ আছে যত। ভূমি আমি একা দেবগণ আদি সব। তথ আর চারিবেদে পুরুষম্ব ভাব।। একাণ্ডেদে মত শক্তি আছেন বিস্তার। গলাদেবী সুফারণে সম্ভব ক্ষর।। দুরস্থ থাকিয়া গঞ্জা বলি ডাকে যেবা। স্থান যে মমন আর ভব্তি ভাবে গেবা।। তাহার ফলের কথা শুন গদাধরে। শরীরাত্তে স্বর্গভোগ বহুকাল ভরে ii অনেক তথকা शूर्ट्स करत राष्ट्र कीरव। कांत्र भरत मर्क्सकीर्थ खमन कतिरच।। कवितारक शकालीता मना वाम कति। दमहात्ख देवकूछे भूती कवमा डाहाति ॥ आसी দান ভ । যে আছে আদি আর। ধেই নরে সদা করে অক্ষয় সুর্গ ভার।। - छवेखा कि छीर्थ एक मसूनम् । एवह नदत नका मादन आहा (यानी इसा) वक्कांत । वा भाभ आंहत्व करता शका मत्रमण माख यूक करनवर्त्ता। সজ্যবুগে স र्व ভীর্থ পুন্ধর রেভায়। কুক্সফ্রের দ্বাপরে কলিভে গলা ২র ন স্থুক্তি হৈছু ।তোঞ্চান ত্ৰেতা ভপ কয়। কলিতে কেবল গঞ্চা মুক্তিহেতু

হয়। যক্ষদান খান যোগ তপজাদি যত। সহস্রাংশে তুলা নহে গঙ্গা সেবার মত।। গঞ্চাবাদে এক্সভান হয় যেই নরে। অফীদশ যোগ আদি কি করিতে পারে,। প্রদ্ধাযুক্ত প্রদ্ধাঞ্চান প্রদ্ধা খর্গ হয়। গঙ্গাতে ধে खान्त करत मर्रकल भाषा। भन्नामान विस्त मिथा नतीत किवल। अना জন্য যত ক্রিয়া রুখা সে সকল।। গঙ্গাতীরে শিব লিঙ্গ যেবা পুজা করে। অনম্ভরে কোটি অংশে তার গুণ ধরে। যেবা গঙ্গাতীরে পিতৃ শ্রাদ্ধ আদি ক্রে। ভার ভুলা পুণ্যবাদ নাছিক সংসারে।। অন্যস্নান হৈতে যেবা গঙ্গা-স্নানে যায়। চিন্তাকুল পাপ গব রোদন করম।। কিসে বিশ্ব করিবেক পদে পদে কিরে। আদ্ধ করি গঙ্গা দরশন ধেবা করে। সকল পাপেতে मुक्त (मेरे नत १म्रा अनोमारम क्रूडार्थ (म ब्रानिट्य निम्हम् ॥ (कान श्रम-ক্ষেত্র কিন্তা বাণিজ্ঞাতে বার। ইহাতেও গঙ্গালাত স্বৰ্গতি পায়।। অগ্নির যেখন শক্তি দাহন করয়। স্থানিচ্ছাতে গঙ্গালাত হয় পাণক্ষ্ম।। গঙ্গাল্লাকে যেই মতের গমন করর। পথমধ্যে মৃত্যু হৈলে ছুক্তিপদ পার ।। জন্মান্তরে বস্তু গুণ্য করে যেই নরে। ইহুগন্মে গঙ্গাপ্রান্তি অনায়ানে ভরে ফর্ম বলে পাণেতে মোহিত পুর্বাপরে। যেই নর গলাপ্রতি নদীজান করে।। শিব কন শুন হরি গজার মাহাত্ম। ভক্তি ভাবে বেবা সেবে সেই नत्त मुक्त ।। निष्णाणी इहेया बीव दर्श ह्याश करत । हेक्टलाक मिश्व लाके নিস্তুলোক পরে।। কোটি খর্ম্য সমতেজ পঙ্গাকে যে দেখি। সেই জীব স্বর্গ ভোগি অচিরাতে সুখি। হরিবর একাত্মক তিম বস্তু নয়। গৌরীতে গঙ্গাতে मिक कार कर निम्हता। अहे हाति अक **वस्त करेक छ एव मन्न। है हाटक ए**प জেদজান অখোগতি হয়। গঙ্গাডীরে দবৎসা গো যেবা করে মান। শিবলোকে গোলোকেডে ভার অবিষ্ঠান।। জন্মাবিধি ধেই নরে গলামান करत । कीवमा क तारे नरत प्रकि एक्शकरत ॥ श्रकाशादन मूना किथि वि ष्टांत ना करत । ऋतरनरू स्पष्ट नारम मर्स भाभ श्रुत ॥ शक्राष्टीरत नाम करत সেইও পঞ্জিত। গ্লোক্য হইবে মুক্ত শুনহ নিশ্চিত।। গঙ্গার মহিসা যেই শুনে নিরন্তর। গঙ্গাস্থান ফল ভাগি হয় সেই নর।। জল ছুগ্ধ মথ ৃত দ্বি कूना आत । कतवी त्रक वन्तम वह करी मात ॥ युर्वाटमरव अर्द ामत्र यसन कितिया । पूर्वारकारक वान करत हर्विछ हेरग्रा । ब्राज्याचीरत ट । । सम्र स्पर्टे मत करता शुक्तातिनी मोशी मोरम राहे कल थरता। शका अनरम राहे পুণ্য হয় নিরে। ভাহার মহিমা কেবা বর্ণিবারে পারে।। । াক্স নিয়মিত मञ्ज्ञ जादह छेळ जादन। शकाकीत्र काणि जल्दम ना इस । मादन।। जन्म

नक्दब्रिक दियवा अवस्ति व करता क्षत्रहरूल यक शांश नकलि नःशंद्राह বৈশাৰ্থ কাৰ্ত্তিক মাসে স্লানে যন্ত গুণ। সংক্ৰান্তিতে সহস্ৰ গ্ৰহণে লক্ষ্ श्या ॥ राष्ट्रीभाटक जनस्त विवृद्धः अवूष । अत्रत्नक सान मादन करताक नियुष्ठ।। क्ष्यवेको (धन्नुमान करत एक्ट्रेनरत्न। श्रांटनाक मध्यारिक बुध वर्ध-বাস করে। গঙ্গাভীরে ভূমি দান খে জন করয়। ভাহার ফলের কথা শুনহ নিশ্চর।। ছুই শত দশহাত দীর্থে প্রস্কেরীত। পাঁচ বিঘা পাঁচ কাঠা হয় পরিমিত।। সেই ভূমি ক্ষুত্ররেণু বুগ পদ্মিনাণ। ইন্দ্র চন্দ্র সেই লোকে হয় ভোগবাৰ।। পারে সগুলীপে রাজা ধর্মজানী হয়। নরকক্ষ পিড্লো-কের উদ্ধার করম।। তদস্তরে পিভূলোক স্বর্গবাদী হৈয়া। অবশেযে মুক্তি चात्र व्यास्ति कृताहेता॥ श्रांत काम चात्र विकासिता। शतम ভারোগ্য যোগে প্রাপ্তি যে হইয়া॥ কিয়া নর ভক্তি করি বারাণণী যায়। অনায়ালে মির্কাণ মুক্তি গেই নয়ে পার।। ক্ষার মতে মুক্তি উক্ত আছরে। লিখন। তাহার কারণ এই শুনহ বর্ণন।। অন্ধাযুক্ত হৈয়া যেবা ভূমিদান করে। এই জমে তার মুক্তি কে খণ্ডিছেপারে॥ চিত্র শুদ্ধি না হইরা করে ভূমি দান । স্বর্গভোগ করে কাশী প্রাপ্তিতে নির্বাণ।। নিরম্ভর মাসা विधि भक्ताञ्चान करतः। हेक्क्यूती चान इत्र नेक रख्य धरतः॥ श्रृक्षतिनी कृ-शामि मारम य य कन इहा। शका महाभाग ता**रे** कल मदा शाहा। अथ-थानि दक्क गव कविद्रा द्वालन। श्रुटलात कानन कानि कटत एवं जन।। ইহার অধিক কল গ্রহাম্পর্শে হয়। গঙ্গার মাহাত্ম কছ কহনে বা যায় গাভী অম কলাদানে বেই ফল জান। গকাজল পান মাত্র ফল শক্ত গুণ।। সহত্রেক তান্দ্রারণ করে যেই নর। গঙ্গাজন পান মাত্র নিপ্পাণ **ন**ত্তর 🖟 ভক্তি করি গঙ্গাম্রান করে যেই নরে। অক্ষয় যে বর্গ ভার গুনহ মুরারে।। পঞ্চাল্লানে রতজনে দেখি যম দুত। সিংহ দেখি মূগ বেৰ হয় জানচ্যুক্ত।। আশী রতি অর্ণ দান করে গঙ্গা তটে। মহাত্র্থী হৈয়া অর্গভোগ তার মটে । তার পরে জনুদ্ধীপে রাজা বে ছইরা। শেষে প্রাণ্ডি অবিহুক্ত মির্কাণ াইয়া।। চন্দ্র গ্রহণ সোমবারে যদিন্যাৎ ঘটে। রবিবারে সুর্বগ্রহণ হৈলে প্র বটে ॥ চূড়ামণি যোগ এই শাক্সমক্তে হয়ঃ পঙ্গান্তান করে যেবা। वष्ट करल। व्राः खन्न रूक्तां नि शांश ना तरह भनासारन । भनात महिमा नव मा एवं व रम।। कृति की हे वृक्तामि शिष्ट्रिक अञ्चालता अवस्ति अखादक कांत्रा यर्ग विकार हो दिवास मार्थिक स्था का विकार का कांत्र का विकार का कांत्र का विकार का का का का का का का का

নকর হন্তা হয় উপন্থিতি। তাতে নিশি জাগরণ করে থেই নরে। গলা পূজা দশবিধ দ্রব্য উপহারে। দশ নৈবেদ্য আর শাস্ত্রমন্ত মন্ত্র। শিব বিফু ব্রহ্মা ভগীরথ হেমবস্তা। তিলমিশ্র দশ লাডু জিকবরে দিবে। আর দশ যুত দীপ তথাতে স্থালিবে।। জনেক প্রকার দ্রব্যালাহে বিধিমত। গলাপুলা দিয়া স্নান করে নর যত।। তদন্তরে দশবিধ স্তবে করি স্কৃতি। তাহা পাঠ করিবেক করিয়া ভকতি।। সেই নর দশক্ষম পাপক্ষর করে। পাপের বিশেষ কহি শুন গদাধরে।। বিনা দানে দ্রব্য থেবা উপদান করে। বিধি বিনা হিংসা থেই সেবে নিরন্তরে।। পারন্ত্রী ব্যবহার কায়িক এই জিন কটু বাক্য আর মিথা। কথা সর্বাহ্রণ।। পারন্ত্রা ব্যবহার কায়িক এই জিন কটু বাক্য আর মিথা। কথা সর্বাহ্রণ।। পারন্ত্রব্য মন আর জনিই চিন্তন কথা। বাক্যমন্ত্র এই চারি আচরিত যথা।। পারন্তর্য মন আর জনিই চিন্তন মিথা। কর্মো মনে অভিলাঘ সর্বাহ্রণ।। এ তিন হয়ত পাপ মনের মানন। এইনত দশল্বাহ্রিত পাপ দশ।। ক্রম্ম করি অচিরে বৈকুপ্ত নর যায়। পারে বারাণনে আসি মুক্ত পদ পার।। সপ্তবংশতি অধ্যায় সমান্ত হইল। শিব সম্বাধিরা শিবা পুনজিজাসিল।।

প্রার। গঞ্চার প্রসঙ্গ কথা শুনিরা পার্কার্তী। সানন্দ ইইয়া জিজ্ঞাসেন শিব প্রতি।। চক্র কুণ্ডে বিষ্ণু তপ করিলা যখন। ভগীরথ ভাগিরথী
না ছিল ভখন।। ভবে কি প্রকারে দেব কহ হেন কথা। চক্র কুণ্ড সহ যে
পঞ্চার মিলনতা।। শঙ্কার কহেন শুন ছির করি মন। শুন্তি স্থৃতি সর্প্রশাস্ত্র
ভাছে নিরূপণ।। ভূত ভবিষাৎ বর্তনান যাহা হয়। ঐ সব জিজা বস্তু আছয়ে উদয়।। আমি যাহা কহি ভাহা শুন বরাননে। ইহাতে ছে অবিশ্বাস
না হবে কথনে।। অগস্তা জিল্ডাকে পুনঃ পার্বিতী নন্দনে। গঞ্চার মাহাত্মা
আর শুনিব প্রবণে।। গঞ্চার মাহাত্মা দেব কি আশ্বর্ণা কথা। কুপা করি
কহ দেন শুনিব সর্থা।। যন্তানন বলেন শুন কুপ্রক নন্দন। শঙ্কার কহেন
শুনে প্রীমধুমূদন। গঞ্চাতীরে প্রাদ্ধ আর যে করে ভর্পণ। সতিল করিয়া
কর্মা করে সমর্পণ। তিলসন্দ্রা পিভূলোক হয় প্র্যবাস। অবা যে মুক্ত
হয় শুনহ নির্যান। আর কহি শুন কিছু মহিনা গঞ্চার। ইতি ।স পুরাগেতে আহ্রে বিজ্ঞার।। বাত্মীক নামেতে ছিল হইল উদয়া সন্ধ্যাহীন
প্রণাদি করয়ে বিক্রম।। জ্ঞাবিধি কোন সংস্কার না হইল। পাপাচারে
দিনে দিনে পাপ রুদ্ধি পাইল।। প্রদারা লইয়া সর্বদা ব হারা। এক

किम अत्रात्क खमन अन्द्रतः। टेनवस्मार्ग गांच मर्के कृतिल कुमातः। निक ক্ষীবলৈ স্পাস্থ্য হৈক ভার ॥ ধন দুও সতত প্রহার করে আফি। দুড়বান্ধি लहेत्रा राल यथा यम वनि ॥ विज्ञ श्रेष्ठ लहेत्रा विवाद धर्मतान । दकान दकान পাপ ইহার কহত অব্যাজ। শুল মহারাজ চিত্রগুঞ্লব কর। কোন অংশে পাপ ইহার বাকী নাহি রয়।। ভার পরে যথা উক্ত নরকেতে ফেলি। নানা बार्श माखि त्मय कामिया गाकृति॥ एक्नकाटन देनत्व धक छ। कर्या হইল। দিলে ব্যান্ত খার অবশিষ্ট মাংস ছিল।। গুথিনীতে ঐ মাংস নথে कति नश् । भूनाभार्क अना एव वृक्षिनी त्रस्य छोत्र ।। छुटे छात्न विदोष इ-हेन अভिनय। मत्थ देश्ट विश्व अद्धि तकार्क शख्य।। ताहे करन विश्व সুত মুক্ত যে হইল। স্বৰ্গৰাভ স্বৰ্ণরূপে চড়িয়া চলিল। দিবা মূৰ্ত্তি ধরে ছিল দিবা আভরণ। অপনর সমনে করে চামর বাজন।। সুখে স্বর্গাস ছিজ করিলা সম্বর। গঙ্গাসম তীর্থ নাহি শুন গদাধর।। প্রজাতীরে বাস कल वर्गरन जलात। शका नाय-कीर्जन कर्मन न्यान जाता। लानाकारिन करत क्या (यह नरत। क्रमाशंक मभसता, भूना इक्ति करता। अना कीर्दर्श বিধিমত তিন বঁৎসর রব। গঙ্গাভীরে নিমিষার্গে সেই কল পার।। সমাগ্র रहेन अर्थेनिश्निक अशाहा । अनितन नक्द्रा सूक्ति नित्वत आकाहा।

পরার। পার্কতী নন্দনকৈ অগন্তা মুনি কয়। পঙ্গু কিয়া দূরস্কর যেই নর হয়।। আর কোন মতে বা আশন্ত কলেবর। স্থানে অপারক কহ কি উপার ভার।। কার্জিক বলেন তবে শুন মুনিবর। অন্য তার্থ হৈতে গলাকার পৃথিবী ভিতরে। যেই জন গলাতারে আসিতে না পারে। ভালার উপার কহি শুন মুনিবরে।। গলার সহস্র নাম গুন্ততর আতি। ভালার উপার কহি শুন মুনিবরে।। গলার সহস্র নাম গুন্ততর আতি। ভালার পাঠ করে করিরা ভকতি।। জিল্লামধ্যে সহস্র নাম পাঠ যে করিবে। যে মত নিরমে মন্ত্র উজারণ হবে।। সেই মত গলানাম পাঠ করে সবে। যথা তথা হ কে গলালান কল হাতে।। আমৃতা আনন্দর্কণা ইন্দরিরা ক্রমরী। উজ্ঞা হিলা আদ্ধি থকারণ হরি। ১ কারো ই কার কপা এক মোক্ষ করি থরাবছ লা। ওজানী উত্তরী।। বিন্দুর্কপা বিন্দু যে ক্রপিণী কাদ্বিনী থকার বিশ্বী টির বর বিহারিণী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করে বর বিহারিণী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করে বর বিহারিণী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করে বর বিহারিণী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করি বর বিহারিণী।। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করি বিতারিণী। বিশ্বরূপা ভাগিরথী মুক্তি বিতারিণী। যন্ত্রণার নালিকী করি বালাকার করি বিতারিণী। যালালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী করিকী করিকী করিকী করিকী করিকী করিকী করিকী নালিকী করিকী ক

মাভা নকার কপিণী তরক্ষিণী ।। খকার বিপ্রহা ছুর্গা ধর্ম শহিরিণী । নানা
খাপা পাতক নাশিনী ফুৎকারিণী ।। শিবেসি গোড়শী সিন্ধু ভরক বৃদ্ধিনী ।
ছরশির বিহারিণী ক্ষিতীশ জয়ন ।। ইহার বিংশতি গুণ নামেতে গণিত।
প্রসার সহস্র নাম স্তব স্থলনিত।। উনবিংশতি জাধ্যায় গঙ্গার মাহাত্ম।
সমাপ্ত হইস কাশীশশু বস্তু নিতা।। জিমৃত আস্বাদ কথা শুনে যেই নরে।
চতুবর্গ কল তার লভরে সম্বরে।।

भारत । ऋष्त वरत एम मिजा वस्तर मण्यन । छत्रीतथ तांका कति निव করি আরানা। একা শাপে দগ্ধ পিতৃলোক উদ্ধারিতে। তপস্তা করিয়া গঞা আনি পৃথিবীতে।। স্বৰ্গ সৰ্ত্য পাডাল ত্ৰিলোক হিভ তরে। আনিয়া মিলার গঞা মনিকর্ণী নীরে।। চক্র যে পুন্ধর্ণী আর আনন্দকানন। পরম खत्यात शाम शतम शायन ॥ अधाशामी कतीत्रथ तका शर्क हाति। व्यानिशा মিলিল বিশেষরের নগরী।। নির্বাণ একাশ কাশী ছইলেক নাম। শিবে মুক্তিনহেকতু অভিযুক্ত ধাম !! কাশীতে অনাদিনিদ্ধি মুক্তির বিলাস। গঙ্গা स्वांशमरन देश्य व्यक्ति अकागा। कामीसम सुवर्ध शकात मीत शीता। एएँ। হের আভাবে ভালে অতি মনোহর।। আনন্দকামন মণিকর্ণী ভাগিরথী। দেবের ভুল্লভি ধাম ভিনের সংহতি ॥ পূর্ণ্যপাপ পরিহরি কাশীবাসি জন। মির্কাণ লভয়ে বুচে ভবের বন্ধন।। অহত্রে প্রয়ন্তে কিবা কাশীপুরে মরে। ভারকের উপদেশ ভবসিদ্ধ ভরে।। মহাদান তথ হোম কাশীতে মরণ। ফাশীতে মরিলে লাভ মোক ভতকণ।। মাহেন্দ্র প্রভৃতি যত দেবতার গণ। भित्रुक आहिन भूती कतिएछ त्रकः॥ कामीत मक्किरा आमि नमी मुक्किरत ছ্টলোক পার হৈয়া আসিতে না পারে।। রক্তণা নামেতে নদী সুজিল फेल्पत । भाभीत अटवन देश्टर भूती तका करत ॥ हुई फिरन हुई नहीं क-রিয়া সংশ্বিত। কর্ম হৈতে দেবভারা পাইল নিক্ষ্ ভি।। পশ্চিমে দেহলি नाटम जाभनि भटनम । রহিল রকার ভরে মহেশ আদেশ ॥ পুর্ববিধা ভাগীরথী উত্তরে বস্থুণা। পশ্চিমে দেহলি নামে গণেশ স্থাপনা गार्टम आति नीमा हातिबिटन हाति। मट्या विट्यम्बत त्राक्यांनी न्नी भूती সীমাচার ভূত যত পুরী রক্ষা করে। শিব আজ্ঞা বিনা কেছ <u>ৰে</u>শিতে नाटतः। ভारता विराधमात काका दत्र यात्र करतः। सार्वे स्म मा १८७ भारत जना नाहि भारत।। व विषरत कहि खन कथा देखिशंग। य १८७ इहेरण কাশী ভক্তির প্রকাশ।।

## অথ ধনপ্তম ব্ৰিকের উপখ্যান।

भन्नात । क्शरखात **छत्त छ**ङ् कट्ड विदत्न । क्ष्मिन नम्ख छट्डि स्म কপে বটন।। সেতৃবন্ধ নিকটে বশিক ধনঞ্জন।। মাকু ভক্ত ভাগাবন্ধ বং সতি করম। বিকি কিনি করিরা ধর্মেতৈ সূত্রে ধন। সভত ভিক্সকে ভিকা करत ममर्भन । ভिक्तिভाবে मादि मा पर्मामा कुमात । इहेबा माल्यूर्न छिन বিনতা কন্ধর। ধনঞ্জয় গুণ্ঞাম বর্ণন না যায়। ধর্মা মুর্ত্তি:সাক্ষাতে সৃঞ্জিল বিধাতার ।। চিরকাল গৃহ ধর্ম করে আচরণ। কালেতে ছইল ভার সামের মরণ।। অতি পাপিয়দী ভার মাতা ছুফ মনা। যৌবনে করিয়াছিল পতিরে वक्षना ।। शोवन मध्यत्र काल निन कुरे छाति । शोवस्यत भर्तत शेकि वरक থেই নারী।। অঘোর নরকে বাস ঘটরে ভাহার। শীল ভঙ্গ নরকেতে প-ভন ভর্ত্তার !। পীলভঙ্গ নরকেতে নারী কম্পারর িক্তার পরে প্রামা পুক-রেতে জন্ম হয়।। বাছুরী হইয়া নিজ পুরীব ভক্ষর।। পেচা হৈয়া অন্ধ বৃত্ত কোঠরেতে রয়।। পর পুরুবের করম্পর্ণ সূথ হৈতে। বাঁচাইয়া তত্ত্বাভা ৰুবতী যতনেতে।। 'পতি ভবে করিয়া শরীর সমর্পণ। সভীর আজার হল সুর্যোর স্তন্ত্রন।। অত্তি পত্নী অমুদ্র। পতি সেবা রক্ষে। ত্রিগুণ ত্রিমূর্জি গম্ভ ধরে কুভূহলে।। সোমদন্তা ত্রেরদুর্বা সাভিল কমর। ত্রন্ধাবিসু শিব किन जश्दम कमा रहा। हेश्लादक कीर्खि शतकादन चर्त्रराम । शिक्तका करल घटडे लक्की जब बाज।। ভारता निव याती जब लात धमक्कत । धर्म গালাপত্ন হৈল ভদ্বের উদর ॥ করিব যে মাতৃ **অন্থি**গভাতে **অর্পণ** েক-রিল সক্ষণ্প হেন বণিক নন্দম।। মাভূ অদ্ব আনি পঞ্চ গবো ধৌত করেও পঞ্চামৃতে ধৌত করি শুধিল সম্বরে।। ধুপ দীপ আহি করিনোনা উপহারে চন্দনে লেপন করি পুল্পে পুজা করে॥ খেত বস্ত্রে বেই অস্থি করিয়া কে: र्छन । यज्रात्र एक वास्त्र करत जावतन ॥ छेशस्त्र मृखिका निहा कहिन লেপান। ভাজ সম্পূট কেরাথে করিয়া যতন।। গঙ্গা বাজা করিয়া চলিক ধনঞ্জয় পথে চলে হীন জাতি স্পর্শ না করয়।। সভত প্রিত্র স্পতি স্থ-खिटल क न । जमा गावधारन हरल विश्व नम्मन ॥ श्रथ मुख्य खत्र छात्र इ-ইলউদর: ভাবি অভি ধীরে ধীরে চলে ধনঞ্জর ।। ক্রমে ক্লানে আনিলেক: কাশীর দীনার। ভার রাখি ভারি দক্ষে বসিল ভখার।। পরে ভারি রাখিরাং ভারের বেরক্ষণ। খাদ্য দ্রব্য জন্য বৈশ্য:বাজারেতে জান।। অন্ধরা পাইরা जाति जीव माठेल । कारबर मन्मा के कारब शामिएक शाहिक अस अमार

বন এতে ভাবিলেক মনে। ভাহা লৈয়া পলাইরা গেল নিজ স্থানে।। ধনঞ্জয় আসি তথা ভারি না দেখিয়া। ভার খুলি বস্তু যত দেখে বিস্তারিয়া ্দথিল সকল আছে সম্পূটক নাই। ধনপ্তয়ে উজিলেক ধনঞ্জ বাই।। খাহাকার করে মাথে করি করাঘাত। চারিদিগে বিচারয়ে হইয়া অনাথ। शकासान ना करत मा त्मरच विश्व नाथं। त्विल जातित घरंत जाविसा ध्यमान বক্ষদুরে গিয়া তারি খসাইয়া তায়। সম্পূতিকে অন্থি সাত্র দেখিবারে পায়।। বিষয় হইয়া ছাভি সুদীর্ঘ নিশ্বাস। বনে অন্থি কেলাইয়া আইনে নিজবাস।। পাছে পাছে ধনজন্ধ আইসে তার ঘরে। ওয় কণ্ঠ ওঠ মুখে বাকা নাহি সরে।। দেখিল বস্ত্রের কাদি ভারি নাহি ঘরে। আশাসিয়া কহে তার গৃহিণীর তরে।। সত্য করি কহ মোরে না ভাবিহ ভয়। যথার্থ কহিবে ধন দিব অভিশয়।। কোথা গেল পতি ভোর আনহ ডাকিন।। মোর জননীর অন্থি দেউক জানিয়া। না জানিয়া লোভে প্রতি সম্পূটক আনে। এতে তার দোৰ নাহি লয় মোর মনে।। মোর মদভাগ্য হেন ঘটিন বিপাকে। না করহ ভয় ডাকি আনহ ভাহাকে।। এত শুনি ভিল্লি নিজ পতিকে ডাকিন। লাজে হেটমাখা করি নত্তরে ভাগিল।। পথে ফেলিয়াছি অন্তি ভাগাকে কহিল ধনপ্তয়ে সভ্যে করি বনমধ্যে গোল।। स्वशास्त्र रक्षणाम् व्यक्ति देशल वित्यत्त । क्रियञ्च रहेमा ज्यास-मकल क्रानन কোনখানে অস্থির না হৈল নিরপণ। কি করিব উপার যে ভাবে মনে মন।। ভণিয়া সকল দিন হইল ভভাশ। পথহৈতে পলাইল চোর মছি-নাশ।। ভথাশ হইয়া ভাবে ছাই তিন দিন। ক্ষুণা নিদ্রা শোকে ছুনু, হই-লেক কীণ। নিরাশা হইয়া মনে ভাবি অভি সুংখ। পুনঃ কাশী আসি-বেক করি মান র্থ।। গয়া কাশী প্রয়াগ করিয়া ধনঞ্জয়। স্থাপনার নিজ স্থানে গোল মহাশয়।। ধনঞ্জয় মাতৃ অন্থিকাশীতে প্রবেশ। পাইরা যে ना शाहिक रमश्रह विरमय।। विरम्भित जास्त्र। विरम कहात मक्कि। कानी-পুরী প্রবেশিতে পারে মুঢ়মতি।। আদি বরুণার মধ্যে পুরী বারাগদী। সক্ষ পাইয়া পরে নাম হৈল কাশী । 🕟

जिशमी। वातानशी निना मुर्छि, कृशामशी शत्रामिक, यथ हाि सा इन्ह कीय। विटमतः नमनानत्म, शाश शृंध स्व कत्म, वाशिन स्टेमा यात गिरा। करवे कीय अन मर्मा, नाना कीत्थ मृक्यू क्या, शाहेसा या ना शाहेन भाकि। वत्म त्सन बातानशी, कागांदक मत्र स्थानि, अदक्य त्म स्किट्यक

ভান্তি। অন্য তীর্গে দ্বিজ্ঞবর, মরণ হটলে পর, দেবস্থ পাইরা স্বর্গে যায়। কাশীতে আশ্চর্য্য বড়, মরিয়া চণ্ডাল নর, পরম কৈবল্য ধাস পায়।। কাশী ভাতি চমৎকার, সংসার সাগর পার, করিবারে মথা ত্রিপুরারি। আপনি বসতি করে, মহাসিদ্ধি দেন ভারে, যাহাতে সংসার ভার ভরি।। ভীর্থাস্থরে করি স্লান, অথবা ছাড়িয়া প্রাণ, দেবপুরে দেবভা দে হয়। বারাণদী পরি-সর্বে, প্রাণ ত্যাগে যেই নরে, দেহ দশা পাইতে সংশয়।। কাশীপুরে ভিন্ন त्नात्व, **कात्रत्कत छेशरास्या, श्रुमर्कचा** कतरत श्रुन। इंकेशरम **पालिना**रय, কাশীবাস করি শেষে, শরীর ছাড়য়ে যত জন।। দূরে থাকে লাভ তার, भटल इस ছात्रथात, याहा लाज भटल गुना करत। जोहा कानीवानि कन, হারাইয়া দেহ ধন, হইলা যিখন একেবারে।। বারাণদী পুরী নাম, অনেন্ গুণের যাম, শিব মহিমাতে যত জন। অশেব পাপের পাপী, পাপেতে হুইয়া তাণী, কাশী বালে পাপ বিমোচন।। চরুষ সময়ে ভেঁহ, ভালে অফি ধরে দেজ, যামার্ফে ধনিতা ফণি গলে। অতনু ছইরা শেষে, আপরে आপনি ভাবে, শরীর না হয় কোন কালে।। আনন্দ কানন কাশী, চক্র ভীর্থ পুণ্য রাশি, তাহে ভাগিরথীর সঞ্চার। বিশেশর ক্রিয় স্থান, তাহাতে ছাড়িয়া প্রাণ, ভব বন্ধ নাহি ঘুচে কার।। একে পুরী বারাণসী, তাহাতে ৰঞ্জণা আসি, ভাগিরথী উত্তর বাহিনী। মুক্তির এধান স্থান, ভাহা ছাড়ি হেন ধান, মূঢ় জন্তু পাইতেছে গুৰ্নান।। গর্ত্ত হৈ ছংথ যত, যদের প্র-ছার মত, সে সর ছইল কিমারণ। বিশেশর রূপ। বলে, পারে বারাণদী खल, द्वन छात्र कत गृह कम ।। छीर्थ खत्र भाभ नाम, धर्मलाह वर्षनाम, স্ত্রাম পান প্রাণভাগি ঘটে। বারাণদী পুর বাসে, এক কালে মুল মাখে, त्वम भारत्व रहन कथा बर्छ ॥ कामीभूती भतिमस्त, मिकिनिकांत औरक, क्यू शांखि छन् यमि शात्र। मीलकर्श गणि शत्ल, वात्म वधु छाँ थि लात्ल, करन इम्र करनरकरण योत्र।। प्रनिकर्निकात धरे, प्रहिमा लागिमा धरेहै, ख-শুচি পার্থিব দেহ ছাড়ে। মিজ শ্রাজা বোধময়, তথনি একত্র হয়, পৃথক না হয় - পান্তরে।। অপার মহিমা কাশী, মুক্তিপুরী বারাণসী, মলিন क्रमत्र (यहः खन। क्रल्ण खना छीर्थ नमः, मश्लानी (यह खन, खाउं महन् ना कर छ। १॥ मूर मन अन वांगी, कांगी भिव तांचवांगी, दकन हांडि वांह व्यमा शूर । छाविया भरतर इच, एक भिर शामशब, मन व्यक्त हार दर्व ছুর।। ব্রক্ষালিছ ল'ভ যাই, স্থির মোক লক্ষ্মী পাই, কমলা চঞ্চলা তাতিস্তম।

विमाधिन गृह मात, ভূতা अध शब खात, शक्त माला अधिमापि (हम ॥ ऋ-র্গেডে ফাইতে পারে, যে জন উদাম করে, কাশী মাত্র উদানে না পার। ভুলনা কবিয়া ভারে, বিধাভা ভুলেতে ধরে, বৈকুণ্ঠ প্রভৃতি কাশী কায়।। देवकुश्रीमि लघु छोत्र, नकनि छेशदत यात्र, क्षेत्रि छेस्ति छला कानी शूत्री। পুরুষার্থ চতুর্যায়, ভারে কাশী নীচে হয়, স্বর্গ সব উঠিল উপরি।। স্থাবর জঙ্গম যন্ত, কাশীপুরে অবস্থিত, ফুদ্র রূপি সকলি জানিবে। নানা উপসর্গ যত, পাপ পূণা আদি শত, ছাড়ি সব প্রম মিলিবে।। অবশ্ব অপার কার, জন্ম মৃত্যু ক্লেশ তার, বারাশদী পুরে পরিহরি। দেহ নিত্য জ্যোতি-র্মন্ন, পরিগ্রহ না করর, কিবা মৃচ লোক আহা মরি।। ক্ষিভিতে থাকিতে কাশী, কেন লোক শোক বাসী, সহিতেছে বিপদের ভার। যেখানে নিধনে শ্বরে, উপদেশ মুক্তি করে, **ছেন কাশী না** করে সঞ্চার।। ছুই তিনবার খার, যথেষ্ট আচার ভার, তারাণদী বানি এক জন। আর এক বর্ণান্তামি, জিতেন্দ্রির নহে ভূমি, করে মাত্র শুনির ভোজন।। ইক্তি সধ্যে কাশীবাসি, পুণাবস্ত বলে ভাষি, প্রেষ্ঠ হয় যুনির ভাজন। ছেন কাশী পুরী বাসে, নাহি क्त मन जारम, रूथा जना रहेन ननन।। ছভ তি সুকৃতি কিব।, বে करत কাশীর সেবা, গতি অস্তে লভয়ে সমান। হরের নয়নানল, দহে কর্মা নিজ কল, অঙ্কুর না হয় কাশী স্থান।। শশক মাশক পূকা, বক কল বিজ রুকা, ভুরগ উরগ বনচর। শৃগাল কুরুর আদি, অবিযুক্তে মরে যদি, ভাহারা म) जटल कटलवत् ॥ जूबन क्रमांक मर्भ, करत्रटक जिप्त धर्भ, जात्न अर्च চন্দ্র কোঁটা ধরে। কাশী বাস করে যেই, মোর পারিয়দ সেই, শিব করে शार्सकीत करत् ॥ कांगीवांश देशस तक, कल एन हत् यक, मेर्मा खानि জনুক অবণি। মহাদেব অভুগ্রহ, সে সকল ক্লন্ত দেহ, অবসানে লভে মুব্দি বিধি ।। অমিকাতে মিজ থাম, দীজানাথ বসু নাম, ভ্রহ্মানদ্দে আন-শিত মন। পরম অমৃত ভাঙা, ভাষা করি কাশীখণ্ড, ত্রিপদী করিল वित्रहम ॥

প্রার। বর্ষের সকল রুদ্র আছে কাদীপুরে। অন্তরীকে রুদ্র যত দেহ নহে দুরে।। পৃথিবীতে জন্য সব আছে ক্লুদ্রগণ। উচ অধে দশ দশ রুদ্রেব গণন।। উত্তরে দক্ষিণে পুর্বের পশ্চিমে গণিত। দশ দশ রুদ্র হেন বেদের বিহিত।। পুত্রে অসংখ্য ক্লুদ্র হাজারে হাজার। ভাহার অধিক ক্লুল ক্লু কাশীকার।। অতথব হৈলে কাশী রুদ্র বাস নাম। স্বর্গ

মর্ত্য পাতালে নাহিক হেন ধাম ॥ কাশীতে নাহিক জাতি অজাতি বিচার। कांगी वांगि शृंदक कुछ शृंको कल कोत ।। स्मारकत वर्ष गत मानरम भग्नम শরশযা শাশান শকের অর্থ হন।। মহাভূত ত্রন্ধা বিষ্ণু শিব ভিন জন। क्षणदा इहेरत गव ख्यात्र भवन ॥ मात्र महागामान हहेल **এ**हे खरव । अवि-मुक्क नम् धाम बाहिक जश्नात्त ॥ शृथितीत मरधा नम्रक्क मरधा हम्। अ-খিতে জলের লয় আছয়ে নিশ্চয়। বায়ু মধ্যে লয় হয় ভেজ ইভি যত। আকাশে বায়ুর লয় আছয়ে নিয়ত।। অহন্ধার মধ্যে আকাশেতে হয় লয়। অহস্কার বোড়শ বিকার বুক্ত হয়। বুদ্ধিদান মহন্তত্ত্বে অহস্কার লর।। প্রকৃতি নধ্যেতে সহস্তত্ত্বের সঞ্চার।। ত্রিগুণা প্রকৃতি লয় নির্গুণ পুরুষে। মে পঞ্চবিংশতি তম গণ্য ভব শেৰে॥ দেহ গেল পতি জীব সেই পরতর। প্রকৃতি প্রলয় এই ক**হে ধীরব**র।। ব্রহ্মা বিষ্ণু রুদ্র কেছ নারহে তথন। काल भृष्टि त्र श्रुक्रय कत्रत्म क्ष्मिन।। कोशांक्टे मशविष्ट्रं नत्न वृथ कन। মহাদেৰ বলি তাহে করছ জ্ঞান।। আদি অন্ত মধ্য পুন্য শিব মহামতি। লক্ষীপতি যেই সেই পাৰ্কভীর পতি।। দৈতা ৰূপে প্রলয়ে আপনি ক্রিপু-রারি। ত্রিপুল অত্ত্রেতে করি রাধি কাশীপুরী।। স্বতএব কলিকালে প্রভার-রহিত। বারাণসী পুরী বেদ শা**ল্লে নি**ৰূপিত।। ক্লন্দ বলে ঋষিবর এই সে কারণ। বারাণদী কাশী নাম **আলম্দ কানন।। নাম** দহাথাশান যে জার রুদ্রবাস। পার্বাভী সাক্ষাতে শিহকরিল প্রকাশ।। বিকুর সাক্ষাতে পুর্নের যে কপে কথন। শিব মুখে ছেন আমি করিয়ে অবণ। কাশীর মাহাম্য এই কহিত্ব ভোমাতে। যে পঠে অধ্যায় এই পরম ভক্তিভে।। গাধুকে শু-নাম যেই এইত অধ্যায়। পরম পুরিত হৈয়া লিব লোক পার।। কছ মুনি-বর ইহ শুনিবে কি আর । বড় ভুক্তি কাশী কথা কহিছে আমার।। গকাতীরে বর্ত্তমানে অধিকা নগর। তথাতে বগতি সীভানাথ বসুবর ।। ভ্রন্থানন্দ রত সভ নিস্তার উপায়। কাশীখণ্ড সমাপন ত্রিশ ভাধায়ে।।

#### --

## অথ কালভৈরব উপাধ্যান।

পরার। তারপর শুনহ বৃত্তান্ত সর্ব নর। প্রত্যেকে বর্ণনা কাশী। মহিমা অপার। অগস্তাকে বড়ানন কহেন সন্ধর। কাশীর ঈশ্বর শিব অচিন্তা অন্তর।। যাহাকে ধ্যানেতে আর মনে নাহি পার। অব্যক্ত সভাবনীর নীরাময় হয়।। যোগীগণ সম্বিতে বস্তু নাহি গায়। ইঞ্চারণে

कालकारम अकाम अवास ।। मिक्र आमेन्समस क्वम अवस । स्वांकी उ শুদ্ধ সত্ম হৃদয়স্থ রয়।। এই অপ অনেক কহিল বিপ্রবরে। পরে মুনি बिकांगिल शर्वको कुमादा॥ अवाय अधिका गर्मा निव यमि इत। ইहात विटमय कर रहेश जनम् ॥ वड़ानन कटरन अनर मुनिवत । এक मिन অবিগণ সভায় ভাষার।। জিল্ঞানিলা বিধি স্থানে ত্রেষ্ঠ কেবা হয়। খবি बुर्थ अहे वाका खिन बच्चा कहा। मकरणत अर्थ जामि मुखिकर्छ। इहे। লিব বিছু আমার অধীন সকলেই।। হেন বাকা শুনিয়া কুপিল নারায়ণ। श्विषिधार करह अने जामात्र बहन ।। विकू विनि मर्सकर्छ। करह मर्स मर्स्ट **এ**ই बन्ता नो जिन्दा इहेन। जे भिट्छ ॥ अतरहत कर्छ। य इरम्रन ना ताम्रा যাহার প্রসাদে শিব আদি রক্ষা ২ন । তদন্তরে চারি বেদ কচে পরস্পর। সকলের শ্রেষ্ঠ শিব কহিল সন্থর।। প্রণব কহেন শিব পরম প্রকামধ। ভাঁর পর বস্তু কিছু নাহি বেদে কয়।। হেনকালে আচায়তে মহাতেজ রাশি। উদায় হুইল তথা প্রলয়ের অসি।। ব্রহ্মাপ্ত ভেদিয়া তেল প্রকাশ হইল। দেবতা তপস্থী যত কাঁপিতে লাগিল।। তার মধ্য রুজ্রপ হর ম হ'লেল। তেজ র'শি ঘোর মূর্ত্তি অতি পুনির্মাল।। শিব মূর্ত্তি দেখি একা। কংহন সন্তর। আখার কপাল হৈতে উদিত ভোমার।। তবে রক্ষা করি ভূমি হও অনুগত। এত শুনি মহাদেব হইলা কোপবত।। নিজ অঞ্ হৈতে হয় এ কালটভাৰে। শিব দিন্দা করে ব্রহ্মা শুনি ভাসন্তব।। বিধির পঞ্চম মুখ নথেতে ছিজিল। একার নম্ভক কাল হস্তেতে রহিল। ভারপর নারায়ণ অভি ভীভ হৈয়া। শূলপাণি গুর করে লক্ষিত হুইয়া। বর দিলা मन्नित (पर नात्याप्रत्य। क्शर्डित कर्दा १७ रेवकुष्ठे कुत्रत्य।। बन्धा क्यांनि দেব যত ভোষার অধীন। তব কুপা বিনা শুন চলে কোন দিন।। **অবশে**ৰে শিন্ত নাথে একা ভাৰ কৈল। আশুভোষ মহেশ ব্ৰহ্মাকে বৰ দিল।। ভূমি সৃষ্টিক্রা একা দেবজার পর। ভোমা বিনে সৃষ্টিক্রা নাহি স্বভস্তর।। **७ मस्रत महारम्य अस्रत छातिया। अस्र रेहरंड बक क्ना छेर्**शिङ क-রিযা।। ত্রজহত্যা নামে কন্যা মূর্ত্তি ভয়ন্তর। ধরশন মাত্র ভাঙ্গ কল্পে থর থর।। কন্যা প্রতি মহাদেব ডাক দিয়া কর। ব্রহ্মহত্যা পাপ কালভৈরবের হর।। যাহ তুমি অভিশীয় ভৈরবের অঞে। যথা তথা যায় কাল থাক ভার गदमः। एतर्गय देखता मा यात्र कामीशूरी। छमत्रवि अभिट्यक इडेब्रा अमती। এভবলি ममाभित इहेम खर्खकान। खम्बोहरफ गांत्र कान-ভৈরবের স্থান।। সে কালতৈরৰ একা মুগু ২ন্তে করি। স্থর্গ মন্ত্য পাতাল ভ্রমণ করে কিরি॥ সন্থরেতে নারারণ পুরেতে আসিয়া। বছবিধ বিঞ্ সক্ষে আলাপ করিয়া॥ বছ কালান্তে কালভৈরব কাশী যায়। ভ্রদ্ধহৈতে কন্যা ত্যাগ তৈরবের পায়॥ তদন্তরে মহাদেব মনেতে বিচারি। বারা-গদে রাজা কালভৈরবেরে করি॥ কালভিরবের প্রতি কহেন বচন। তব কুপা বিনে নহে কাশী দরশন॥ যেবা অপ্রেত্ত তব পূজা নাহি আচরিবে। কাশীবাদে তার পাপ কভু নাহি যাবে॥ মাঘ মাদে সীত পক্ষ অর্থমী রবিবার। চতুর্দ্দশী কুজবার শুন সারোদ্ধার॥ কালভিরবের পূজা ভক্তি-ভাবে করে। যথা সাধ্য বিধিমতে ভ্রব্য উপহারে॥ যে জীবের হর কাশী মৃত্যু অবশেষে। অবংগলে নির্কাণ জানিবে শিব শেষে॥ একত্রিশ ভাবার হইল সমাপন। অগস্থার নিকটে কহেন যড়ানন॥

#### -11311-

### स्थ म्ख्यानि छेथायान।

পায়ার। কার্ত্তিক কহেন শুন অগন্তা মুনিবর। যে প্রকারে দশুপানি হইলা সম্বর।। গন্ধমাদনেতে পুণ্য ভদ্রনামে যক। পুত্র না হওনে তার মনে বড় ছুঃখ।। এক দিন পত্নী সঙ্গে পুণা ভদ্র কর। সংগার বিক্ল যার পুজ নাহি হয়।। অনেক বিলাগ করে পত্নীর সহিতে। তার পরে চিত্তে পুজ হইবে কি মতে।। শিব জারাধনা করা এইত নিশ্চর। অনায়ানে পুজ হবে নাহিক সংশয়।। পুণা ভদ্র পুজ কামে শিব পূজা করে। সঙ্গুষ্ট হইয়া মৃত্ বর দিল তারে।। তব পুজ মম প্রিয় হবে অভিশয়। বর দিয়া मनानित अधर्कान २३।। छम्खद्र स्कताक महान रहेन। रुतिदक्श नाम् তার আখ্যান করিল।। দিনে দিনে বাড়ে পুত্র যেন চক্রকলা,। অভিশয় তেকোনর শরীর নির্মানা।। পুণাজ্ঞা পত্নী সানন্দ অন্তরে। পুত্রকে सूनीक दनन बदम्य क्षकाद्य ॥ अकिन द्वृतिदक्य विखिला बन्धद्य । समन করিয়া শিব আরাধনা করে।। কাশীপুরে হরিকেশ যাইয়া সম্বর। মোর-তর তপ্রা। করিল যক্ষবর।। তার পরে প্রসন্ম হইন্না গৌরী হর। রুষতে আইলা হরিকেশের গোচর।। বর দিলা দণ্ডপাণি কাশীতে হইবে। দগুপাণি নাম তব আখ্যান করিবে।। বারাণসী রক্ষা কর ধর্মাশীল জনে। পাপাচারে দণ্ড তুমি কর দণ্ডপাণে।। মম সম ভূষা তুমি করিবে ধারণে। किं किंदर कुमि कामी मुख खरन।। उर श्रुका विस्न कामी वारमण्ड विकल। उर निका-अत्नत काभी एक नाहि ऋल।। व्हानन करहन व्यवस्था

সন্মিধান। শিব আঞা শাসনের জি কব বিধান।। দণ্ডপাণি ভূত্য বলি মোর দ্বেদ হৈল। তেকারণে কাশী ছাজি বাস যে শ্রীশৈল।। বলিশ অধ্যায় দণ্ডপাণির বর্ণন। সমাপ্ত হইল অধ্যা অতি স্থশোভন।।

-34846-

#### অখ জানবাপীর মাহাত্মা I

পরার। অগস্তা কছেন দেব শুন বড়ানন। জ্ঞানবাপীর মাছাত্মা যে করিব প্রবণ।। কন্দ কহে শুনহ কুন্তক মুনিবর। জ্ঞানবাশীর বৃত্তান্তেতে भारभन अस्त ।। त्य कारलटक अरभन मक्शन नाहि नहा कवा नरम कीटनन शांत्र मिक्कि इत्र। अदिशुक्त महादनत वाहेन दश्म कादन । महाक्रक्त करा ধরি হস্তেতে ত্রিশূলে।। যথা ত্রন্ধা বিষ্ণু লিক আছে প্রকাশিত। তথা আসি মহাক্তম্র হৈলা উপনীত।। মনেতে ভাবিলা দেব জল কোথা পাব। सूभी उन वाल नित्य साम कताहैय।। এक विश्वि त्रहे शाल जिन्न घा-एस। जिन्न चार्कात देशन चालत छम्स।। सूनीकन कन दमिस निव क्रि হৈল। ত্রন্ধা বিকু ছুই লিজে অভিষেক কৈল।। সেই কুণ্ড জ্ঞানবাপী व्याकाम क्रित्र । क्षत्रविष क्लामवाशी केल्य इहेन ॥ क्यामवाशीटक व्यवा सानामि कत्य। जारात कटलत कथा करूपन मा रहा। नर्क शांश मुक्त रेरहा গেই সৰ নর। জনায়াসে যুক্তিপদ লঙ্গন্ধনা হা আর কহি ওনা মুনি মাহাত্রা অপার। শুরুপক অন্তমীতে রহম্পতি বার।। পুষা নক্ষত্রেতে বাতীপাত বোগ হয়। যেই নর জানবাপী জলে আদ্ধ করয়। কোট পর। আন্ধ কল অবশ্য ভাহার। পিতলোক স্বর্গে যার হয়ত নিস্তার।। অর্থ্যনী কি চতুর্দ্দশী ভিথিরভাত্তরে। উপবাস করি যেবা প্রতি স্থান করে ! তার পরে জানবাপী জল পান করে। শিব লিক্ষমর হয় কে খণ্ডিতে शास्त्र ।। छेलवान धकांमनी किथिए कतिया । विशशु य जेश के छोर्थत थहिंहा ॥ कांत्र कृत्म जिल्लाखक नित्यत ध्वकांग । व्यक्तिक नमा सूध অত্তে স্বৰ্গবাস।। জ্ঞানবাপী আর হয় শিব তীর্থ নাম। জ্ঞান তীর্থ তারক कार्थ निकीटनत्र थात्र।। पत्रभटन कक कल ना बाह्य वाथान। याहात कर्नि কাস্পর্দে অবশ্য নির্বাণ।।

## अथ मूलांहनांत छेशांचान।

পয়ার। স্থার এক ইতিহাস শুন মুনিবর। হরিশর্মা নামে এক কান্দী-भूरत घत ॥ छोत अक कमा। देश्य भन्नमा सून्यती । कारभत वर्गमा छोत कति-তে না পারি। আশ্চর্য্য যে ৰূপ কি কছিব তব স্থানে। ভাছার ভুলনা मिट नाहि बिष्वतम्।। **खरत्य क्लिक पूर्त करत्र श**नाग्रम्। स्मयक्ना। আসি সৰ নিন্দরে আপন।। সুষ্ঠা ভয়ে অন্ধকার কেনেভে লুকায়। রাভ্ ভয়ে চন্দ্রকেব বদনে মিশার।। উর্দ্ধে অধাে তেনী বেন ক্রমতে থাকর। (छन्छम जूक्त छिन्म। मरद क्या। भारत श्रेक्षन राम हक्ष्म ज्यात। हक्क দ্বর অহর্নিশি ভেমতি করে। জবা পুলে মুক্তাঞ্জেণী যেন জাচ্চাদর। দত্ত পংক্তি ওষ্ঠাধর তেমতি শোভর।। কণ্ঠদেশে তিল রেখা দিয়া কাম কর স্বৰ্গ মন্ত্ৰা পাতালে অমন নাহি হয়।। অমূলা বতন মেন বসনে ঢাক্য। কুচন্তর সেই রূপে বসনে উদর ॥ নাভি উর্দ্ধে লোম শ্রেণী অভি সুশোভর। व्यापा के इताम स्वा त्यन यकि नात्र।। अत्र अस शामकत्र केशमा नाः इम्र । जगरनटक इश्यनाम् काटम शांक तम्र ॥ स्ट्रांचना । एवटचे (यता सम्रदन्त कोर्ट । निर्मारत त्रहिक टेर्ट्सा शेटक खद्ध मरन ।। खडक्कर १० सूरला हमा **करम** ছিজ ঘরে। অন্য লোক মুখানাহি নয়নেতে হেরে ॥ নিতা নিতা কান ব্যাপী প্রাতঃস্থান করি। জানবাপী শিবলিক মন্দিরেতে ফিরি।। জব্জি कति शामाग्रुष्ठ शाम कति शरत । यन्त्रिय याक्ति मा कति त्यस्य यात्र धरतः।। এইকপে বছকাল করিয়া জাপনা। রাত্রিযোগে নিজ্রাতে জাছেন সুলো-हमा।। ८इनकाटन शक्तर्य जानिया कानी भूती। कन्मादक हतिया नया यात्र चुराकति॥ अथ मर्थः विस्नमाली ताकन आहित। शक्तर्स महिङ्कुक अस्तरू করিল ৷ পরস্পর মুক্তাখাতে হইয়া কাতরে ৷ গদ্ধর্ম রাক্ষ ছুই প্রাণ ত্যাগ করে।। গন্ধর্কের মৃত্যু হৈল দেখি স্থলোচনা। অভ্যন্ত কাতর হৈয়া कत्रत्र कलगा।

ত্রিপদী। শিব ভক্ত সুলোচনার সদাচিত্তে শিবার্চ্চনা, পদ্ধানিকে স্বামী আন করি। অশেব করণা করে, শিব শিব বলি স্মরে, প্রাণভ্যাণ করিল সুন্দরী।। পদ্ধান রবেতে মৈল, জার শিব ভক্ত ছিল, সেই পুণ্যবলে হৈল রাজা। মলরা কেতুর পূক্ত, মালকেতু নাম স্ত্র, রাজ্যভোগ করে মহা-তেজা। সুলোচনা ভার পরে, কণাট রাজার ঘরে, রাজ্যক্যা হইল সুন্দরী।

কন্যা দেখি রাজা সুখী, কলাবতী নাম রাখি, পালন করের পাঁটেশ্বী।।

দিনে দিনে বাড়ে কন্যা, রূপে গুণে ইংল ধন্যা, বিবাহের কাল উপস্থিত
পুর্কজন্ম সংকারে, শাল্যকেড়ু বিভা করে, উজরে পরম আহলাদিত।।

দৌহে দোঁহা জনুগত, নানাসুখ ভোগ রত রাজা রাণী পরম সস্তোষে।
রাজের সাঁশিত অভি, পুজন্ম প্রজাপতি, রাজ্যে লোক থাকরে

হরিষে।। রাজা রাণী ছুই জন, সদা আনন্দিত মন, ক্রুমে ক্রুমে তিন পুল ইংল। পুর্জের দেখিয়া মুখ, হইল পরম সুখ, নানা সুখে বছকাল গেল।।

সুলোচনা শিব ভক্ত, আভরণে হৈয়া ত্যাকে, রুজাক যে করয়ে

ধারণ। ভন্ম অকে, নদা মাথে, শিব শিব দদা মুখে, অস্তরেভে সনাশিব ধান।। তেরিশ অধ্যায় সাক্ষ তার পর শুন রক, অভি চমৎকার

হর জার। রাজা সদা থাকে রক্তে, নিতা নিত্য ভূরুভকে, দিন গত করে

নিরস্তর গ্র

∸ ত্রিপদী 🖟 মালাকেডু এক দিনে, বসি রাজ সিংহাদনে, চিত্রকরে চিত্র পট আনে। নরপতি দেখি ভুষ্ট, কলাবতী হবে ক্ট্যু পাঠাইলা রাণী সন্নিধানে।। চিত্রপটি দেখি রাণী, শিরে করাবাত হানি, মুচ্ছিত হইলা কলাবভা। তার পরে জ্ঞান হয়, চিত্রপটে দৃষ্টি রয়, তর্জনীতে নেহারয়ে সহা।। বারাণদী অন্তরীক, পুত্তলে করিল লক্ষ্, একিশব বরুণা সম্বর। অর্গোদ্ধার মণিকণি, গঙ্গা মথা উত্তরিণী, যম যিনি তৃণ জুলা হর।। ভিন রূপে তিনধার, বহিতেছে নিরম্ভর, মোক বিধারিনী সর্কসার। জ্ঞানত্তপ শিব যথা, শিবা নিজত্তপ তথা, মহিমা বর্ণিতে শক্তি কার।। হরিশ্চন্দ্র প্রতিষ্ঠিত। প্রবলাক তথাস্থিত, কপালে মোচন তীর্থ সার। মৎস্যোদনী ত্রিলোচন, কাশীতে পাপ মোচন, ক্ষেশ্বর যজেশব আর।। দেখে বিনায়কেশ্বর, তথা ওয়েশ্বর হর, ভূকীশ্বর পার্কভীশ্বরাদি। एमदर्थ छ्कुटर्करम्थत, श्रुतार्थ क्रेश्वत यत, श्रुत्यंत्र विविध नमाथि । नात्रश्वक শিবলিঙ্গ ভীর্থেশ্বর নক্ষী ভুঞ্জ, মনোরজে হেরে দৈলেশ্বর। হেরে রাণী ময়েশ্বর, সপ্ত সাগবেশীশ্বর, জিপুরেশ লিঞ্চ গঙ্গাধর।। তারাপ্তে থলিত थए, वार्ष्यंत्र छदयक्ष, विस्तांहर्यम् रामेगात् । नकन रमधरम तारी, करन सुक्री करन कानी, रमर्थ शक्ष शाख्यु खत जात ॥ रमिश्रा अस्तारमधत नातम क्षिण इत, अनामि कमारायत सिव। एमधिन वनि कमार, आत কত শগ্নন্থ, গঙ্গাধর উদ্ধারেন জীব।। দেখরে জাদি কেশব, ভদত্তে

विश्वामधित, तामन दक्षाव क्रांकी स्मिश्व। यहाह दक्षाव बुक्क, स्ट्र তথা হর মুক্ত, শঙ্খ মাধক দেখে আঁথি।। লক্ষ্মী নৃসিংহ মাধব, আর ভূত একেশব, নুসিংহের হেরিক প্রসাদ। হেরে গোপ গোপীশ্বর, বর্ক বিনারক কর, শেষ মাধ্ব দেখিরা আহলাদ।। সারস্বত গঙ্গা বার, সরস্বতী সর্কসার, পঞ্চানন তীর্থ মন্দাকিনী। ময়খা আদিতা গঙ্গ, আর দেখে রুড विक, खाउ:शत खादव ताबीला कादवाबत कर्शनीम, चिव हतता खरीम, বিশের যে নিতম উদিত। নাভি হরে মধ্য অংশ, প্রশতীশ্বর শিব অংশ, চন্দ্রাভ্য ক্রমের অবস্থিত।। বীরেশ্বরে আত্মানর, লিস কেদারের হয়, শুক্র কেশেশ্বর অবস্থিতি। নথ লোম অলন্ধার, অন্য দর্ম লিক তার, দক্ষিণ হাস্তেতে হয় মুক্তি।। চিত্ৰপটে শিবৰূপ, বিনায়ক ধর্মা কূপ,বিশ্বভুজা দশা-শ্রমেধক। ক্রমে ক্রমে যত দেখে, আনন্দ অপার সুখে, কি ভাহার বর্ণিব অধিক।। জ্ঞানবাপী দেখি বামা, ক্রন্দন করয়ে বামা, পরে অচেতন কলা-বভী। যতেক স্থীতে মেলি, একি একি একি বলি, কেন ছেন হইলা গো সজী।। কেছ কুছে দেখ সখী, আচন্থিতে হৈল এফি, বুঝিতে না পারি কে কারণ। কেই বলে অন্য ভাব, মনেহত জন্মিল লাভ, তেকারণে হইল এ-মন ৷ আর দথী কহে ওগো, ডুমি দে কাছার মাগে; লডা বটে সোর মনে লয়। অন্য রামা কহে শুন, মনে পাছে আর কোন, বুরিতে না পারি त्भा निक्त ।। काम नथी बटल देशन, निथा किन कत दक्त, कल माहे ता-জার নিকটে। কেছ কেছ শীস্ত চলো, ভূমিত কহিলা ভালো, রাণী সূক্র্য रमचि विद्य शर्षे ॥ विद्यादाचा चात्र शर्तत, मयत्व माखुना करत, कलावकी निकटिट याता सनित्रा ता नव कथा, माम विवादिल छथा, अनुमाम क-तित्रा वृतात्र ॥ श्रृक्तकारम एकान जाव, विद्युशति देश्य जाज, वह्नित्म जा-शांत विशेष । ভार्य अञ्च भूगिकिछ, देशांक शता छिछिछ, कनायकी **टिन महिल।। टिजटतथा अहै महन, जिल्ल क**ति अञ्चमाहम, टिज्र पर्ट हिंदाना भंतीरत । পर्छ न्मार्ट्स कलावजी, सुन्दित इहेल मिंछ, मत्न देशल कथा क्या-स्टात ॥ जब नथी जिम्राटन, शूटल एक विवतरण, सुरलावना आहिल रथ काटन । मृशकित आश्रमम, ताका (एवि बाच मन, जीक देशा किकाटन म-करण।। तांगी नकझरण कन्न, निरंतमन महामन्न, यमि क्रणा केत्र क्योति। এই ভিক্ষা দেহ মোরে, বাব আমি কাশীপুরে, কলহীন স্বামী আজা বিদে।। মাল্যকেভু শুনি বাকা, চিত্তেভে করিয়া ঐক্য, কহিয়াছ বভু উপ্-

(मण। फ़िंदि प्राणि कांनी गांव, अनाग्रात्य मुख्ति शांव, अहे कथी कहिन विटम्म । दांका वाक ना कवित्रा, शक्क दांक व निया, किसू धम जिका করি লয়। শুভকুণে দিন পাইয়া, কলাবতী দকে লইয়া, মাল্যকেতু কানী छलि यात्र। यथा व्यविश्वज्ञश्रुदी, ख्या याहेत्रा छेउति, व्या मंनिकर्नि सान হৈকল। অপরেতে বিশেশর, দর্শন করি প্র, ক্রমে ক্রমে সব দেখাইল।। किंगीय है। अर्स कथा, छाटंड माहि जानाथा, माम शएक मन विवत्। छीर्थ পৰ সাহে তথা, স্বামী লইয়া যথা তথা, অগ্ৰে পথ কৰি নিৱীক্ষণ।। জ্ঞান-चानी खां हात, कलांवे कुड़रान, यामीरक गकन निर्वितन। शिष्ठ পত্নী ছাই জনে, অতি আনিন্দিত মনে, সেই স্থানে ছোর ভপ কৈল।। ভবে বছ দিনাব্বরে, হর গৌরী আসি পরে, তুই কনে প্রসন্ন হইল। রাজা রাণী ছুই জনে, করে তপ ঐক্য মনে, হর গৌরী সন্মুখে দাঁড়াইল।। কলাবতী মালাকেতু, শিব কহে তুই হৈতু, বর লহ যাহা ইচ্ছা হয়। পড়ী পতি আনন্দিক, নিব নিবা উপস্থিত, বছ বিধ স্তব করি কয়।। অন্য বর নাহি ारें, नमा से शम शारे, काठीत यहना नाहि रत्र। शिं शड़ी खिल प्रिश, महारमवं देश्ला सूचि, निक रमट्ट कतिरलन लग्न।। त्री जानाथ वसू मीना, सम्बानन कुला विना, कांज्य इहेशा निर्वत्त । आमि अिं हीन कारन, मिदानिनि अहे मत्न, जाल त्यन खड़ कुशा इता।

ইতি ঐকার্ত্তিক অগস্তা সংবাদে চৌত্রিশ মধ্যায় সমাপ্ত।

#### -34848-

ধনপ্তর বণিকের বিবরণ ও কাশীতে গঙ্গার মাহাজ্য জ্ঞানবাপী তীর্থাথানে ও কলাবতী মাল্যকেডু নিকাশ নামো ভূতীয়া স্বৰ্গঃ।

### ख्य जमाहांत्र कथन।

পন্নার। জগস্তা কংহন শুন প্রস্থু বড়ানন। জবিমুক্ত মহাক্ষেত্র নির্বাণ কারণ । অবিমুক্ত কথা যত অমৃত শিধর। শুনিয়া না হয় তৃপ্ত আমার জ-खत ।। आनवाशी कथा छनि भात मत्न रहा। जिल्लूवतन कीर्थ यक कानी नम नम् ॥ कानी विषयुत भक्ना किन भी खमान । स्यथास- स्यथास- धारह खबर्च निर्दाप ।। कनिकारन एकन है लिन्न यं नत् । कि**क्ट्र** शाहेरव क्रीनी গঙ্গা বিশ্বেশ্ব।। কলিতে তপ্যাদান প্রত ভবি শ্বীণ। কিব্রুপে ছইবে मुक्ति कात्र विशेत।। द्वर मान दिएन कामीशूरत मुक्ति हरा। इस कथा আপনি কহিলে মহাশয়।। কি কি আচরণে কানী পাইবারে পারে। মোর भरन लग्न कामी भाग नमाहारत ॥ आहात भातम धर्म छभ्छा आहात । आहा রেতে আরু রক্ষি পালের বংহার।। এথমতঃ বদার্চার কহু মোর স্থানে। ভোমাকে যে ৰূপে বলিয়াছে ত্রিলোচনে।। কার্ত্তিক বলেন মুনি শুন বদা-हात । चाहतिशा-एर चाहरत नजरश निष्ठात ॥ श्वावत कक्रम क्रमि चौति क्रवाहत । शक्ष शक्षी नतक्रास्य धर्म कालवत ॥ धनकल देशक एमय वह सम् ধর। সহস্র ভাগেতে পুর্বাহইতে উত্তর।। উদ্ভিক্ত স্বেদককরাবুক্ত অপুক্রাত जकरल छेडम व्यांनी कानिटर निस्छ ॥ व्यांनीटक छेडम दुव्हिमस एक कीत । विकास मर्था व्यर्थ कान्दिर जूटनर ॥ खाकार १८७ व्यर्क एएटथ या एत्र वि-हान। विदान इरें ए इंड वृद्धि य अधान । कुछवृद्धि रेटए कही अर्छ निरंखता कर्छ। रेश्टफ ध्यर्क कान बकारक फर्भता। मुकिन बाह्मन बका श्रांभीत क्रेष्ट्र । नक्ष कांच वस पक विश्ववत् ॥ गर्माहादत्र शांकित्न नक्त व्यथिकात्। व्यथिकात् शेम इम्र देशका छुताशास ।। व्यव्यव खांचारण कतिरत সদাচার। তথাপি শতেক বর্ষ জীবন ভাতার।। পরাধীন কর্মা যত করিবেক ত্যাগ। ছঃখি পরাধীন তোর সেও সুখভোগ।। যে কর্ম করিলে অন্তরাত্ম জুফ হয়। করিবেক সেই কর্ম বিপরীত নয়।। প্রথমতরাধর্ম মূল নিয়ম বংযম। করিবে তাহাতে যত্ন এই জান ক্রম। সভ্য ক্রম। ঋজুতা প্রসাদ **শহিংসন। অ**পিশুন ধ্যান দম করিবে গণন।। মাধুর্যাতা মৃত্র এই যম-ৰাম দশ। করিবে বতন এতে হইয়া সরস।। শৌচদান তপঃ স্থাস এত অধ্যয়ন। মৌন হয়ে উপোশন উপস্থ দপ্তন।। এই দশ নিয়ম বলিয়া শাস্তে কর। যতন করিবে এতে অবশ্য নিশ্চর।। কাম ক্রোধ লোভ মেছ মঙ্গ मादमर्गाष्ठा । करेष्ट्रम देवतीवर्भ कामिएव मर्ख्या ।। काम्म करम कविदवक ध-

র্ষ্মের সঞ্চয়। বল্মীকের শৃষ্ণ যেন ক্রমশঃ বাড়য়। পরকাল ধর্ম মাত্র ছ-ইবে সহার। জানিয়া ধর্মেতে সদা করিবে উপার।। পিতা মাতা দারা सूरु ले | जू वन । शतकारन (कर मरक न) करत अमन।। जन्मिरत अकक প্রাণী একক মরয়। সুকৃতি ছন্ধৃতি কর্মা একক ভোগর।। পঞ্চন্ধ পাইলে দেহ ভেরাগিরা দুরে। বান্ধবেরা বিমুখ হইরা যায় পুরে। কর্মা মাত্র পাছে পাছে কররে গমন। অভএব করিবেক ধর্মের যতন।। উত্তম উত্তম কলে भवक कतित्व। अथम जालिया कुन छेदकुषी इटेट्व।। विक अथायन हीन गंगाहात हीत। अलग छुत्र एंडाकि यटमत अधीत।। ताकिर्मार हाति पशु खक्तकाल नाम। छेटिया त्न काटल व्यविदयक श्रीक नाम।। शकानन क्रेमान ঈশানী লক্ষ্মী হরি। এক্ষাণী সহিতে ব্রক্ষা প্রথমেতে ক্ষরি।। ইন্দ আদি Cमव यक विभिन्नी मिस्ति। शका कामि नमी शिति ब्रीटेमना विश्वा गरुख कौद्राम आफि मानगांति तव। नन्मनांति वन यक न्यातित्व अखत्।। कान তুরা আদি থেলু করিবে সারণ। কম্প রক্ষ আদি রুক্ষ করিবে মনন।। কা-ঞ্চন প্রভৃতি ধাতু উর্বশীরগণ। গরুত প্রভৃতি পক্ষ করিবে মরণ।। অন-স্তাদি নাগ গল প্রসাবত আদি। উট্ডে:প্রবা আদি অশ্ব সণি কৌস্তভাদি॥ अकृषा की आमि शक्तिका यक नांती। देनिमगानि अत्रगा वातांगनी आमि পুরী। বিক্ল বিশ্বেশর আদি থক আদি শ্রুতি। সনকাদি যোগী বীজ প্রবৃষ প্রভৃতি ॥ বৈক্ষর নারদ আদিশৈববাৰ আদি। প্রহলাদ প্রভৃতি দুচ্ত্রত দধি-'हार्गि ।। वर्गाना त्यतिदव रतिम्हस जानि ताका। क्रमनीत हवन त्यतिदव भटा-তেজা। পিতাকে স্মরিয়া শুরু করিবেক ধ্যান। করিবে তৎপরে জাবগ্রক অনুষ্ঠান ॥ গ্রামের নৈথাত কোণে কিছু দূরে যাবে। ভূণে ভূমি আচ্ছাদিয়া মলাদি ত্যজিবে।। বস্ত্রে আচ্চাদিবে শিরকর্ণে উপবীত। সন্ধ্যান্তরে দিনে ভেঁহ বসিবে নিশ্চিত। উদস্থ বাতেতে দক্ষিণ মুখ হবে। মৌন হৈয়া মল মুব্র সভত ত্যজিবে।। দাঁড়াইলা জনে কিয়া গবাদি সন্মুখে। লাকলে আক্লয় ভূমে হইবে বিমুখে। মৃত্তিকা লইবে জন্তু ককর বৰ্জিত। করিবে মৃত্তিক। শৌচ যেমত বিহিত ।। একবার লিক্সে দিবে গুছে পঞ্চবার। দশ বার বাম হজে নিরম তাহার ॥ ছুই হাতে সপ্তবার এক এক পদে। ছুই হত্তে তিন বার শুধিবেক মৃদে।। এইৰপে গৃহীশোচ করিবে প্রচুর। ভা-বত শুধিবে যাবত গন্ধ যায় দুর।। ক্রমশঃ দ্বিগুণ ব্রহ্মচারি আদি ভিনে। দিবা হৈতে রাত্রে অক্স শৌচের বিধানে । তদর্ঘ পথিকে শৌচ আছরে विथान । छोतानि गाथिए लोह उनके क्षमांग । औरलाटकर उनके विथि

শান্তের বিহিত। সুস্থকালে ফান না করিবে কদাচিত।। সকল নদীর জলে मृखिको शर्कत्छ। भागत्त्रत भूटक किवा भीठ कवि गटछ।। नानामत्छ भीठ বিধি করি আচরণ। কখন না হর শুদ্ধ ভাব ছুই জন। শৌচে আর্ড ধাত্রি কলবান মৃত্তিকার। এই মনে আহতি ব্রতের গ্রাদে কার। শৌচ করি পরে করিবেক আচমন। ভার পরে করিবেক দক্তের ধাবন। স্বস্থাবক্তা প্রতি-नम वंकी नवभीरक। आंत्र त्रविधारत कार्ड ना निरंद मरखरक । निविक्त मियन किया कार्छत अजादा। बामम शब्द्द मूर्य त्नाधम कतिदा। खामम अ-कुल मन्ड कार्छत अमान। शीनवर्त अक अक शीरमत विधाम। बाह्य **आखांडक जानि कार्छत्र नियम। द्यमभदञ्च प्रस्थादन्त्र डेशकम।। एस** কার্চ গন্ধ বন্ধ পূপ্প অলক্ষার। উপবাস দিনে না করিবে বাবহার। তবে প্রতিংস্থান করি সন্ধ্যার কম্মন। করিয়া রাত্রের পাপ হইবে মোচন।। সন্ধ্যা शैत माहि कांन कार्या अधिकात। कतित्वह क्यांका कन नाहि छात्। জঘ নর্শনের পর রবি উপাসন। ভার পরে বিধিমতে করিবে তর্পন । জগ্নি কার্য্য করি করে বেদ অধ্যয়ন। পরে উদরের ভরে ভিক্ষা পর্য্যটন। এই মতে প্রতিঃকার্য্য করি সমাপন। মধ্যাক সমরে স্থান করি আচরণ। মধ্যা-ছেতে সন্ধ্য। করি বর্থা বিধি মতে। বলিবক্ত আদি কর্মা করি সাবহিতে।। শভিথির গাবকাশ দেখি কিছুকাল। ভোজন গৃহেতে ধাবে গুল্প হৈয়া কাল।। যথা বিধি ভোজন করিয়া শিশু নকে। দিবসে কৃটিাবে কাল পুরা-ণাদি রক্ষে।। স্বায়ং কালে স্বারং সন্ধ্যা করিয়া বন্দন। প্রতীকা করিবে অতিথির আগমন। **জাসিলে অতিথি তাকে দিবেক** ভোজন। আগনার শক্তিমত করিবে ভোষণ 🌯 ভোজন করিয়া পরে করিবে শয়ন। নিতাকর্ম এইমতে আহে নিৰপণ । এইমতে নিতাকৰ্ম যে করে আচার। অবসাদ কৰন না ঘটরে তাহার। অক্ষানন্দে ভাবিরা ভাবিল সুভাহার। কাশীখণ্ড भूष शक्तिः मञ्जूषरा । ।

পানীর। ক্রীপ বলে শুন মুনি বিশেষ বিধান। নদাচার তবে কিছু করিব বাধান। যে কথা শুনিলে পাপ বিনালে অশেষ। অজ্ঞান তিমির যোরে না হর প্রবেশ। ত্রাহ্মণ ক্রির বৈশা ছিল তিন বর্ণ। মাতৃগর্ত্তে ক্রম উপনয়নে ছিল্ম। এনবার নিশেকাদি শ্রনান্ত কর্ম। যেদের বিধান নতে আঁচরণ কর্মা। সভাকালে গর্ত্তাধান মহামুলা ছাড়ি। ক্রান্তনের পূর্ব পূংববন কর্মকরি।। সীমস্তোমন্তন বর্তে অইমে বা মানে। জ্ঞানে

कतित्व कर्या खांक अविरागत्य। अकामण मिरन नाम कर्या खाठवरा। शृक् टेश्ट हरू में मारमटक निक्रमन।। वर्ष मारम कतिरवक अम स्थानन। যথা কুল কালে। চূড়া **কর্ম আচ**রণ গ এ সকল কর্মে গার্দ্ধ পাছক সংক্ষয় । क्रमणः अ यव कर्ट्या अधिकात इहा। मक्षम अधेम वर्ष गाविजी अन्य। छेशमद्रामत यटक इटेटर खाचारा। धकामम वर्गातत ক্ষরিয় উপনয়। দ্বাদশ বৎসরের বৈশ্ব কাল উক্ত হয়। কামনা বিশেষ আছে কালের বিশেষ। পঞ্চম বৎসরে বর্চে অইমে আদেশ।। রিধির বিধানে করি সাবিজী গ্রহণ। ক্রক্ষারি আগ্রমী ছইবে যেই জন।। সদাচার পরে গুরু আরাধনে রভ। যথাবিধি বেদ শাস্ত্র পঠিবে নিয়ত।। ধরিতে মেখলা দণ্ড পৈতা রুক্ষাজিন। যথাবিধি ভিক্ষা আচরিতে প্রতিদিন खकात्री आखरमत एक नव धर्मा। नावधारम कतितक तक नव कर्मा। कतिया सांचक खंड खनावर्षा त्मरव। ছोष्ट्रिया गृहत्व धर्मा नहेरत विर्मरवं।। श्राख्यरम् हिन्द्र कशकान मा तहिरत। स्था रहाम कतिरम नकनि मिथा इत्य ।। भिथला व्यक्ति क्ष बन्दान्ति हिङ्ग। शृश्यक त्रक व्यक्ति कर्य ভিন।। वनहारी हिंदू नथ लागांपि धार्व। प्रश्न क्यल्य जापि यञीत सक्तन ।। धनन सक्तन होन इडेटस खाळानी । फिट्न फिट्न इडेटनक आंत्रनिष्ठ গামী।। তিন কমগুলু আদি জলেতে কেপিয়া। গ্রহণ করিবে সম বিহিত করিয়া। সন্কাল করিবেক বেদ অধ্যয়ন। সাবিত্রী জপিবে আর সুর্য্য আরাধন।। ব্রাক্ষণের বেদাভাগে ভগনা। পর্ম। বেদ পাঠ করি দিক इंडेरव छेख्या छेशनम निम्ना नाम त्वन अभावन। रामत्न कत्रम लाई আটার্যা আপন।। বেদার্থীম পাক বন্ধ অগ্নির আধান। রুভি হৈয়া যে करत तम श्राद्धित जांधानि ।। छेलवांत्र मन नम जांवांश कानित्व। जा-চার্বেরে শত সম পিতাকে মানিবে॥ পিতার সহস্র মাতা গৌরবেতে स्त । तिम श्रेवारनरण रहन आहरत्र निम्हत ॥ खाकारनरण कानी त्यार्थ कृति वलवान । धरन धारना देवना त्यार्थ गृज अनुमान ।। कार्धमत्र इस्ती त्यम মুগচর্ম বয়। অধায়নে ছীন ভিজ তেমতি গণর।। গুরুর নিক্টে না कतित्व कृष्टे मन। न। कतित्व मृत्यं क्षक्र नाम छेळात्र ।। क्षक्र निम्हः करत किया अभवार कया कारण इस रिया किया जानास्त इस ॥ अक्रभन्नी यु-বতী স্পশিষ্যা নমস্কার। না করিকে কদাচন নিয়ম ইহার।। মাতা পিতা গুরু তিন করিয়া সেবন । তিনলোক কয়ী হয় শাস্ত্রে নিৰূপণ।। বেদাচর্য্য এই সতে করি আচরণ। হইবেক বিশেখর রূপার ভাজন।। বিখেখর অ-

सूत्रिट क्निलां इत । कानी शाह्या क्रानाकारन निर्माण लखा । निर्माण त्या करत क्रान्य मानात्र । क्रान्य क्रान्य कर कर निर्माण कर्त क्रिक्य । क्रांक्य क्रिय शहर कर निर्माण कर्त क्रिक्य । क्रांक्य क्रिय शहर क्रांक्य । शृह क्रांक्य देह क्रांक्य कर्ति व शहर क्रांक्य । शृह क्रांक्य देह क्रांक्य क्रांत्र निर्माण क्रांत्र निर्माण क्रांत्र निर्माण क्रांत्र निर्माण क्रांत्र निर्माण क्रांत्र निर्माण क्रांत्र क्रांत्य

#### -14211-

## ख्य नातीत तक्त।

পরার। বিবাহ করিবে কন্যা সুবর্ণা সুক্ষরী। পিতার সপিশু গোত্র কন্যা পরিছরি॥ মাতামহ গণিশু গোত্রের পরিত্যাগ। বিবাহের যোগ্য কন্যা কহে মহাতাগ। অপস্মারি ক্ষরী শেত্রী কুল তেয়াগিরে। বরেবে কনিষ্ঠ হৈলে বিবাহ করিবে॥ পর্বত নক্ষত্র রক্ষ নদী সর্পনামা। পক্ষী পুল্প নামা কিয়া ভাকিবেক রামা॥ ভাগিকাজী হীনাদি দীর্ঘাঙ্গী ভাায়াগিবে। অতি স্কুণাঙ্গীরে কন্তু বিভা না করিবে। অতি লোম যার অঙ্গে কিয়া লোম নাই। তুল রুক্ষ কেশ যার প্রশস্ত না পাই॥ মোহে কুলহীন কন্যা বিভা করে। নিরুক্তি সন্তান ক্ষম হয় তার ঘরে॥ প্রথমত্বঃ কন্যার লক্ষণ পরীক্ষণ। করিয়া করিবে পরে কথা নির্কেশ্বন।। সুলক্ষণ সন্ধাচার বাহার শেশ্বয়। বিবাহ করিতে তাকে হেন শাস্ত্রে কয়।। ক্ষম্প বলে শুন মুনি কহিলাম এই। ব্রক্ষারী সদাচার শান্ত্র উক্ত যেই॥ প্রসঙ্গত কহি শুন কন্যার লক্ষণ। ভাল মন্দ যাহাতে হইবে নিরুপন।। ব্রক্ষানন্দ জাশা ব্রক্ষানম্বের আশিয়। কাশীখণ্ড ভাষা ভাবে ছত্রিশ জধ্যায়।।

भवात। कला बर्का छन मिखा वक्रण छनत्र। खीलकण्विकी देइटर इसी सूची स्त्र ॥ जाकवन सूच श्रद्धांकन साहे कन । श्रद्धीका किंद्रित-शूर्त्व नातीत लक्षण्य मंत्रीत आवर्त्व शक्ष छात्र। मद यत्र । शक्ति वहे छात्रे लक्ष्यण्य सन्तत्र ॥ शक्षकत कार्विक यावक मिद्रा स्क्रण्य खाला विकास स्वत्र विद्या ॥ श्रद्धां स्वत्र शक्षित्र था छात्र श्रद्धा । अनुर्व क्रम्यू लि नथ शास्त्र छेशद्र ॥ अनुर्व क्रम्यू शाकि कर्या लाग कार्य छेत्रस्त्र । क्रम्य मिठ्य द्वावि মধ্য বলিভার।। মধ্য স্থানপরে নাভী জার কুক্টীছর। পার্শ ভতুরুই জার উদর হৃদর।। তার যে বক্ষজ বক্ষ শক্ত ক্ষর্মর। তংশ কক্ষ বাস্তু মণি वश्व कत्रख्य। श्रानिशृष्ठं शानिष्ठल शानि फलद्वथा। अञ्चर्षं अञ्चलि मश शुर्कंक काणिका । विवृक्त करणाल कर्छ इन् वर्ज्यु बिखा। नगन अध्वत्र अर्छ জিতা অদত্বা।। তালু হান্য নানা ভ অকি পক্ষত। কৰ্ণ ভাল নীমন্ত মৌলিক মৌলি জাত।। নারী অঙ্গ সক্ষণের ছম্মা টি স্থান। বেদ পুরাণেতে হেন আছমে বাথান।। মৃত্ত সাংসল স্লিম সম পাদতল। অরুণ অস্বেদ ওর্চ বছ ভোগ কল।। ক্রক্ষভা যিবর্ণ থণ্ড রেখা পদতল। বর্পাকার হইলে ঘটরে অমঙ্গল।। শন্তা চক্র ব্যক্ত আদি রেখা পাদ তলে। ক্ষিতি পতি পত्नी इत घष्टरत्र मक्टल।। मृधिक शक्षश आपि शपकटन दिशा। क्र्जांशा देवथवा इःथ मार्तिक युक्तिका।। अञ्चर्ष वर्ष्यु न जान अञ्चर्ण घनाइछ। जा-ब्रवर्ग नथ जान जानिटन निम्नज।। পाদপৃষ্ঠ সমুন্নত প্রশংসিত হয়। বর্ত্তল क्**हें त्व अ**त्क सूथ अधिभात ॥ अमशांकि **७**७ बड़्या वर्डु **व स्फ**त । जासू ভাল সুরুত্ত দেখিতে মনোহর।। হস্তী শুপ্তাকার উরু ঘন প্রশংসিত প্রশস্ত বিশাল কটিহস্ত পরিমিত।। নিভয় উন্নত সুল অতি ভোগকর। ক্ষিকের নির্মাণ মৃদ্ধ মাংসল সুক্ষর।। বস্তি প্রশস্ত মৃদ্ধ উন্নত কিঞ্চিৎ। গভীর দক্ষিণাবর্ত্ত নাভী প্রশংসিত।। স্কুল কুক্ষি মৃছ পাশ সুখভোগ করে অতি সুখতোগ করে কম্পিত উপরে।। মধ্য ক্ষীণ হইলে ভোগেতে আঢ়া इया श्राष्टि जाना वर्जी यात्र मर्था विनिजन्त ॥ अज् स्वा दामाविन मक्त क्रम । क्रेश्वर्या लखरत यात जम्मान क्रमत ।। यसब्ख पृष्ठ शीम शीक शरतायत । श्चीयवर्ष सूर्वर्जु व कमत्र सून्यत्।। शिवत कत्वत गिक्व धन धीना करत्। सूल মীর্ঘ ক্ষক্ষের ভোগ ভোগমে বিস্তরে।। অংশ সুসংযুক্ত শুভ কক্ষ থক্ষা রোমা গুড় অস্থি গ্রন্থি নাহিক উপনা।। কদম কলিকাকার হত্তের নির্দ্মাণ। অভিশয় সুখ ভোগ সম্পদের স্থান।। পাণিতল মৃত্ রক্তবর্ণ প্রশাংলিত। প্রশংসিত পাণি পৃষ্ঠে উন্নত কিঞ্চিৎ।। রক্তব্যক্ত পভীর প্রশস্ত করে রেখা মংস্বস্থিত আদি প্রশস্ত মূচিকা।। সরস অক্তর্ক স্বস্ত অভি শোভা স্থান। অঙ্গুলি সুপর্বে দীর্ঘ অভি সুনির্মাণ।। অরুণ নথের অঙ্গ প্রশংসিত অভি। নিমজ্জিত মেকদণ্ড পূর্তে ভাগাবতী।। সমুদ্রত ঋষু ক্বাটিকা সুলক্ষা। দ্বিরেখা অন্ধিত এবি। প্রশংস গণন ॥ হৃদর ভাঙ্গুল স্বস্ত হনু ঘনতর। ক-পোল প্রশস্ত সমুদ্ধত সুপিবর । সমান সম্প্রশাসবর্ত্ত সুবদন। পিতা माणा सूथ क्षात्र व्यक्ति मूनक्षण।। सूत्रका वर्ड् तं किंग क्षणान्य व्यव । शक् বিষক্ত যেন ওঠ মনোহর।। হুমবর্ণ ব্রিশ দখন প্রশংসিত। মৃত্ রক্ত শুভ কিন্তা শোভাতে গণিত।। বিশ্ব কোকনদাভাষ প্রশস্ত তালুকা। ক্রমে তীক্ষ রক্তলয় প্রশস্ত ঘণিক।। অক্ষক্ষিত দশন হসন সুস্থ অভি। সময়ুগ পটু নাদা বহু ভাগ্যবতী। ছুই তিন খুত দীর্ঘ শুভ এককালে। নয়ন প্র-শস্ত রক্ত কোন তুরিশালে।। সুঘন থাকির পর স্লিখ সূক্ষা ভাল। কার্ম্ম ক আফুতি ক্র প্রশস্ত কপাল। প্রশস্ত লয়িত শুভাবর্ত্ত কর্ল জান। স্কর্ম চন্দ্রাকৃতি ব্রয়াস্থাল ভাল স্থান।। নীমন্ত সরল স্কৃত্ব নৌলি সমুন্নত। অলি কুল ছায়া প্রায় কেশ প্রশংনিত।। ক্রমধ্যে ভালে কিবা থাকয়ে মূনক। বাম কপালেতে কিম্বা হৃদয়ে তিলক। প্রশস্ত লক্ষণ এই করে নিরূপণ। হৃদয়ে লাঞ্জন যেন অতি মুলক্ষণ।। দক্ষিণ বক্ষ যে রক্ত ভিলক লাঞ্জন। চারি কন্যা তিন পুঞ্জ করে প্রেয়বন । ভিলক লাঞ্ছন রক্ত আর কুচে হয়। এক পুজ প্রস্বিয়া বৈধ্ব্য লড়েয়। কছের দক্ষিণ ভাগে তিলক থাক্য়। রাজপত্নী হয় কিয়া রাজা প্রস্বয়।। নাগাতো মশক রক্তরণ যার রয়। রা-জার মহিনী প্রিয় আবিশ্বক হয়।। ক্লক্ষরণ হৈলে প্রতি স্থানে তুটা হয়। নাভী অংশ তিলক সকল শুভমর। মধক তিলক চিত্র এছে নারিভয়ে। নাভী অধে লাগুন করয়ে পজিব্রত।।। করে কর্ণে কপালে কঠেতে কিবা হয়। ঘশক তিলক কিবা লাঞ্ছন উদয়।। প্রথম গর্ভেছে গুল্প ভাষতা পর্য । কণোল ত্রিপুল অঙ্কে ঠাকুরাণী হয়।। শয়নে দর্শনে কিটিমিটি কুলক ।। किशिष्ट कहरत किया अनाश वहन।। क्षांकि मांजी कर भूरष्ठं वररमह मिक्स मिकन आवर्ष अकि धामक नकरने।। शृष्ठे घरदा सावर्डन नाजीत साकात। বছ ধন বস্তু স্তব অন্ময়ে তাছার।। উদর বেধিনে পূর্কাবর্ত্ত কুলক্ষণ। একে পতি নধেন্তরে কুলের পতন।। কণ্ঠগ দক্ষিণাবর্ত্তে সীমন্তে ললাটে। বৈধব্য বিবিধ ছাথ সেই জনে ঘটে॥ ঘাড়েতে আবর্ত্ত মার লোনের পাক্ষ। व्यवश्र वर्षित मर्था शकि मर्छ इत्र ॥ मन्तरक जावर्ष अम्किन किता गाय । मन निन मर्था शिक्त यात्र यम श्रीम ।। विविद्यन कावर्त्तरम कूनवी करणा নাভীতে আবর্ত্ত পতিব্রতা পরিচয়।। পৃষ্ঠাবর্ত্তে পতি বধে কুলটা লে 🕫 । কন্যার লক্ষণ এই কহিল নিশ্চয়।। কার্ত্তিক কহেন শুন কলস নদান। জ্ঞা-শীলা হইলে কুলকণে সুলকণ।। সুশীল; হইলে কুলক্ষণে সুলক্ষণ : নিয়ত এমতি আছে শাস্ত্রের লিখন।। মুলকণা সুশীলা সাবিত্রী পতিব্রতা। বিশ্বে-भत्र अञ्चार नजरत्रविवास भूतंत्रस्य म्लभागि भूजिगार एपाता। सूत्रभी কুম্মরী পতিব্রতা হয় তারা।। তীর্থেয়ান করে কিয়া শারীর ছাড়ন্ত। লাবগোর তর ক্লিণী সুলক্ষণা হয়।। জগতের জননী ভবানী পূজা করি। সুচরিত্র
স্বাধীনা ভর্ত্ত্বা হয়নারী।। সুশীলা সাধিকা সুপাচিকা যদি হয়। ইহকালে
স্বর্গ অপবর্গের আলয়।। সুলক্ষণা সুচরিত্রা নারীর সাধনে। অপ্য আয়ু
পতি দীর্ঘ আয়ু পায় প্রাণে।। প্রথমে লক্ষণ পরক্ষিয়া কুলক্ষণা। পরে
সুলক্ষণা বিভা করি বিচক্ষণা।। কহিল লক্ষণ এই গুণপ্রথ তরে। বলিব
বিবাহ ভেদ শুন হে সাদরে।। সমাগু হইল তবে সপ্তত্রিশ অধার। কাশীবণ্ড সুখাভাগু রচিল ভাষায়।।

#### -31811-

## অথ বিবাহ নির্ণয়।

পরার। কন্দ বলে শুম মুনি বিবাহ প্রভেদ। প্রাক্ষা দৈব আর্থ প্রাক্ষালয় পালা পনিচ্ছেদ।। আকুরি গান্ধনি আর রাক্ষা পিশাচে। এই অই প্রকার দিনাছ শাস্ত্রে আছে।। আন্ধান করিয়া বরে কন্যা করে দান। যথা শক্তি অলক্ষারে প্রাক্ষা তার নাম।। যজ্ঞ প্র প্রতিশে কন্যা দান দৈব হয়। আর্থ কন্যা দিয়া বরে ছটি গক্ষ লয়।। কন্যা দিয়া বলে ধর্মাচার ছই জন। অর্থ জনে। প্রাক্ষাপতা ইহার গণন।। এই চারি বিবাহ ধর্মত শুদ্ধ হয়। পিতৃ-লোকে নিস্তার্থের ইহার তনয়। ধনে ক্রম করি কন্যা বিবাহ করম। আর্ক্রি বিবাহ নাম অধনে গণয়।। কন্যা বব পরম্পর প্রক্রিয়া করম। ক্রম্বি বিবাহ নাম তাহার নিম্কর।। বলাৎকারে কন্যা হরিবিবাহ রাক্ষ্য। ক্রান্তির করে। তাহার নিম্কর।। বলাৎকারে কন্যা হরিবিবাহ রাক্ষ্য। ক্রান্তির করে। তাহার নিম্কর।। বলাৎকারে কন্যা হরিবিবাহ রাক্ষ্য। বিবাহ সম্ভেদ এই করিল গণনা।। স্বর্ণার বিবাহের গ্রহণ করে কর। উত্তম বিবাহের ক্রমণ লভে করিল গণনা।। স্বর্ণার বিবাহের গ্রহণ করে কর। উত্তম বিবাহের জানা ক্রমণ লভে করিল গণনা।। যদাপিকিঞ্চিৎ কন্যা দিরা লম্বপণ। কন্যার বিক্রম পাপ পাম সেই জন। অপত্য বিক্রমী কন্যে নরকেতে বাস। অভ-তর না করিবে কন্যা ধনে আল।।

#### ----

# অথ গৃহত্ত্বের নিভাকর্ম।

পরার। বাণিক্ষা নৃপতি যেবা বেদ পটি হীন। কুবিবাহে ক্রিয়া-কলের পত্ন। বিবাহের বহিতে করিবে গৃহ কর্ম। পঞ্চযক্ত ক্রিয়া

নিত্য পাবকাদি ধর্ম।। ব্রহ্ম যজ্ঞ বেদ পাঠ তর্পণ পিতৃয়ক্ত। দেব যক্ত হোম বলিদান ভুত যক।। নৃযক্ত অতিথি সেবা এই পঞ্চ যজ। প্রভাই ক-রহ আদ্ধ গৃহাপ্রমে বিজ্ঞ।। ভিক্ষুক আইলে ভিকা করিবে প্রদান। গৃহস্থ এ সব কর্ম করি পাবে মান।। সভত অভিথি সেবা করিবে যতনে। অ-किथि देवमुथ देहत्त नतुरक शक्रता। मङ्गानिक देवना पन वाशनि करि-বে। সায়ংকালে বলিদান পত্নী আচরিবে।। বলি বৈশ্য কর্ম নাহি করে যে खान्ता। मातिज इटेरव कांक र्यानिष्ठ शमन ॥ विरमानिष्ठ वर्ष वित्रकांन আচরিবে। এই রূপে গৃহে থাকি শুভগতি লভে।। ধর্লী অইনীতে তৈল. माश्रमत वर्ष्णन। शक्षमणी ठकुमणी कतिरव शालन।। धरे मव मिरन मा করিবে ক্ষোর কর্মা। স্ত্রী আর করিবে ত্যাগ এই বেদ ধর্ম।। উদয়াস্তমমে मुर्रो क्यु ना रमिर्दित । कलमर्था निकक्ष क्यू ना रहित्त ॥ वस एस উल्लब्धन ना इब्र উচিত। नश्च देश्दन करन ककू ना श्दर गांकिक ।। एनवका बाक्ता (धन् प्राप्ति भूकाशन। अमक्तिन ताबि मना कतिरा भमन।। तक्ष्यना সেবা না করিবে কদাচিত। গহিত আসনে বসি ভোজন নিশ্দিত।। ন্যান পকুলি মাংস ভোজন করয়। দেব পিড় না পুজিয়া পাপ অভিশয়।। গো-न्हांन बल्लोक खरच मुख ना हांखित । लाविय नम् त्थ कडू रहना कहित्व জয়িনা আলিবে মুখে পাপ কর্মঅভি। প্রাণী হিংসা পাপ না করিবে শুভমতি।। স্থান না করিবে গাত্তের মাজ্জ ন। আসন না করিবেক পদে আকর্ষণ।। নথ লোম দক্তেনা করিবে উৎপটন। অশুভ যেসব কর্মা করিবে বমর্ল ।। নিরম্ভর শ্রুতি কপ শৌচাচার করে। অদ্রহ হইলে বৃদ্ধি পুর্ব্ধক্ষা স্মরে।। দেবতা ভারাণ নিন্দা নাহয় উচিত। মনুষ্যের স্তৃতি নাকবিবে কুদাচিত।। যথা বিধি ধর্ম কর্ম্ম করি আচরণ। দেব ঋষি পিতৃ ঋণ করিবা মোচন।। শ্রুতির যতেক কর্মা করি পরিত্যাগ। মধ্যত্ব আশ্রের জ্ঞান শিক্ষা মহাভাগ।। ভত্তকানে মুক্তি লাভ কিয়া কালীপুরে। ভত্তকান এক জল্জ হইতে না পারে ।। কাশীতে মরিলে মুক্তি আছমে নিশ্চিত। জতএব কা-শীতে আগ্রর সে উচিত।। সেই কাশী সদাচার বিনে নাহি পার।সদাচাতে-ना लेखिरत क्थन छोड्रांत्र।। धमकस कथा खिन ग्रुनि करड् श्रुनः । कह यछा-নন কাশীকথা আর গুণ। কাশীস্থানে কোন কোন লিফ জান দাতা। বি-' স্তারিয়া কছ শুনি সেই সব কথা।। কাশী বিনে প্রিয় ভূমি নাছিক আমার কাশী দ্বিঅক্ষর নাম অমৃত ভাগুরি।। অগতেন্তার হেন বক্ষা শুনি যজানন। मुनिटक कटरन श्रष्ट काणीत वर्गन ।। यो जानाथ मंत्रिक कविका वाटपानाय ह

কাশীরও সুধাডাধে করিল প্রকাশ।। এক্ষানন্দ গ্রানে এক্ষানন্দের আ-শার। সমাপ্ত স্ইল ভাতে অইন্তিশ অধ্যার।।

-

### অথ মহাদেবের মক্ত পর্বছে গমন।

পরার। অগন্তা কিজানা করে পার্কতী নন্দনে। আর কাশীমাহাত্মা খনিকে ইন্ছামনে।। ক্ষম্ম বলে শুন মুনি অপুর্ব আখ্যান। শিব হয় ব্দবায় অচিন্তা ভগবান ॥ সূত্র স্কন নহে ভেঁহবস্ক এক হয়। ব্রান মননতে যার 🗊 পার নির্ণর ॥ নিপ্পু বঞ্চ নিরাত্মক আর নিরাকার। এমতি পরম बक् अन्द विष्ठात ।। अविश्वक बक्काक्क अने विवत्रात । नक्क कीरवत शुक्र इस स्पष्टे क्रान्।। अविशुरक अविशिष्ट प्रक्रि सिन निव। अना श्राटन নহাযোগে মহাদানে সব । তথানাকি ক্রিয়াতে জন্যত্তে পরিকাণ। বিনা मारन विमा याद्या कामीटिक निर्वेशिया शिद्ध भूक्षा कन कल नित्रदम द्य रमग्र মহাদান অন্যত্তের সেই ফল পায়। মহাতীর্থ গঙ্গা তথা স্লান যেবা করে। क्षनाद्धवं महाक्ष्य रम नहिंशदा। अक्षाक्रिय यवा किका प्रव तिहै अंदिन। अनाद्ध कृतः शुक्रम ना इस ममादन।। द्यादवत निक्रम मिटन द्यवा <u>७०१ करत । कोशंरमत महार्याम अन्य मध्यत ॥ वैक्तिप्र मकल राया प्रमन</u> क्षित्र। अविभूत्क यम भारक निर्वाभ जानिश्च। महा फेश्रारम्भ এই अनह निक्क्ष्य। अतिशूर्टक साम्बक स्यासन क्राया। अनास्थान विद्यासन सार्व মানে করে। ইহার স্থান ফল জানিবে সম্বরে। খনস্ক মহিমা কাশী विरिष्ठ कि शादत। कीन मुक्तानाटन लिन कर्दन कल करता। मुक्त देहन्ना সেই জীব মুক্তি গতি ায়। অগ্নস্তা করেন দেব শুনছ নিশ্চয়। গঙ্গাধর नर्वशाक नम महामग्र। कि कांत्रात कांत्र कांनी छात व कत्र । कांत्रिक ক্রেন শুন মূনি মহাশয়। না করিবে খেল কিছু দল্লাদ্র হৃদয়। পর্ত্তপকার • বন্য তব কাশীভাগ। অতএব উপকায় সর্মশ্রেষ্ঠ ভাগ।। অগস্তা কুছেন প্রস্থৃ করি নিবেদন। কাশীনাথ কাশীভাগি আশ্চর্য্য রথন।। ইহার রু স্তান্ত প্রভু কহ মড়ানন। কিন্তপে হইল তালি আনন্দ কানন।। বিশ্বেশ্বর কাশী ভাগে কৈল যে কারণে। কার্দ্রিক কছেন সব মুনি সন্নিধানে॥ পদ্ধ-কম্পে স্বায়ন্ত, সমূর অধিকারে। অনার্ফি হৈল যফিসহস্র বৎসরে॥ জীব बक्क अपि यह दाकिन अन्त्र। महत्त भर्याय उन्न श्रृक् देशभन्न ॥ भना।

আদি তৃণ পত্র কিছু লাছিরের। সহারাধ্য পরস্থার ভক্ষণ করর। এই মহুক্ অনান্টি হৈয়া সৃষ্টি দায়। ব্ৰহ্মার নিকটে সব ঋষিতে জানায়॥ সৃষ্টিকর্ত্তা थानिष्ठ इहेश अवर्णस्य । मुक्कितका किरम इस्त विस्थान विस्मारम ।। कर्नक ভাবিয়া বিধি দেখেন উপায়। মনুবংশে রাজখবি হয় রিপঞ্জয়। ছোর তর তপ করে বদিয়া কাশীতে। সবে ভূফ হবে ভার রাজ শাসনেতে।। অনার্ফি পরিভাগে হইবে সত্তর। সক্লের আপুদ ঘাইবে নিরম্ভর।। ডার পর সৃষ্টিকর্দ্তা কাশীপুরে জাসি। যথা দিবদাস রাজা তপস্যাত্কে বসি। ঘোরতর তপসা। দেখিয়া ব্রহ্মা কয়। দিবদাস নরপতি শুনত নিশ্চয়।। এক ভিক্ষা দেহ রাজা দেবভার প্রতি। তব রক্ষা বিনা সৃষ্টি যায় অধােগতি অনার্ফি কারণেতে যার ভূমওল। ভূমি রাজা হৈরা রকা করহ দকল।। দিষদাস বলে প্রাভূ করি নিবেদন। বিপরীত কথা মোরে কছ কি কারশা। তপস্যা করিব আমি মুক্তির কারণ। তপস্বী হইতে সৃষ্টি রক্ষা পাবে কেন ব্রহ্মা বলে শুন সভ্য রিপুঞ্জর রাজা। তব রাজ্য শাসনেতে রক্ষা পাবে প্রেজা।! তার পরে দিবদাস ব্রহ্মাকে কহিল।ভবে রাজ্যশাসি আমি এই বাক্য বল।। দেবলোক স্বর্গে যার ভুজঙ্গ পাতালে। কাশীতে বসিরা রাজ্য भागित कुर्भाल।। य कथा किलाम श्रेष्ट्र एकामात व्हरन। देश देश क्ति आगि तारकात भागरम ॥ खन्ना वरत अन निवनाम मुभवरत । स्व নাগ স্বস্থানে যাইবে সম্বরে॥ তুমি রাজ্য রক্ষা কর কাশীর ভিতরে। দিবদাস প্রতি ব্রহ্মা দিল এই বরে ॥ বর দিয়া ব্রহ্মা তলে ভাবিতে লাগিল कामीनाथ कामी जात जमसुव देश्य । अगव जाविहा अचा हिंग किया ?! धानिष्ठ इहेब्रा चाहिन यथा कृष्ट्रियान ॥ बच्चा छथा याहेब्रा अन्य तक्राधित मिवमांत्र बृ**खांख कहित्लन मञ्जदत्र।। भिय कटह कानि आंगमत्न**त्र कांत्रवा চল যাই মন্দর পর্বত নিকেতন।। আমার কারণে বছকাল তপ করে। পর্বতেরে দিব আমি ননোনীত বরে।। শিব তুর্গা ব্রহ্মা সঙ্গে নন্দি ভৃত্তি-গণ। একত হইয়া সবে করিলা গমন।। স্বস্ব যানে চভি যান মন্দর প পর্কতে। যথা ঘোর তপ করে সমাধি যোগেতে।। শিব দেখি যোগভঙ্গ করিল পর্বত। অফাঙ্গে প্রণাম করি স্তব বছুমত।। সন্তুর্ক প্রমথনাথ হ-ইলা মন্দরে। মনোনীত বর লহু দিবছে ছোমারে।। মন্দর কলেন প্রস্তু বর যদি দিবে। কাশী ভাগে করি প্রভু মন্দরে ভাগিবে ॥ প্রর্থনা গুনিয়া শিব চিন্তাকুল মন। এত দিনে ত্যাগ হৈল আনন্দ কানন।। ব্ৰহ্মাকে জি-ব্রুটের শিব কি করি উপায়। কাশী ত্যাগ করিটে সন্দর বর চায়।। বিদি

করে দেব দেব হও কুপামর। ভক্ত অভিলাব পুর্ণ করিবারে হয়। ব্রহ্মার মনের কথা বৃন্ধিরা শক্ষর। মন্দরপর্কচ্ছে বর দিলেন সন্থর।। তর পুরে বাস মোর হবে নিরস্তর। মন্দরের প্রতি শিব দিলা এই বর।। বর দিয়া চিন্ত'কুল হইলা শক্ষর। বারাণসী কি হইবে ভাবেন অন্তর।। ব্রহ্মাদি দেবতা অগোচরে ত্রিলোচন। অবিমৃক্ত শিবলিক্ষ করিয়া স্থাপুন।। ব্রহ্মার মানসপুর্ণ সৃষ্টি রক্ষা আর। ভক্ত মন রক্ষা হয় পর উপকার।। কালী ভাগি মন্দরেতে কাস করি শিব। দেবতারা কালী ছাড়ি চলিলেন দিব।। দিবদান রাজ্য শালে অনার্ফি গেল। পৃথিবীর সব জাব অকণ্টক হৈল।। মন্দরেপর্বত হয় কালীক্ষেত্র তুল্য। ছইস্থানে প্রাপ্তি হৈলে সমাপ্নকৈবল্য বিশেষতঃ অবিমৃক্ত কল গুল আর। মাঘে ক্ষরণ চতুর্ক্মণী পুর্লা করে তার অবিমৃক্ত হৈতে যদি সেই নর যায়। তথাপিহ অন্যত্রে মরিলে মোক্ষ হয়। উনচাল্লিস অধ্যায় সব সমাপ্ত হইল। শুনিলেই মৃক্তিবাস দেব যে কহিল।

ইতি সদাচার স্ত্রী জক্ষণ ও মহাদেবের কাশী ভাগি মন্দরপর্কতে গমননামো চতুর্থঃ স্বর্গত।

## कामी थए।

## व्यविमुक्त कथन । उकार्किन विधि।

প্রার। ক্ষম বলে শুন মিক্রাবরুণ লক্ষন। কাশীর মাহাত্ম এই করিবে বর্ণন।। আর কি শুনিতে ইচ্ছা হয় মহাশর। বিস্তারিরা ভোমাকে কহিব সে নিশ্চর।। অগন্তা বলেন শুন পার্ন্ধতী নন্দন। কাশীর মাহাজ্য শুনি কান্ত নহে মন।। অবিমুক্ত কেত্র লিঙ্গ অবিমুক্তেখর। এ দোঁহাকে কি ৰূপে পাইতে পারে নর ।। কার্ত্তিক বলেন শুন লোপামুদ্রা পত্তি। भ-বিমুক্ত যেই ৰূপে পার মহানতি॥ পুণাভারে সমীহিত অর্থের সাধন। শ্রুতি স্মৃত বর্ত্ত বেবি পুণ্যের ঘটন।। বিহিছ না করি করে নিবিছ্ক সেবন দুরাচার পতিত আনিবে মেই জন।। অতএব বলি শুন নিষিদ্ধ বিধান। अगव विर्व्हित गरव देश्या गावधान । भनाखु वताह आमा वस्त्रन गृक्षन । त्राटक एपि निया निजा कतिरय वर्ष्क्रन ॥ **हि हिन्छ हर्छ**क दश्म हज्क्यांक वक । भावत कुक् हे एक शनन उक्क ॥ विक्रिंद नकन मा न विक्रिंदक मीन । थाट्य इका लावा मल ताहिक शांकिन।। मांश्मामी इहेटन थाट्य शक्ष शक्ष নখ। কচ্চপ গশুক গোধা সশক সম্ভক !। জ্ঞাত মুগ পক্ষী খাবে করিয়া বিচার। রুদ্ধ পরস্পার যুার আছে ব্যবহার॥ আরু ক্ষাম স্বর্গকাম মাংস না थांहैरत। विना यरक द्रथा शक्ष हिश्मा ना कतिरत ॥ निक्क शक् शर्मु।यिङ कतित्व वर्ष्कन । त्वन भारक वर्ष्ट क्रम बाह्य मिक्सन । बाह्य वर्ष्ट अवस्थ ত্ৰাহ্মণ কামনাতে। বিনা লোভ নহে দোৰ মাংস ভক্ষণেতে।। পশু বুক ঔষধি দুজিল বিধাভায়। যজের কারণে এতে না দোবে হিংসার।। মধু-পर्क পিতৃদেব यटक दिश्मा छेकि। दिश्मा ও ছहिश्मा ছাতে বেছে আছে বুক্তি।। উদরের তরে হিংসা করে ছুরাচার। ইহকালে পরকালে গতি নাহি তার।। শত অশ্বমেধ যজ্ঞ করে যেই জন। ভাইছতে বিশেষ মাংস করবে বর্জন। আপনার সুখ ছঃখ আপনি যেমন। পর সুখ ছঃখ পরে জানিবে তেমন।। নাহি ধর্ম সম বন্ধু এতিন সংসারে। অন্তএব थर्म कर्म करिटर मच्दत्र॥ नामांभक धन (मण कांग शाद्ध मान। कदि-ৰেক বিধিমতে হৈর। সাবধান।। অপাত্তে করিলে দান নরকে গমন। कतिद्वक मान धर्म वृक्षित्रा राज्यन ॥ अनाथ खांकार यरकां शती विवाह। দার্ঘদি সংস্কার করে করি অমুগ্রহ॥ সেই জন সম পুণাবস্ত কেহু নর। ইহকালে সুধ ভোগ পরে স্বর্গ হয় ।। পিতৃগৃহে কন্যা যদি ঋতুবভী হয়। विराह ना देहरम छारक इसमी वनत्र॥ मध्यां भिष्ठ। छारक विवाह रय

करत । एम अन दूधनीপिक विषेणांटञ्ज धरत ॥ जीत मटन मा कतिएव मध्मर्श সম্ভাষ। ছুৰ্জ্জন পৃত্তির সেই লভে উপহাস॥ বর কন্যা দোঁহার লোষের পরীকণ। করিবে প্রথমে পরে সমন্ত রচন। সভত প্রিত্র নারী ছুয্যা नाहि इत्र। श्रीक मारम उक्ररबाटन क्रक् क इत्रा। श्राकु श्रुर्वकारन कना। ভোগে হতাশন। প্রকাশ উদরে শশী ভোগে অসুক্ষণ।। স্তনের উদ্ভিদেশে গন্ধর্কে অধিকার। করিবেক কন্যা দান পুর্বেতে ইহার।। শয়ন অশন জাত্ব নারীর বদন। কুশ্রুক্ত পাত্র ছুদা নহে কদাচন।। অমুযোগে তাত্র শুদ্ধি কাংস্তা ভত্মধোগে িরজোযোগে নারী শুদ্ধানদী শুদ্ধ বেগে ॥ বে নারী ক্রদাচ অন্য পুরুষ চিন্তন। না করে সে উমালোকে করুয়ে গ্রন।। জন্মাব্যি শিশু অন্ট বৎসর যাবৎ। ভক্ষাভক্ষ্য দোষ নাহি জানিবে ভাবৎ গৃহত্বের ধর্ম পুষাবর্গের পোষণ। পিতা মাতা গুরু পত্নী আঞ্জিত যে জন।। অভাগত অভিথি অপতা ভ্রাশন। এই নব পৌষাবর্গ করিয়া গণন। ঠান সন্ধ্যা অপ হোম সাধ্যায় ভৰ্প। বৈশ্য দেব আভিথ্য নবমে দেবাৰ্ডন গৃহস্থের এই নব আবশ্রক কর্ম। আর আর আছে বত গৃহস্থের ধর্ম।। শাস্ত্র অনুসারে ধর্ম যে করে পালন। ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ লভে সেই खना। फमानील करन स्थाक कर्तकरल त्रा। क्या खन यम स्वान खन মাহি হয়।। এক দোষ কমা শীলে স্বিতীয় না হয়। অশওদ বলিয়া লোকে কেবল বলয়।। শব্দ শান্ত্রে কবিরত নাহি মোক্ষ ঘটে। সুরম্য বনতি প্রিয় মোক ।নাহি রটে।। ভোজন বগনে কিবা হইয়া তৎপর। কখন না হয় মুক্তি অতি দুরতর।। সভত একান্ত শীল হয় যেই জন। ইন্দ্রিয়ের প্রতি যেবা করে নিবারণ।। যোগপথে যার হিস্তা হৈয়াছে প্রবেশ। অহিংসক ব্দনে মোক্ষ ঘটরে বিশেষ !! একান্ত শীলতা পুরুষের কোথা হয়। ইন্দ্রিয় নিরুত্তি থোগে খুজি না ঘটর।। দেবতা পুজন আদি কন্ট অতিশয়। সহজে কাশীতে মুক্তি সরণেতে হয়।। জানিবে বড়ঙ্গযোগ বিশেশ্বর সেবা। কাশী পুরী বাদ মাত্র তপদ্যা জানিবা।। ব্রত আদি নিয়ম যম ব্রত আদি ধ্যান। জানিবা উত্তর বাহিনীতে মাত্র স্থান।। ত্রন্মজ্ঞান নিষ্ঠা ন্যায়াগত ধনার্চ্ছন। ধে জনা সভত করে অভিথি তর্পণ।। আন্মকর্তা সভাবাদী শুদ্ধ চিত इस। शृटक्ट अ एक्स कटन मृत्यित जिन्द्र।। भीन कक्त कूर्रेक्ट कति अ-সদান। যথেগতে পৃহস্থ ধর্মে থাকে সাবধান।। সেই জবে কাশীপতি করুণ। करमा कामीनाथ क्षणाटक कामी आखि इस। कामीआखि इहेटन অবলা মুক্তি পার। অনায়াসে কাশী মাত্র মুক্তির উপায়।। সর্ব ভীর্য স্লান লক্ষ্ থকেতে দীক্ষিত। দশু সর্মন দান কাশী যে করে আজিত। অধিকা লিবাসী বসু সীতানাথ নাম। কাশীখণ্ড ভাষাতে বহিল অনুপাম ঃ ব্রহ্মানক্ষ যোগেতে ব্রহ্মানক্ষের আজয়। সমাশু হইল ভাতে চলিশ অধ্যায়।

### ---

# ण्य नानश्रद्ध वाश्रम कथन।

धूरा। ठलटर निरंखितम्हण अर्थितं करत हुत। नर धान धातभाषि आमण रख अहूत।। भाषा नारि छाण यिन, करि खन आरता विधि,वांत्र कर निरंबिध, काणीनार्थतं काणीश्रुतं। नीजानाथ वस्तु करा, बनाबार्त्त स्वाक रहा, रस्त श्रथ कराखातः। शांश जाल यार्व हुत।।

श्यात । ऋन्म युटा क्षेत्र मूनि नक्ष नन्मन । एक्मण्ड शृंदर वांग कर्ति গৃহিজন।। বলিতে পলিতে হৈয়া দ্বিতীয় আশ্রমে। ভূতীয় আশ্রম আশ্রা-ইবেক সম্ভূমে।। পুজ পৌজ দেখি গ্রাম্য জাহার তাজিয়া। পুজে পত্নী রাখি কিয়া পত্নী সঙ্গে লৈয়া।। চর্মক কিবা বল্কন করিয়া পরিণানা সায়িক হইয়া বনে করিবে প্রাম ।। শাক মূল ফলে প্রঞ্ছ কাচরিবে 🕻 गातन्त्राज्ञान छत्न निष्ठतम कतित्व। याक्रम्याम नथ करे। कतित्व ধারণ। জল ফুল মূলে ভিক্সু অতিথী পুজন,। অগ্রহিতা দাতা দান্ত সন্ধ্যার তৎপর। বৈকালিক অগ্নিহোত্ত বিধান সম্বর।। স্থাপনে করিবে মুনি অন্ন আহরণ। করিবেক পুরোডাস অংশ নির্বাপণ।। স্বরংক্কত লবণ খাইবে অনুদিন। ফডোষ শ্লেহ পান করিবে প্রতীণ।। সেতুশ গ্র করক পলম মধু ভাগে। মূল্যার আশ্বিন্দানে ত জ মহাভাগ।। পুর্বের সঞ্চিত ভার করিবে वर्ष्कम । आम कल मून करन बन्न निवातन ॥ मरखासूथनिक काथ कुछेर्कः **হইবে। সন্ত প্রকালক মাস সঞ্**য় করিবে।! ভিন মাস কিয়া ছয়মাস উপবুক্ত। ছাদশ মাদের কিবা অন্ন পরিমিত। ফল মূল জাদি বস্তু সংগ্রহ করিবে। নক্তভোজি কিবা একান্ত রাশি হইবে।। ষষ্ঠকাল ভোজন নিয়ম কিবা করে। চান্দ্রায়ণত্তত কিবা নিম্নস আচরে। পক্ষভোজি মাংসভোজি বৈখালক মতি। কল মূল ভোজন করমে নিতা নিতি।। তপভা নিয়মে দেহ করত্রে পোষণ। নিত্য পিতৃ জার দেব করিবে তর্পণ।। অগ্রির সাধন

धालनाटक विद्यांभन। पृष्टवांत्र इंग्लिनमा कति विवहन।। वननात्री छल-স্বীর স্থানে ভিক্রা করে। সহীত্তে বিহরিয়া প্রাণমাত্র ধরে॥ প্রামা হৈতে ज्यानाहेत्रा थाष्ट्रेटव कानेकाम । पिया तांकि नियटम कहिटव दमझाट ॥ अहे মতে বনাআমী হইলে ব্ৰাক্ষণ। ভক্ষলোকে পুজিত হইবে সর্বক্ষণ।। আ ৰুৱ ভূতীয় ভাগ থাকি :। কালনে। চরুমে ছাড়িয়া দক্ষ কবিবে এমণে।। श्रापञ्च ए भाषिता श्रुष्ट ना कमाहिता। (साक् हेक्का द्रशा यात्र यक ना कः রিয়া।। প্রাণীয়াল ঘাহা হৈতে নাহি হয় ভয়। সর্কপ্রাণী ভা**হাকে প**ভয় লাভা হয়। একাকী চরিবে অগ্নি গৃহ ভাগে করি। গেংজু কাম গ্রামে ভাষ খাবে ভিক্তা করি।। জীবনে মরণে কিয়া বাঞ্চা না করিবে। ভূচকে নিদেল থেন কাল প্রতিক্ষীবে।। সর্বত্তে মমতা পূন্য সমতা অল্পায়। বৃক্ষয়লপাসী মুক্তি ইচ্ছা অশংসয়।। ধ্যান শৌচ কিন্ধা নিভ্য একছে শীলডা। এই চারি ধর্ম কর্মা করিবে ম রিখা।। বার্ণিক চত্ত মাস নাহি বিহারিবে। বীজান্তরে জন্ত হিংসা ভাষাতে হইবে॥ রমন করিবে জন্ত করি পরিহার। বাবি পান করিবেক বন্ধ পরিক্ষার।। অভুজে: কর বাক্য কহিবে নদায়। অভো নন নিয়ক্ষেপ হতে নিয়াত্রয়।। অধা/অনি নীয়বস্ত কেশ নথ বসি। কৃঞ্জু দশন দশুধারী ভিক্ষা আসি।। অলাবু মৃত্তিকা কাষ্ঠ বংশ পাত্রধারী। স-**জি**রে তৈজন পাত্র ভিক্ক সাদরি।। কথদিক গ্রহণে গোসহত্র হতার। স্ত্রীসঙ্গ করিলে কুন্তিপাকেতে সে যায়।। এককালে ভিক্ষা করিবেক জন্প তর। নিয়মিত সতত করিবে অভি তর। অপ্পালার বহিঃস্থায়ী ইন্দ্রিয় নি-লছ। রাগ ছেব হীন ভিক্সু মোক পরিএই। যাহার জাতামে বভ মুহূর্ক থাকিয়।। ক্লুক রুত্য দেই জন জ্বনমহাশয়।। সাজ্যা বাঞ্চ বত গৃহপ্তের ভাগ। একরাত্র স্থিব ঘদি দহে সর্বব তাপ।। অনিতা শরীর স্থরারোগ অভি लुहः **क्ष्म मृत्रुः (क्रम नन। जाटिह स्म नि**त्र है। नीनारमानि खमन विद्यान প্রিয়জনে। অপ্রিয় সহিজেদক ঘটে অনুক্ষণে।। অধর্ম গইতে তুঃর দযুগুর दश्र । नहरक निवास भाषा पालना घडेश ॥ निज कथा त्राय देहरक मानाभक গতি। মনুষোর হটতেছে সদা কাল অভি ।। শ্রীর অনিত্য জানি কায়ার নিভাঙা। সভত মুক্তির যত্ন করিবে সর্লথা।।

- A Silver

### खश आंत्रदर्श कथ्य।

পয়ার। ভিক্ষাপাত্তে পরিতার কর পাত্রীখ্যাতি। শতরুণ পুশ্য

প্রাপ্তি হয়ে মহামতি। চতুর্থ আশ্রুমে ক্রেমে মেবিয়া পণ্ডিত। নির্দেশ হল ইয়া ব্রন্ধ হইবে নিশ্চিত।। বন্ধু হেডু কুর্দ্ধির আত্মা অসংঘত। জীমস্ত দ-হিকে সঙ্গ করিবে নিয়ন্ত।। আচতি স্মৃতি পুরাণ উপনিনদাদি। স্লোক সুত্র ভাষা আর যত শাস্ত্র বিধি।। বেদার্থ বচন শানি ত্রহ্মচর্য্য ক্রম। তপোদম শ্রদ্ধা উপবাস পরিশ্রন। স্বাত্মনান হেডু স্বতরেতে গৃহী যত। স্বাশ্রমে পাকিরা আত্মভানে ইচ্ছারভ।। শ্রোতব্য মন্তব্য দুফীবা আত্ম বিশেষ। আত্মজান হৈতে মুক্তি আছয়ে নিৰ্দেশ। যোগাত্যান বিনে আত্মজান নাহি হয়। চিরকাল দাধিলে ো যোগদিদ্ধ পার।। অরণ্য আঞাম কিয়া গুহুন্থ আলোকন। ব্ৰভ দান তথ্য 🕶 কিবা প্ৰমান্ত।। মুগাগ্ৰ দুৰ্শন শৌচ त्मोन मञ्ज कर्ण। এ तकल टेश्टड त्यांन ना इस मखर।। अखित्यांन नम् छानि ভাহাতে নিশ্চর। পুনঃ২ ধ্যান্যোগ যোগ সিদ্ধ হয়।। আআতে মিথুন সদা দ্যোতে ক্ৰীড়ন। আজাতে সুত্ৰ জনে যোগ নিৰূপণ।। আত্যা বিনে ছিতীয় না দেখে যেইন্সনে। আত্যারাম সে যোগীন্দ্র ব্রহ্ম পরায়ণে।। যোগ নামে আত্যা মন দোঁহার মিলন। প্রাণা প্রাণ্যোগে যোগ বলে কোন কন বিষয় ইন্সিরবোগ যোগ কেহ বলে। বিষয়ীর যোগসিদ্ধি নাহি কোমকালে छुनिवादत मदमावृद्धि यावद मा कार्द्ध। त्यादशत महराम वार्त्धा फाम्स्ट मा ঘটে। রুদ্রি হীন করি মন ক্ষেত্রজ্ঞ আতারি। এক্ড। স্ইনে হৈল যোগ-निक्त छ। । वहिन्तू थे है स्मित बखत यूथ कति। महनटक नियुक्त नेपा कतिहै সাদরি ।। হেন মন আত্যাতে করির। নিয়োজন। ভাব হীন ফ্রের আ-क्षां अधिन । अरे धान अरे कान अना (भव आहा । ता क्**रण अनि**-दिक शृहरक्त विश्वात । या वश्च माहिक **जारक जारक लाक वरन** । (इन বাকা প্রভায় কাহার নাহি ফলে।। আপনাকে আপনি প্রভাক ব্রন্ধ হয়।। कुमाती नातीत रान खोरू थे अलाम ।। चार्याभी कथन खाइ। खानिएक मा পারে। জন্ম অক্ষে যেন দীপবর্ত্তি না নেহারে।। জনিশ অভ্যানে নে আ-পনি বেদা इस ौ सूचारइङ निर्देश कतिए ना शांत्र ।। वार्छा-ষাতে যেন ক্ষণ স্থির নহে নীর। প্রনের যোগ তেঁং চিত্ত নহে ছির।। চিত্ত হৈর্গ্য হেতু বায়ু করিবে বন্ধন। সেই হেতু যভক্ষ যোগের আদরণ।। আসন ধারণা প্রত্যাহার প্রাণায়াম। গানি সমাধি এই ছয় যৌগাঞ্জুমাণ। আসনে ভেদ চতুরাশি লক্ষ হয়। ইহরি বিশেষ জ্ঞাত শিব মহাশ্র।। চৌরাশি আসন তাতে শিব সংগ্রহিত। তাহাতে আসনদ্য আছে উলাক্ত নিংহাসন এক আর কোনল আসন। অতি শীম এই ছুই সিদ্ধির সাধন।।

বামপদ পাকি ভাগ গুছতলে দিয়া। দক্ষিণ চরণ বাম উরুতে রাবিয়া। এই সিদ্ধাসন শীস্ত্র যোগসিদ্ধ কর। ইহার অভ্যাস দেহ দুঢ় অভিতর।। দক্ষিণ চরণ বাম উক্ততে রাখিবে। বামপদ দক্ষিণ উক্ততে উঠাইবে।। পূর্তগত ছই করে অঙ্গুর্ত ধারণ। দুড় দেহ হৈরা অভ্যাসিবে পঞ্চাসন !! অথবা যে জাসনেতে তুথ হয় যার। স্বস্তিক প্রভৃতি আসনের অঙ্গীকার॥ यार्गत नायरम श्राम क मद विकार । अल विक्र मिकरें हेर स्वार मा সাধিবে।। জীর্ণগোষ্ঠ অরণ্যৰজ্ঞিকে সাবধানে। মশকদংশকভাদি আছে ঘেই-স্থানে।। তৈতা বৃক্তকে কিবা আর দে চন্দ্রে। কেশভুক্ক ভুষাক্ষার কি-কৰাদি ধরে।। তুর্গন্ধ স্থানেতে যোগ না হয় সাধন। জলেতে ব্যাপিত স্থান করিবে বর্জন। উদ্বেগ রহিত স্থলে ইন্দ্রির মুখনে। মন সে প্রসম যথা ধপের আমদে। অভি জ্ঞানা হইবেনা হবে ক্ষুধিত। মল মূত্রে বাধিত না খবে সাবস্থিত।। পথজ্ঞান্ত না হইবে না হবে চিন্তিত। সুস্থ হৈয়া যোগ ্রুক্ত ছবে খোগবিত।। উবস্থ উন্তান পদ সব্যে নাস্ত কর। কিঞ্চিৎ উন্নত रक कम्म छे शत ।। मुक्तिक मम्म मरख मरहम खर्या । क ल क व्यवस्थ अमिरवक अथ।। हे खिन्न नकल कतिरव मित्रगम। माली छेक माछी नीठ छ-জিবে ভাষন।। হেন মত সভাশীণ করিবে নিরস। উত্তম মধ্যম প্রাণায়াম अशक्तम ॥ अनिल अवकारेहरल मकलि भवल । अनिल निकल रेहरल मकलि निक्तना अनित लतिया यन्न वाली काल एम। यावल व्यवस्थान कावक জীবয় । প্রন বিগমে মৃত্যু আছমে নিয়ম। আপে নিরোধনে তাতে করি-বেক জম। যাবভশরীরে বদ্ধথাকয়েপ্রন। ক্রমধ্যেদৃষ্টিনির প্রথাকে মন তবিত শমন ভর না বাঁকে ভাহারে। কাল ভরে ত্রন্ধা সদা প্রাণারাম করে যোগী যোগসিদ্ধ হয়ে প্রাণ নিযন্ত্রে। প্রাণাগ্রাস করিবার এইত সন্ধানে লবু অকরের মাত্র। জানহ জাধ্যান। অধন ছাদশ মাত্রা প্রাণায়াম মান।। চ্ছুৰ্কিংশ মাজা হৈল সধামে গণন। উত্তম ছবিশ মাুলা প্ৰাণ নিরোধন।। (थेम कल्ला विश्रांत अवात श्रीनांशाटम । कान्यत्म अवाह प्राप्त कल्लान मनाटम ॥ উত্তর্গ বিষাদ ক্ষমে যোগী দিছি প্রাণ। যথা ইন্টা লয় ভথা ক্রমে দেবা-र्यान ।। इंडों एकादत आंग यक्ति केत्रदेश द्वाधम। द्वामकुश शृश्य आंग कृदत নিগমন। শরীর বিদরে কুর্ষ রোগাদি জন্মার। বনহস্তী পর প্রাণ স্ববশে করম। বন্য প্রক্ষ সিং**হ কিবা জঁনে**য় মৃত্যু হয়। করিবে শাস্ত্রের নিয়মেতে लक्षा नव ॥ क्षम्य मः क्षिष्ठ थान त्यानी क्षार्म काम। अरुन कतित (भरा कर्षियं नितरम्।। इिंछभ काञ्चल वाटेश इंश्तिक क्षेत्रनः। अञ्चल पिक्ति वाटम

करत अञ्चल । अंख श्रव थ्रांग नाम हरेल हेशत । माफ़ीहक खन्न यस र राजक ভাহার॥ প্রাণ নিবন্ধন মোক তবে যোগী হয়। প্রাণারাম ক্রম এই কহিল নিশ্চর। দুঢ়াশন যথা শক্তি প্রাণের রেচন। করিবেক বাম ছাণে দক্ষিণ शृत्।। श्रीस् व वर्षे व व्ह्न भटन करत शाम । एन व्यानायारम रात्री सूर्थ ক্ষণে পান । সূর্যাপথে করিবেক প্রাণ আকর্ষণ। উদয় গত্তে রভাতে করিবে श्रुवन ।। कुछक कवित्रा काटम हास्साटक विहास । क्षेत्रका महत्य विद्या कविदन मीतन। अहे योगानतम खोशी कूमतन खोक्स। दश्म बद्ध छिन मान অভাস করয়। উভয় নিয়মে সেবা করিয়া নিশ্চর। শুদ্ধ নাড়ীগণ যোগী निष्म थ्यान इग्ना बाष्ट्रीनन ऋफ टेश्टल ८२म अक्ति इत्ता अथ्यये धांतन वायु কবিতে পারয়।। নাদ অভিব্যক্তি অমলের প্রদীপণ। আ্রোগিতা উদিত হইবে গুণগণ।। প্রাণারাম দেছ মধ্যগত মে প্রন। জারান নামেতে জান ভার নির্দ্তিশ্বন। একশাস নয়মাত্রা প্রাণারাম কর। অধ্যেতে ঘর্ম মধ্যমেতে কম্প হয়।। উত্তম সহিত্তে প্রমানন উর্চ্ছে উঠে। তিন প্রাণারাম হৈতে তিন ৰূপে ঘটে।। প্রাণান্ধামে দোষ নাশে শাস্ত্রের লিখিত। প্রত্যাহার যোগ হয় পাপ বিনাশিত।। ধারণেতে নন স্থির ধ্যানে দরশন। সমাধিতে মোক শুভাশুভ বিনাশন। আসনেতে দুঢ় বেছ অভিশয় হয়। বড়কের ভয় কল কহিলনিশ্চয় মা **প্রাণায়ায় স্থাদখেতে প্রভাগের হয়। প্রভাগিরা** जामभारतना ভাকেকর।। जामभ शातना शान देखत प्रभीन । खानभ शात्मक সমাধির নিক্রপণ।। সমাধির পরে জ্যোতি অবস্ত প্রকাশ। তাহার দুর্শনে याकांत्राटकत निर्वाण। वायु त्यांग अक्ष टेशका घनिनित ध्वनिन छन्य হুইবে সিদ্ধি অভুরেতে শুনি।। যুক্ত প্রাণারাম হর ব্যাধির সংশয়ন অবুক্ত **व्य**ङ्गान व्याटक कार्षित উদর । হিকাশ **খান শি**র চক্কু কর্ণ বাখা। প্রনের वाजिकत्य अनेतः गर्वशा ॥ छाटम युक युक वासू युक्तर शूरत । युक्तर वन्न করিবেক যোগীবরে ।। **বিষয় হইতে ই**চ্ছিয়ের **আ**হরণ। প্রভাহার ইহার काशाम निवाभन।। कर्म रान अञ्चलक निवासन। राज्य हेस्सिद्यंत्र थायो करतः कारतम् ॥ निष्णाण हहेमा मिर्ह निष्म एम्। वहा अक्राहात् वि-বানের এইত নিশ্চর।। নাভি দেশে ভাতু ভালু দেশে শশধর। জধোমুগ্র वरक्क व्यक्त श्वारम मियाकतः।। स्वमटक मज्द्रश्र सूथा व्हतिस्व तम काम । क्टव যোগী দিন্ধ হবে হইরা নির্ন্যান্ত । উর্চ্চে, নাভি অধে তালু উর্চ্চেন্তানু इत्र। अट्य मंभी विश्वतीकं कत्र विभिन्न ।। कांक हथ्यू मृत्य स्था कतित्वक পান। নির্জার হইবে যোগী সিদ্ধ হবে প্রাণ্য ভালুরক্ষে, রসনা রাখিয়া

সুধা পিৰে। ছয় মাস অভ্যাসেতে নিৰ্দ্ধর হইবে॥ উর্দ্ধ কিন্তু শিন্তু সম পान करत (यहे। शक्षमण नित्न मृजुाक्षत करव त्यहे।। ताजनस विवदत उनमा अधाना। इस मारत कति इस नाथि महाजाना। अमृरक शूर्निक सह रयांशी महानद्र । छुट जिन वर्ष भटत खेर्क द्वाका हव ।। यानकना भून एक নিতা যার হয়। ভক্ষকে দংশিলে ভাকে বিষ মা লাগয়।। সিদ্ধাসন প্রাণা-য়াম প্রতাহার যোগী। ধারণা জভাবে তবে হবে অনুরাগী॥ ভিনং भक्षाकु अन्दर्भ भातन। श्रांतना इशादक निल सूनिस्टत मन ॥ इतिलाल दर्न जूमि नाना जनक्रुण। ठज्राकान भान करत विधित महिणा। वरन किणि ধারণা ইছার অনুষ্ঠান। কণ্ঠে জল তত্ত্ব অর্থান্ত ভাসমান।। কুন্দা ভাবা-कात वीष विक्न महिन्। शानकित लाग कन धातना मनीक।। जानूकान ইন্দ্র গোপ মণি জ্যোতির্ময়। ক্রিকোণ রেফেতে যুক্ত রুদ্রের আলয়। महारुक शास्त अहे पर्न शास्त्र। तातु छत्र क मरशा बार्ट्स निकाशन।। অঞ্জন সন্নিত তেঁহ মণ্ডল আৰুরে। ঘরীছ ঈশের ধ্যান বারু ধারণার।। অব্দর্জ বিভত ব্যোম মরীর প্রকাশ। নাথ সদাশিব যাতে বসয়ে নির্ব্যাস। শপর হকারাক্ষর বীজ বাতে হয়। চিত্তের সহিত প্রাণ ভাহাতে গারয়।। মোকভার কপাট পাটন পটু ইনি। প্রণ ধারণা নাম ইহাকে বাধানি॥ স্তম্ভ নিপুবনী আর দহনি ভাষণি। ভুতের ধারণ পঞ্চ পঞ্চন সমনী।। বৈংগাজুর অর্থ চিন্তা শাস্ত্র বিনির্ণয়। নিশ্চল তত্ত্বের চিন্তা ধ্যান নাম হয়।। সগুণনির্ভাগ ছুই গানের প্রভেদ। বর্ণভেদেসগুগ নির্ভাগ নাভিভেদ।। সমস্ত্র नक्षा धान अमञ्जनिक्षा । धार्मित मदक्ष विहेत्सन श्रुनः॥ सूथीमरन বলি বাহু দৃষ্টি অন্তর্মন। শরীর সমতা ধান মুদ্রার কথন। অথনেধে রাজসুরে যেই পুণালয় । স্থিরাসনে ধ্যান যোগে সেই পুণ্য হয় ॥ শব্দ আদি পঞ্চমাত্রা শুভিত্তে যাবং। ধ্যানেতে অস্থিএই জানিবেভাবং ॥ তার পরে সমাধি কানিবে বিনির্ণয়। সমাধিযোগেতে যোগীহয় ত্রহ্মময় ॥ পঞ্চ নাড়ী ধারণা ষ্টিক নাড়ী ব্যান। ভাষণ থানেতে সমাধির পরিমাণ।। জল लवर्गत त्यारम नामा त्यन इस । जांचा असन केमा तारे नमाथि निर्मस व्याद्याद अश्क्रत यह बानदात लग्न । तमहे नम तम छटत नमानि तम एत । জীবাত্যা পর্মাত্যা ধুনা হার সমতা। নির্বিকণ্প সমাধির কহিলেন যথা।। আত্যপর শীত উক্ত কিছু না জানায়। तन्यधि সময়ে ছুখ ছঃখ অভুদয়।। কম্পান্ত কালেতে নছে কর্মেতে লেপন। বুক্ত সমাধিতে অল্পে না হয় ভে-क्म के बुकर का श्राह विश्व सांशी करहें। कर्य एक बुक्त एकी व सांशी

व्यापादत ॥ बुखार निका कावदद्वीय स्पष्ट करन । उच्च मनमर्गरन कांत्र इस विश्व-মানে।। বিক্লান জানন্দ ওছ দুকীত ১হিত। বাকামন অগোচর কারণ ব-ক্ষিত ॥ জন্মবস্তু হেম জন্মবাদী নির্পণ। বড়ঙ্গ বোণেতে বেগৌ রু বেড়ে भिलन्।। मृत्क पृष्ठ किलिल (म पृष्ठ मांत इत्र। कौद्र की विभिन्न स्त कीत्रभग्न।। स्थाभी खाक्क लिन देशता खक्कपत्र रुग्न। लग्न विधि निकालग कंक्सि নির্ণয় ।। মর্সা জলে করিবেক অংকর মাজ্জান। কটু অনু লবণ বা করিবে ভক্ষ। ক্ষীর ভোজি ত্রেলারী কিতকোধ হবে। লোভ আদি সকল শক্ররে ভেয়াগিবে । সম্বান হেন্মত ক্রিয়া আভ্যাস। হইবে পর্য যোগী সভত প্রকাশ ।। মহামুদ্রান ভয়তায়তা উড্ডিয়ান। জলজর যুদ্র মূলবন্ধ মুদ্রা আন যোগীর হবে সেই যোগসিদ্ধি ভঙ্গে। নাড়ীজাল শোধন ঘটন চন্দ্র সূর্যো। मर्त्वनो उटगत भारय महायुष्ठा नाम। महायुक्ता भागि कटल शतः खक्त थाम।। खर्च यात्र शक्त किया इस वक्कश्यत्य । अश्रेष्ठ (में) हार्क मक्क शर्म पृष् भरत ॥ কান্ধ পুরীবেক প্রাণে রেচিবেক জ্বে। এই মহামুদ্রা মহাপাপ বিদ্যালয়ন বামে অভ্যাদিয়া পুনঃ সূর্যো অভ্যাদিতে। তুল্য সংখ্যা হইতে সে মুদ্রা বিস জ্জিতিব ৷৷ নাহি রহে পথ্যাপথ্য সরস নিরসঃ বিষদান করিছেছ অম্জের तम ।। कत कुर्य खद्यावर्ष खन्म त्यान जानि । मश्रम्म। जन्मात्म कत्रता नामः বিণি। কপাল কুখরে জিহ্বাপ্রবেশকরিবে। জনখ্যে দুর্জিবদ্ধ করিয়া রাখি-বে। থেচরী দামক মুদ্রা জন্তাদ করিলে। রাগ নঘট হন্ত ভয় নাহি কোন कादनः ॥ ८४१ द मानम किस्ता ८४ छत् थाकन्न । अञ्चल ८४ छती सुञ्जाहनाम इन्ना। শরীর যাবত কিন্দু স্থিরতর হয়। তাবত মা থাকে যমরাজ হৈতে ভরা। নভমূজার যাবত বন্ধন হেছে থাকে। বিশ্বর নিগম হৈতে নাহি পারে ভাকে।। দিবা রাজ হংস পক্ষী উন্তুডিন করম। অভ্যাব উভ্ডিয়মান ভার नाभ रुत्र । तक्षः छेळा चाट्य भेरे भाग्रा निक्शन । तामकाचू कर्द्रहरू कतिहरू ধারণ।। উড্ভীয়ান বন্ধ এই মুদ্রা অভ্যাসিবে। মৃত্যুত্তর সেই যোগী কভু না লভিবে।। কণ্ডে নাড়ীক্লাল জবোগতি নভজল। মহাচুঃধ নাখান বন্ধন আসন্ধর । আলম্পর বঙ্গে কণ্ঠ দক্ষ, চিত হয়। বাছ, স্থির অগ্নিতে পীযুষ না প্ৰকৃষ ধহু ভাগে পাদপাঞি প্ৰহু আকুঞ্চিত। উৰ্ভু কু লাপনি মুল বন্ধন विहिष्णा प्राकृशिष कर्ष सम्द्रवाक हम तारथ । हेश कालकात वर्षा अक्षेत्र কারকে।। অধোগতি আপুন বলেতে উর্জ্ব করে। বার যার উর্জ্বাসম্গ্রন সমীরে॥ প্রাণাপান মাদ বিষ্ণুসূল বর্ষ আর । একথা ইরা বিশ্ব লাভ হয় षात्र ।। योशन क्षार्थतः केका ममभूक कत्र । मून रक्षक्रां गर्म क्रुच गुर्वा हुस

প্রাণপণ সবে জীব উর্দ্ধে অধে ধায়। স্ব্যাসব্যে সদা চলে স্থিতি নাহি পান अनवक शकी त्यन ने का नाहि इंग्रा अनवक कीव अनिशासित वाकर्षत्र म অপানে কর্ষর প্রাণ প্রাণ আপনাবে। উর্জ অব্যোত্তিত ছুই যোগী ৰুক্ত करता। इकारत वार्वित यात्र भकारत क्षरविण। इश्म इश्म यञ्च कीर कर्भ मित्र: निर्णि । । এক दश्म पहुत्र । जात । या हम भाउ । जाजशा शाम जी की तु জপরে সতত। অজপ। শঙ্কলে মর্বপাপ যুক্ত হয়। যোগের বিহিত বিধি কহিল নির্ণয়। নামা অন্তরায় এতে উপস্থিত হয়। যোগ হানি করে যোগী অনের নিশ্চর । দূর কথা শুনে দূর বস্ত দৃষ্টি হয়। যোজন শতেক গতি ক্ষণেকে করম।। অচিন্তিত শাস্ত্র তথ্য পাঠ হয় তার। বড়ই ধারণ শক্তি লযু वर्ष अति ।। कारन क्रम कारन कुल कारन खण्ण इस । कारन वर्ष शतकांस अरव-न कत्रम ।। शक्ष शक्की ভ स वाय जनामात्म इस । मिया गन्न मिया वानी गहरक छमत्र ॥ मिना कना। প্রার্থন। कहरत्र काकिन्यत । मिना एमर धरत मिना পদ লাভ হয়।। যোগ নিজি স্থৃতক,এনব অন্তরায়। হইবে উদয় তার ক্ষতির উপায়।। এ সকলে যদি স্নেহ চিতে নাহি ক্ষিপে। তবে প্রাপ্ত হয় পরে ব্ৰহ্মার স্বৰূপে।। যাকে প্রাপ্ত হৈলে পুনর্কার রাগ নাই। যভুক্স যোগেতে . তাকে লভে যোগী ভাই। এক জন্ম হেন যোগ কিনে দিন্ধি হয়। যোগ-বিদ্ধি না হইলে কন্তু মুক্তি নয়।। নির্কাণের ছুই পথ আছমে নিশ্চিত। কাশী মৃত্যু কিবা যোগ গৈদ্ধি সমুদিত ।। কলিতে কলুস রুদ্ধি ইন্দ্রির চঞ্চল ভাপে জান্ধ, যোগ নিজি নহে যোগ কল।। অতথ্য কাশীপুরে বিশ্বেশ্বর স্থিতি। রুণা করি লোকে দান করিলে যুকতি।। কাশীপুরে সুখে যেন নির্বাণতা হয়। যোগ আরাধনে মুক্তি তেমতি লভয়।। কাশীতে শরীর খোগ মহাবোগ কয়। কাশীবোগে অবশাই ওড মুক্তি হয়।। বিশ্বেশ্বর বিশালক্ষী চু ভি সভাপানি। কাল্যাজ গলা এই বড়ক বাধানি॥ কাশীতে বড়ক যোগ নিতা জভ্যাসয়। দীর্ঘ নিদ্রা প্রাপ্ত হৈয়া অমৃত ভূঞ্জয়।। প্রণব কেদার কুতিবাম বীরেশ্বর। ত্রিপিষ্টক বিশেশ্বর ষড়ঙ্গ অপর। বরুণ। সক্ষম আর অবার সক্ষম। জ্ঞানবাপি মধিকণি স্কৃতি অমুপ্র ।। একাই দ ধর্ম কুপ বড়ঙ্গ অপর। অভ্যাবিয়া কাশীতে নির্বাণ লভে নর ॥ গঞ্চারান ৰহাযুত্তা পাতক নাশিনী। গেবিবা কাশাঞ্চনর মুক্তি প্রদারিনী।। কাশীতে সঞ্চার শুদ্রা হরত থেচরী। খেচর হইবে জন্ত তার সেবা করি।। ভূরদেশ रहेर्ड छिए का नी स्मानमन। छेछ छोत्रान ग्रहानक धरे निकशन।। विस्त-भार साम बारी निकार कार्या । जानका दक्ष करे में जिल्ह कार्यन । भक्र विश्व

লাতে কালীপুরী লা ছাত্র। এই মুল বন্ধ মহাছুংখ বিনালর। নানা
মতে যোগ বিধি উক্ত এই হয়। বড়ঙ্গ সমুদ্র যোগ কহিল নির্নাণ উভয়
গোগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কালীযোগ। কালীযোগ জভ্যাসিয়া নাদে ভবরোগ ।
যাবত ইন্দ্রির নাহি হইবে তৎপর। ব্যাধিতে বাধিত না হইবে কলেবর।।
মাবত থাকরকালবিলম্ব তাবত। যোগ যুত হইবেকছাড়ি নানানত।। আধি
ব্যাধি সঙ্গি ম্বরা মৃত্যর লক্ষণ। নিকটে জানিয়া কাল কালী জাল্পরণ।।
কালীনাথ আশ্রমিলে নাহি কালভয়। জুদ্ধ হৈলে কালে প্রাণ হরণকরর।।
কালীপুরে মরণ মঙ্গল জতিশয়। অভ্যব কালীপুরে নাহি কাল ভয়।।
গৃহি মেন কালে জতিথিকে প্রতিক্ষয়। ভাগাবন্ত কালীপুরে কাল নিরীক্ষয়।
কলিকাল কৃত কর্ম্ম ত্রিকটক কহে। খানন্দ কাননে ত্রিকটক ভয়নহে।।
জক্মাৎকাল আসি করিলেক গ্রাম। কাল ভয় ভীত আল্লারিবে কালীবাস।
জিমিকানিবাসী সীতানাথ বস্কুলাস। কালীথণ্ড ভাষারতি করিল প্রকাশ।।
ব্রহ্মানন্দ সমাগ্রমে ব্রহ্মানন্দ পায়। সমাগ্র হইল একচন্ধিল অধ্যায়।।

#### ---

### कार्य मेल्रा शक्तन।

প্রার। জগস্তা বলেন শুন-পার্বিকী নন্দন। কিরপে নিকটে কাল 
হয় নিরপণ।। সরণের চিক্ল কিছু কহ মোর স্থানে। এত শুনি কুমার কহেন
হর্ষ মনে।। শুন কহি কাল চিক্ল মরণ লক্ষণ। যাহাকে জানিলে মৃত্যু হয়
নিরপণ।। দক্ষিণ নাসাতে বায়ু বহে অথপ্তিত। এক দিবা রাজ ভিনবৎ—
সর জীবিত।। তুই তিন দিন যদি বহে দেই মত। অন্টাদশ মানে মৃত্যু
ভাহার নিয়ত।। নাসা পাই ঘোগে বায়ু বহে দশদিন। ছয়মানে দেই হর
মৃত্যুর অধীন।। নাসাঘোপে ছাড়ি বায়ু মুখে বহে যার। ভিতীয় দিবসে
মৃত্যু জানিহ ভাহার।। সপ্তম রাশিতে গত হয় দিবাকর। জন্ম নক্ষরেতে
জার থাকে শশধর।। দক্ষিণ নাসাতে বায়ু বহে সে সময়। অককাংশ সেই
কালে মৃত্যু ভার হয়।। পুরুষ পিললক্ষণ সে কালেদেখর। দিকীয় বংশরে
মৃত্যু ভাহার নিশ্চয়।। বীর্ষ্য মল মুক্র কিবা ক্ষুত মৃত্র মলা। এক কালে হয়
ভারবর্ষ আয়ু বল।। ইন্দ্রনীল নিতনাগ রুক্ষ আকাদেতে। দেখিয়াজানিসে
মৃত্যু ছয়মাস গতে।। দোঘ হীন দিনে মুখে লইবেক বারি। দিবাকর পৃর্চে
রাথি কেলিবে ফুখনারী।। ভাকে এদি ইন্দ্রচাপ হয় দয়শন। অবঞ্জই
ছয়মানে ভাহার মরণ।। জাক্ষছিত প্রশ্ব বিফুপদত্যর আর। না দেখে ছে

দ্ধনে মাতৃ মণ্ডল সঞ্চার।। কভি নিকটেতে মৃত্যু তাহার নিস্টয়। ছইবেক योवधीन मिथि ता नगर।। जक्तक्रिक क्रिक्त क्षय नामा ख्रा क्ला। विक्रुश्रम ক্রমন্যে নেত্র মাতৃষ্ণুল । একরপে আর রূপ এক রসে আর। ছইলে উদরে মৃত্যু নিকটে তাহার।। কণ্ঠ ওঠ রগনা দশন তালু লোবে। সতত জানিহ ভার মৃত্যু ছয়মানে !! নথ শুক্র নিতান্ত মলিন বার হয়। ছর মানে মৃত্যুক্ত ভার অবতা করর।! বাবার সময় মধ্যে অত্তে খুত হর। মরণ পঞ্চয় মাসে कांबिटव निकास । क्रवलाम मिटत यात करत कांद्रताञ्ग । ছन्नमारम मृजूर ভার আহে নিরূপণ।। তুর্নাত হৃদর কর চরণ শোঘণ। হইলে জানিবে ভিন মানেতে মরণ। ধুলেতে কর্দমে কিয়া খণ্ড পদ রেখা। পঞ্চম मादमरक मृज्य मटक रूप्त रमशी।। व्हित रमक् काटक होत्रा कतरत कल्लाम। চতুর্ধমানেভেতার অবস্থানর।। দর্গণেতে প্রতিবিশ্ব মন্তকবিহীন। দেখিলে ছইবে মালে মৃত্যুর অধীন।। প্রক্রিঞ্প হয় তারবাব্যের খলন। আকাশে ইন্দ্রের ধন্ম হয় দরশন। রাত্রেছুই চন্দ্র দিবাছুইদিবাকর। দিবাতে ভারকা চক্র দেখে যেই নর।। রাত্রেতে আকাশ দেখে নক্ষত্র রহিত। চারিদিগে চক্র ধনু দেখে আচ্মিত।। রুক্ষের উপরে কিবা পর্মত শিখরে। গন্ধর্ম মগালয় দেখে যেই নরে। দিবাতে পিশাচ মৃত্য দেখে যেই জন। অবহা নিকটে তার ঘটরে মরণ।। এসকল চিহু যদি এক চিহু দে**থে। প্রতিকা** कतिरव जिल्लान मृज्य भटक ॥ करत कर्न वक्ष कति ना छटन य सनि । ऋष স্কুল হয় স্কুল কুল হয় পুনি॥ অবস্থাই মাসমধ্যে ভাছার মরণ। কাটাইবে (महे कांज कतिया गर्जम।। व्यापन एएटवर हात्रा मिक्कर एनथम। शक्षम শিবনে ভার মরণ ঘটয়।। ভূত প্রেভ পিশাচ রাক্ষণ পৃধ্ধর। কুরুর. খুকর জার শৃগাল বানর ॥।শরভ দলভ সেন **নার অখত**র। স্ব**র্গেতে ইহার** পূর্বে ঘটে যেই নর।। অর্থবা পরীর মাংস করমে ভক্ষণ। বৎসরান্তে অব-अहे घरेरत प्रत्र । तुक्तभरक भूष्य बख्य प्रवस् पृतिक। सिवि यद्भ असे মানে মরণ মিশ্চিত। গল্পনন্ত বল্যীক অথবা ধুলারাশি। স্বপ্নে আহরণে मुजा घटते यर्थ मानि॥ मिंश्रुक मंख्यक देखन कृति व्यक्ताक्षन। व्याद्मिश् शक्रदर्स (स क्राइत शमन ।। दिनश्रद्ध क्रमटन व्यापनादक दिन क्रम। इशमान मध्या कांत्र करान महत्व।। कांशन मखदक किया नहीरह लब्बेह ।। करान क्र कार्ड इत्रमादन मृज्य रत्र ।। इत्यन्तर्भ त्मर कृष्णवञ्च शतिधान । त्मीरमध राज्य युन्नि-स्मर्थः विमानान ॥ किनं योगभातः कात्र व्हेरक ना भारतः। जनमाह किनेशांत्र मार्था तारे मारत ॥ जात्र काल कुमात्री बाबादत वास शादन। अव

भारे मृष्ट्रा छोत घटने मिटन ।। योनद्र ठिएमा घटन श्रृक्तित्व योगन প্রথম দিবলে যম দরশক পার ।। রূপণের দান শক্তি অভিশন্ধ হয় । দার্ছার্ড कार्भना 🐠 इरेटन फेंग्रह ॥ अङ्ग्रिंग निकृष्टि देश्टन निकटि महन । चाष्ट्रक भारतक भार गर्व वक्त ॥ जानिया वक्त स्वारत नियुक्त रहेरव । **अक्**या লিবের কাশী আশ্রয় করিবে। কাল বঞ্চনের হেছু আর মৃক্যঞ্জয়। লানিক্ বিশেষ কাশী করিবে আশ্রয়।। জোধ করি যমতারে কি করিতে পারে। মৃত্যুঞ্জ আপনি তাহাকে রক্ষা করে।। শিশুতা বিগত যেন রছিল কুমার। যৌবন বিগত দেখ বাৰ্ছক্য সঞ্চার।। এক দেহে চারি ভাব দেখি সহাশর। সকল ত্যাগিয়া কাশী করিকে আত্ময় ॥ অন্য অন্য মরণের চিহ্ন থাক সুত্রে। মৃত্যু পূর্ব্ব চিহ্ন ছরা না দেখে বর্ববে ॥ ছরা পরাভবে পরাভব সব হৈতে। ধনহীন জন যেন তারুণ্য রহিতে॥ পুজে বাক্য নাহি শুনে পদ্মী প্রেম ছাডে। না মানে বান্ধব লোকে অবকানকরে॥ অরাতুর দেখিরা পুলার পর নারী। পরাঙা খী হয় নিতা আপন সুন্দরী।। ছরা বে বিবম বার্ষি দুঃথের নিদান। মরণ হইতে জ্বা করে জ্বপান। যোগ তপস্ততে কাল জিনিতে না পারে। কাশীবানে অবহেলে কাল **অয় ক**রে।। যুক্ত দান ব্রস্ত আদি পুণোর সঞ্চার। না থাকিলে কাসীবাদ ঘটরে কাছার।। বোগ ভল ত্রত দান বর কাশীবাস। কলিকাল পাপ খরা সব হয় নাশ।। আঞ্জ করিয়া কাশী পুজে বিশেশর। পাইয়া ভারক জান মুক্ত হয় না নুরুট্র घडेटत रा रूथ कानी इंटरन मत्र। (महें सूत्र कथन ना घटके धनी बन है 📺 ई কাশীবাদ অর্গবাদ ভুক্ত হয়। ছঃখান্ত লভয়ে পুর্নে পরে ছুখ ক্ষা।। মন্দর कल्पद्र थाकि एक विरुधकत । काली विटन रूके ना स्टेल किश्वत । । काली দিরদাস নরপতি পুণাবান কাশীবাস সুখভোগে আছে অনুষ্ঠান ।। ব্রহ্মানন্দ মত্তি ব্রহ্মানন্দের আশায়। সমাগু হইল তাতে হিচরিল প্রধ্যার।

# क्रिवर्गात्मत त्रांका भागन।

---

পরার। অগন্তা কংখন শুন দেব যড়ানন। দিবদাস রাজ্য শাসনের বিবরণ।। মহাদেক সন্দরেতে পেলেন কি রূপেতে। বিকরিয়া কই দেই শুনিব নিশ্চিতে। কার্ত্তিক কংখন শুন মুনি তপোধন। বে রূপেতে স্ক্রে-দেব সন্দরে গমন।। সতি রমা স্থান সন্দরের গ্রহা হয়। গোরী ক্রিক ত্রিপদী। স্বর্গে রাজা সুরপজি, নানা সুথ ভোগ অতি, দিবদাস তুলা নাছি হয়। আর আর সুথ যজ, ভাহা বা কহিব কছ, বর্ণনেতে কে করে নিশ্চয়। দিবদাস এ প্রকার, বংসর আশি হাজার, রাজত্ব করেন মহাসুথে পরে সব দেবগণ, চিন্ডাকুল সমা মন, দিবদাস করিতে বৈমুখে।। দেব গুরু রুংলান্ডি, সদাই কুন্থির মতি, দেবগণ ভারে জিল্পান্য। দিবদাস কাশী রাজা, হইল যে মহাতেলা, কি ন্নপেতে রাজ্য ভ্রুতি হয়। কাশী ছাড়ি দেবগণ, সর্মদা তুঃথিত মন, কহ গুরো ইহার উপার। গুরু কহে শুন যুক্তি, ভাশুর বাহির শক্তি, অগ্রি দেব আসিলে হেখায়। অগ্রি কাশী ছাড়ে যদি, রাজা প্রজা নিরবধি, সদা হবে কাভর অন্তর। অন্তর বাহির হৈতে, অগ্রি হৈলে বহিন্তু তে, তবে রাজা হইবে কাভর। রহম্পতি বাক্য শুনি, সকল দেবতা গুণি, বিচার করেন ভদস্তর। অগ্রি সর্বব্যাপি হয়, বাছ অভান্তরে রয়, যে রূপে না রহে পৃথী পর।। পরে সব দেবগণ, অগ্রিকে ডাকিয়া কন, স্বর্গে আইস পৃথিবী ভ্যজিয়া। দিবদাস রাজা হৈতে, অগ্রি গেল বহিগতে, গেল অগ্রি স্বর্গতে চলিয়া।।

পরার। দিবদাস রাজ্য তাজি অগ্নি যে চলিল। অগ্নি বিনে রক্ষনাদি কিছুনা হইল। রান পূজা করি রাজা পাক স্থানে যায়। রাজা দেখি পাককর্তা সম্মুখে দাখার।। থর থর কম্পবান বচন না কর। ইছা দেখি দিবদাস জিজালা কর্মন। ভার পরে পাককর্তা করে নিবেদন। জ্যি বিনা ভব রাজ্যে না হয় রক্ষন।। তব ভারে সব দ্রবা স্থা পত্ত করি। রাখিরাছি আৰু হৈলে আনি দিতে পারি।। শুনিয়া এতেক বাকা রিপুক্তর রাজ্। ধান করি যোগাদনে দেখে মহাতেজা।। দেবতার তক্ত এই বাজান্ত कति। क्वितात्व गर्स व्याध रेनब्रात्वरह इति। कत्वक शहरक प्रत्य রাজ্য প্রজা যত। কাতর হইয়া সবে হৈল উপস্থিত।। রাজার অঞ্চেতে সত্তে করে নিবেদন। অমি বিনে প্রাণ হায় করহ রক্ষণ।। অকারণ দেখি রাজা প্রজা আছাসিল। চিস্তা না করহ সবে প্রজাকে বলিল।। জাগ্নি গেল বায় বরুণ কিছু নাহি চাই। মিজ ভেজে করি জগ্নি রাখিব সদাই।। বায়ু বরুণ চক্রদেব না রাখিব রাজ্যে। অপমান করে সব ত্যাগির অব্যাজে।। যেগে-वत्त हेश आमि छेद्धत कतिव। निक्ष त्रांटका सूर्याटमटव कावभा त्रांथिव।। यूर्व। कुटलांखव चामि तारे ता कात्र। यूर्वाटमव चामि श्रुक्तम चामात त्व ছন।। ভদপরে দিবদাণ যে:গেতে বলিল। চন্দ্র অগ্নি বায়ু বরুণ স্বতন্ত্র ফ-রিল।। দিবদাস রাখা সব প্রজা আখাসিয়া। যোগবলে রাজা রক্ষা সভত করিয়া।। **অগ্নি চন্দ্র বায়ু বরু**ণ স্বর্গে শীঅ গেল। অপমান তত্ত্ব সর নিবে-मन देवल ।। ना करत वाराका किছू पिरानात ताला। जाशन मेकिए गर রকা করে প্রজা। তেতালিশ অধার ইইল সমাপন। অগস্তানিকটে क्टिक्न यज्ञानन।।

পরার। মন্দরের গুরা হয় শুভি রমান্থল। মরকত মনি আদি করে বালমল।। রজত গিরির আভা দেব মৃত্যুঞ্জয়। বামে গৌরী সদানন্দে তথা বিরাজয়। চতুদ্দির্নে দেবগণ অতি সুশোভন। মন্দর বেষ্টিত যেন পটেতে ঘেরণ।। কাশী ত্যাগে বড়ানন তাপিত ক্রনয়। গদানন্দে মনে ছঃখ কেং না জানয়।। অতি ক্ষীণ বল হৈল কাশীর লাগিয়।। আপনার মনোমধ্যে তাপিত হইয়া।। কণালেতে চন্দ্র আছে অতি সুশী হল। অক্স সন্তাপেতে চন্দ্র হৈল ক্ষীণ বল।। শ্লিয় গক্ষা বিরাজিত গক্ষাধর শিরে। উত্তাপের আসে গক্ষা থাকে তটোপরে।। সমুদ্র মন্থনে বিষ উদিত হইল। কণ্ঠে ধরি সদানন্দে নীলকণ্ঠ হৈল।। লজ্জিত হইয়া বিষ শোষে কলেবরে। সত্ত্বণ বলি পদ্মনাল হস্তে ধরে।। পদ্মনাল বলয়া হইল কনি বরে। হস্ত পাদে স্ববির্দ্ধতে আত্মণ করে।। শিব ভাব নাহি বুঝে সব দেবগণ। পার্বভী ক্রেন প্রত্যো কহত কারণ।। কি কারণে কাশীনাথ ফ্রাথত অন্তরে। কৃপা করি আদিনাথ কহত জামারে।৷ হেন বাক্য শুনি শিব গৌরীকে ক্রিল। কাশীপুরী অইমুর্ভি উদর হইল। ভোলানাথ বাক্য ভাবে বুঝিয়া

ভুননী। কাশী বিচ্ছেদের আলা না সহে পরাণী।। হাহা কাশী কোজা ভূমি দেখা দেহ আসি। তব স্থান ভ্যানি ছুংখ পাই অহর্নিপি।। মণিকর্নি কোমা ভূমি যথা সন্ধাকিনী। কত দিনে চৃষ্টিভূর হইবে আপনি।। হাহা কাশীবাসি সব কোখা যে ভোমরা। কি মতে আছুরে সবে কাশী হৈয়া হারা।। এ রূপ অনেক থেদ করিয়া ভারিণী। ভব নিন্দে ভবানী কহেন কিছু বাণী।। কাশীর বিচ্ছেদ আলা সহিতে না পারি। ইহার উপার প্রত্যে কর ত্রিপুরারী॥ আনন্দ কানন শীন্ত দেখহ শক্ষর। নভুবা পিতার গৃহে পাঠাই সন্থর।। বরাণসী ভ্যানি আসি প্রাণ নাহি রয়। হেন থেদ শুনি ভব উমাকে বলয়।। ছরিতে যাইব কাশীপুরেতে নিশ্চয়। এত কহি শুতনাথ ভাবিত হৃদয়॥ কিনে অবিযুক্ত পুরী করিব গমন। চৌর্য টি যোজনী ভাবিল ত্রিলোচন।। ধর্মাশীল দিবদাস রাজাভোগ করে। তার রামজ্য পাপ জন্ম করহ সন্থরে।। এই আক্রা পাইয়া চৌর্য টি যে যোগিনী চৌরাজ্য প্রধা সাল হইল কাহিনী।।

### -

# চতুঃষ্টি যোগিনীর কাশী গমন।

পয়ার। কলস উত্তব কহে কার্ত্তিকেয় প্রতি। যোগিনীরে কি কহিল কহ্মহামতি।। যজানন কহিছে জগস্তা মনিবরে। যোগিনী পাইয়া আজা চলিল সম্বরে।। সকল যোগিনী মনে করেন ভাবনা। বছদিন অন্তে হবে কাশী সন্দর্শনা।। স্লাগ্যতা মানিয়া কাশী করিল গমন। দুরে হৈছে হৈল কাশী পুরী ধরশন।। পরস্পর কহে প্রভু কর্মের সাধন। তাহা হৈতে প্রেষ্ঠ হয় কাশীর দর্শন।। কহিছে কহিতে গেল কাশী নিকটেতে। প্রবেশ করিল কাশী কপট বেশেতে।। কেহ হয় নৃত্যকী কাহার ভাব দাসী। কেহ কামরূপী কেহ বাজাইছে বাঁশী।। বেদিনীর ভাব কেছ কেহ গান করে। কেহ জন্ম মাথিয়া যোগিনী বেশ ধরে।। এ রূপ অনেক বেশ সকলে ধরিল প্রথমেতে পঞ্চজ্যোশী ক্রমণ করিল।। তদস্তরে গৃহে গৃহে ক্রমণ করেছ। দিবদানে কোন পাপ নাহিক দেখয়।। হেন মতে এক বর্ম জতীত হইল। যোগিনী হইতে কার্য্য সিন্ধানা পাইল।। সকলে যোগিনীগণ চিম্বাকুল মনে শিকের নিকটে সবে বাইব কেমনে।। সকলে মিলিয়া এক বুজি যে করিল কাশীপুরে বান ইহা নিশ্চয় হইল।। ক্রতকার্য্য অপারক যেই জন হয়। মরণ উচিত হয় কহিল নিশ্চয়।। এই হেডু কাশীবান জাের কশ্য হয়।

तिश्व । जीने के कांने में स्था कि का । दिन एक एक था कि ने कांने एक विश्व । जीने के कांने के कांने एक का विश्व । जीने के कांने में स्था कि का विश्व । जात क्षि का विश्व । जात का विश्व । ज

ইতি একাশীখণ্ডে শিৰগীতা ও মনুষ্যের মরণচিত্র ও মহাদেবের বিরহ্মাল। মামো পঞ্চম সর্গঃ।

-315216-

# अथ पृर्शात काभी भमन।

পিয়ার। তদপরে ভূলপাণি ভাবিত হৃদয়। কি করিব কি হইবে না দেখি উপায়।। সুমাদেৰে ডাকাইয়া শঙ্কর কহিল। যাহ ভুমি কাশীপুরী মিশ্চর ঘলিল। দিবদাস রাজা সুধার্ম্মিক মহামতি। তার ছিদ্র চেকী কর ख्या कर शिष्ठ।। अवर्था ना देश्टल नर्जिक निवनात । काभी खात्र कत्राविक নাহিক নৈরাশ। যাতে পাপ আচরণ করে নরপতি। তাহার অশেষ চেকী कत्र भीखनाकि।। निवनाम निख रेक्कांस कांभी ना छाजित। अनम् रहेटल কাশী অবশা তাজিবে। পাপহ্ত হৈলে কাশী না ছাড়ে যখন। ভাহার উচিত দণ্ড করিব তথন।। ধর্মো মতি থাকিতে নাহিক পরাজয়। इंशांट अनाथा नाहि कहिल निम्ह्य ॥ এই वांका अर्क त्तव खनिया তথ্ন। শিরোধার্য মানি তথা করিল গমন॥ কাশীপুরী মুর্যাদের (मिश्रा नंत्रानं। कुछार्थ इहेंल विन छार्व महन महन।। निक्र अन ভাগ করি হটল ভাজা। প্রবেশ করিলা নিত্য আনক্ষকানন।। এমণ करतम जना लाना दवन धति। त्कांन दमाय नाहि शीन निवनात शूती ह এব্রপে বৎসর এক ঠইলেক গছ। কপ্সপ তনয় বড় হইল চিস্তিত।। কি ৰলিৱা যাব পশুপতি নলিহিতে। অক্ষম বলিয়া সত্তে ঘূৰিবে জগতে।। প্ৰভু আভা কর্ম যেবা করিতে না পারে। জীবন থালিতে মৃত্যু সমান ভাহারে। এত ভাবি অর্কদের হৃদয়ে করিল। লোলাখ্য ক্রমেতে মূর্ত্তি পরে প্রকা শিল। অসির নিকটে তীর্থ লোলাখা হইল। বরুণার কাছে তত্ত অর্কমূর্ত্তি হৈল।। ভাদশ আদিতা রূপ স্থানে২ হয়। কাশীক্ষের শিবস্থান লোলাখ্য खेनत्र।। काली हां पूर्गारमव ना शाल भन्मत्त्र। ऋत्तर सुर्गा करण निव शाम करता। (भोरव वंशी मधुगी अर्थनी वर्लवादा। ता श्रुट्य लामाश्रा मुर्द्या छक्ति छा करत।। मर्स वाधि मुक्त इस मारे नव नह। व्यवश्र स कामी মৃত্যু হইবে গোচর।। শাষ্ট্র ছন্ন চল্লিশ অধ্যায় কাশীথপ্ত। শুনিলে লভয়ে মুক্তি যায় ভবদও।।

# कारे सूलकवांत खेशांशांन।

বাধু-জিপদী। কার্ত্তিক কহেন, অগন্তা শুনেন, উক্ত অক রিবরণ। ভিক্ত দত্তান্ত্র, পদ্দী সঙ্গে বাস, কাশী করেন গমন।। কাশী করি বাস, অল তার্থ পাশ, আশ্রম করিল তথা। দিল শাস্ত অতি, পদ্দী তার সতী শুক্তিছে যে সর্কথা।। কিছুকাল পর, এক কনা। তার, হৈল বড়ই সুন্দরী।

# कामीमधा

মূলা অঞ্জাগে, মৃহলপতি কেন্দ্রে, আল হইল তাহারি।। ছবি লিঙা মাজ্ব পালন সর্বথা, বর্ণনা হয় অপার। বাজে দিনেদিনে, ধন্য কপে শুনে কিক তার বিভার।। সুলক্ষণা নাম, বড় গুণধাম, উপুমা মাহিক ভার। পিছা ভাবে মনে, বিবাহ কারণে, বিরের নাহি উপায়।। সুল শীল ধনে, সুলর গঠনে, কোথা পাব হেন বর। বিজ্ঞত আকুল, পত্নীত বা কুল দোঁহেতে বড় কাভর।। ভাবনাতে জর, ভিজের অন্তর, দিনে দিনে হর তাপ। , বিজ্ঞ তার পর, বড়ই কাতর, মনে মনে ইন্ট জপ।। পঞ্চর সমার, তাপ। , বিজ্ঞা তার পর, বড়ই কাতর, মনে মনে ইন্ট জপ।। পঞ্চর সমার, পাতি সঙ্গেন্দরী, হল শিব শিব বলে। প্রাক্ষা মরিল, সভী তা দেবিল, পতি সঙ্গেন্দরী, তারিকায়া করে, কি উপার হয়, সুলক্ষণা ভাবে দীনা।। পরেকে স্থোবিধি দশা করে। প্রাক্ষণ ভোকন, করি সমাপন, একেলা চিক্তিত পরে।।

পরার। সংক্ষণ বিলাপে যে আদি ভারা হীন। পিছা মাতা তাজি भागा अकर का का। कि कतिव काथा याव छेशांत्र मा (पश्चि। कुमाती व्याप्त देशन अधिनाम कृत्थी।। विवाह कि कारण हत्व छाड़ि काकि भीसा। कारत वा विविव आमि ভाविटक लागिल।। शिका माहा आंधारण दिवाइ त्य (प्रमा । तह त जेखम जारह नाहि विश्वाम । बहेन त्योतस्कान दम्ब काल नम। कथन कि एम है एथ नाहि निक्शन।। वह त्लाक कहित याम বিবাহ করিতে। সুলক্ষণা কোন ববে নাহি ধরে চিতে ॥ ভদস্তরে সুলক্ষণা ভাবিরা অন্তর। ভিত্তে স্থির কৈল রামা পুলিব শক্কর।। তার পর সুলক্ষণা কন্যা মহামতি। মহাযোগ জারভিল মুস্থির সুমতি।। এইবংগে বছুরাজ ছপসা। করম। অভি চর্ম অবিশিষ্ট দেহ মাত্র রয়॥ উক্ত অর্ককুণ্ড ভটে क्रममा करता कराति करामा त्यारग त्यांनी अभारमम् । कथा वक जन्न শুন্হ চমৎকার। শুভাছাগী প্রতাহ আইনে অনিবার।। কুপ্তে কল পান क्ति निका निका यात्र। सूलक्या तत्रा त्थटक माथाहेता प्रत ॥ सूलक्या যোগ ভঙ্গে দেখেন তাহারে। একি চমৎকার বলি ভাবেন অন্তরে।। এক निम इब्रद्शीती व्यनम सन्त्र । जूनकृता फ्रान्याटम फेन्य वर क्या। करिहान क्शना शोजी कूमातीब त्यांचे । वसनाद्य कश्लिन विद्या द्विता ক্পাকর সমানম বালিকার এতি। হেনবাকা পার্ম তীর শুরি পারপারী

क्षेत्रक रहेशा निव कटरून मध्ये वह वह क्रूमक्या यादा हैका कर ह र्योगेड्टम स्वक्ता लेखि सर्वेमिडिं। एत्रातीती खनाम कतिया करत स्विति स्वीकिंगा हिटल जादव कि कहैव बंदत । दिनकाटम स्की कानि अल शान করে। তার পর কুমারী বলেন ভুতনাথে। ছাগী জঞ্জে মুক্ত কর শুন कानी भेटें । भेटे राका अभि इत भोतीटक करिन। सूनका मन जीवि क्षु मी पिथित ।। शत अंशकात आरंध विश्विष संस्थे । अंबेबेव शांगीटक कि मिन नित्र नित्र । देशा उछा किहू ना करि में छेती। केश्लिम अन सिन मिटवरमें किति।। ग्रमक्रणा मैज नेवी इकेटव मचत्र। मम कटला शांकि नेना চুলাবে চামর। তদন্তরে মুলকণা প্রতি বলে নির্ব। তব বাজে ছাগীমুক্ত ভাবশা করিব।। বিশৈষে ভৌষাতির কহি শুনহ বচন। অৰ্কুকুত্তে ছাগা করে अध्य नगम ।। अनोहार्य अर्केक्ट अल्लान देवल । এই कर्य दर्भ हाथी वर्गनांनी देश्य।। जम्खदा निव कटर खन मूलकर्ग। उने केशरपाटन खामि हिलाम जिल्ला । जुनि दंशीही श्रित्रा देशहा निकटि थाकिटव। जहनिनि দ্বর্গা অবে চামর ঢুলাবে।। ভদত্তরে শিব শিবা প্রকট হইল। সুলকণা भार्तिकीत निकटिएक र्वाम । कर्ककुछ माश्रादेशात कि किवनन। त्शीयमारम অর্কবারে যে করে অর্জন। কাশীবাস লাভ তার কে করে বস্তুন। অপুর্ব প্রায়ক অককুও বিবরণ।। সীভানাথ বসু ভাবি প্রীগুরুচরণ। সপ্রচারিশ केशांत्र टेंहल नेबालन ॥

### -184-

## काथ भारत्वत्र कर्क कांत्राधना।

भग्नत। शिक्षितिमान शद्र रत्न कर्नाखाद्र। वित्रिक्षिक नात्राम् वैश्विकानगद्र। विद्धादित्रा रह्नवश्म देक्न मार्तास्थ। शूख त्भोख जाणि देश नेत कर्नन। कीला कर्दर मिश्च न्य गर्नामान मदन। क्रिमीक कर्याख महिल केत्रला मार्गास्थ मार्गास्थ स्था किर्माण । कर्छ वाद्ध अनाव कर्तिल क्ष्क कर्ना । कोत गद्धा मार्ग स्था किर्माण । भागद्ध मार्गाद्ध आनाव कर्तिल क्ष्क कर्ना । कोत गद्धा मार्ग स्था किर्माण । भागद्ध मार्गाद्ध भागद्ध आने । क्षित्र क्ष्माम । क्षित्राह्म नाम देश कर्माण वनम । द्या में क्ष्म क्ष्मि क्षित्रण नाम । क्ष्मिका विद्या-क्षित्र क्षित्रीय । श्रीत्र द्या स्था क्ष्मिका नाम । क्ष्मिका क्ष्मिका क्ष्मिका क्ष्मिका क्ष्मिका मार्गाहरू । भाग क्ष्मिका क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण निर्माण क्ष्मिका स्था निर्माण निर्माण क्ष्मिका निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण निर्माण क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण निर्माण निर्माण क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण निर्माण क्ष्मिका क्ष्मिका निर्माण निर्माण निर्माण न

कतिद्वा भवना । माना कथा जाला भक्त क्रिका यहार वहा क्रिक्ट न ति के क्रिक्ट निर्वतरम् ॥ भाषत्र दुछ। उ सूनि कहिर्द्यान नव । नाक्षत्रन, श्रास क्रमाह्यान অসম্ভব।। শ বে ডাফ্রাইরা প্রভু লহ নিমা করিল। ভদস্তরে তপোধর স্বয়ানু प्तरं शत । क्रबंभिम शहारक माह्रम करशायन। इतिशु शहारम आहेश कांत्रका कृतन ।। नातामग कीका ऋत्व कार्ट्स निकर्तन । मुस्तिहात (हसि শাষ ভীত হৈল ময়ে।। অন্তেব্যক্তে ক্ষর্যে আসি প্রশাস করিল । ভার পরে नाष श्राप्ति नात्रमः बिक्ति।। जूपि निम्। श्राप्तु गृत्व कत निर्वत्रन्। सर्गार्क्त कतिशा मीख कतिव शमन ॥ . अष्ठ श्वाम भाष कदव छादव मान मदन । साइन्द्र কি ৰূপে প্ৰিতা আছেন নিৰ্কলে।। যদি নাহি যাই স্থান ২ইবে কুপিছ। উভয় সঙ্কটে মোর হৈল বিপরীক।। যে হউক সে হউক পিছা নিকটে साँहैव। शिका (जनाभ टेक्टल माद्ध श्रामादक श्रीकियु॥ मृन्वित द्वाप्त टेक्टल নাহিক উপাধ। বন্ধ শাপে সরংলেতে পীজিবে সদায়॥ এত চিক্তি শাঘ তথা করিল গমন। যথা ক্রীড়া স্থলেতে আছেন নার্যায়ণ।। শাস্ত্র পশ্চাডে मुनि छथनि हिन्त । नाताम्भ राष्ट्र देश्हा मुनि मुझ्यित ॥ नाजीश्व गकटनदेख रहेन गब्जिक विमन महाति गटन देश्य भक् किक 11 मिश्स्त्रहरूम युनि वनाहेता गांतीत्रव। नाना कथा जानात्भर करभाशकथन॥ भून हाथ भाष-क्षां अनित आहिल। नातायन श्राह यूनि हेक्कीरक कुरिन ॥ भाष **७**व शूख श्रञ्जू कर्ति निरवणन। मात्रीशन भाष तिश्चितिक भन।। ८६म বাক্য যতুপতি শুনিয়া সন্ধরে। বিনা অপরাধ পুঞ্জ জারিলা অন্তরে॥ শাস্ত প্রতি মুনিবর ক্রোধবুক্ত মন। ইছা জানি পাশ্বকে শাবেন নারারণা। কুর্তবোগ ভোমার যে হইবে সন্ময়। এক শুনি শামের কম্পিক কলেবর ॥ নারদের মনোনীত হইবা তথন। প্রকু সম্ভাবিয়া ছুনি কুরিল গখন।। তখ-স্কুরে শাস হৈলা বড়ই কাতর। ক্রন্সন করিলা খেদ করিল বিস্কুর ॥ যোড় होटक वनहाय नम् दश्च नाश्चात्र । विना कश्चत्रांदर श्राष्ट्र माशित्व कामात्र ॥ কিনে মুক্ত হব আমি কহ অগমাধ। এছ বলি অন্টাক্তে করয়ে প্রণিপাত। भाविष्य वरणम शृक्ष समर छेशात्र। कामी शृद्धकारम छव शाश वर्ष कात्र ।। कानी यादम स्वादमस्य कत्र जीवाधन। जनामादम वाधिप्रक श्रेट्व कर्यन । পিতার ভাজার শাম বারাণনী গেল। কুও করি ভাক্তেবে ব্রুজ্ঞ ইকল । व्यवस महेंबा त्वि वत स्मत् काटत । वासि सूज इत्य कुलि कहिन एकायादक एन कथा अनि माम सूर्या अनिमा गिया सक् शाहेश माम सस्यान विन ।। भाषां मिरका अस्विद्यारा क्षांकः स्नाम करा। सकत व्याधिरक एक स्माह

লব মরে ।। চিত্তেতে নতাপ্লা ককুলা হইবে তার । আনারানে কালী প্রাপ্ত অভৈতে তাহার । নামমানে গুলুনপ্রমী অর্কবারে । কালীক্ষেত্রে লাঘাদিতা রাম করে নরে ।। কুলুকেত্রে কোটি মুর্যা প্রহণের ক্ষ্ণে । সেই কল প্রাপ্তি ইর কালিবে নরল ।। আনিক্তি শুন টৈত্রমান রবিবারে আঘাদিতো স্থান লাম থেই নরে করে ।। তাহার কলের কথা বর্ণনা অপার । শোক ছুঃখ প্রহ ঘোষ না থাকে তাহারলা অক্টচলিশ অধ্যার শাঘাদিতা বিবরণ । সর্বি ব্যাধি মুক্ত সেই যে করে প্রবর্গ। মুলেতে আহর্ষে বড় অতি চমৎকার । প্রথানিতা গুলুরে যত গাতক সঞ্চারা।



## थ खोशमार्क कथन।

পরার। কার্তিক কহেন পরে অগত্যের প্রতি। দ্রৌপদার্ক বিবরণ শুন মহামতি।। বুধিন্তির ভীম আদি পঞ্চ সংহাদর। শিন অংশে জন্ম তাহাদিগের সবার।। ভগবতী অংশেতে দ্রৌপদী আবিভাব। দ্রুপদ রাজ্যার যথে হইল উক্তব।। কর্মাক্রমে পাঞ্জুগণ বনেতে ক্রেল। দ্রৌপনীকে স্বরমরে অর্জুন পাইল।। পঞ্চলন শ্রৌপদীর স্বামীত্ব ইল। এক সতী পঞ্চ স্থামী কিমতে বঞ্চিল। কানীবস্ত মতে হেন ভাবার্থ আদিল। পঞ্চমূর্ত্তি থক শিব ভাবকে ভাবিল।। তেকারণে এক শক্তি শিব এক হয়। পঞ্চলন সাত্র কেবল হস্ত ভিন দয়॥ তৎপরে দ্রুপদ কন্যা কানীতে চলিল। ত্বংখ নিবারণ জন্য সূর্য্য আরাধিল।। প্রেশন হই সাক্রপদ কন্যা কানীকে কন। পাক-স্থাল লাহ এই শুনহ কারণ।। ত্বান হই সাক্রপদ মাত্র জানিবে ইহার। তব ভোলনান্তে ফল না দর্শিবে সার।। আর কহ্যিকোপদার্ক মূর্ত্তির মাহাস্মা। রবিবারে পুজিবেক যেই সব ভক্ত।। শোক ত্বংখ ভন্ন ব্যাধি ভাবে না গী-ভিবে। অবশেষে কানী প্রান্ত অবশ্য হইবে।। দ্রৌপদার্ক আ্থানি বে ভ-

ত্রিপ্রনী । স্থাদের ভারপবে, তপ করে মোরভরে, পঞ্চতীর্থ মান্তর্গা স্থানিশ। একাত্তেতে ধান করি, নিত্তে ভাবি হরগোরী, লক্ষরর্থ গভ ইছল স্থিনো। অচল স্থানীর মন্ধ্য দান অবিরভ্য ততুর্দিগো ভৈজ প্রকাশর। উত্তকে স্করি দীপ্রিমর্জ, ভাতে ঘোর তপ শাস্ত্য অগ্নি যেন প্রলয় সমর। অস্তি

মার্নে জীব যভ, জার দেবতা সভত, চলাচল রুদ্ধ যে প্রভাবে। কারু শিক্তি নাহি হর, মার্ক তেজ বহু ছায়, স্বর্গ মার্ভা পাতালেতে নবে।। সন্ধানে বিশা-एक श्रेटक, यन यन श्रांग शांक, पूर्वा किया गरिएक मा शांदत । क्षमश्रद कामी পতি, চলিলেন শীভগতি, অভিযুক্তে यथी দিবাকৰে । पूर्वादमय मध्य मागञ्ज, সমাধি যোগেতে রয়,মহাদেব বলেন সম্বৰ। শুন দিবাকর ত্মি,প্রসন্ন মুই-लाभ आमि, यांचा देखा लंदि लंद देश । कांका नाहिक श्राम, नमा आदह जिल्ला महान, निव निवा जाविया ज्यात । चार्यात कृतामय, नाटक एक मिया कन्न, नमन्न इडेच्र मियाकत ।। छेन्नीणन कति काँथि, यूर्गा निव सिवा **मिरि, अर्थाम कतिता छ व करता। कामांत महिमा अकु,** वयन ना यात्र ककु, विधि विक कहिएक ना शांद्र ॥ तमव तमव क्रां शांक, अवहसुक्षांतरक, বিভো ভর্ম ভীম ভূতনাথ। ভব ভর আণ কর, মৃচ্ চক্রদুভ হব, ধৃক ট্যাখা আর বিশ্বনাথ।। দক্ষ স্বতন্ত্রশান্তন, শিব বিরূপ লোচন, শাস্ত শিবাপতে विश्व चात्र । गर्व गर्नाक क्रेश्वत, राव राजा एम शत्र, गर्वती गरिक विश्ववत् ॥ ভব বামদেব আর, সুচন্দ্র ভুবণ যার, ব্যোমকেশ কণীন্দ্র ভুষণ। শীতিক পূলভূত, বিধি 🌉 সংস্তৃত, ত্রাম্বক আরু ত্রিপুর স্থদন ।। পশুপাশ বিনাশন ত্রাণ রুত ত্রিনয়ন, ঈশ্বর অস্তক রুপালয়। ত্রিলোচন শাশ্বত, বিদিভাঞ্জিল हेकीर, कानकृष्ठेमनास्क इत्र ॥ वर्ग मार्ग स्थम, देनाश जनवर्गन, सुत्र মংশ্র পশুপতে। অশ্বক অসুর রিপো, কপাদ্রুম জুত প্রভা, বার্শ্বন বিষয় হরপতে।। চক্রদেখর কামতাতি, দুরগ গিরিকা পতি, বিশ্বনাথ आ नांग त्रिंडि। अधिरालत राम्न कर्डा, ज्ञान नाहि नर्वा ठर्डा, बहे नादम सूर्वा देकला छिक ॥ जनवर्जी छनशद्द, कदत त्रवि नवापद्द, नामा मर्क महिन्द्रज वर्गन । दमव मिवाक्त थाकि, जुके भोती भश्रभकि, यूर्गाम्बद्ध,देकम इक्लान इत रंगीयी खब रंगा, निष्ठा भार्थ करत स्मता, छात्र कल वर्गमा आखत । कामी ক্ষেত্রে গঙ্গা ভটে, কিবা স্লানান্তর সঠে, অবারাণে মুক্ত সেই নর।। খারভ মকলা গৌরী, পুঞা করে নর দারী, জনায়াদে পাঁপকর হয়। তৃতীয়া ওঞ্জা देग्टब, अनमन कब्रि ब्रास्त्र, निया अनक्षारत्य भूकत्र ॥ भवनिन क्षांन क्रिः আর ভাদশ কুমারী, পুজা যেবা করে বিধিমতে। ত্রাক্ষণ ভোজন করি। তাতে সুখী ধর পৌরী, সেই নর মুক্ত অচিরাতে। কাশীর্থণ ক্থামূকে, मयुर्व आफ्रिका गाँछ। वर्गमा इहेल मूनियत । शुनिरम श्राम कान, रहे (वरु करव खान, विरमय कत्रिहा कन बाहा।। केनशकान व्यवाह, नमांख स्ट्रेन

আন, অতি চমৎকার কথা হয়। শুনি ল পাপের ক্ষর,অনায়াদে ছুংব যার, এই বাক্য জানিহ নিশ্চর।।

## অথ গরুভেশ্বর উপাখ্যান।

भवात। कार्डिक कटरन (य व्यशका मान अधि। कहित व्यश्व दक्षा ত্রৰ সৃহামতি।। কশ্যণের পত্নী কক্ষে আরত বিনঞা। কক্র গর্ভে সর্ল সব ভেজবী সুর্বাথ। বিনতার পুল ভিন পেচক জল্প। প্রাত হইল শেষে ব্দাৰংগ্যক প্ৰৰু।। এক চনৰ স্থাই ভগ্নী খেলে গৃহ সাবে। কক্ষ বলে শুন ভগ্নী কহি ভব কাছে।। রবির রখের অশ্ব ক'লো কিবা খেত। পণ বাথি কঁচ खदी अनम् निष्णिक । विगक्त। बहन खदी शर्प कार्या किया। व्यवना विवास घटि भाग करत दस्या । विमन्धा विमन विश् कत विमा भारत । कड़ करन कम, ना वहेंदव हुई बदन।। शुर्राश्व बड़े तील जाह्द वावहाव। दिन्छ। विभिन्न ख्यो हेन्द्रा (य द्वामात्र ॥ फर्भ्नाद्र रूक्त (मनी कांश्ल नहन । यात्र थोका जन्म इटर बिटन त्में जन। त्य श्रांत्रित मानावर्षा बरेड निम्हत । कक वर्षण क्षेत्र वर्ष पूर्वा जान इत ॥ विमका विमित्र अभ अभ त्य उम्म । शत-ম্পন্ন কৰি ছবে গেলা নিজালন্ত ।। গুছেনগিয়া কজে দেবী ছাকি পুজনগ। विम्हात नटक शब कटर बिवन । यह शृंखायय। पूर्वा विवालिक रुग । जय **क्या प्रश्नात काव ह कुद्ध यह । क्यो गर दला भाष्ट्र। कह दिश्री छ। दक्तात** इंदेर्ग ८इम खान प्रमुक्ति। (थना स्रांत्न गांक गांक क्रीबा भांके छन। भिक्षेत्र **भारेव (हम टेहन अ**श्चेब ॥ हुएत भाक्त एलाबन ताका तल अमलुर भूक भिरंत रहम कथा कक शाम तय ।। रकाथ कति शुंख शर्म मान रच कति-ल। शक्र एक्ट्र मात्र एटव ब्यात शिववता। अमनीत दक्ष्म वाणी श्राम कार्यश्राप्त । পাডালে অনেক ভাল ওয় পাইরা মনে।। আর সকলপ্রণ থর্গেছে উঠিল स्री काम भटतरती छ नश्मन कतिक।। छिन जम्म त्यक्ने देवल क्रम वर्ग। मांछा प्रांतम क्रुकिकार्यः कवित्र गण्यूर्न ॥ छात्र शत्त ब्राह्मद्वपयी विन्छादक राम । एम एशी कथ (मधि अक्षिका मखरम।। शांधा यम बाहर विनकांत्र र्ममण्ड । क्या वर्ग धन निमि कहि (व (कामांटक।। क्या मक्ति विदेश माहि अत्थेत वर्नन। विमन्न प्रक्रिम शृत्रं कह आत्त्रारुव।। दिमन। शृद्धंत्व श्रद्ध करक रस रामिल । करकटक ब्रिमका गरेमा रारतिएक छलला।। जारम करम सूर्या **एक एक अन्तिमंत्र। जिनकाटक केळ वटन केव कि क इत्र।। जानक स्टर्वा**द्र

एक निरंख मा भारत। जानात संग्रहाकि देश वल याहे किति । विमर्काः চলিল আরৌ বেণে অভিশয়। কক্ত ভিত্তে চিত্তে মম হইল প্রলয় ।। ভার शदा कफ रमवी पूर्वा छव करत । युर्वाहमेव कुशा कर महत्र कखरहा।। शस्त्र তেজ সহা হৈয়া উঠিল গগণে। সুৰ্ব্য ক্ষম্ম দেখি নোঁহে অসিত বরণে।। কৃষ্ণ वर्ता विमन्। इहेन मम खिन्छ। श्रान्तिका काहरत गाँश कत्र विभिन्छ।। तिक्ः তা বলিল দেবী করি নিবেষৰ। জব খাষ্যকর্ম আমি করিব সাধনগ্রিক্ आणि विन्छ। त्य मात्राकर्म कर्मा । व्यक्तिमन कक्ष्म गृटक माहेश त्र **महारा**क्षी দাস্যকর্ম করি আইসে আপন আলক্ষ্য সতত বিনতা মনোত্রঃখ অভিশক্ষ পক্ষীরাজ মাভাকে দেখিল একদিন 🖟 অভিশয়: সুংখাদ্বি হা মুখ যে মলিল बिकानिल गांका ऋारन कतिया विसम्भा कि कांत्र व क्रूडिंग गांका कहिरव मिन म्हज ।। विनष्ठ। विनल भूख अनर वहन । मात्रा कर्म कर्ति आगि भरवत जर्म विरम्य कवित्रं कहित्सम छात्रशहरा छनि म्यारं शकौदां ज कार्षि । च छ दित्र ।। दिन्हा दिवन शुख क्लांच मा कहिरदे । अधिक नामाथा देशक व्यक्षं इहेटव।। शक्रुष् वटलन गांषा कति विदवनन। कि अकात हटव इद দানীত্ব মোচন। দি বাহাতে দানীত্ব মুক্ত ভোনার হইব। আজা কর মাতা আমি অবশ্য করিব।। শীত্র ঘাহ ভূমি সাতা কক্রর জালয়। কফ্র মাতা षांदा करह कतिव निक्षत्र ॥ शत्र पिन विम्रज्याक्षी का का का वान । पानाकर्या देश्टल मुख्य शहेर दिकारमा। दिकान अवा मिटल लगी कर शाहिम। (कामान कर्म भंतीरतरक ना इस गहन ।। शरत कर्गिशर्श कर्म्यू छ। किसा नषत । विनष्ट। तृष्ठा छ यव विविध ७९ भव ।। गर्भगण विरव हमा कतिया रणका छा भारत शक्तरण्दत आरहे गरा **कत्र।। अक्यक अपृक छोजन गणि दर्श । मृजू। दर्श** नाहि थाटक उटव काटत जह ॥ धरे खित कहि गर कटक किश्रा का कुछ পাইলে দাসাকর্মেডে মোচন।। পুত্রগণ বাকা কলু বিমতাকে কয়। भ+ মুক্ত পাইটল তব দাসীস্থ মোটর।। বিম্বাগৃহেতে:আসি পার্মীরালে কংক গুমিরা গরুত পশ্বী মৌনভাবে রক্ষো করণ ছির্টিছ করি করে মার্ছা कारन। आसित अमृत यांका ना चाकिर गरन । मांका कारन शक्क करतक নিবেদন। আ্বাতে হৈরাছে মাজান্দরীর দহন।। আহার পাইলে যাই अमृष्ठ आमिर्टक। विश्वका यनिन श्रृष्ट कहि एव रकार्नाटकताः सम्राज्येतः कीरतः जात्व कथाद्रमत गमा जर्मिण मध्या यति कत्रदत्र उक्तमा दत्रहें आलिश्रमीः णिर्श खेकन अविदय शिकांत भरम खोका हम वोहिता अधिका ता शक्तिता वर्रा भाषा क्षि मिर्द्यम्म । रक्षमाम कामित माका खाक्का एक प्रम ॥ विश्वका

र्रोलंग शूख कारना वह मरक। विलक लारनरक वक्षापुत स्व शरनरक। वह-क छ। का । इस नित्मव लक्तन। अक्तन प्रतितन कारन मा कर कक्तन।। कर-শারে খণেখন মাতা স্থানে বলে। কি বাপে আনিব আমি ভক্ষণের কালে।। क्रिम डा'कटर्न खन खना (य लक्ष्म । खाक्क्ष थाइट्ड नना इट्ट महन।। (इन कथा अभिभा गङ्ग ए महामंडि । त्रमुख निकरते हत्ल क्रि मौखन्छि ॥ त्रमुख ডটেতে স্ব চণ্ডাল দেখিল। পাখার কাটেতে স্ব অন্ধকার কৈল।। মুখের বাদিন করে জতি সে উচিতে। আপন ইচ্ছায় স্ব যায় উদ্ধেতে । তার मरभा अक् चिक्यत स्य पाहिन। शतात मस्यारक शिवा प्रतिहरू नाशिन।। हश्लोग चक्र कति **केम्लाहर बिटबहर । जात श**त श्रेटगश्चत कट्टन मञ्चटत ॥ কোন কাভি তুমি সভা কছিছে দিশ্চিত। ভক্ষণ করিলে তবে হবে বিপা-तीका। दिख करह अन शकी बांच महाचत्र। खांचान हहेच चानि कहिनू নিশ্চর 🔰 ব্রাথ্যণে করিস রক্ষা বিনতা নক্ষন। চণ্ডাল যতেক ছিল করিল कक्रमा। व्यवस्थात शक्रम केटिन वर्गभाष्ट्र। निर्श्वाहरू हिन यात्र कामक ৰখাতে ॥ রক্ষক যতেক হিল দেখি পক্ষরাক্ষা। ভরে ইন্দ্র অগ্রে হার নাছি करत जाका। शक्क एर्निया गव तकक शनाक। आराम करित शिश अगुठ यगात्र।। प्रमुख : वर्षेम कति काल ठक किरत । सारमात कि इरव की हे अरव-শিক্ষে নারে॥ হেন দেখি পক্ষরাক ভাবিতে লাগিল। মারা করি কীট देशक अधि अकूम देशन । अवटश्ला क्षादिनिम अमृत कानत्र । हका देशक भक्राप्त किছू मोरि एक।। পরেতে অমৃতভাগু লইরা ব্রিত। বেগেতে हिल्ल शक्त देश्या जांस्लामिक । सूरा लिल मिरान स्टेश कांक्य । नादायन काटह निम्ना कर्न्टल विख्त ।। नक्षण अमृज्जा १ इति नहेता यात्र । कृष्ट अच्च দেবগণ করি কি উপার।। দেবগণ প্রাণ রক্তে অমৃত আছিল। বিনতার পুজা লই রা বেগেতে চলিল।। এত শুনি বিষ্ণু অভি ক্রোধিত হইল। গল্প-ড্রেন পাছে অভি বেলেভে চলিল।। কভ দুরে গিয়া দেখা গরুড়ের সনে। স্থিংশতি বৎসর বুদ্ধ হৈল দেবসানে ।। নারারণ বুদ্ধে জতি হইয়া কাভর। शक्र एक अबि अबु करहम मध्त ॥ छव अिं वक् चुके देश्य मम मन। छक भारतातीक देव मिवक वर्षते ।। क्लार्ट्स थर्शम्बत वरण श्वन शर्माधव । वाहिका कत्र इमि विव हुरे वत्र ॥ भारतात्र । वर्ण (पर धरे धक वत् । व्यामात्र वाहन ভূমি হবে নিরন্তর ।। স্বার বর দেহ তবে কার্য্য অবসানে। স্বর্গতের ভাগ্র क्षांकि रिष्य रम्बनर्ग ।। अवभक्ष विनता नत्त्व गृरह राजा । क्षा व वाकार्य देशीको अञ्चल (व निर्मे ।। अमृष शाहेत्रा कता वस दूर्व देशा। विनदादक

मानाकर्म देशक मुक्क देवन ।। नर्भ नव छाकि कछ वरन मुखे देश्य। नकरन অমর হও অমৃত খাইরা।। নর্প নব চলিলেক অমৃত খাইতে। কজে কহে রান করি আইসহ শ্বিতে।। এত শুনি সর্প সর্ব চলিংলক শ্বানে। মাল্লাতে অমৃত হরি নিল দেবগণে।। বিদ্যা দাসীত হৈতে হইয়া মোচন। গ্রুইছ कट्टन शुंख खनइ कांत्रना। मात्रीय एवं कर्य इत्र शाल्यत घरेना। बात्रांनती ৰাইতে পুজ হৈয়াছে বাসনা।। তথা গেলে পাতকেয় হইবে বিনাশ। ইং শুনি পক্ষীরাজ বড়ই উল্লাস ।। গরুড় কংহর মাতা করি নিবেরুর। ভর্ষ সঙ্গে কাশী আমি করিব গমন ।। তদপরে বিনতা গাঁরুত কাশী যায়। গাঁরুত ভেশর শিব লিক তাপিত করম।। পক্ষীরাজ ঘোরতর তপ জারভিল। ধর্জটি প্রসন্ন হৈয়া তথায় আইল।। খণেখরে প্রসন্ন হইয়া পশুপতি। বয় লহ পক্ষীরাজ বাহা মনোনীতি।। তার পর গরুত দেখিয়া বিশ্বনাথে। প্রণাম করিয়া স্তব করে বিধিমতে। তুই হৈয়া সদানন্দ বলে তার প্রতি। নারায়ণ বাহন হইবে মহামতি।। ছরি হর একাজক সকল কারণ। সেই। করি নারায়ণ হইবে নির্কাণ।। তব স্থাপিত লিঙ্গ যেবা পূজা করে। আনা-त्रारम मुख्य रमेरे भारेरव मद्भात ।। रहम वाका विन भिव रेहला व्यवस्थानी পরে শুন বিনতার ছপের আখ্যান।। অবিমুক্তে ধ্রোক্রার্ক করে আরাধ্য শতিশয় তপ্যা করিল আচরণ।। বিনতার তপে তই হৈল দুর্ঘ্য হোর। বরদিল জ্ঞানযোগ ভোমার হইবে।। পরে শিব অনুকল্পায় নির্বাণ ছোমার। এই বাক্য আমি কহিলাম সারোদ্ধার।। আর এই ধ্রোক্রার্ক পুলে রবিবারে। শোক ছঃথ কিছু ভার নাহিক সংসারে।। এই বাকা বলি সূর্ব্য গেলেন সন্থরে। বিনভা গরুড় গেল আপনার ঘরে। অভি মনোহর খথোক্লার্ক বিবরণ। ইহাতে শুনিলে পাপ হইবে মোচন।। পঞ্চাশ অধ্যার কাশীখণ্ড মনোহর। সমাগ্র হইল অভিশয় যে বিস্তার॥

# जथ अङ्गनार्क विवत्रन।

পরার। কার্ত্তিকের প্রতি তবে জগন্তা কহিল। বিনতার কর পূজ কিবপে হইল। বিনতা গরুড় পরে কি কর্ম করিল। বিভার করিরা ঘর্টানন যে বলিল।। দক প্রজাপতি কন্যা ছুই যে হইল। এই ছুই কন্যান্তে কশ্যপে বিভা দিল।। কক্ষগরে সর্প সব হইল প্রকাশ। বিনতার গ্রহ

ভিন ডিমের আভাস।। বিনভারে কশ্যপ যে বলিল বচন। অকালেভে ডিম্ব না করিছ প্রকাশন।। এক দিন কণিগণ গুহেতে খেলায়। তাহা দেখি বিন্তার খেদ অতিশয়।। অকালেতে এক ডিম্ব বিন্তা ভাঙ্গিল। কদাকার এক পুত্র পেচক হইল।। পক্ষীগণ মধ্যে কেহ না করে গণন। দেখিয়া य विनकात कुंध्य वर्ष मन ।। महनाकुः त्थ विनकात वस्त्र मिन यात्र । अका-লেতে ডিম্ব এক ভাক্সে পুনরায়।। অরুণ নামেতে পুত্র তাহাতে হইল। অকালেতে ভঙ্গাঞ্জন্য মাতাকে শাপিল।। শুন মাতা আমি এই করি निरंदनन। अकात्मरक **एम जम देकरल कि काउन्।** यमक कतिरल कात উচিত হইবে। পরদাস্য কর্ম্বে তুমি নিযুক্ত থাকিবে॥ এই বাক্য সন্তানের বিনতা শুনিয়া। অনেক বিলাপ কবে চিন্তাযুক্ত হৈয়া।। অরুণে কছেন মাতা হইয়া কাতর। শাপ মুক্ত কিন্তে হবে কহিবে সম্বর্গ। তার পর অরুণ কহিল মাতা স্থানে। শেষ ডিম্ব পুর্ণ কালে ভাঙ্গিবে আপনে।। তাহা হৈতে ষে সস্তান হইবে উৎপত্তি। সেই ভব দাস্যকর্মা করিবেক মুক্তি।। পুর্ণকালে গরুত হইল তার পরে। প্রকাণ্ড শরীর পক্ষী মহাবল ধরে।। মাতা দাস্য-কর্ম হৈতে করিল মোচন। পরেতে শুনহ অরুণের বিবরণ।। আনন্দ কাননে পক্ষী যাইয়া সত্ত্র। সূর্ব্যদেবে আরাধনা করে ভার পর ॥ অভিশয় ত্যুট হৈয়া জাদিত্য আইল। অরুণের তপ দেখি কহিতে লাগিল।। রথের সারথী মোর তুমিত হইবে। ভক্তি করি অরুণার্ক মূর্ত্তি যে পুজিবে॥ অনায়ানে গর্ক ব্যাধি মুক্ত সেই নরে। পশ্চাতেতে কাশী প্রাপ্তি কে খণ্ডিতে পারে॥

### -

## অথ বৃদ্ধার্ক কথন।

প্রার। কার্ত্তিক কহেন শুন মুনি তপোধন। আর এক কথা কহি শুন দিয়া মন।। বৃদ্ধনামে এক দ্বিজ ছিল বৃদ্ধকায়। কুঠরোণে পীড়িত অনেক ত্ঃথ পায়। কাশীতে আসিয়া দ্বিজ সুর্গ্য আরাধয়। সুর্য্য আরাধনা বিধি-পুর্বাক করয়।। দ্বিজবর বৃদ্ধাত্বর্ক করিয়া স্থাপন। সেই স্থানে ঘোর তপ করে অনুক্রণ।। দিবাকর প্রসন্ন হইয়া দ্বিজে কয়। কুঠরোগে মুক্ত ভূমি ছইবে নিশ্চয়।। আর শুন দ্বিজবর কহি তব স্থানে। জন্য বর যাহা চাহ দিব এইকলে।। বৃদ্ধ দ্বিজ বলে প্রভু করি নিবেদন। বয়েস অধিক হৈলে ।। বালক স্বরাতে কিছু সাত্র নাহি ভেদ। অধিকন্ত জ্বান देशक अस्य वर्ष (श्रेम।। अष्ठवन कर करिन नाहि वह वर्त । यूरो देश। नित्रविध शूकित भक्षत ।। जूके देश्या क्रिशामार वर्ष्य मिनवर्त । निर्वान वर्ष्य क्ष्मा श्रीप्रमान वर्ष्य वर्ष्य मिनवर्त । निर्वान वर्ष्य क्ष्मा श्रीकर भक्षत ।। जाति कहि अन दृष्य विस्था वहन । क्ष्मांत क्षिण वृक्षा मिन्छ नित्रत्य ।। तिवर्गात वृक्षा मिन्छ भूकिरव एप नात । गर्नदिर्गाण भाष्ठि देशा कान करव भारत ।। वक्ष कि क्ष्मांत क्ष्मांत देशा । देशा व्यक्त स्थान कर्ष्य ।। व्यक्त क्ष्मांत क्ष्मांत क्ष्मांत कर्ष्य स्थान कर्ष्य ।। व्यक्त क्ष्मांत क्ष्मांत क्ष्मांत कर्ष्य वर्ष्य ।। व्यक्त क्ष्मांत क्ष्मांत कर्ष्य कर्ष्य कर्ष्य कर्ष्य वर्ष्य ।। व्यक्त क्ष्मांत क्ष्मांत क्ष्मांत कर्ष्य कर्ष्य कर्ष्य वर्ष्य ।।

### と

### অধ কেশব আদিতা কথন!

ত্রিপনী। কার্ত্তিক বলেন শুন, অগস্তা যে তপো বিষরণ। আদি কেশব কাশীতে, চিত্তে হৈয়া হর্ষিতে, শিবলিক পুঞ্ অনুক্ষণ।। এক দিন দিবাকর, একচক্র রথোপর কাশীউর্ব্দে করেন গমন। আদি কেশব কাশীতে, পুজেন লিঙ্গ স্থাপিতে, দেখি সূহ্য থৰ্কমান হন।। তার পর দিবাকর, রথ ছাড়ি খুন্যোপর, কাশীপুরে আইলা ছরিত। যথা रमव नाताय्रण, मित्र श्रृका त्रमा मन, उथा सूर्या देशल छेशनीक ।। क्षेमिकन নারায়নে, প্রণাম একাস্ক মনে, স্তব করে বিবিধ প্রকারে: জুমি সকলের মূল, ভুমি সুক্ষা ভুমি স্কুল, ভূমি কর্ত্তা সকল সংসারে ॥ অনাদি অব্যক্ত প্রভো, চিদানন্দময় বিজো, সৃষ্টি স্থিতি পালন সকল। স্থার বা মহিমা কত, ব্রদ্ধাণ্ড কারণ যত, তুমি সকলের বুঝি বল।। কি কারণে প্রভু ভবে, পুলিছেন মহাদেবে, বিশেষ বলহ দামোদর। জগনাথ এত শুনি, যুঠাকে নিষেধ বাণী, হেন মতে কি কারণে কর।। গতেক দেখ সংসার, সকলের कर्डा इत, कांत्र (गटक कांत्र व मक्षत्र । खन्ना व्यामि तमन यक, मर्क कर्डा कुछ-नाथ, वृद्धि ज्ञांकि रेश्यांकि लोगांत ।। अने सूर्या व्यामि करि, निव विस्तः षांत्र नाहि, सिव इन नकत्वत नांत्र। सिन भारत क्रूला कृति, निरनम বৈকুপ্ত পুরী, তব অগ্রে কি কহিব আর । শিবলিক পুলে যেখা, ভক্তি ভাবে করে সেবা, ভার ফল কহনে অপার। শিবলিঙ্গ পুজামুত, শিরে দিয়া হয়। **নত, সর্বতীর্থ স্নান কল তার।। আ**র ফল কি কহিব, ভতে স্কুপামিয় শিব, তুমি লিঞ্চ করহ স্থাপন। পুজা কর ভক্তি করি, তুর্তী হবে হর-দোরী, এই মুল সকল সাধন।। ভদপরে দিবকিয়া কেশবাদিত্য উত্তর, শিবলিঞ্জ कामीट काशिल। श्रुका करत मितालतः क्लीन कामिका रतः, मक्कतं स्य

श्विष्ठीन देशत ।। তত্ৰ পাদোদক তীর্থে, করিয়া কর্মা সর্লার্থে, কেশবাদিতা কর দরশন। সেই নর নরোজ্ম, পাপক্ষয় মুক্ত কাম, অবশেষ হয়ত নির্বাণ ষেই নর কাশীপুরে, সপ্তমী আঘিতা বারে, পাদোদক তীর্থে স্থান করে। পুলি আদিতা কেশব, সেই নরে পাপ সব, রোদন করিয়া ত্যাগে তারে।। অধিকস্ক কল আর, সপ্ত জন্ম পাপ তার, যত পাপ করেছে সাধন। তৎ-ক্ষণ্থ পাপ কয়, সর্ব্ধ ব্যাধি মুক্ত হয়, অবশেষে মুক্তির ভাকন।।

## व्यथ विमनार्क विवत्र।

जिल्ली। यजानन छात्र शरत, करह सूनि जगरछारत, विस्नार्क यक विवत्त । विस्नार्क नाम हिला, कूर्छ दाशी जित्र काल, अिल्ला कि खाकूल स्ता। विस्ना कानिया गारत, वाता । यो जाहेला शरत, स्रारम्व करत जाता । कृति करा छु ल, पूर्वि कि वक्षूक कूल, तर्छा । श्रे कि करा छु ल, पूर्वि कि वक्षूक कूल, तर्छा । श्रे कि का छवा यक जात , छिल्ला । वित्र खत, जा कि छ ज्ये । विस्ना छ का स्ता । क्रे कि विस्त कर श्रे कि विस्त कर श्रे कि विस्त का स्रा । विस्ना का स्र । विस्ना जा कि स्ता । विस्ना का स्ता विस्त का स्ता । विस्ना का स्ता । विस्ना का स्ता । विस्ना का स्ता विस्ना का स्ता । विस्ना का स्ता विस्ना का स्ता विस्ना का स्ता । विस्ना का स्ता विस्ना का सा विस्ना का सा विस्ना का स्ता विस्ना का स्ता विस्ना का स्ता विस्ना का सा विस्ना का स्ता विस्ना का सा विष्ण का सा विस्ना व

#### -

## अथ अञ्चानिका अ समानिका कथन।

ত্রিপদী। অতঃপর শুন মনে, গঙ্গাদিত্য আখানে, তগীরথ যবে গঙ্গা আনে। গঙ্গাদেবী কাশীপুরে, আদিত্যের পুলা করে, বিশ্বেশর লিজের দক্ষিণে।। যেই নর ভাগাধরে, গঙ্গাদিত্য পুলা করে, তার কথা কছনে না যায়। শুন মুনি তপোধন, তার পুণা অগণন, অবশেষ মুক্তিপদ পায়। যসাদিত্য তার পরে, কহি শুন মুনিবরে, যমাদিত্য হৈল এপ্রকারে যমেশ্বর পঞ্চমীতে, যম পুলে আদিত্যেতে, যমাদিত্য হৈল এপ্রকারে।। চতুদিশী কার্তিকেতে, ভরণী নক্ষত্র তাতে, বারেতে মঙ্গল যদি হয়। যমাদিত্যে যেই নরে, তর্পণ যে প্রাদ্ধ করে, ভক্তিভাবে করিবে নিশ্চয়।। তার পিতৃলোক সবে, অনায়াসে মুক্তি হবে, নিজে সর্ব্ধ পাপে মুক্ত

## SIMAN!

হয়। তাদশ আদিত্য সবে, মহাস্মায় শুনে জীবে, সর্ব ব্যাধি হৈতে মুক্তিপায়।। কাশীপুরে বেই নরে, স্থানে স্থানে পূজা করে, তাব করে মাদশ রবিরে। তার পুণ্য কেবা কর, নাছি খাকে তব তর, কাশী প্রাপ্ত নেই সব নরে।। এক পঞ্চাশ অধ্যায়, সীভানাথ বসু কর, সাফ হৈল আদিত্য তাদশ। ব্রজানন্দ কাশীবাসী, কুপাতে ভাষায় ভাষি, কাশীবতে অমৃত সুরস।

ইতি জ্রীকাশীথণ্ডে মন্দর হইতে যোগিনী ও পূর্ব্যদেবের কাশীতে আগমন ও ভাদশ আদিতোর বিবরণ। নামঃ বর্তঃ সর্গ।

-

### ব্রন্ধার কাশী আগমন।

মন্দর শিখরে শিব ভাবিত হইল। কি হৈল কি হৈল বলি চিস্তিতে লাণিলা।। যেই যায কাশীপুরী নাছি আইসে ফিরি। সম্বাদ না পাইয়া ভাবিত ত্রিপুরারী। অবশেষে ত্রজাকে যে সমাদ করিল। ব্রজা আসি কাশীনাথে প্রণাম করিল।। ত্রাক্ষাকে দেখিয়া শিব করিল সন্মান। ভার পর ত্রিলোচন কছেন বচন।। শুন ব্রন্ধা তমি সব জানহ কারণ। কাশী ত্যাগ করিয় 📆 স্থির নহে মন। বছদিন হৈল কাশী করিতে গমন। কাশী কাশী করিয়া উৎকণ্ঠ সদা মন ।। কাশী বিচ্ছেদের আলা না সহে অন্তরে। তুমি যাহ শীঘ্রগতি যথা কাশীপুরে।। যত জনে পাঠইলাম কেহ না আদিল। মুনহৈয়া সর্বজন কাশীতেবছিল।। দিবদাস স্বধর্মেতেরাকা ভোগ করে। অধন্ম দেখিলে রাজ্যচ্যুত নুপ্ররে।। দিবদাস রাজ্যচ্যুত যে প্রকারে হয়। ইহার উপায় ভূমি করছ নিশ্চয়।। এই বাক্য শুনি ব্রহ্মা ভাবে মনে ম ন। শিব কর্ম সাধন ভার কাশীর দর্শন।। আপনাকে শ্লাঘ্য ভান করিয়া সত্বর। আনন্দ কাননে বিধি যায় শীঘ্রতর।। ত্রন্ধানিজ রূপ তবে করি নমরণ। অভি র্দ্ধতম দ্বিজ হইল তথন।। দণ্ড কমগুলু হস্তে ককে খুকি পুথি। কপাল বেডিয়া কোটা ধীরে ধীরে গতি।। বারাণদী প্রবেশিল হুইয়া গোপন। স্থানে স্থানে দুর্ম্ম তীথে করেন ভ্রমণ।। ভার পব দিবদাস রাজার সাক্ষেতে। ধীরে বাঁবে বুজ দ্বিজ হৈল উপনীতে।। বুজদ্বিজ দেখি দিবদাস মহাশয়। গাভোখান করি রাজা প্রণাম করয়।। আননেতে বসা-हैशा शास्त्र अर्थ। किन । उत कृति अवत्भव किन्छ। ग कृति ।। कि कांत्र व দ্বিক তবে হেথা আগমন। যাহা ইচ্ছা দিব দান চাহত এই ক্ষণ।। দ্বিজ বলে দিবদাস ধর্মশীল তুমি। তব তুলা রাজা আর নাহি দেখি আমি॥ তব স্থানে অন্য কিছু দান নাহি লব। দশ অশ্বমেধ আমি কাশীতে করিব ইহাব সাহায্য রাজা কবিবে আপনে। যজে বিম্ন নাহি যেনকরে ছুই ণণে।। তদপবে দিবদাস ছিজে কহে বাণী। যথা সুখে যক্ত সাক্ত করছ আণানি।। বাচিক্সা করিলে অর্থ অবশ্য যে দিব। যাহা কছ দ্বিজ্ঞবর তথান করিব।। তদপরে দ্বিলবর বিদায় হ'ইল। উপায় কি করি বলি ভাবিতে লাগিল।। দিবদাস রাজ্যে আমি পাপ নাহি দেখি। কি প্রকারে রাজ্য হৈতে তারে করি ছঃথি।। শিব কার্যা বাধনা না হৈল আমা হৈতে। বিপ-বীও হৈল শিব অত্যেতে যাইতে॥ কমল উদ্ধব চার নিভিন্ন অভান

কাশী সেবা করে যেবা শিব তুর্ষ তারে ।। পুণার্ক্ম সাধনের শ্রেষ্ঠ কাশী সেবা। কাশীবাস হৈলে অন্য কর্ম করে কেবা।। এতেক ভাবিরা রক্ষা থাকে কাশীপুরে । শিবলিঙ্গ স্থাপিরা পুজেন বছতরে । ক্রমেই দশ্রমাণ মেধ যে করিল। আনন্দেতে বেদবেজা কাশীতে রহিল ম অগভাকে করেন কার্ত্তিক মহাশর। ক্রৈণ্ঠমাসে শুকুপকে দশ্মী যে হয়।। দশ অস্থানে স্কান পুজা যেই করে। দশ অস্থাজিত তার সর্কাপাপ হরে ।। আদ্ধাদি তর্পাকরে করের কলের বিশেষ। তার পিতৃলোক মুক্ত কহেন মহেল।। আর কল আছে তীর্থে শুন মুনিবর। জার পিতৃলোক মুক্ত কহেন মহেল।। আর কল আছে তীর্থে শুন মুনিবর। জার গান শুকুপক্ষে তৃতীয়াতে আর ।। ভিজিভাবে যেই জন স্মান পুজা করে। সর্কাপাপে মুক্ত হয় সেই সবনরে।। অস্তে কাশী বাস তার অবশ্র যে হয়। শিবের বচন কেবা খণ্ডন করয়।। আর আর কল শ্রুতি আহে বছু রপে। দ্বিপঞ্চাশ, অধ্যায় সাক্ষ হইল সজ্কেপে।।

### -31816-

## व्यथ् क्रक्तगरगढ़ कांनी गमन

প্রার। বড়ানন বলে পুন: শুন মহায়বি। এই মতে কাশীতে রহিল পদ্মযোনি।। মন্দরেতে ভূতনাথ ভাবিত অন্তর। কি হইল বলি থেদ করেন শক্ষর।। যাহাকে পাঠাই দবে কাশীতে রহিল। আছমে অন্যের কার্য্য ব্রন্ধা नो कितिला। श्रानम कानन माहे कुछ गांत्रा जातन। नकला प्रश्नक्तिः রাখে নিজস্থানে।। ভার পরে শিব কছে চৌষ্টি গণেরে। সকলেতে শীঘ্র গতি যাহ কাশীপুরে॥ দিবদাস রাজাচ্যুত হয় যে প্রকার । একলে মিলিয়া युक्ति कतिरव हेशांत ॥ छमशेत करमर शंग गक्तावरक। काम कामरन गव চলিল প্রতিত। শঙ্কাকর্ণ মহাকাল আর মহোদর। ঘটা কর্ণ মহোদর মহামোহ কর।। দোম নন্দী নন্দাদেন কাল্পিক কায়। কুরুটাভোদর মর্রাথ্য যোমি হয়।। গোকর্ণ ভুলকর্ণ বিকর্ণ আকর্ণ। ভূমিচও কপোদীশ স্থকেশ সম্বর।। বীরভদ্র কিরাভাধ্য চতুর্ম্মুখ হয়। বিকুম্ন পঞ্চাক্ষ ভূতাক্ষ क्रांक रा यात्र।। अट्रेमर्क मकरम चानन्म श्रुती यात्र। पिराम मृश ताका জমিয়া বেছায়।। কোন পাপ দিবদাস বাজে। না দেখিল। গণ সব পর স্পার চিস্তিত হইল।। প্রজুকার্য্য সাগনের ন, দেখি উপায়। শিব প্রিয়স্থান কাশীবাদ যুক্তি হয়।। স্বস্থনামে শিবলিস করিয়া স্থাপন। রহিলেন গণ गर जानन्त्रकानन ॥ शर्व आशिष्ठ भिविता 🕫 🖓 रे श्रुका करतः। अश्रुद्धात नह-**क्टि मुक्ट कार्ट बद्ध। अक्टमर**ष कार्यो वाख ना इत्र **अंख्न**। जिलकार्या ध्यात्र इड्डा नमाश्रम्॥

## जय कशमीयत कथन।

ভদপরে মুনিবরে কার্ত্তিক কহিল। শিবগণ কাশীপুরী একান্তে রহিল।। আর এক ইভিহাস শুন তপোধন। কহিব অপুর্ব কথা পিশাচ নোচন।। বাল্যীক নামেতে এক আছিল ঞান্ধাণ। কাশীতে কপো-দীখর লিক্ষের পূজন। ঐ স্থানে বিমলকুণ্ড ছাছে নিরস্তর। নিত্য নিত্য স্থান করি পুজেন শক্ষর।। এক দিন মগ্যাই কালেতে ভিজবরে। একান্তে বিদিয়া তথা পুৰেন শঙ্করে।। হেনকালেপিশাচ এক আইল তথায়। অভি ভয়ন্ধর মুর্ত্তি ঘোরতর কায়।। বাল্যীক বিজ্ঞাসা কৈল রুপাকরি তারে। কোথ। হৈতে আইলে তুমি কহিবে আমারে।। এরপ হইল কেন শরীর ভোমার। কহিবে সকল কথা করিয়া বিস্তার । পিশাচ কহেন দ্বিল কহি তব স্থান। গোদাবরী তটে প্রতিষ্ঠান নামে গ্রাম।। পুর্বজন্মে ত্রান্ধণ শরীর মম ছিল। তীর্থে প্রতিগ্রহ করি চিরকাল গেল।। কোন পর্কে দান আমি নাহি করি কভু। ভেকারণে পিশাচত্ব হইলাম প্রভু। জলবৃক্ষ রহিত স্থানৈতে মোর বাস। মরুভূমি সদা কাল ভোজনে নৈরাশ।। ভ্রমণ করিয়া বদি জল কভু পাই। ভৃষ্ণাতে পীড়িত হৈয়া থাইবারে বাই।। জলের রক্ষক नव ना रमञ्ज थाईरङ। हित्रकाल श्रीष्ट्रिक य काहिरह जुरुशंदछ॥ वर्क्डान পারে এক ত্রাব্দাণ কুমার। সেই স্থানে উপনীত অভি ছুরাচার।। ভাছারে দেখিয়া আমি চিন্তিয়া অন্তরে। নিজ ভোগ ছেতু তার প্রবেশি শরীরে।। দৈষ্টোগে এক মহাজন সঙ্গ পাইল। তাহার সহিত দ্বিত্র কাশীতে আইল। ভাহার শরীরে সহাপাপ আরক্ষামি। কাশীর প্রান্তরভাগে বহিঃপথ গামী। বারাণসী প্রান্তরে প্রয়াগ ভীর্থে আর। যাতায়াত করি মাত্র নাহিক আহার।। কাশীর ত্রিপথ মধ্যে মিলে একজনে। আত্ময় করিছে তারে হৈল मात्र मत्त्र। याबीमन निष निष वटन छेटेळ: इद्रा परे ने क कार्यनिन আমার অন্তরে।। সেই কলে আমি হেথা আসি ভবস্থানে। কুপাকরি মুনি বর করছ বিধানে ॥ শুনিয়া ছুঃখের কথা দরা উপজিল। বাল্যীক বে দ্বিজ वंत्र शिभाटि कहिल।। कट्शार्कि श्रेश्वत नम् (श्रेटक मद्रावित । स्नान माटक হবে তব শুদ্ধ কলেবর।। এত শুনি পিশচি যে যান সরোবরে। অলের রক্ষক গণ নিৰেছে ভাহারে।। ভদপরে পিশাচ সে অভিত্যুথ মনে। ছিজবর निकटिंग्ड करतं निरंबपटन ॥ शिमी इ कट्ट्म श्राट्याः निरंबपन कति। कट्या तकक्षम त्यात एक देवती ॥ श्रक्त व्याकांत्र यादे मदतावत कीटत । कटनत

রক্ষক সব প্রহারে আমারে। এই কথা শুনি না বার্যাক বিজ্ঞান । বিজ্ঞান দিলেন বিজু পিশানের তরে।। পিশানে কংহন দিন শুনহ বছন। ক্লালিক কর তুমি বিজুতি লেপন। বিজ্ঞান আজাতে প্রেত ধরেন বিজ্ঞান দিবার চীলেতে চলিল শাজনতি।। বহু দিন অন্তে হল পিশানৈ পাইল। মান করি উপর পুরিয়া জল বাইল।। দিবা মুর্জি পিশানের ইল তভক্ষান বিমানে চড়িয়া অনে করমে গমন।। দুরু হৈতে বিজ্ঞানের লিকবর আজি। কর প্রদাদেতে মুক্তি আমান্ন হইল।। নানামত ভার করে জিকবর আজি। তব প্রদাদেতে মার হৈল অব্যাহতি।। পিশান মৌনত ভার করে জিকবর আজি। তব প্রসাদেতে মোর হৈল অব্যাহতি।। পিশান মৌনত ভার করে জিকবর আজি। তব প্রসাদেতে মোর হৈল অব্যাহতি।। পিশান মৌনত ভার করে জিকবর আজি। কর প্রসাদেতে মোর ইল আলাহতি।। শিশানে শুরুপকে চতুর্দিশী কিনি কণোলীশরেতে যে বার্ষিক যাত্রা কতি।। মেই সরোবরের থেই নর স্লান করে। তাহার উত্তম কলে কে থানিতে পারে।। চতুঃপঞ্চাশ ক্ষান্ন কথা ভাত মনোহর। শুনিলে অপুর্ব কল পায় নেই নর।।

### とのす

## थय शिक्रमाकाविशासन निक कथन।

প্রার। কল বলে শুনি মুনি আমারবর্তন। যে সাঁচল নিশ্বে লিজ করিল স্থাপন। যে যে স্থানে যে যে মিনি লিজ স্থাপিরীটের কাশীধানে সে পর বলেছি তব কাছে। পিললাক্ষ্যণে স্থাপে পিললাক্ষ্যন। কপোড়ীশ উত্তরে দর্শনে পাপি হয়। বীরভয়ে ক্রিপিলেক নীরভয়ে ক্রিপিলেক নিশ্বের পাকিলে মনে। বীরভয়ে ক্রিপিলেক নিশ্বের সাক্ষাতে। ভ্রাভিত কাশী হই ভাগারে সাঁহিছে। ভ্রাভিত কাশী হই ভাগার সাহিছে। ভ্রাভিত কাশী হালিক লিল কিনাকে দ্বাভিত কাশী হালিক। ক্রিলেক ক্রাভিত লিজ কিনাকে ক্রিলেক ক্রিলেক স্থাপিত। ক্রিকাল নিকটে আহমে ক্রেপ্রতান ক্রিভিত নিকুন্ত স্থাপিত। ক্রিকাল নিকটে আহমে ক্রেপ্রতান ক্রিভিত নিকুন্ত স্থাপিত। ক্রিকাল নিকটে আহমে ক্রেপ্রতান স্থাভিত । স্থাকেল নাম লিজ সকলে প্রতিভাগিত। তার ভূতেগ্র লিজ ভারভূত ক্রিত। সভ্যাহে উত্র ভাতে ক্রিলেক ক্রিভিত। তার ভূতেগ্র লিজ ভারভূত ক্রিত। সভ্যাহে উত্র ভাতে ক্রিলেক ক্রিভিত। আমেকর স্থাভাল । ক্রিকাল নামেকে গ্রাহিক সাল্বাভাগিত। নিক্রেভাল নাম নিকটে বিরাকে প্রাভাগিত। আক্রেলর স্থানে।। ক্রেমন প্রত্র স্থান ক্রেমেত থাক্য। স্থতোগ নির্ভা মুক্তি পদ পার।। লাজনীশ নামে নিক লাকলী স্থাপিত বিশেষর উত্তরে আছরে সুপুঞ্জি।। দণ্ডপাণি নৈখাতে বিরাধ প্রতিষ্ঠিত। काष्ट्रस वितिरिष्णत लिक कूर्युकिछ।। सूत्र्य दाशिक सूत्र्यका आधाम। शिक्षा विमूच निक भूकि नए कान। शिलिलिशना औरर्थ सान कति নির্নেতে। দেখিরা সে কুখেশুর মুক্ত পাপহৈতে। আঘাটী স্থাপিত লিক আষ:ট্রীশ নাম। আঘাটা পুর্ণিমান পুরা করি অতুপাম।। ভারভুডেখরের উত্তরে মনোহর। সকল পাতক নাশি মহাপুণ্য কর।। শুক্ল চতুর্দশী দিনে যাত্রা সমৎসরী। করিলে নিপ্সাপী হৈয়া বাস কাশীপুরি । কার্ত্তিক বলেন মুনি কর অবধান। কাশীতে সকল গণ করিল প্রস্থান।। নিজ নিজ নামে লিক্ষ করিয়া স্থাপন। কাশীতে থাকিয়া করে বিশেষ চিন্তন।। চিরকাল शंग रुक् किरत नाहि आहेरन। भूनत्रि विखायुक कहेला मरहरण।। কাহাকে পাঠালে কাশী প্রবৃত্তি জানিবে। কেবা হেন বন্ধ আছে কাশী বার্ডা দিবে। যোগিনী আদিতা ব্রহ্মা আর যুত গণ। বাছড়িরা না আদিল ভারা কোন জন।। কাশীতে প্রবেশে মোর উদরে প্রবেশ। বিনির্গত নাহি তারে কথন নিঃশেষ।। কাশীতে সংস্থিতি আর লিকার্চন পর। মমলিক সাক্ষাতে জানখ সেই নর। কাশী কাশী সদা মুখে করে উচ্চারণ। ভাহার সকল বিশ্ব বিনাশে ভংকব।। সংসারেতে যত আর প্রমাত্র যার।। কাশীতে বিশ্রাম আসি করিবেক তারা।। কাশী নাম সুধাপান করে নিরস্তর मिकी। विशा भिर इस मिहे नेता। मक्त सूल अ भाज कुल उ का भिका। জিজগতে সার সহাপাতক নাশিক।।। কাশীর সহিমা গুণ জানিরা নিশ্চয় যোগিনী প্রভৃতি সব ক,শীপুরে রয়।। অন্য আশে সব আমা ছাড়া বাহি इत। কাশীর গোঁবতে মোরে নাহি রাথে ভয়।। যে সকলে কাশীপুৰী काँतल श्रादिण। जामात अक्श भार मेर मेर मिराने ।। कांगी बाकि छाता त्यात करत आतापन। जानिय इक्षा भूमे दश्चति आते जन।। देशन जावि ভাকি কথা আনিল গণেশ। পাঠাইলা কাশীপুরী আপনে মহেশ।। পিছ व्याका निरंत धनि करवे नर्यापत । हिन्दान कामी भूती व्यक्ति मटहचत्।। अधिकानियांनी नीकानांच बक् मान। कानीवंख जावाटक तिक मानी-छाव।। बक्तानञ्च गर्माभदम बक्तानम्बर्ध। शक्षशक जनातिहरू ममार्थ कत्रक ।।

## कामीश्रम।

## अप शटनदान्त काली साश्त्रमा।

পরার। কার্ত্তিক করেন শুন স্থানি ভপোধন। কছিব অপুর্বে কথা क्द्रक् अवन्।। सुविक बाहरन करन एन श्रकामन। प्रतिकृत देशा पर कतिम शमन ।। कामीक निकटणे यहिया दम्द श्राप्त । मात्राटक स्टेब, इक खाया। बाक्कि। श्राव्यक नम एक ध्रति यूगनाम। अवक्ष मत्यानत मूर्णांचन गात्र। मुक्तम् वस्त्र गात्रं गर्व ल्यांट शाह्य। शक्रकण क्यांन युष्पिक्षा कति (कांग्रे।। श्वादकत आत्र कट्ड शक्षिका सर्वेण। क्वादेहरू कामी भूती अरवन कतिन ॥ वस्तिन करक कामी कहिया पर्नन । अर्सन्धरन গণপতি করিয়া ভ্রমণ।। তার পর নগর মধ্যেতে বিক योह । গৃহত্তের বাট্টা गव करमट्ड (वकात्र।। द्यान निम नश्रम्पराट्ड ब्रिज यहिता। एडाएड কহে কর কপাল দেবিরা।। কোন্ধী যে পঞ্জিকা দেখি পুণনা করন। কারে वा करहन जब खज्जाह इस ।। करित वा करहन अह मुख्य अकिमन । विकक्ष मञ्जल भनि एक या बाह्य।। भनि अर् अविष्ठात रक रंग आहम। १११म। कतिया चिक नकटल कट्टन।। भूषिक बाहरन स्वतंनाना नामा जारन । । वर् नीटङ मकत्मद्र दिनशाम अश्वतः।। शत्रामन गृष्ट्यतः वामि खिक गाम। थिक-পাতি স্বপ্ন कथा প্রতাক জানার।। धृहरण्डत कर्डादत करहन विखदत। (अव त्राटब अञ्च जूमि (एथ क्षातक्त्र ।। मीर्थ मह्मान्दत जूमि कतिहा भन्ने । জলমধ্যে বার বার হৈয়াছে প্রতন।। বার বার কুলে উঠ প্রবন্ধ ক্ষিয়া। जात शत श्रथमाधा शतम हरेगा। **समक्**य यथ करे खन महामिति। লোতিবেতে দেখিয়াহি আমি খড়ি পাভি।। সভা মিখা ভূমি সব কান অস্তরেতে। আসার অত্যেতে তুমি কহিবে নিল্টিতে।। প্রভাকেতে রজনীর **७**नि यश कथा। मत्न मत्न अगञ्च जादन भूरकर्छ।। विजयत करन जिल् क्ट्रेंग चित्रमा । नामा स्टब्स् कृति मध्य विषात क्रेंत्र ॥ श्रेत्रवामी चर्चः श्रुटत निज्ञा विवयदत् । यात स्वर्डे मह्मामीक कटरन मचात्र ॥ मात्रा कति चिल्निक् स्मिम्बादव तम्। पूर अविद्युक्त वर्षमान विक करा। अना शृहत्यत तामि করিরা গ্রামন। পুর্বি রাজের ইয় কথা করে আলাপন।। তুমি কলা রক্ষ-नीटक दर्शनेटन स्थान । किनात शृद्देश धना देशांटक शकन ।। येकीशांकि दिनिकास चक्क छात नक्क अकिनम अनक्त कर्डा अकि दशा। **এই म**क व्याप क्षकात प्रश्न कथा। नभन्न वानीरक काम बानाय मर्कथा।। कान गृहत्त्वत वाणि गृहिद्या अञ्चादकः। नकरमद्र छाकि विकरत वर्णीमाद्वताः।

काशास्त्र केरश्न जूमि कना तंबनीएं। यक चंद्र मिथिताह कश्चि नाकारण भिष त्रांत्व अक कना। इत्र मुक्त किना। वज्र शैम जनकात्र मूर्जिक विरम्प।। কার্শীপুর হৈতে কন্যা রোদন করিতে। করিল গমন কালী প্রান্তর कार्राटक ॥ देशांक कुक्श स्त्र कि कव क्लामात्र । लक्ष्मीरमवी कामी हार्फि স্থানাম্বরে যার।। আর কোন গৃহস্কের বাটীতে যাইরা। স্বপ্লের যে কথা करह পश्चिका (मधिया।। चूमि केला तबनीएक (मटबेक अशन। (मद मिन-রের চূড়া হৈয়াছে পতন। ইহা অতি অসকল রাজাপ্রতি হয়। রাজা ভঙ্গ क्टेंटिक करियु निक्ति है। जिल्ली एक क्यानी अर्थ (मिन्सा। अरनक বিদল সবে একত্র হইরা॥ ভারপরে ভিজৰরে ডাকিয়া জানিল। প্রণাম कतित्र। चिटक विनिवाद फिल।। चिटक कटर कामाटमत खनर वहन। कर দেখি কেবা কোন দেখেছি স্থপন।। পঞ্জিকা দেখিয়া ছিল্প সৰাব গোচরে श्राप्तीन (य कथा जारम कर्ट्सम नच्दत । किरात करह स्वाम श्राप्त मुख्य दिसम देशा। तामने करत्र तक्षेत्र विकास निकास कार्य । कार्य वा करण्य प्रश्न प्रत्न प्र जगलुव। एकिनी शृषिमी हिल शृंदर रैवटक गवन। कांद्र वा कटरूम जूमि अनेष्ट् यहन । तसनीटक दार्थियाष्ट्र यूर्यात ब्रह्मा। जुनि दार्थियाष्ट्र यक्ष चिक्रवत क्या अर्किनिश इंडेएक अर्थी शक्तिक छेन्य।। जना लोक लेकि অপ্ন কহে দ্বিজবর । জুমি দেখিয়াই চন্দ্র জুমির উপর ।। হুই কেতু রজনী-তে হইয়া উদয়। ছুইজনৈ হোরতর যুদ্ধ হৈ প্রয়া। বানরের ক্ষান কেছ कृषि व्याद्राहरा । मक्किन भिटनएक माहे कहरत सममना कारत वा करहन चित्र (मर्थ (घात्रकत । लवग ममुट्स अहल अवारिः नगत्। अ मकन चर्न দেখা কভু ভাল নয়।। ভান তাগ করিতে উচ্ছ বুক্ত হয়।। রজনীর স্বপ্ন कथा विज यूटन जानि। जिंह हमें कांत्र मार्च जमस्य मानि। धेहैं कटन क्रिजन मनदन दिकात । श्रेलनाट्य यश क्या ध्यकारक कामात्।। नश्रत निद्यारी हो श्रुक्ष एंड कर्ना अडिमंत्र चेने हैंबेन कि क्व क्थने।। नाम ক্ততি ভক্তিতে প্রণতি সবে করে। অবঃপুরে বান্ন ছিল আবারিত ভারে।। যত লোক করিতেছে কাশীপুরী বাস। ভিতৰরে অভিশন্ন হইল বিশ্বাস।। करक अवक्रम ज्ञान जिल्लात वहरन। जना श्रीतन साम्र देके देवनी के हा हिट्न । इन्हार्गा अकात वस लाक साटए काली। ऐकाए स्टेल विका रहन घटन বালি।। তার পর গণপতি চিত্ত উচাউনে। প্রাক্ত অভঃপুরে আমি ঘাইব ক্ষেত্র।) মারা করি জিজবর চলিল সম্বরে। **অন্তঃপুরে ঘাইতে কেহ** सिर्वय मा करती। प्रसः भूटत शिक्ष विक **इंटेंग डेशमीर**। तांगीशंग खायांग

(मिक्स हमकिए।। इक्स य उक्तान कश कतिमा नर्मन। एकि कति अनिस করিল সর্বজন । বসিতে আসন দিল করিয়া বতন। আশীর্কাদ अहि किस विजिल एएकन ।। आशंत्रम कथा सामाहित विजयता। छात शत विक वत कर्म ने बर्दा । मरमाग्र कथा आमि भाति य कहिए । य देशहाँ है याका क्य कवित प्रतिरक।। এक अनि होनीगर महस्राय क्रेन । अपने दे बि बचत कहिएक मानिन।। तागीनन सर्पा अक हम भाषे जानी । कृष्टि अवि খড়ীপাতি কহে দ্বিক বাণী।। ডুমিড মুভাগা বট রাজার অগ্রেডে। জীয়া टेश्टक भूर्व रमथ निम औं जारक ॥ ताका विक धीवा टेश्टक थूलि कर्र शंह यक्रम कतिया मिल भलाएक एकामात ।। असा धक वानी श्रक्ति विकरत द्या 🕏 সপ্ত কম একণত পুতা তব হয়।। ভার মধ্যে এক পুতা অখ আব্রোহণে। ছুই মাস অগ্রে পুত্র হৈয়াছে নিধনে।। জন্য কোন রাণী প্রতি কহেন সম্বরে কন্যা আছে শুন শুন ভোমার উদরে 🎼 আর এক রাণী প্রতি দ্বিক্রর বলে। পুর্বেতে সুভাগা ভূমি রাজার আছিলে।। পুনর্বার দিন কত গত হৈয়া পরে। ভূমি বড় প্রিয় হবে রাজার গোচরে।। অস্তঃশুর নিবানী যডেক नांतीश्व । विकादम मकरमञ्ज मरनांशक कन ।। नंकरमर्टक पूर्व वर्ष रेइम षिजवरत। वर्ष्यम श्रामि मिल श्रिटका शाहरत।। बृष्य श्रिक वरण अने श्री-মারি বচন। প্রতিপ্রহ আমি নাহি করিত কখন।। ভোমাদের মঙ্গল হউক गर्जनाम । आगोर्जान कति विक ७थ। इटेट गाँत ।। उपशद्त नातीकन मिलि मकदलटा विकरत मान थन कदश्म मही है। लीलावकी मार्ट्सिक রাজার প্রিয় রাণী। রাজ অত্যে কহে ছিলবরের কাহিনী। রুদ্ধ যে আকাণ णांनि हिन असः भूरत्। প্রভাতে अञ्चन क्रिनि द्विन करलवरत्।। कर्रभ छत्। नर्सभए बुक्त (नहें इह। विस्मय क्रिया होनी होना अकि क्या। এक खिन রাজা আঞ্জা করিল তৎকণ। আমার অত্যেতে ভিজ আন এইক্রণ।। পরি-गात अक अम निकटि अधिन। बाकारा आमिरिक आका ताका य कतिला। নগরমধ্যেতে যায় আছে। অনুসারে। তাইয়া চলিল ছিলে রাজার গোচরে।। पूरति कंकिया तांचा विक्रमक क्षि। तख्य हरेन वक मरम देहता सूथी।। कटम कटम विवयंत्र निक्छे इहेंग। हुई अति शम नृश अधारामी शब्द।। मण नात देशा शहक शृथिनी केशदा। अगम कतिया ताक विदय करे करत ॥ विकंदत द्वमनाका खेळाति वहन । ताका श्रीक जामीक्रीम करत रुष्टे मन्। मधुशक इंड्यानिट्ड चिटकटत श्रुकिन । विनय कतित वांका কহিতে লাগিল।। তোমার যে ৰূপ গুণ যতেক শুনির। তভোগিক হৈতে

व्यानि माक्नाट्फ प्रचित्र । जूडलियार वर्डमान सक कथा। कहिबादर माजि ख्य काहरत मर्द्या। दिव यदा छन नृश कति निर्देशन। द्यारिय ण्यद्भ कानि क्षेत्र विवतन । हिन्देशीन ताका वटन विट्यत शाहरत्। कान ক্র করিয়াছি কহত আমারে।। একণেবা কোন ক্র্ম করিতেছি आमि। कृषा करि क्य कथा कहिरत ए जूमि॥ अष्ठ छनि विकरत खूरम थड़ी शांकि। विस्थिता मुद कथा करह मूश अवि॥ धन निवनाम दोका व्यामात वहन। त्हामात मनान दोका ना त्नथि कथन।। যত রাজা হইয়াছে পৃথিবী মণ্ডলে। তব সম রাজা নাহি হয় কোনকালে।। भन्म भाग्राम् कृषि एकटक स्रा नम। निरुक्त भानन कर कृष्ट अकि यम।। **इस जि**नि मुक्ष कर् अपूछ वहन। छद वाका दाध रुप अपूछ (जहन ) পালন করিছ প্রজা পুজারিক জানি। ভোমার বংশতে রাজা পুর্নিত অবনি। ইত্রের ঐথবা জিনি ভোমার বাখান। তব গৃহহ ক্মুলা জাপুনি অধিষ্ঠান। जान क्षान पुना कथा उत् सुसुदंबत्छ। हेरा वहिसना ऋथी नाहि उत विटि ॥ রাজরাণীর যত পুঞ্জ কন্যা যত ছিল। প্রভয়ক্ষতে বিস্তারিত সুকলি কহিল।। खूक खरियार. कांत्र वटल वर्खमात्म। वह्नकत करह हिक तांका निविधारम।। শুনিরা যে নৃপবর বিশাম হইগ। ভক্তি করি ছিজবরে প্রস্তাব করিল।। ত্মন দ্বিক্ষ আমি এক করি নিবেদন। নানা সুখভোগ আমি করি অনুক্ষণ।। ভথাপিছ চিত্ত মোর সনা উৎকণ্ঠিত। কহ দ্বিজনর তুমি একি বিপরীত।। পঞ্জিকা দেখিরা দ্বিজ কহেন সন্থর। অস্ত দিন হৈতে প্রফীদশের ভিতর।। উত্তর ছইতে এক ও জুল আসিবে। সেই সৰ বিৰরণ ভোমারে কহিবে।। य कहिरत जूमि जाश कहिरत गर्सथ। कमाहित जुहारक मा कहिरत क्रमाथा । जिन्दाना ताका जिक्र चाका निरत्यति । जिल्लाहे जिल्लाम धन उद्य यञ्च कति।। ताबा-ताभी मटर प्राल व्याभा कतिन्। व्याभीकी ए कति विक विनात्र रहेल ॥ कानीवानी नशद्रदरूपक लाक्तिन। न्मापत कति विकरत ব্যাইল। তার পর গণপতি আনন্দিত মন। পিছু আলা কৃত কার্য্য হইল नाथम ।। पिरमान ताला माहि हिट्लन यशदन । शुर्गदम्ब श्राष्ट्रमूर्ख हिल य राष्ट्रात्त ।। तारे गर शांदन त्मव रहेशा के किए। कामी भूती बहिट्सन जिल्ल वज्ञीकः। मिवनाम बाजा विदेश स्ट्रेम विक्रित। अञ्चीमभ मिन करव स्ट्र উপস্থিত।। ফাশীপুরে মারা প্রকাশির গ্রহানন। বর্তপঞ্চ অধ্যার কথা रेक्न ममालम ।।

শিশার। অগতা ক্রেন শুল দেব বভানন। কোনং মূর্তি ধরে শুবিক बारम।। कि कातरन किनि स्टेटनन बस्कात्र 1 कानी शूबी थाकि किनि कि কার্য্য করম। কোমং নাম ধরি রহে কাশীপুরে। বিভারিত করি ক্রেব কহিবে আমারে।। কার্ত্তিক কর্ত্তেন পরে মুনিবর প্রক্রি। বিস্তারিরা ক্রি শুনহ মহামতি।। ষষ্ঠ পঞ্চাশত মূর্তি কাশীতে আছিব। গেই নব স্থানে दनव छेनम स्टेल ।। अथरमण्ड नमानिव कानि कानीमुद्र । मकल कार्यस् স্তৰ করে বহুতরে।। গণেশের স্তবে উপস্থিত প্রসঙ্গেরে। কাশীপুট তাৰি भन कथा कुकनारश ।। भक्तत हरेटक विदेशाक गटक्यात । कानी भूगे गर्म নেতে হইল তৎপর।। দিবদাস হইরাছে কাশী উপভূক। সে সকল বাংস वाज नर्द छे अबुक्त म कांगीनाथ विश्वकर्या अवि जाका करते। अपि नीख করি তুমি যাহ কাশীপুরে।। যে সকল সন্দির আহমে স্থানে স্থান। ভার্য ভাঙ্গি পুনর্কার করহ নির্মাণ।। এতগুনি বিশ্বকর্মা করিল গমন। কাশীতে याहेशा त्रव कतिल छक्षन ॥ भूनतिश त्रव भूती निर्माण कतिल । भूक देइएक कामी भूती खेळ्ळूल कतिला। विश्वकर्मा विश्वनाथ्य भव निर्दिषमा। वर्ष्यस्य প্রস্থান করে হর্ষবুক্ত হৈয়া।। আনন্দ কাননে আইনে দেব পঞ্চানন। ভগ वरी विकू बन्ना जानि स्वतंत्र।। हेस वस द्वा शामि कूरवंत वजन । माहे লেন নন্দীভূক্তি যত ক্লব্ৰগণ।। সমকাদি সৰ্বা ঋষি মুণিগণ যত । ফণীক্লাদি সিদ্ধাচর আর যার কড।। গল্পক অপ্সরাগণ বিদ্যাধর জাদ। বড়েক **छलिल मटक्र माहिक अवधि।। मक्टलटत मटक्र कति क्रिय कि प्राही। क्रांमी** পুরী আদি অঞে গণেশেরে মরি।। স্তব করে মিধিমতে গজেন্ত রাজের। তব সম প্রির পুতা নাহিক সংসারে।। অধিয়ুক্তে আসি আমি না ছিল উপান্ন। তব যোগে সর্ক বিশ্ব নাশরে নিশ্চর ।। যেই পুরে পিতৃকার্বা করেন উদ্ধার। ভাহার সমান পুঞ্জ নাহিক সংসার। বিধি বিস্ফু দেবপাণ कररे मृज्यक्षत्र । शर्रात्मत जूना नाहि कहिन निन्छत्।। विद्यमीर्य बंशरिनव कत्रि क्यांनिक्म। পরে গণেশেরে अधिमा नर्सिमा। छएछद्र क्रामाथ कटरून मचत्र। हुन्ती कव नाम देश्य विजनाम कत्र।। वातामनी कामित्वक मत्र (य नकन । जटश्र कर श्रृका बिटम नकन विकल ।। मिकी नाष्ट्र श्रृष्ण माला স্পঞ্জি হল্পন। পুলিবেক ভক্তি করি অত্তৈ তব স্থান।। ভার পর বিশ্লেষর श्रुकिरतक आणि। विश्वनारेण श्रुका विना नव मिथा मामि॥ छमशदत पृष्टी प्राप्त निय करत छन। यक्ष तर्गना करत प्राप्त पर्य

্ৰতিপদী। 🖰 ভূমি সৰ্ক্ষবিশ্ব কৰ্ডা, সকলের সূল বাৰ্ডা, সকল মঙ্গলকর 🚁 । ব্রেম্বর হও তুমি, জগতের বট সামী, গুণাতীত গুণ বুক্ত ময়।। ভার কতি তব তত্ত্ব সঞ্চল অন্তরে ব্যক্ত, যোগাগুণে ধারেন নাহি পায়। অফীক ্ধানের দার, জনব আত্মক পর, সৃষ্টি স্থিতি সংহার করয়। তবাজ্ঞায় বিষ্ণু ার্টার জ্বাহার বেদ বিভা, আমি তব মতে নাশ করি। পার্বভী ক্রণয়ানল। मर्न कीटन जाटल वृष्णे, मर्क विश्व विमाणक छति।। धर्केन्ट्रिंग खन्नक वृत করে ইভক্ত, বর্ণনে পুক্তক রুদ্ধি হয়। কাশীপুর মাঝে বাস, যথাৎ বিশ্ব मांभ, तर्वा कि बार्ट्स खेमश्रा। व्यविश्वक वर्षे मिर्ल, शक्कानी गर्स ভালে, জানের গণেশ বিভার। গণপতি পাশ পাণি, উত্তরে বিব্লাক জানি, বিকট দত্ত গণপতি আর ॥ তদয়রে বিশ্বরাজ, দণ্ডহ্স মুবরাজ, গজ বিনা য়ক আর হয়। স্থুল জন্ন গণপতি, জান বিনায়ক গতি, উত্তরেতে ক্রমে সপ্ত রয় ।। নৈপ্রতি বরুণা গঙ্গা, ক্রমে গঙ্গা স্কুতরঙ্গা, কার্ত্তিক বলেন অভংগর। অতি খর্ক অঞ্জন্ত, গণপতি রাজস্কুত্, বরদ গণেশ তার পর।। পিচিণ্ডিল शंकानम, काल विश्व विनालन, मक्कल शटलम जिवत्र। बिटब्रम व्यायानि खादत, প্রবেষ মম বলেয়।রে,প্রথমেতে সিদ্ধি গজানন।। প্রণব গণেশ পরে,মোদক ক্রির অন্তরে,আরবাজনুগুরেগণেশ। মাগেশ গণেশরার,মাধিকণি বিশ্বকায় व्यविद्युक्तर्भविद्यस्य ॥ व्यविद्यक्तराज्ञमात्रकः व्यतीत्रकाविद्राणिक, यस्तु दश्रदक व्यक्त विनायक । लक्ष्मालत शत छात, वक्रकुश्व मध्य मात, व्यवस्य भटनम নায়ক।। স্কুল দক্ত গজপতি, আশা বিনায়ক স্থিতি, মোদক গণেশ চনৎ-ঁক্রি। দক্ষিণেতে ছুর্ম বিঘু, কুটদন্ত অভি তীক্ল, একদন্ত গণেশ সন্মুর।। সিংহতুও বিশ্বনাশ, কলিপ্রিয় পার ভাষ, চুপ্তীদেব বড়ই সুন্দর। প্রশ্নদ तर्वम ७७, रेन व ट्रंट छोम छ। मानक छेतर्वम मध्य ॥ जिसूथ तर्वम रफ, क्लिकाक लामापत, हर्केन्छ यक विमानक। लाखापत्र शर्वाचत्र, পশ্চিমে ভাহার ঘর, দেহলিশ নাম বর্জাক্ষর। কুমাও গণেশ জার, পঞ্ स्रवं वृष्ट सात, शरत किथ अमझ शराम । विकृष्ट सराम दम्, शंककर्न माम কর, শেষ সাক্ষী গ্রহণশ বিশেষ॥ বায়ুকোণে পরে ভার, উর্জ্ঞ গ্রেণশসার, গুও গণপতি মুপ্রকাশ। হেরম গণেশ মৃত্তি, চিন্তা মুনিবর শক্তি, জ্যেষ্ঠ भगशिक खखनाम ।। किछ मूख नाम धत्र, मिक्ति शटनचत्र तत्र, व सर्वाटक वर्षे शक्षांगढ । कानी मत्या विवासम, गर्व वित्र विनासम, कक्क नात्म शत्म সভত। ভগীরথ সংপ্রজভ, হরিশন্ত্র প্রভিতিত, কপোন্ধীর ষেই গণপতি। कामीत्कत्व वितासन्न, पर्वत्वर वित्र कृत्र, ए श्रीतीस माश्या त्य कि।।

মঙ্গলে চতুর্থী ভিবি, যেবা পুজে গণপতি, তার ফল সর্ক বিশ্বনাপে। চতুর্থীতে পুজে যেবা, তার ফল কহে কেবা, সদা স্থাই হয় অবশেষে। মাথে শুকু চতুর্থীতে, ত্রতী থাকে নক্ত ত্রতে, বার্থীকাদি যাত্রা আর করে। শুকু তিল লাড়ু দেয়, শুকু তিলে হোম হয়, ঢ়ুঙী রাজ ত্তব পাঠ করে। সপ্ত জন্ম পাপ যত, ন শ হয় বিশেষতঃ, দর্ভ সির্দ্ধী অনামানে হয়। আরি কহি শুন মুনি, বিদ্ধনাশ পুজে যিনি, তার হক্তি অক্তেডে নিশ্চয়। মক্ত পঞ্চাশ অধ্যায়, গণেশ সাহাত্মা তার, সম্প্র হইল সমুদয়। পাঠ কিছা যেবা শুনে, রিশ্বনাশ বিষরণে, নক্ষ কর্মা নিদ্ধি তার হয়।। গণেশের ক্লড কার্যা, আনি শিব কাশী রাজ্যা, গণেশা বন্দনা অপ্রে করি। পরে বিষ্ণু আর্থি, আনি কিল উক্ত, দিবদাস রাজ্য হয়ে হরি। অবশেষে হর-গৌরী, মন্দর হৈতে সন্থরি, কালীপুরে আনিবেন পরে। সীতানাথ বস্কুদাসে, তাক্ষ পদ আনে, ভাষায়ভাবিল নিরস্তরে।।

### ---

## অথ কাশীতে বিষ্ণুর জাগমন।

পরার। তাগন্তা কহেন শুন দেব ঘড়ানন। তবপদে আমি যাহা ক্রি নিবেদন।। তব মুখ বাণী হর অমৃত সেচন। শুনিকে সভত ইফা হয় মম্ মন।। দেব গজানন রহিলেন কাশীপুরে। কি করিল গঞানন পাকি অভি দুরে।। কার্ত্তিক কহেন শুন মুন তপোধন। মন্দরেতে সদাশিব উৎক্ষিত্তি মন।। গণপতি কথা শিব জানিয়া অন্তরে। সলাথে ছিলেন বিফু দৃষ্টি হয় তাঁরে।। সন্দানেতে বিফু প্রতি কহেন শক্ষর। সকল নৃষ্ঠান্ত তব আছয়ে গোচর।। ঘোগনী প্রভৃতি গণেশেরে গাঠাইল। কেই ফিরেনা আসিল কাশীতে রহিল।। তুমি যদি মম্ম কার্য্য করহ সাধন। তবে দেখি হৈতে পারে তাপ বিমোচন।। এত শুনি নারায়ণ সন্দুখে দান্তায়। তব কার্য্য সাধনের করিব উপায়।। আর শুন জগলাথ করি নিবেদন। সকলের মূলপ্রতু আপনি ঘেহন।। কর্ম্ম যারে কহে গতি শক্তি নাহি কভু। কর্মকর্ত্তি। কেহ নাহি তোমা বিনে প্রভু। করণ কারণ তুমি হঞ্জ ভূতনাথ। সৃষ্টি ভিতি প্রলম্বেতে তুমি সর্কা নাথ।। আমাকে করিলে কর কর্ম্মের সাধন। তব ক্লপা না ইইলে কে হয় ভাজন।। যে জন তোমারে স্মরি যে যেন্ডানে যায়। মর্ম্ম

गंबरफ्टफ चार्रदाहर करिया बीहरि । नवीवर्ष नमानत्म देहता करे यन । पुँगः भूनः धार्माम कविल मार्वाप्तन ॥ छात्र कवि मार्वाप्तन जुडमार्थ कप्त । छव कार्य। निष्क्र त्यम जामा देहत् इंग्न। जात निरंतमन कति छन जिला-চন । কাশী যাইবার দিন দেখা আপন।। পুনর্কার নারায়ণে কছেন মছেশ कार्यो पाइवात जिन करित्व विरमवा। य पितन भगन करत तम पिन छेखम । জাল মন্দ দিন দেখা মানদের জ্ঞা। তদপরে নারায়ণ গমন ছুরিত। কাশী পুরি মধ্যে এড় হৈল উপনীত !। আসি বরণাতে গঙ্গা মিলিভ যথায় ति है कारत हक्त शांति इहेन खेनता। ख्या इस अम विकू शोक व करिन। क्षत्रिमि शादमानक कीर्थ मांग देश्य ॥ शादमानक कीर्द्य (यदा साम शूका করি। তর্পণ করমে তিল মিজিত যে বারি।। ভক্তিভাবে পিগুদান যে জন করম। তাহার ত্রিসপ্ত কুল সমুদ্ধার হয়।। পাদোদক ভীর্থ জল গণ্ডবেক খার। শালগ্রামায়ত পান কলাধিক পায়। ছরা ব্যাধি নাহি ভার হয় কোনকালে। নানাসুখভোগী হৈয়া থাকেন কুশলে।। পরে মণিকর্ণি ভলে সলক্ষীক স্থান। পাষাণেতে নিজ মূর্ত্তি করিল নির্মাণ । বরুণা পশ্চিমভাগে কপিল স্থাপন। খ্রীঅ'দি কেশব আখ্যা হইল তখন।। শ্বেতদীপ খাত তথা করি ভগবান। ক্ষীরোদসমুদ্রে কৈল বিয়াবিত স্থান।। সেই স্থানে যেই জনে প্রজাদি করর। পিতৃলোক নহ তার স্বর্গে বাস হর। কীরোদা দক্ষিণে শক্ত তীর্থ যে উত্তম। করবে তর্পণ যেবা করিয়া নিয়ম।। পিতৃ-লোকে অনায়ানে বিকুলোকে পায়। তাহার দক্ষিণে চক্রতীর্থ বিরাজয়॥ কাশীপুরি বছ ভীর্ণ আছে এ প্রকারে। বলিয়া বৈষ্ণব ভীর্ব যোজন সং-हारत ।। तह गत छीर्थ करम ज्वारम नातात्र । कमत नात्र कम्रुर्खि করিল স্থাপন ॥ প্রভোকে তাহার সব বর্ণনা করিব। বিস্তার করিয়া ভাহা পরেতে কহিব।।

### ---

## অথ বৌদ্ধনত প্রচার।

পরার। ধর্মকেত্রে বিষ্ণু লীলা প্রচার করিলা। বৌশ্ব অবভার হৈরা প্রকাশ হইলা।। কাশীপুরে এক পুরী করিরা তৎক্ষণে। লক্ষী সহ নারারণ রহে সেই স্থানে।। পুণা কীন্তি নাম দেব ধারণ করিল। বিজ্ঞানকৌমুদী নাম লক্ষীর হইল।। গরুড়ের হৈল তথা বিনর কীন্তি নাম। শিখানপে গরুজ সন্মুখে অধিষ্ঠান।। পুণা কীন্তি গ্রুই হৈল স্বরং নারারণ। গ্রুস সন্মূ

र्थर्ड निया थारक नर्सकरा ।। श्रुक्त निकटी भाञ्च जाराम्न कट्टा । भूनकन् थकारत इहेल घरत घरत।। अस्मक इहेल भिषा भाग अधायत। <u>वोच्य</u>क শাস্ত্র কথা সদা আলাপনে।। বিক্ষাসে, বিনয় কীন্তি পুণাকীন্তি স্থারে। ষে ৰূপেতে ধর্ম হয় সংসার মোচনে ॥ পুণাকীর্তি বলে শিষ্য শুনহ ৰছন। বিশেষ করিয়া আমি কহি বিরুরণ।। সংসার অনাদি সিদ্ধি উপস্থিত হয়। আপনি মিলর যোগ জ্পেক। না হয়। বিধি আদি যত কীব ব্ৰক্ষাও মধ্যেতে। অত্যা এক ছুই নহে আছে বিচারেতে । এল্বা আদি কোটি সুর कारल लग्न इस। विष्ठादारक रमिश् किष्ठ अधिक ना इस।। आधार रेमशुस निजा छए नर्कका। एक मांब धरत कीत नमान कांत्रण। कर्म मार्स कोविहरमा अकातन इत। अहरमा भूतम धर्म भाजमार क्रम ।। यकि कर्म बर्ग लाक दिश्या चाहतम्। ज्ञांशाञ्जा प्रकृतम् तमा मा दम् । चान्हर्गः দেখহ এক অতি চমৎকার। ব্রহ্মার মুখেতে বিপ্র ক্ষত্র ভুকে আর।। উরুতে বৈভার জন্ম পদে খুদ্রে হর। চারি পুজ ভিন্নং ক্রমে হীন কায়।। এমত উত্তম নতে দেখ বিচারেতে। একোন্তব চারি জন মূান কোনমতে।। ছোট বড় সব দেখ সৰ্বত্ৰ সমান । ইহা ভিন্ন ভাৰ নহে শাস্ত্ৰের প্রমাণ।। এক**ে অনে**ক মতে কহেন গ্রহতে। বৌদ্ধমত সভত যে আলাপন করে।। यक भिया এই भाज करत भागाभन। नकरमत रवीक्रमक देशन भागतन।। মহানায়া লক্ষ্মী দেবী উদ্বোগ কারিণী। ভগবান কর্মকর্ত্তী হরেন আপনি লক্ষ্মীদেবী কাশীপুরে নায়া প্রকাশর। নারীগণ স্থাসি স্ব যথাতে মিল্র॥ विकान को मुनी विकारिक कति क्या नातीयर वोस्य नीकि निका इस न्नानमान कीर्थ (यवा करत भर्याक्रेन। वृथा क्षान त्म मक्ल पूर्ध्यंत्र कात्र ।। এক ধর্ম আছে এই সর্ব্ধ সারৎসার। তেবল জানিবে মাত্র পর উপতার ।। যে যাহা যাচিক্সা করয়ে যার প্রতি। করিবেক উপকার যার যে শক্তি ॥ यमि दक्ष भारीत याहिका कति नम्र। छोशादि अवशा मिटन अहे धर्म इम्र म বিজ্ঞানকোমুদী আকর্ষণ করি সব। বৌদ্ধমত কাশীতে করিল সমুছব। কান্মীপুরী নিবাসী মতেক লোক ছিল। পুর্ব হৈতে সকলের মডিজ্রত হৈল कामीश्रुती निवातीत अनीजि (मधित। शदत मिवमान हिन्त भनिन र्केत। রাজ্যভোগ কিবা কুখ সভত চিন্তিত। কিব্ৰপেকে রাজ্যভাগি চ্ইবে प्रतिष्ठ ॥ श्राटक कृषित्राष्ट्रिल अधीम्म मित्न । श्रृहक्ष खोक्का यक प्रानित কুৰনে।। দেখি তাহা গত হয় ভাবিত রাজন। কডু মিথ্যা নহে সেই ব্রাক্ষণ

বচন। ভার্যানী ভগবান সকলি গোচর।রাক্সভ্যাগ দিবদাসের হ্ইয়াছে অন্তর

### ----

## वर्थ पिराटम्य निकीन।

পদার। বৃদ্ধ যে ভালাণ কপ হৈয়া নারায়ণ। দিবদাস পুরী প্রতি कतिल शमन।। इक विकासिथ ताका आनिष्मिक देशल। शामा अर्घा निया ্রা**কা বসিবারে** দিল।। **অফাজে** প্রশাস করে বুজি ছই করে। গলাতে বসন দিয়া স্তব করে পরে। তব মূর্ত্তি দিখি জিজ ইবে নারায়ণ। আমার মনের বাঞ্ছা করহ পুরণ।। শরীরাদি সুখত্বংখ সকল মারার। পুত্ত পৌত্র ক্যাত্রাদি রাজ্য ভৌগ অরি। ভাবত ছায়ার ন্যায় যায় পুনঃ হয়। অতএব নিবেদন করি মহাশঃ। যাহাতে নির্ত্ত দেহ হয় ছিজবর। হেন মোরে উপদেশ করহ সম্বর । পুর্বেতে গণক মুখে শুনেছি বচন। রৃদ্ধ ভিজ আদিয়া কহিবে বিবরণ।। অতথা প্রস্কু তব হৈল অধিষ্ঠান। কিরপে নিস্তার হবে কহ বিজ্ঞমান।। ছিজবর কংহ কথা রাজার গোচরে। তব সম পুণাশীল নাহিক সংগারে। যে প্রকারে রাজ্যভোগ করিলে আপনি। তব তুল্য অন্য রাজা নাহি দেখি শুনি।। ব্যুন্থ সম তব প্রজার পালন। রাজর্ষি গণন মধ্যে তেংনার গণন।। আমি কিবা উপদেশ দিব তব স্থানে। সকল কহিলে ভূমি শুনি বিদ্যমানে।। পণ্ডিত জনের যার জ্ঞান উপচয়। আপনে আপন। कारन जकल विवस ।। शरत श्विषवत करन खन मिवमांग। धम्मावित मश्चिम्सि জানিবে নির্বাস ॥ তব তলোনলে ভূষ্ট আছে ভগবান । স্বশরীরে বিশ্বনাথে হইবে নির্বাণ । হেন বাক্য শুনি দিবদাস মহামতি। অফ্টাঙ্গে প্রণান করে দ্বিজ্বর প্রতি।। বাঞ্জা যাহা ছিল মোর সংসার ভিতরে। কুতার্থ হইলাম প্রভু তব রূপাবরে।। অমূল্য যে বছু রক্ত ছিল্পবরে দিল। বিদায় করিয়া নুপ চিক্তিত হইল।। পুরবাদী আত্মগণ আছিল যতেক। পঞ্চশত পুত্র আর शक्री (य चानक।। मकत्वात एकाइया कानिव वाक्रम। मशकिन वृद्धान्त কহিল ততক্ষণ।। ভদপরে যত ধন ছিল ভাঙারেতে। কম্পাত্র হৈয়া দান করিন জরিতে।। দিবধাস রাজা পুত্র পত্নীগণ লৈয়া। দাক্ষায়ন রাজগৃত্ত উপ্তরিল খিরা।। জ্যেষ্ঠ পুজে সেই দেশে রাজস্ব করিল। আর সব পুজগণ उथां छ ताथिल।। श्रांत कित्रमाय ताका नातांगती स्वामि। निवस मित्रम मिन्दिर्निकां एउ विनि । विवेश, छेन दिन निवनांत्र मिक्सांत । अने दिस्क

শাবিলিক্স করিল স্থাপন।। উদপরে দিবদান মহাযোগ ধরি। বিশেশর ধানি করে চিত্ত শুদ্ধ করি। হেনকালে সেই স্থানে দিবা রথ আইনে। ক্ষত্রগণ শিবসুন্তি ধরির। বিশেশে।। দেবকলা শতং চামর হস্তেতে। শতি শীঘ্র আনি দিবদাসের সাক্ষাতে।। শুশরীরে দিবদাসের রথে জুলি লয়। তদন্তরে দিবদাস শিবসুন্তি হয়।। এইরপে দিবদাস নির্দাণ হইল। শতংপরে মুনি শুন বৌদ্ধ যে করিল।। দিবদাস রপ্তান্ত যে শিব সন্ধিগানে। গরুড়ের কহি সব পাঠায় মারায়ণে।। পরে পঞ্চনদ তীর্থে বাস্কুদেন ঘার। সর্বাত্তি সার জানি বিরাজে তথার।। কাশীখণ্ড দিবদাস আখ্যান বিস্তারে সমুদ্র সদুশ কেবা বর্ণিবারে গারে। সীতানাথ বসু দীন জান দীন জতি। ইহার বর্ণনা কৈল আছ্যে যে শক্তি।। প্রস্কানন্দ অনুকূল দীনপ্রতি হৈল। কিঞ্চিৎ রচনা তবে ভাষাতে করিল।। এই অধ্যার পাঠ যেবা করমে প্রবণ। জনায়াসে মুক্ত হয় বেদের বচন।। অইপঞ্চাশ অধ্যায় যে সমাধ্য হইল। এমতে সপ্তম সর্গ বর্ণনা করিল।।

ইতি জ্ঞীকাশীখণ্ডে দিবদাস রাজার বিবরণ অন্ত প্রধাশ অধ্যায় ও সপ্তম নর্গ নামঃ সমাপ্তঃ।

---

## चाथ शक्षमही छोर्र कथन जवर सूटनांहना छेशांचाान ।

পরার। কার্ত্তিকের প্রতি কতে মুনিতপোধন। পঞ্চনদী তীর্থেতে র হিল নারারণ।। বিশেষ করিয়া কহ প্রভূ বড়ানন। অমৃত অধিক স্বান্ত ভোষার বচন।। গুহ কছে শুন কুন্ত সুভ মুনিবর। পঞ্চনদী সমভীর্থ না দেখি সহর।। ভীথরাজ প্রয়াগেতে কার্ত্তিক মাসেতে। স্লান করে যেই মরে विवि विधानि ।। अर्चभाषा मुक्त इत्र कानिह निम्हत । छीर्थताका स्नाम शक्षन दम सुक्क इत्र ॥ क्कीटबाटमत कर हे दिन मित्रा सुनिवत । नमाधि द्यारण क তপ করে ছোরতর ।। একদিন সেই পথে স্থতিরে অপুসরা। ভ্রমণ করেন দেবী অভি মনোহরা॥ মুনির নিকটে দেবী ছলে উপস্থিত। অপ্নর। रमिश्री यूमि ठिख विठलिए।। टेमवाधीन यूमि **ख**ळ इडेल পতन। छाड़ा দেখি অপ্সরা ভাষিত হৈল মন।। যোভুইত করি মুনি সমূবে দাণ্ডায়। অপরাধ ক্যা কর মুনি মহাকায়।। অপ্ররা করুণা শুনি মুনি তপোধন। অপরাধ নাহি তব শুনহ বচন।। উদ্যোগ করিয়া যেবা তপ ভঙ্গ করে। काशांदक स्थामता भागि कानर मचदा ॥ अनातांदम योगसांदन योग दकर थ। हेरम । यात्र जिल्ला भाभ नाहि अन्ध विरम्य ।। किन्न वक कथा कहि শুনহ নিশ্য়। তপস্বীর অমোঘ ভেজ বার্থ নাহি হয়।। এই তেজ ভূমি শীও করহ গ্রহণ। কদাচ ইহাতে নাহি কর অন্য মন।। মুনি বাক্য অপুসরা যে করিখা গ্রহণ। যে আজা বলিয়া তেজ করিল ধারণ।। দশমাস দশদিনে कना। अविविध । छाश्यवा सुनित स्थान । यहे कना। पिल ॥ स्वर्शान खश्यता শেষে করিল গমন। মুনিবর কন্যা পাইয়া অতি হৃষ্ট মন।। হরিণীর ত্র্থ बिहा शांकन कत्रा। विटन दिटन वाटक कना। मूनित कालहा। नाम ताथि सूरमाठना करत्न जामत्। तक्षःक्रम देश्य जात्र अस्त्रम तद्मत्।। सूनि प्रिथि विवादश्त काल छेशिष्ट्र । काद्र कना। पिव विता मर्खमा हिस्कि ॥ अकिमन কনাকে কহেন মুনিবর। কাহাকে করিব দান কহ**ত সন্থ**র ।। কন্যা বলে শুন পিতা করি নিবেদন। সকলের শ্রেষ্ঠ হবে ধর্মা পরায়ণ।। এমত বরেরে দান করিবে আপনে। এইত প্রার্থনা পিতা কহি তব স্থানে।। কন্যা বাকা श्विम सूनि थानि य करम। थानिट बानिल सूनि धर्मवद्र इहा। छम्भद्र कमा। अधि करह छरशाधन। यह वरत है का छव रेश्त्रारह मनन।। नरश এণে এই বর নাহি পাওয়া যায়। এমত মনোজ বর পাইবে কোথার।। তপস্তা থাকিলে ইহা মিলয়ে সম্বর। ইহা শুনি পরে কন্যা চিন্তিত অন্তর।

পরে সুলোচমা শিতৃ আঞা যে লইয়। তপদ্য করয়ে জন্যা কাশীতে ষাইয়া।। অভিশয় ঘোর তপ আরম্ভ করিল। পঞ্চলা করি কনা স্বকর্ম गाधिल।। उनशास्त्र कना श्रक्ति खन्ना जानि कहा। श्रार्थना करह जर गाँकी हैका हरा। कना। वल अन अष्ट्रं कति निरंत्रमा। जमा वत् आर्थनार क्षाहि মোর মন ।। ধর্ম পরায়ণ ছবে সকলের শ্রেষ্ঠ। এই বরে বিভা হয় এই মনো ভিষ্ঠ।। পর উপকারী হবে কাশীপুরে বাস । ইহাত হইলে ছর মানস উল্লাস।। তথাস্ত বলিয়া ত্রন্ধা বিদার হইল। ক্রমা আসি পিতা স্থানে প্রণাম করিল।। কত দিন পরে ধর্ম কন্যা স্থানে আসি। আমাকে বরছ ভূমি শুনহ ৰূপসী।। ভদপরে সুলোচনা কহিল নত্ত্ব। পিডা স্থানে ৰলে जरव **উচ্চিত ই**হার।। পুনর্ধর্মারাক বলে শুনহ বচন । গদ্ধর্ম বিবাহ আছে मरमत मिलन।। इन वाका छनि कना। काशाविष्ठे देहल। अक्षिण कथा क्ति भूनः रता। क्ना मान कतिरक मानम शिठातः। ইহাতে अहाया कता मिक प्राटहकात ॥ श्रेनकात धर्म करह खनह वहन । शक्कर्स विवाह নত কর আচরণ।। এত শুনি কন্যার হইল ক্রোধ মন। ধর্মরাজ প্রতি শাপ দিলেন তৎক্ষণ । জল হৈয়া সদা কাল করহ যাপন্। কন্যা শাপ শুনি ধর্ম ब्हु व देश्य मन। धर्महाब कमा श्रिक क्लांशिष्ठ खखुत। भीवा श्रुत कमा ভূমি থাকিবে সন্থর।। শাপ গুমি কন্যা চবে পিতা ভানে যার। রোদন করিয়া সব রুত্তান্ত জানায়।। কেদশিরা মুনিপরে গ্রানেতে জানিকা-ধর্ম্ম মহাশর তথা অপিনি আসিল।। তদপরে কনাকে কচেন মুনিবর। চিস্কা নাহি চন্দ্রকান্ত হবে শিলাপর।। চন্দ্রের রুলিতে দ্রুব হইবে যে জুমি। কাশী ক্ষেত্রে ধর্ম সহ মিলিবে আপুনি। তব মনোনীত বর ধর্মারাজ হন। ছলনাতে তব সক্ষে হইবে দর্শন।। অভএব বলি আমি শুনহ সম্বর। ছুই करन भूर्यमञ्च इरव करलवत् ॥ धर्मा गः निक ब्राल इहरव मिलन। हेशाङ না হবে জান শাপের মোচন। শাণের নিমিত্ত দ্রব হবে পুনর্কার। ক্লপা করি করিলাম নিয়ম ইহার।। বেদলিরা পুনঃক্তে কন্যার সাক্ষাভে। ধৌত পাপা কাশীক্ষেত্রে হইবে আখ্যাতে।। অগস্ত্যাকে কান্তি ক কছেন মহামছি। ধৰ্মনাক্ষ দ্ৰব হৈয়া কাশীপুরী স্থিতি॥ ভাহাতে মিলন ধৌত পাপা সুলো हनी। प्रतुष्ठ हो रहूना बाहूरी खत्रिणी।। क्राध्यक बाधिया पर मिलिल ज्याम् । ज्ञज्यत शक्षनमी : महाकीर्थ इत्र ॥ कोमीटक्कटक शक्षनमी कीर्थ সারাৎসার। জলম্পর্ণ মাত্র জীব হয়ত উদ্ধার।। জবস্থিত হইল তথায় माताप्रण। चारनत मांशाच्या किया कहित कथन।। शक्ष्मणी छोर्थ (यता सान,

দান করে। তাহার পুণ্যের কথা কে কহিছ পারে। সর্ব্ব পাপে মুক্ত হয় সেই সব জীব। অভ্যন্তরে মুক্তি পদ দেন তারে শিব।। কান্তি কি মাসেতে প্রাতঃ স্নান যেবাকরে। স্থানান্তরে মরিলেহ মুক্তি তার পরে।। উনব্যটি অধ্যায় কাশীখণ্ড মনোহর। শুনিলে সকল পাপে মুক্ত হয় নর।।

### -34246-

## অথ বিন্দমাধৰ উপাখ্যান।

া প্রার। কার্ত্তিক কহেন শুন মুনি তপোধন। শুনিলে যে পঞ্চনদী উৎপত্তি কারণ।। মাধবের আবির্ভাব অপুর্ব্ধ কথন। কহি তবে সর্পানতে শুন দিয়া মন।। মন্দর হইতে কাশী আসি নারায়ণ। পাদোদক ভীর্থে করিলেন প্রকাশন। দিবদাস রাজাকে যে উচ্চাটন করি। কাশীর মাহাত্ম্য সব ক্ষহিল বিস্তারি।। যত তীর্থ পৃথিবীতে আছে স্থানেং। সকল হইতে ত্রের্ছ কাশীর আখানে।। এপ্রকার কাশীপুরী প্রশংসা করিরা। পঞ্চনদী जीटर्य जिल इर्या उद्या ।। शक्ष्ममी ए**चि सूथी देश ना**तास्य । शक्ष्ममी প্রতি কহে করিয়া যতন।। ত্রিজগৎ মধ্যে তুমি নর্ব সারাৎসার। কি কব বর্ণা তব মহিমা অপার ।। জীবের পাতক তীর্থে করিরা গ্রহণ। পঞ্চনদী স্থানে করে পাপের মোচন।। পঞ্চনদী ভীর্থেতে থাকিয়া নারায়ণ। গরুতে ভাকিয়া পরে কহেন বচন। শুনহ গরুত ভূমি বড় বিচক্ষণ। মন্দ্র পর্বতে শীঘ্র করহ গমন। মন্দ্র হইতে আমি আগমন করি।যে যে কর্ম সাধন করিল কাশীপুরী।। দিবদাস রাজারে করিল উচ্চাটন। কহিবে তাহার সব নির্বাণ কথন।। বিস্তারিত করিয়া কহিবে ত্রিলোচনে। এত শুনি পক্ষীরাজ করিল গমনে॥ পঞ্চ নদী তীথে अधिदृष्प अत्थायन्। नमाकाल जशकत्व देश्या क्रियम्। जमशत्व अधिदृष्प দেখি নারায়ণে। দণ্ডন্যায় ভূমে পজ়ি করয়ে প্রণামে।। গলেতে বসন দিয়া অত্যে দাণ্ডাইল। বহু বিধিমতে মুনি স্তব যে করিল।। সকলের স্বাত্মা স্কুমি প্রাভু জগলাথ। সৃষ্টিস্থিতি প্রলয় নকল তব হাত। ব্রহ্মা আদি দেব যত তব আঞ্চাকারী। তোমাছাড়া কিছুনহেশুনহে মুরারি॥ স্থুলমুক্ম ডুমি প্রাতু চিস্তামণি ময়। করণ কারণ তুমি সববেদে কর।। চন্দ্র সূর্ব্য তব তেজ আছে বে নির্বাস। বেদ অগোচর তব মহিমা প্রকাশ।। তোমাতে উৎপত্তি প্রভু তোমাতে মিলয়। নিশাদেতে সৃষ্টি তব নিশাদে প্রলয়। দীন হীন আমি তব কিলানি সহিমা। পঞ্চয়ধ চত্র্যুধ দিতেনারে সীমা॥ নাভী

পদ্ম হইতে তব ত্রন্দার জনম। সকলের গ্রেষ্ঠ প্রভু সার কহিলাম। ছরিহর এক আত্মা দর্ব শাস্ত্রে কয়। ইহার অন্যথা ভাবে নরকে পড়য়। ভূমি ব্রহ্মা ত্মি বিষ্ণু তুমি মহেশ্বর। তুমিত অনন্ত প্রভু সর্ব্ব চরাচর।। চক্রপাণি চতুতু জি প্রভূজগল্লাথ। সর্বতো কাপিত দেব হও ক্লানার্থ। ক্লাঞ্চ বিশু নারায়ণ ঐ মতুতে আর। জীরাঘৰ জন র্দ্দিন ত্রিবিক্রম সার। ছংস হারীকৈশ পতা অনন্ত এইরি । যতু শ্রেষ্ঠ বরাহ্ বামন যে মুরারি।। এখির গরুড্থেজ নুসিংহ যাধব। সধুস্থদন প্রমাত জার যে রাঘব।। ইত্যাদি নামেতে স্তব করে তপোধন। ভূষ্ট হৈয়া মান প্রতি কছে নারায়ণ।। ভোমা প্রতি আমি অতি হইলাম তুষ্ট। বরের প্রার্থনা কর তব মনোভিষ্ট।। মুনি বলে শুন প্রভু কার নিবেদন। অনাবর পার্থনাতে নাহি মম মন । পঞ্চনদী ভীর্ণে প্রভু থাক চিরদিনে। করিবে পাতকী মুক্ত যত পুলহীনে।। তথাস্ত 'বলিয়া প্রভু করিলা স্বীকার। দৃঢ় ভক্ত বলি বর দিল পুনর্ব্বার ॥ শুন অটি বিশ্ছ জুনি প্রিয় ভক্ত মম। তব নাম থর্জেক হইবে মোর লাম। জ্রীবিন্দু মাধ্ব নাম করিল গ্রহণ। ত্রিজগৎ মধ্যে সবে করিবে ঘেবিণ।। তদন্তরে নারায়ণ কহে মুনি প্রতি। এইস্থানে থাকিবেক মম প্রতিমৃদ্ধি।। এইজ পরম তীর্থ ভাতিপুণাস্থান। পঞ্চনদী জলেতে করিয়া লান দান।। যে জীব ভোমার পুজা করিবে নাদরে। গুপা মালা ধূপ দীপ আব উপহারে ॥ বছ অন্মাজিইত পাপ্রবাস হয় ছার। ইহাতে অনাথা নাহি কহিলাম দরে।। এ**স্থানে তর্প**ন आक्ष य बात कत्र। छोत श्रुक्त शुक्तयोनि अप्कार क्षा। कोर्डिकेटड প্রাতঃহান যে জনে করয়। তাহার কলের কণা বর্ণনা না হয়। ব্রহ্মা আদি হন্দ্র স্বর্যা যত দেবগণ। কান্তিক নামেতে করি নিয়ম ধারণ।। পঞ্চনদী প্রাভঃস্নান করি দক্লেছে। আপনারে ধন্য জ্ঞান ভারেন মনেতে।। কার্ত্তিক মাবেতে জীব করিয়া নিয়ম। ব্রত আদি করিবেক আরি অনশন।। পঞ্চরাত্র ত্রিরাত্র সপ্তায় একবিরা। পক্ষরত মাস্ত্রত সুক্রিন করা।। এ সকল নিয়ন যেই করে একচিতে ! তাছার পুণ্যের কথা কে পারে বর্ণিতে কার্ত্তিকেতে কাংস্য পাত্রে ভোগনত্যাগিবে। মৎস্য মাংস ইত্যাদির নিকটে না যাবে।। কাংশ্যপাত্রেভাগিপুনঃ কাংস্য দিবেদান। মৎস্যমাংস্ কুয়াগুস্য ত দানের বিধান।। ইত্যাদি নিয়ম সব আছে বছ ত্র। ভাষাতে বর্ণনা কর। বড়ই ছক্ষর।। গৃত দীপ্রমালারজনীতে মস স্থানে। যেইজুন (मत्र त्म के व्याचारन।। विक् ज्ञ देश भिव निम्मा (यता करते।

নরকৈতে পড়ে অভিশয় ঘোরতরে।। যেই হরি সেই হর এইত ভাবনা।
ইহাতে অনাথা হৈলে নরকে যন্ত্রণা । রুদ্র পিশাচ হয় ত্রিশহাজার বৎসর।
কাল ভৈরবের দণ্ডে থাকে নিরস্তর ।। অগ্নিবিন্দ্র বিন্দ্রমাধব অপুর্ব্ধ কথন।
ভক্তিভাবে পঠে কিয়া করমে আবণ।। ডাহার পুণ্যের কথা কহিতে না পারি। তার প্রতি রুপাদৃষ্ট হয় হরহরি।। মাধব আবিভাব অগ্নিবিন্দ্র বিবরণ। ষ্ঠি অধ্যায় কথা হৈল সমাপন।।

### -

## व्यथं कानिटक भवानि छीर्थ कथन।

পন্নার। অগন্তা বলেন শুন দেব ষভানন। মাধবের উপাখ্যান করি-লাম আবণ।। পঞ্চনদী মহিমা শুনিলাম চমৎকার। সম্প্রতি বলহ বিফু ভীর্থের বিস্তার।। ক্ষন্দ বলে শুন মুনি বলি সেই কথা। অগ্নি বিন্তু প্রতি विक विकार यथा।। अथमण्ड भारमानक छीर्य मुक्ति धाम। जामि जानि-কেশব নামেতে দেই স্থান।। সঙ্গমেশ মহালিক্স করিয়া স্থাপন। সতত তখাতে মুক্তি করি সমর্পণ।। শেতছীপ তীর্থ পাদোদকের দক্ষিণে। আমি জ্ঞান কেশব নামেতে সেই স্থানে।। তাক তীর্থে আমি তাক্ষ কেশব না-মেতে। নারদ কেশব নাম নারদ তীর্থেতে।। প্রহলাদ কেশব নাম ঐ তীর্থে শুন। আদিতা কেশব অম্বরীশ তীর্থে পুনঃ॥ দন্তাত্রমেশ দক্ষিণেতে আদি গদাধর। ভার্গব ভীর্থেতে ভুগু কেশ্ব সুন্দর।। বামন কেশব নাম বামন তীথেঁতে। নর নারায়ণ নর নারায়ণ খ্যাতে ।। যজ্ঞবরাহ তীর্থেতে यक वताहक ! विषातन्ति १ की वर्ष विश्व निवातक ।। विषात नृति १ नाम আমিসেই স্থানে। আমাকে সেবিয়া মুক্তপায় ভক্তজনে।। গোপী গোবিন্দ कीर्थ शापी शाविष्म नाम। लक्की नर्तिश्ट लक्की नर्तिश्ह थाम।। भिष कीर्थ व्याप्ति कीर्थ माधव व्याधान। भः थकीर्थ व्याप्ति भः थ माधव প্রধান।। হর্ত্তীবে হর্ত্তীব কেশব সংক্ষক। বৃদ্ধকালে আমি বৃদ্ধ কেশব নামক।। নির্বাণ কেশব আমি কেশব লোলার্কস্তরে। ত্রিভূবনে কেশব চণ্ডীর দক্ষভরে ।। জানবাপী পুর্বে জান মাধব নামক। বিশালাক্ষ্ খলে শেত মাধব সংক্রক।। প্রয়াগ মাধব জামি প্রয়াগ ভীর্থেতে। মাঘমাদে ব্রতদান করি নিয়মেতে।। সকল পাতকে মুক্তি পায় সেইজন। ইহকালে रू बी शरत मः मादत त्यां हत ।। अतार्ग मकन छीर्थ माद्य जागमन । शक-नम कार्डिक्ट अखार जानन।। मधाइ नम्ह मिक्निका कीर्श्व । শর্মতীর্থ আগমন প্রতি দিবসেতে।। কাশীতে যতেক তীর্থ কেই নহে ভান। কিন্তু মণিকর্নিকার শ্রেষ্ঠ সর্বস্তিণ। কাশীতে যতেক তীর্থ মধাছ সমন্ন মণিকর্নি স্লান করি নিতা শুদ্ধ হয়। বিশ্বেশ্বর অন্নপূর্ণ। নিতা করে স্লান। লক্ষ্মীর সহিতে আমি আছি সেই স্থান।। সত্যলোক হৈতে ব্রহ্মা ব্রহ্মাণী সহিতে। স্লান করে নিতা আসি মণিকর্নিকাতে।। ইন্ধু আদি যত দেব মরিচ্যাদি শ্বাবি। মধ্যাহ্ন সমরে নিত্য স্লান করে আসি।। মণিকর্নি কার শ্বাবি বিত পারে। মণিকর্নি সম তীর্থ নাহিক সংসারে।। পুনঃ অগ্নিবিন্দু বলে শুন ভগবান। বিস্তারিয়া কহ মণিকর্ণির প্রমাণ।। বিশ্বু বলে শুন অগ্নিবিন্দু দ্বিশ্বর। মণিকনিকার পরিমাণ স্ক্রিশ্বার।

### ---

### ত্ৰথ মণিকৰিকা কথন। 🖜

ংপরার । হরিশ্চ**ন্দ্র লন্টপ উত্তর সীমাহয়। দক্ষিণ সীমাতে গঙ্গা**ক্<mark>দার</mark> আলয়। ভাগীরথী মধ্য পূর্ব দীমা হয় তার। পশ্চিমেতে দীমা তার আন স্বগদ্ধার । মণিকনিকার এই তুল পরিমাণ। সুক্ষা পরিমাণ কহি কর স্বরধান গ্রিশ্চন্ত তীর্থে হরিশ্চন্ত বিনায়ক। সীমা বিনায়ক তথা বিশ্বের **নাশকু**। আছরে পর্বত তীর্থ ভাহার দক্ষিণে। তটেতে পর্বতেশ্য লি**ঞ্চ অধিষ্ঠানে।** তাহার দক্ষিণে তীর্থ কমলাশ্ব তর। কমলাশ্ব তরে স্বালিক মনোহর।। চক্র পুঞ্জরিণী তথা তীথের প্রবর। স্থান করি তরে নরে সংসার সাগর।। চক্র পুরুরিণী জীরে আমি বহুকাল। পাইল ঐশ্বর্যা তপ করিয়া বিশাল। रगहे ठक शुक्रविशी मिनिकर्नि मांम। मुनित शहरन देश्य थाए अनुशामा खव क्र পরিহরি নারীক্রপা হৈল। প্রতাক্ষরপিণী মণিকর্ণিকা দেখিল।। প্রতাক্ষ যেরপ মোর হইল দর্শন। দেইরপ বলি শুন তার নিরপণ। চতুভুজা বিশালাক্ষী ভালে ত্রিলোচনা। পশ্চিমাভিমুখি করপুট নিবন্ধনা। रेन्मीयत माना एक कटत धटत यत्। माञ्जाक कन नाम कटतटा सुन्मत्।। घामम तरमत त्रामा कुमाती किशिशी। निर्माल कार्टिक क्रिश नील कुछलिनी। প্রবাল জিনিয়া ওর্চ অধর নির্মাণ। কেশ পাশে কেডকী কুমুম রাজমান।। সর্ব্ব শরীরেতে মুক্তাফল আভরণ। চন্দ্রকান্তি জিনি শোভা স্কুসর বরণ।। শ্বেত প্রমালা দোলে গলে মনোহর। এই ৰূপ ধ্যান করিবেক নিরস্তর।। পঞ্চদশ চতুদিশ অক্ষরেতে মন্ত্র। নিরস্তর জপে মুক্তি হরে ভবদম্র।। অপ गरशा मभारमं (इंटिमंत नरशा इस् । एवं छश्च यूक मधु मर्कती मिळ्स ।।

তিনলক অপ পুরশ্চরণে বিধান। করি পুরশ্চরণ লভয়ে পরিত্রাণ।। ধান অনুন:রে স্বর্ণ মূর্ত্তি নির্মাইরা। পুজিবেক সদানিজ গৃহেতে রাখিরা॥ অথবা করিবে মণিকর্ণিতে ক্ষেপ্র। দুরদর্শী জনেরে উপার্য এই কন।। আমার স্থাপিত লিঙ্গ মণিকর্ণীশ্বর। মণিকর্ণি স্থান করি পুজিবে সত্বর।। কণিকর্ণীশ্বর অন্ত গ্রহে পূর্ব্ব ছারে। সেবিয়া সেবক ভরে এঘোর সংসারে। পাশুপত তীর্থ মনি চর্নির দক্ষিণে। পশুপতীশ্বর লিঙ্গ আছয়ে সে স্থানে॥ পাশুপত যোগ তথা করি উপদেশ। মহামোক্ষ দান করে আপনি মহেশ চৈত্র শুক্র চভূদিশী রাম জাগরণ। মহাপুলা করিবেক করিয়া স্তবন। করিবে বার্ষিক যাতা সে স্থানে যে দিনে। পশুপাশ নাশে আমাবস্যাতে পারণে।। তাহার নিকটে ক্রন্তাবাস ভীর্থবর। পুজিবেক তথা লিস্ক ক্রদ্র বাদেশ্বর । বিশ্ব তীথ ক্রজাবঃদেশবের দক্ষিণে। বিশ্বনাথ বিশ্বগৌরী পুজা সেই স্থানে॥ তাহার নিত্রে নুক্তি ভীর্মনোহর ৷ স্থান করি পুলিব্রেক লিঙ্গ মোক্ষেত্রর। অবিষ্ণুক্তেশ্বর হিচ্ছে তাহার নিকটে। অবিষুক্তেশ্বর লিজ পুজা তার তটে।। নিকটে ভারক তীথ যথা বিশ্বেশ্বর। তারকের উপদৈশে নিস্তার যে নর।। পুজিয়া তারকেশ্বর লিঞ্চ সেই স্থানে। কন্দ তীথ ক্ষম মূর্ত্তি তাহার দক্ষিণে।। সেই স্থানে দুখী তীর্থ দুখী গণপতি। मक्तित। ভবানী তীর্থ শঙ্কর সম্মতি ॥ ভবানী শঙ্কর ছুই পুজা সেই স্থানে। মহাযাতা চৈত্রমানে অফীমীর দিনে।। অফীধিক শতবার প্রদক্ষিণ করি। অইবার প্রদক্ষিণ অথবা সাদরি।। ভক্তি লবে প্রণমিয়া ভবানী শঙ্কর। প্রার্থনা করিবে যাহা গাইবে সে বর ।। গৃহবাসী বিশ্বেশ্বর গৃহিণী ভবানী মেকি,ভিকা কাশীপুরে দিতেছে আপনি।। মহার্ফমী দিনে ত্রতী করি উপাসন। ভবানী শঙ্কর পুঞ্জিকরে জাগরণ।। ভবানী শঙ্কর সদা অপিয়া কদ্য়। আবিশ্যক মনোগত সিদ্ধি ভার লয়।। নিকটে ঈশান তীথ আছে বেই স্থানে। পুর্জিয়া ঈশান তীর্থ লভে দিবাজ্ঞানে ॥ জ্ঞানতীথ দেই স্থানৈ লিঙ্গ জানেখর। সভত সেবিয়া দিবাজান পাবে নর।। নন্দি ভীথে নন্দীশ্বর প্রম পাবন। জ্ঞান জাপী উত্তরাংশে পুজিবেক জন।। তাহার দক্ষিণ বিকুতীথ ননোহব। বিশ্বেশ্বর দক্ষিণে মূর্ত্তি আমার সুন্দর।। প্রতি একা-দশী আর শয়ন বোধন। উপবাদ করি করে রাজ জাগরণ।। প্রভাতে আমার পুজা আক্ষা ভোজন। করাইয়া দান করে গোভুমি কাঞ্চন।। যথাশক্তি করি তথা ত্রত উজ্জাপন। লভারে যথোক্ত ফল সেই ত্রতীজন।। পিভাসহ তীর্ঘ বিকু তীথের দক্ষিণে। পিভার্মহেশ্বর লিক্স আছে সেইস্থানে

নাভীতীথ সেই জগতের নাভী হয়। যাহা হৈতে ত্রন্দাণ্ড উদয় যাতে লয় बिलांक विशां छीथ त्यहें बन्नानल। स्नान मान टेकल घुटा **खंडेंस्न** সকল। ভাগীরথী তীথ ব্রহ্মানলের দক্ষিণে। ভাগীরথীশ্বর লিঙ্গু আছে দেই স্থানে ॥ করকভুরিকা ভীর্থ ভাষারদকিশে। গোমাভা গোলোকটেইটে আদি কুরেখনে।। কুরকর্ত্রীশ লিস পুজিবে সে স্থানে। মার্কণ্ডের তীর্ষ স্পুরকর্তরী দক্ষিণে।। সেই স্থানে আছে লিস মার্কপ্রেমেশার। পুরিষা ভাহাকে দীর্ঘজীবী হবে নর।। তথাতে বশিষ্ঠ ভীথ লিক বশিষ্ঠেশ। অরু-ক্ষতী তীর্থ তথা আছেন বিশেষ।। আবশাক স্থান তথা করিবেক নারী 🕈 নির্মাল হটবে সর্বদোষ পরিহরি॥ অরুদ্ধতী বশিষ্ঠের মূর্ত্তি সেই স্থার্টেশ পুজিলে বৈধব্য দোষ হয় নিবারণে।। দক্ষিণে নর্মদা তীথ অতি মনোহরী। পুর্বিয়া নর্মাদেশ্বর মুক্ত হবে নর।। তথাতে ত্রিসংক্ষা তীথ পরম পাবন পুৰিষা ত্ৰিসন্ধের কাটয়ে বন্ধন।। তদতু যোগিনী তাঁথ জগত বিখ্যাত। পুর্জিবা যোগিনী পীঠ যোগ হস্তগত।। পুর্জিবে অগুজ্ঞোশ্পর অগন্ডা তী-থেতে। লোগানুজা অগস্ত্যের স্বরূপ তথাতে।। তাহারদক্ষিণেকসা কেশব সংজ্ঞক। মহাতীথ স্থান করি নাশয় পাতক।। নামে গঙ্গা কেশ্ব আমার মূর্ত্তি তথা। পুজিয়া পাইবে মুক্তি নাহিক অন্যথা।। মনিকর্ণি পরি**মাণ** कृश्लि विरम्म। सुनइ देवस्व जीय चार्ट व्यवस्था नीमा विमात्रस्यत पक्तित्व अञ्चल । देनद्वाहत्मश्रद्ध श्रुत्क देवकुष्ठे मामवं । वीव माधव मश्यक বিজ্ঞাশ পশ্চিমে। নিয়মেপুজিলে তাকে নাহি দেখে ৰবন।। কালতৈরকের নিকটেতে মৃত্তিমান। দেখি কাল গাধব পাইবে দিবা জান। মার্গ শুক্ল একাদশী করি উপাসন। রাত্রি জাগরণ কৈল না দেখি শমন।। নির্বাশ नृतिः इ श्रूनश्चीद्यतः मिक्स्ति। वज्यतं निर्कान सुक्ति छोहात मर्गरन । "गहा-काल नर्जिश्ह क्षेपत शुर्खारछ। यम पूछ नाहि (मध्य छोहाँद (मवारक।) প্রচণ্ড নুসিংহ চিণ্ড ভৈরবের পর্ব। তাহাকে সেবিল যুচে শমনের গর্ম। দেহলি গণেশ পুর্বে মূত্তি চমৎকার। গিরী নরসিংহ দেখি ঘুচে অশ্বকার ম মহাতর হরনরদিংহ মূর্ত্তিমান। পিতমহেশ্বর পশ্চিনেতে অধিষ্ঠান । অভ্যুক্ত নুসিংহ কলদেশ্ব পশ্চিমে। তাহাকে পুজিলেনাহি দেখেউগ্র খনে।। খল। মুখি সন্মুখে নৃসিংহ স্থালামালি। তাহাকে পুজিয়া জয় করে কালকলি।। কোসাহল নৃসিংহ আছেন সেই স্থানে। কংকাল ভৈরব যথা আডেন বিদ্য মান।। বিটফ নৃসিংহ নীলকপ্রেশ্বর কাছে। অনস্ত বামন অনত্তে শ্বরেহত त्य आद्या । उथा मिनामन आद्य निमामान । जिल्लाहन छेखदत्र छ।

ক্রম স্থান । বলি বামন পশ্চিমেতে বলভদ্রেশ্বর। যে পুর্ক্তে তাহার বল কৃদ্ধি নিরস্তর॥ ভবতীথ দক্ষে তাশ্র বরাহের স্থান। ধরণি বরাহ প্রয়াগেশ সন্ধিবান।। ধিন্টীশ্বর পাশে কেকো বরাহ আখ্যান। পুজিলে তাহাকে চিস্কিতাথ করে দান।। নারায়ণ মৃদ্তি পঞ্চশত কাশীপুরে: জলশায়ী শত মৃদ্ধি আছেন সন্ধরে।। ত্রিংশত কমঠ রূপ বিংশ মীন রূপ। সহস্র সহস্র আছে বৌদ্ধের স্বরূপ॥ গোপালের শত মৃদ্তি ত্রিশত পরশুরাম। একোত্তর শত মৃদ্তি আছরে জীরাম।। বিফুর্জপ আমি এক বিষ্ণু মণ্ডপেতে। বিশ্বে-শ্বর আজিত হৈয়াছে ভাল মতে।। নারায়ণ রূপে চক্র গদা করে ধরে। বৃদ্ধি ভেদ কহ প্রস্কু যতেক তোমার।। অগ্রিবিন্দ্র তবে কিছু কহে ক্ষমী কেশে। কেশবাদি চতুর্কিংশ মৃষ্তির বিশেষে।।

### -31816-

## অর্থ কেশবের চতুবিংশতি মূর্ত্তি কথন !

পরার। উদ্ধ দক্ষকর হৈতে সৃষ্টি ক্রমে জান। শঙ্খচক্র গদা গল কেশব ধারণ।। শঙ্ম পদ্ম গদাচক্র শ্রীমধুস্থদন। শঙ্খ পদ্ম চক্রগদাধারী मक्कर्षन ।। मञ्जा श्रमाहक श्रम्भाती मारमानत । वामरनत हक मञ्जा श्रम श्रमा কর।। পাঞ্জন্য গদাপত্ম চিত্র স্কুদর্শন। জানিবা প্রত্যুত্র মূর্ত্তিযাহার ধারণ॥ 🕳 বাম করাবধি সৃষ্টি ক্রমে জান। শঙ্খ চক্র গদাপদা বিঞুর লক্ষণ।। চক্র শত্ম গদাপত্ম মাধ্যে ধার্য। শত্ম প্র চক্রগদা অনিরুদ্ধে হয়। শত্ম গদাচক প্রেভেপুরুষোত্তম। অধোক্ষ শন্তাপ্র চক গদাক্ম।। শন্তাগদা চক্রপরীধরেজনার্দন। অধোবাসকরাবধিসৃষ্টিতেধা গ।। শংখ গদাপত্ম চক্র মোরিক ধারম। শঙাচক গদাপত্ম ত্রিবিক্রম হয়।। শঙাপত্ম চক্রগদা ধরেণ 🔊 মাধব। হ্রমীকেশ শঙ্খাগদা চক্র পাত্ম কর।। নরসিংহ শঙ্খ চক্র পাত্মগদা ুধরে। শঙ্খাগদা পদ্মচক্র অচ্যুতের করে॥ দক্ষকর অবধি যে ধারণ সৃষ্টিতে ৰাসুদেব শঙ্খচক্রগদাপঅহাতে।। শঙ্খপত্মগদাচক্রনারায়ণেধরে। শঙ্খপত্ম চক্রগদা প্রবাভকরে ॥ শঙ্খগদাচক্রপত্ম উপেন্দ্রলক্ষণ। শঙ্খচক্রপত্মগদা ্ছরির্ব্বধারণ।: শঙ্খগদাপাত্ম চক্র ক্রব্যু ধরেকরে। নিজ মূর্ত্তিভেদ মোরকহিব ছোমারে।। হেনকথা অবসানেগরুড়আসিল। বিশেষরশুভাগমমাধ্বে ক-ছিল। সমস্ত মে বলেবিকু কোথা ত্রিলোচন। গরুড়বলেন দেধর্বভ কেতন আছের অনুভারত সুবি মুক্তের প্রকাশ। দেখিয়া উঠিল প্রণমিয়া জীনিবাস। জাগ্রর হইরা চলিল নারায়ণ। জাগ্রবিন্দু ত্রাল্লণেরে বলিল তথক্ষণা।
মার স্কুদর্শন চক্র করে স্পর্শকর। সুদর্শন স্পর্ণ করিলেক মুনিবর।। চক্র পারশিয়া মুনি হৈল জ্যোভির্মায়। নারায়ণ পরভেজ সহজে মিলয়।। বিন্দু মাধবের পাদপাল ভক্তি করে। জাগ্রিবিন্দু সম সেইঅনায়াদে তরে।। কানী বাস আর বিন্দু মাধব দরশন। ভক্তিভাবে করিবে যে অধ্যায় অবশ্যা জাগ্রিবিন্দু স্ততি পাঠ মাধবেরআগো। যে করিবে সে জন হইবে মহাভাগে দ ভ্রাল্ফকালে পাঠে পিতৃলোক তৃপ্ত হয়। পঞ্চনদ পাঠ করি নির্মাণ লভয়।। একাদশী উপবাস রাজ জাগ্রণ। অধ্যায় আবণে লভে বৈকুপ্তে গমন।। ভাষিকা নিবাসী মল্লিকাখ্য সীভানাথে। কাশীখণ্ড ভাষা করি রচিল ভাষাতে।। ব্রহ্মানন্দ ভাবে ব্রক্ষানন্দের উপায়। একষ্টি অধ্যায় সমাপ্ত ভাতে হয়।।

### -

### অথ মহাদেব কাশী আগমন!

পরার। বিনয়ে অগস্তা বলে বড়ানন প্রতি। যোডকরে বছ ভক্তি করিয়া যে স্ততি।। একে কাশীখণ্ডামৃত তব মুখে শুনি। অমৃত অধিক প্রভো তব মুখ বাণী।। গরুড়ের মূখে শুনি শিব আগমন। তদপরে কি করিল প্রভু নারায়ণ।। কার্দ্তিক কছেন শুন মুনি তপোধন। শিব আগমন শুনি সুখী নায়ায়ণ।। গরুড়কে গোবিন্দ করিল আশীকাদ।। তৃষ্ট িহৈয়। পক্ষী প্রতি করিল প্রসাম।। কাশীবাসী সকলেরে প্রভু গদাধর। শিব व्यागमन वार्छ। कहिल मञ्जत ॥ खन्ता एर गर्मा स्र्री व्याजरका गुरा निनी । नकल लहेश अञ्चलाभी हज्जानि ॥ कामीवानी नगरतर यह लाक रहता বিশ্বনাথে দেখিবারে সকলে চলিল। কাশীর প্রান্তর ভারে সবে শীঘ্র যায়। অভিদূরে সদানন্দে দেখিবাবে পার।। ইক্র আদি দেবুগণ হইয়া বেফিড। তাশীপুরে যান শিব হৈয়া হর্ষিত।। নাগলোক প্রভৃতি করিরা সর্বজন। অপুসরা কিন্নর আদি সব সিদ্ধগণ।। দেবর্ষি ত্রজার্ষি সব মুনিগণ আদি। 🕈 ষতেক চলিছে সঙ্গে নাহিক অবধি।। চামর দুলার বিভাধরী গণ মিলে। নুভা গীত বাদ্য করে বেভিয়া সকলে।।ঘোরতর নানাবিধ বাদ্যোদ্যম হয় गर्फ करलान राम इंडेन अलग्न।। नकी कुकी व्यापिकृड यक शिवना। तय वम चदत छाता कतिएइ शमन ।। शानवामा कति गदव मिवर बनि । छोट्नर नाहिया अमिन यात्र हिला। द्रम्य ध्राद्धार निव आह् आद्रार्श। तुक्र

গিরির আভা অতি মুশোভন।। মস্তকেতে জটার দৌন্দর্য্য কিবা কব। ক্ষটার উপুরে গঙ্গা কল কল রব।। চত্র যে জিনিয়া মুখ পাছা ব্রাক্ষতায়। কপালেতে অদ্ধ্যন্ত অতি শোভা পায়। কণ্ঠ নীলবর্ণ তাহে গলে হাড় স্থাল। ব্যায় চর্মে পরিধান দেখিতে বিশাল।। সর্পোর বলয়া অক্টে অভি ্চমএকার !. বামভাবে শৈল**মুভা আ**ছেন ভাহার ॥ ভাঁহার **র**পের তুলা নাহি থিছুবনে। বিহাতের ছেটা জিনি অঙ্গের শোভনে॥ রজত গিরিতে হয় পূর্ণচন্দ্র শোভা। অলঙ্কার নানাঅঙ্গে কিবাতার আভা।। ্দারিদ্র লোকেতে যেন বছধন পার। হর্ষচিত্র হৈলে অঙ্গ পুলকিত ভায়।। "रिगेन्मर्या भाषुर्या **ভाর কো**था হৈতে আমে। কাশী পুরী লাভে হর্ষ চিন্ত যে স্লাহেশে।। পুর্ব হৈতে দেঁজা ৰূপ অতি সুশোভন। কাশীলাভ হইবেক शानिषा मन।। अठि कोलाइल भक्त वाटमामाभ इस। कर्ल किছू শুনে নাহি শব্দ অতিশয়॥ রুষভ উপরে আছে দেব ত্রিলোচন। নিকটেতে উপনীত দেৱ নারায়ণ। আত্ব তণ্ডুল তুর্বা পুসামাল্য আদি। মঞ্লা-চরণ করে আছে যথাবিধি।। সমাুখে ধরিল প্রভু দেব নারায়ণ।। যেমতে জাছয়ে নীতি মঞ্চলতিরণ।। পরস্পার দর্শনেতে অতি সুখী হৈল।। মহা-एएटव नाजायण व्याप्त कतिला। एव जिल्लाहन एटव मधान एय कटत। হস্তে: ধরি সম্বেড করিল বদিবারে।। তদন্তরে নারারণ কম্ ভুতনাথে। . खंळाल य कांभी বস্তু গাইল ভোমা হৈতে।। চতুর্মুখ বেদবেস্ত। নিক-টেতে যায়। হরে প্রণমিব বলি জতি ন্যুতায়।। হস্তেধরি ত্রিপুরারী এক্ষে निरुष्धिमः। हर्षुर्स्य द्वि बिल्लोहम निष्यान कृतिमः॥ खन्ना एव कृट्य एन एन एन ্জগৎপতি। ভূমিত কারণ কর্ত্তা সকলের গতি।। তব কর্ম্ম নিদ্ধ লাগি আসি কাশীপুরে। শক্তি মোর নাহি প্রভু কার্য্য সাবিবারে ॥ অতিশয় লজ্জান্মিত হুইল অশ্বরে। কি বলিয়া দেখা দিব প্রভুর গোচরে।। প্রভুর নিকটে নাহি ংযাই তেকারণে। তব ধানি করি থাকি অবিমুক্ত স্থানে।। আর এক 'নিবেদন, আছমে আমার। কাশীবাস হইতেছে সর্বা সরাৎসার।। কাশী ্লাভ হৈলে কেবা যায় অন্য স্থানে। বিশেষতঃ এক আঞ্চা দিয়াছ আপনে। किवमारम পাপাচার यथरन मिथिरक। ताका रेश्टक ज्यकरगरक खनाया कतित्व ॥ काशीटक आंत्रिया जात अथर्म ना प्रिथि । किंबारशटक तांका टेश्टक ভাহাকে উপেকি। বিশেষতঃ দিবদাস হয়ত ত্রাহ্মণ। কিমতে করিব कांचि लाका दिश्यन ।। जूकेनाथ करह लका अन्ह तहन । मरनामरथा कृथ ক্রা ত্র অকারণ।। দিবদাস রাজা সেই অতি তেজোমান। কাশীমধ্যে

দেবভাকে নাহি দেয় স্থান।। কোনদেব না রাখিল জাপন রাজ্যতে। জন্মি জল বায়ু সূজে জাপন তেজেতে।। তাহার রাজ্যেতে বাস করি নিরস্তর । দশ অশ্বমেধ ভুগি করিলা সত্ত্র।। বিশেষতঃ শিব**লিক্স** করিয়া স্থাপকে। কাশীপুরে ছিলে তৃমি ধ্যানেতে মননে।। তোমার পুণ্যের কলে কাশী পাই আমি। ইহাতে যে মনোছঃখ না ভাবিহ ভুমি॥ ত্রন্ধা প্রতি পঞ্চান্ত কহে বসিবারে। চত্নাুখ বসিলেন ছরিষ অন্তরে।। তদপরে গলানন করিয়া গমন। পিতার চরণ ধূলি করিল ধারণ।। প্রণাম করিয়া দেব সমুধে দাণ্ডার। গাত্রোত্মান করি শিব আলিঙ্গন তার।। আশীর্কাদ করেন মক্তকে হাত দিয়া। শির্ঘাণ লইল শিব সন্তুষ্ট হইয়া।। গ**জানন প্রতি শিব কছেন** বচন। তোমা হৈতে লাভ হৈল কাশী হারাপন।। পিতার কার্য্য যে তুনি:-করিলে উদ্ধার। তোমা সম মম প্রিয় নাহিদেখি আর।। **তদপরে সুর্য্য** দেব আসি প্রণমিল। বছবিধ ভূতনাথে স্তৃতি যে করিল।। ম**ন্দর ইইতে** প্রভো আসি কাশীপুরে। প্রভু কার্য্য বাধন না পারি কবিবারে।। দ্বাদশ যে মূর্ত্তি ধরিয়াছি কাশী পুরে। দিবদাস অধর্মা না পাই দেখিবারে। শিব কহে আমি ভুষ্ট আছি যে তোমারে। কি কারণে ছঃখ ভুমি করছ জ্**ড়**য়ে<del>।</del>। গণের। প্রভৃতি আর যতেক যোগিনী। শিবে প্রণমিল সবে িস্তেডে মলিনী। বর্বেশ্বর বে নকলে কুপাদুটো চায়। চকে হেরি মহাদেব বৃদি বারে কয়। শঙ্করের বামদিগে বিঞ্বসাইল। বেদবেতা চতুমুখ দক্ষিণে বিলি।। কাশীপুরে গজানন আর নারায়ণ। বছবিধ করিয়াছে মায়া প্রকা শন।। এসকল কথা পুর্বে পক্ষী মুখে শুনি। বিষ্ণু গলানন বড় ভুষী খূল। পাণি।। হেনকালে গোলোক হইতে আচ্মিতে। পঞ্চ যে কলিলা ধেনু আসিল স্বরিতে।।

### -----

## अथ किश्न ठीर्थ कथन।।

পরার। স্থনন্দা স্থানা যে স্থানীলা ধেনু আরে। স্রভি কলিলা খেনু স্থ লের সার।। পঞ্চন কপিলা শিব অত্যেতে দাণ্ডায়। দৃষ্ট করে মহাদেব বছত কুপার।। পঞ্চ কপিলার ছাল ধারা পাত হয়। ক্রমে ক্রমে জুল ধার। বৃদ্ধি অভিশয়।। সকলে দেখিয়া অভি মনোহর হৈল। পরিসার সহ শিবি দর্শন করিল।। কপিলাধেমুর ছুলে হয় সরোবর। শিব কহে এই তীর্থ অভি

পুণা কর।। কপিলা ধারেতে ভীর্থ করিল আখ্যান। শিব আঞ্চা ক্রমে সবে कांत्रलम स्रोम ।। बका विकू मरश्यत आपि य एपवछा। स्रोम आपि किया সবে করিলেন ভথা।। হেনকালে পিতৃলোক আসিল ভথায়। অগ্নিস্বস্তা आंपि कति नशक्ति दश ।। छादा एमथि एमयगटन दर्भगामि करत । जुख टेहता পিভূলোক বলে মহেশবে।। এই তীর্থে আমা সতার বড় তথ্য হয়। সদা বিরাজয় ভীর্থ শুন দয়াময়।। তথাস্ত বলিয়া শিবকৈল অক্সীকার। বিধি বিষ্ণু সম্মোধিয়া বলে পুনর্কার।। শুন ত্রদ্ধা শুন বিষ্ণু শুনহ বচন। এইত किंशिना थाड़ा वर्ड़ कीर्थ इस ॥ यह कीर्थ खाब वामि राक्षत कत्र ॥ जात পিতৃলোকের অক্ষর ভৃত্তি ইয়। অমাবন্ধা সোমনার বুক্ত যে দিবসে। তর্প भौति खोटक कम श्रारष्ट्रम विर्भारम्।। अलग्न काटलर्ट मकटलर्ट कम् इस् । क्षकशांटक अक्षिमित कल नाहि करा।। नदा श्रुक्रतानि कीटर्श शिक्षमान করে। ভার শতগুণে কল এই তীর্থেবরে।। বিধি বিফু আদি দেব আমি সর্বদায় : ফর্ড আদি ভার্য নত উদিত তথায়।। পৃথিবীর মধ্যে দেখ তীর্থ আছে যত। এই ভীর্ষে অক্ষাতে স্ইবে মিলিত।। আআঘাতি গর্বানে মরে শ্লেই অন। অপমূত্য নানা রূপে হয়ত নিধন।। উদ্দেশেতে সে সবের পিগুদান করে। অক্ষর যে স্বর্গ হয় কহিল তোমারে।। গোড়স্বর্ণ আদি দান যে জন করর। কপিল্ধারা ভীর্থে অক্ষয় স্ব হয়। এই ভীর্থ নাম যাহা হৈল বিস্তারিত। বিধি বিষ্ণু আদি দেব শুনহ নিশ্চিত।। মধুঞাবা ঘৃত প্রধা পিতৃ ভীর্থ স্থার। গদাধর তীর্থ স্থার ব্রহ্মতীর্থ সার।। রুষধেন্ধ ফ্রীর নীর ধারা সুবী গুণি। কণিলধারা শিব গয়া এইত বাধানি।। এই নাম শ্রব ণাদি করে যেই জন। তাভার পুণোর কথা হয় অগণন।। বরুণার উত্তরেতে কাশীর প্রান্তর। যে স্থানেতে অবস্থিত হৈল দিগমর।। সেই স্থানে কপিল ধারা ভীর্থ যে হইল। কপিলেশ শিবলিঞ্ক স্থাপন করিল।। বিজয় নামেতে র্থ ক্রিয়া সম্ভন। র্থ লইয়া নন্দী তথাকরিল গমন।। দেখিতে সুন্দর রুধ অতি সুশোভন। মণি মুক্তা প্রবালেতে রথের সাজন। সিংহ অতী রুষ অষ্ট হন্তী অষ্ট আর। অশ্ব অষ্ট বলবন্ত অত্যন্ত চুর্ন্দার।। এই সব হইয়াছে वर्षरक स्थाबन। विद्यारकत मात्रि तथ इस सूमर्गन।। निव करता तथि तथ নক্ষী যোজহাতে।। বিনম্ন করিয়া রহে হরের সাক্ষেতে।। রথ দেখি ভুষ্ঠ ভাতি হইল শস্কর। নারামণ হল্ডে ধরি উঠিল সম্বর।। বিধি বিশু লইয়া भिव तृत्थटर छेठिन। व:मिक्टिक मात्राञ्चरण सङ्घ तनाइन।। कक्तिरणटक अकारक वर्गान मदर्थत । कांगी भूदत हटल शिव श्रमुझ व्यस्त ॥ अमुखिन्

काछि (मत छलिल मरक्रात् । सूचिक वांच्या इतन (मत अंगश्रक्त ॥ मध्यक्ति शर्यम मुख्क जारतारुगे। निया काम जस्मानत भत्र धात्रमा। कृष्यांत तस्त्रम व्यक्तिकारि वर्षान्तन । हिन्दलक निव मदक मध्दत वाश्रम । अपनश्रत पूर्वभरत হইয়া বেফিত। শোভার নাহিক সীমা কহনে পডুত।। রাদ্য কোলাছনে তথা किছু नाहि शुनि। विधित इहेन कर्न क्रिक्स अञ्चलनि॥ माठ माउ विमान ধরি চামর চুলায়। অপ্ররীরা নৃষ্য করে কিন্নরে গীত গান। কাশীপুর নিবাসী আছেন যত জন। স্থানেস্থানে করে সবে মঙ্গলাচরণ।। নাঞ্চর নাম बीटक मञ्जल ध्वनिकृद्य । द्वनकाटल भिवत्य व्यट्वटभामगदत ॥ कालीलाटक অতি মুখী দেব পঞ্চানন। বৰ্থ গতি খৰ্কস্থল করেন জ্রমণ।। কাশীপুরবারী खी शुक्रव नर्वकत। रक्षमिन कारस शांत्र मिटवर मर्गन।। कानत्क रहेन का स्र ( क्षेत्र मांगरत । गर्स कर्ड। गर्स बरन क्रशांतम करत ।। कामी शुरत स्थारनर যতেক ব্রাহ্মণ। সকলে করিয়াছিল নিয়ম ধারণ । শুনিতে পাইল অধিষ্ঠান विट्यं अत । मिरवत मर्नरन मरव ६ निन मचत ॥ इ इवर्ष अधारित्रत अधुर्व ৰুধন। মন্দর হইতে শিবের কাশী আগমন।। ক্রপিলাধারা ভীর্ধের জ্ঞতি भुगा कथा। भरते किया आवग (य कत्र स मर्कथा।। **छाहा**त भूत्यात कथा क्ट्रा ना यात्र । अवगार मार सर्व अखकाता शांस ॥

### 

## ज्यथ (यांशी मर्स्सभत कथन।

পরার। অগস্তা বলেন শুন পার্কারী নন্দন। কাশী আদি কি কর্মা করিল ব্রিলোচন।। ক্ষম্ম বলে শুন লোপায়তা প্রাণেশর। অমিরা সকল পূরী দেখিল শঙ্কর।। যোগী সব্য শুনি গুহা মধ্যে থান করে। অকলাং ভাহাকে দেখিল মহেশরে।। যে দিবসে মহেশের মক্ষরে গমন। সে দিবসে করিলেক নিরম গ্রহণ।। যে দিবসে কাশীনাথ কাশীতে আদিবে। দেখিরা সাক্ষাতে জল গ্রহণ করিবে।। সে হুড়ান্ত শিব বিলে জন্য নাহি আনে। অভগ্রব প্রথমে আইল সেই স্থানে।। জ্যৈষ্ঠ সাংস শুক্রপক্ষে তিথি চতুর্দ্দশী। সোমবারে অনুরাধা ঘোগে পর্ব ভাসি।। সেই পর্কে মহাযাগ্রা করিবে তথার। ক্যৈষ্ঠ স্থান বিল-ভাকে জাত্রব গার। ক্যৈষ্ঠ বাম লিক্ষা স্থান্ত ভথাতে। আবিভুক্ত হইলেক জোত্রব গার। ক্যৈষ্ঠ গোরী আধি তথা হইল উনার। স্লান ভর্লণে পি ভ্রমের হুড়া ইলার্ড গোরী আধি ভর্মির জাপনি হইল। ক্যার্ডেশ্বর নিকটে সাধিকে বাঞ্ছা ফল।। জোর্ড গারী আধি

িবিফিসী রাত্র জাগরণ। জৈষ্ঠ। গৌরী পুজা করি দৌভাগ্য ভাজন।। নিবাস করিল তথা জগতি নিবাস। হইল নিবাসেশ্ব লিজের প্রকাশ।। পুজিয়া নিবাসেশ্বর সম্পত্তি স্থাব ৷ কভ্য ভোগ্য হতে পরে হইকে নিস্তার জ্যৈষ্ঠ স্থানে মৃত মধু দিয়া প্রান্ধ করে। ভবের যন্ত্রণা হৈতে পিতৃগণ ভরে॥ প্রথানে কাশীতে পুজিবে জৈতেখন। লৈন্ডা গৌরী পুজি জনা পুজে তার পর । নন্দিকে ডাকিয়া তথা বলে বিশেশর। গুড়াসখো প্রবেশ করহ নন্দী-বর।। গুরুষিধে। ভক্ত মোর যোগী পরা নাম। বিরকাল তথাগা করুরে অনুপাম।। যে দিবদে হৈল মোর মক্ষরে গমন। ভদবণি নিরাহার আছেন खांचार !! धत लीला क्यल लहेत्र। यांच कथा। এहकल न्मर्का कात प्रिट्रिक বাথা।। কমল লইয়া করে নক্ষ্য তথ্য গেল। গ্রান করে যোগীগরা দেখিতে পাইল। কমল স্প্রেডি ডার ১ইল (৮৩ন। গুলা হৈতে আনিলেক মথা ক্রিলোচন। জাখি খেলি একে দুনি সাক্ষাতে স্কল্পর। শ্রুরী বসিয়া বাসে অতি মনোজ্য দ ভূমিতে পড়িয়া ধনি করে নমস্কার! পরে নানামতে স্তব করে চমনকার । উদ্ধানতি শিব শিব বলি মৃত্য করে। ভাবেতে হইয়া ছুই ৰৱ দিল ভালে। যোগী সংশ্লেষ্ট লিঙ্গ তোমাৰ স্থাপিত। মতত থাকিব আমি ভার সাহাত্ত। নির্বাণ সাধক যোগশাল্ল ভোষায় দিল। সকল ब्यांशीत भट्या क्षां<sup>515</sup>। क्षिल । यांग विना त्रभूम क्षानित नितरम्य। व्यामात अगारम पुक्ति वाकेरवक स्थय ।। नक्ती मम नकी कृष्टि स्थयन व्या-মার। জমনি হইবে জুমি পুজা দেনভার। তপোদান এত আদি আছে नामा भक्त। का देश्टक कहिटल कृषि निष्ठय निष्ठक । कामहत्क ना प्रिय অল গ্রহণ ন। হয়। স্কল নিয়ম হৈতে এট অভিশয়।। অভএব থাক মোর চরণের গাংশে। ঘটিবে নিকাণ শ্বাক্তি যোগের অভ্যানে।। যোগী সর্কেশ্বর লিঞ্জুছভি কাশীতে। মেবিলে বংসরতায় থেকে দিন্ধি ভাতে।। যোগী সব্য হুহাতে করিয়া যোগাভ্যাস। ষষ্ঠমানে বেলিফিছি হইবে প্রকাশ।। যোগী সর্ক্ষেত্রলিঞ্ ক্রিংত দেবিবে। যোগী সব্য গুলাপরে দর্শন করিবে জ্যৈষ্ঠক্ষেত্রে করাইয়া যেশির ভোগন। কোটি জোজাখল ঘটে প্রতি এক क्रम।। योशीमदर्सभव अध देश्य कलिकादन। महिषि थाकिन छथा छव তপোবলে। ভূমি যে করিলা স্তৃতি যোগসিদ্ধকর। গাঠ করে যেই জনে নিস্তার সম্বর।। তেন বর দিয়া শিব দেখিবারে পায়। ক্ষেত্রবাসী দ্বিন্ধ সব আনিছে ভথায়।। ভক্তিভাবে এবণ করিয়া বে আখান। নিপাপী হইয়া ্ৰর লভেন নির্বাণ।। শুষিকানিবাসী সীতানাথ বসু দাস। কাশীখণ্ড ভাষা

করে অতি সুপ্রকাশ। ব্রহ্মানশ্বে ভাবে ব্রহ্মানশ্বের ভাষায় সেগ্যপ্ত হইবা ভাতে ব্রিষ্ঠ অধ্যায়।

### -#81E-

### দশুখাত উপাখ্যান।

প্রার। অগস্তা ক্রেন শুন দেব ষ্ডানন। শিব স্মিধানে গেল সকল ব্রাহ্মা। ভিজ্ঞগণে কি বলিল দেব মহেশ্বরে। ভিজ্ঞগণে কি কহিল প্রভূব গোচরে।। কিব্রপেতে ছিজ সব ছিল নিয়মেতে। রূপা করি কছ দেব শুনি বিস্তারিতে।। কার্ত্তিক কংহন শুন মুনি তপোধন। কাশী হৈতে গেল হর মন্দর্টে যথন ।। মহেশ্বর গমন শুনিয়া দ্বিজ্ঞাণ। নানামটে খেদ করে অরি পঞ্চানন।। শিবের বিচ্ছেদে সবে নিয়ম করিল। অম ফল জল আদি ভক্ষণ ত্যজিল।। যে দিবস কাশীপুরে হর আগমন। সে দিবস ক্রিবেক জন্নাদি গ্রহণ। কাশীবাসী যতেক আছিল দ্বিজগণ। এইত নিয়ম ত্রত করিল ধারণ।। মৃত্তিকা খনন করি সকল ত্রাহ্মণ। তারমধ্যে কন্দ্রহানি করিয়া গ্রহণ।। তাহারে ভক্ষণ করি প্রাণ রক্ষাকরে। সদাকাল ধ্যান त्यार्ग शुटक मरस्थरत।। मधामित्रा मृखिका त्य थनन कविन। करम करम দীর্ঘ এক সরোবর হৈল।। সেই সরোবরে হৈল অতি পুণ্যকর। দণ্ডখ্যাত **छीर्य नाम इहेल मजुत्र।। महाछीर्थ देशल पर्श्वशाल म**द्धानन। स्नान पादन रक कल चारक नित्रखत्।। त्यहे मरतावत हजुम्मार्ट्स विकास । सनारमहरू শিবলিঞ্চ করিল স্থাপন।। শিবলিঞ্চ পূজা শত রুদ্রী জপ আর। পরুল लाकारण हिला এই रावश्त ।। महारनव जागमन अनि विकाश। तकन ব্রাক্ষণ হর্ষে করিছে গমন।। চক্রকুণ্ড হৈতে পঞ্চ সহত্র ভ্রাহ্মণ। শিবের निकटि जटव कदिल अभग।। अगुछ खाक्तश कीर्थभन्माकिनेः देश्टक। निव সন্নিধানে গেল শীঘ্র হর্ষ চিতে ।। হংসভীর্থ হৈতে গেল অযুত্ত দ্বিজ্ঞবর। ছুর্মাসাতীর্থের একশত যে সম্বর।। মৎসাতীর্থের যে পঞ্চশত ছিজ্প। কপাল মোচন হৈতে স্থ্য শতজন।। শুন মোচনের দ্বিজ পঞ্চশত হয়। বৈতরণী ভীথে পঞ্দহত্র যে রয়।। পৃথুদক কুণ্ডে ত্রয়োদশা শত জন। অপ্সর। কুণ্ড হৈতে দ্বিশত যে আদাণ।। দ্বিশত যে মেনকাকুণ্ডের দ্বিগণ। উর্বাদী কুণ্ডের দ্বাদশ শত ব্রাহ্মণ।। বৈবস্বত কুণ্ড হৈতে পঞ্চ সহস্রেক গন্ধকৃত্তের উনত্রিংশত তপস্থীক।। রুষতীর্থ হৈতে আইনে দ্বিজ ষ্ঠাশত

হয়। পিশাচ মোচন ভীংগ সগুশত যায়।। পিতৃকুঞ্জের একগত একচর্ষ্য षाति। धुवठीर्थ रेहर वधैने ए एडकावानि॥ अक्तावक छीर्य रेहरक ত্রিশত যে দ্বিজ। মান্স ভীর্থ হৈতে দ্বিশত মহা তেজ।। বাসুকী তীর্থের শত সহস্র ব্রাহ্মণ। জানকীকুণ্ডের একশত দ্বিজ্ঞগণ।। গৌতম কুণ্ডের মুনিবর নবশত। তুর্গ্রসংহার তীর্গের আইসে দশশত।। অসীগঙ্গাতীর্থ ষে পর্যান্ত ভিজ্ঞাণ। অন্তাদেশ সহত্র পঞ্চণত পঞ্চল।। এই সব তীর্থ হৈতে অনেক ব্রাহ্মণ। শুদ্ধকলেবর সঙ্গ করিল গমন।। বিরূপাক্ষ সন্ধিধানে ভিজ্ঞপ মিলি। মঞ্চলাচরণ করে জয় শিব বলি।। আতব তণ্ড,ল দুর্কা शुष्टा रुक्त कति। श्रक्ति श्रक्ति वत्त गत महारमत रपति॥ विस्नान ব্দাখাসিয়া সদানক্ষ কর। তোমবাত এই ভানে কুশলে আছয়।। দ্বি জগণ প্রণাম করিয়। নিবেদয়। তব জাদর্শনে সবে মৃত্যু প্রায় ইম্ন।। কাশীবাস বলি প্রাণ আছেন ধারণ। যতত যে চিস্তা করি তব আগমন।। ভূমি প্রভো সর্ব্ধ কর্ত্ত। ত্রিজগত পতি। তোমা বিনে আমা সবার অন্য নাহি প্রতি এই রূপে বছুক্তি দিলগণ করে। দিলগণ প্রতি তৃষ্ট হইল শস্করে।। দিল সব যে নিয়ম করিল ধারণ। অন্তর্যামী সর্ব-ভত্ত ভাত পঞ্চানৰ।। इंदे देश्त अमानक यव विद्य करा मत्नांगक यत वह यादा है का इसा। দ্বিদ্বাণ বলে শুন পের মহেশ্র। এইবর চাহিমোরা প্রভুর গোচর।। কাশী পুরী স্থান প্রস্তু করু নাছাভিবে। অনপুর্ণা গহ সদা বিরাজ করিবে।। কাশীতে ব্রাহ্মণ শাপ ন। হইবে কন্তু। রূপাকরি এইবর ছিজে দেহ প্রস্তু। ভবপাদপ্রেম সদাকাল রহেমন। ভিজেযোগ বিচলিত নছে কদাচন।। विक वाः अठि क्**छे** देश्लमदश्यदतः मदनामीछ वत्रमान कदत विवद्दत ॥ ভদপরে সহাদেবকুহে দ্বিজগণে। ভাশীরমাহাত্ম সকেন্দ্রন সাগধানে । ফাশী হয় পাপ নাশী স্থানে সর্ক্ষার। কাশীপুরে নাহিক যমের অধিকার।। অবি মুক্তে সদা বাস মেই নর করে। গর্ত্তবাস ছঃখ তার যায় নিরস্তরে। বারা-থসী সর্বান করে যেই জীব। গহুত্র **জন্মের পাপক্ষর করে শিব।। জাদন্দ** कांगटन धृङ्ग (यह मीटनत इस। मृजुाक्षत्र इस त्रहे नाहिक मश्यम् ॥ न्यात কহি দ্বিজগণ শুন সর্কসারে। ভাবিমুক্তে শিবলিঞ্চ স্থাপিত যে করে।। ভাহার অনস্ত ফল কথন না হায়। সেই নর গব্ধ বাস কদাচ না পায়।। অবিমৃক্ত वारम कीव यनि शांश करत । शिभांक स्थानीटक आंखं धोटक कांभीशृदत्त । বছ ক্ষ পাইয়া ভারা পরে মুক্ত হয়। কহিলান সর্বসার শুনহ মিশ্চয়।। ষ্ণ্ড্যাট ভীথ যেই মাহাজা শুনম। তার সর্ল পাপ ক্ষম হয়ত নিশ্চর।। প্রস্থাক্রমে সদা পাঠ যেই জনে করয়। অবিষ্ঠতে ভার বাস খণ্ডন না হয়।। চতুঃ যঠি অধ্যা কথা চমৎকার অভি। সমাপ্ত খইল সব শুন শুদ্ধ মতি।।

পয়ার। জিজানে অগস্ত্য মুনি পার্মভী নম্মনে। জ্যৈতেশ্র শিবলিস আছে কোন স্থানে।। বিশেষ শুনিতে ইচ্ছা হৈয়াছে আমার। ক্লপাকরি কহু দেব করিয়া বিস্তার ।। কার্ত্তিক কহেন শুস মুনি তপোধন। বিস্তারিত করি কহি শুন বিবরণ।। জৈতে শ্বর শিবলিক না হয় দির্ণয়। তার মধ্যেতে পঞ্চসহত্র প্রকাশর। পরাসর লিজ জৈতেখন উত্তরেতে। দর্শননির্মালচিত্ত হয় অচিরাতে।। মার্কণ্ডেশ্বরের পূজা করে যেই নরে। মহাদেব ভার এতি সদম অন্তরে।। ভূঞ নারায়ণ শিবলিজ চমৎকার। পুজিলে সকল সিদ্ধি কহি লাম সার।। জাবালেশ্বর লিঙ্গ আছেন তথায়। তাহার দর্শনেতে তুর্গতি नाहि इम्र ।। आमिरछाश्वत लिश्न (यवा श्रुका करत । कुर्छ वाधि देहर इकु সেই সব নরে।। তৈরবী ভীষণ নামে বড়ভয়স্করী। কেত্রের ভীষণ সব শীঘ্র নাশ করি।। শঙ্কর তথায় ভাছে জন্ম নন্দীশ্বর। দর্শনেতে ঘুটে কর্মাবদ্ধন কুকর।। তর্ত্বাজেশ্বর লিক লিক নন্দীশ্বর। অরুণী সুস্থির লিক দেখিতে সুন্দর।। লিঙ্গ রাজেশ্বর তথা অভি মনোহর। তাহার দর্শনে রাজ্যেশ্বর হয় নর । কণ্ঠেশ্বর লিক্ষকাত্যায়নেশ্বর আব্র। বামদেবে শ্বর লিক্ষ মৈত্রেশ্বর गात्।। हाटतश्रत निक स्य चार्टम विवाधिक। देवश्रामद्वश्रत निक তথাতে স্থাপিত।। রুচা লিকেশ্বর আর অগ্নি বাসেশ্বর। ধ্রুবেশ্বর বৎ সেশ্বর সর্বাসিদ্ধি তর ।। প্রহলাদেশ্বর শিবলিক মুশোভন। শক্ত প্রয়েশ্বর লিঙ্গ ভার সন্ধিধান। মাঞ্জুকেশ্বর লিঙ্গ র্তীশ্বর হয়। চাবনেশ্বর লিঙ্গ मुम्पत अविभन्न।। कलिन्मरमध्त निक्र मुख्य धरमध्त । এक्रायर महानिक्र प्यादहन विश्वत ॥

# অথ বিছ্যুত কপাল উপাখ্যান।

পরার। আর এক ইতিহাস শুন তপোধন। বিদ্যুত কপাল নাম দৈত্য বিবরণ। প্রহলাদ মাতুল সেইদৈত্য দুরাচার। মহাবলবস্ত হর বড়ই দুর্বার।। মনে মনে চিন্তা করে:রাজ্য করিবে। দেবতার নাশ বিনে সম্ভব না হবে।। দেবতা অসুরে বুদ্ধ উত্তর পক্ষেতে। কখন দেবতা হারে কখন দিলক্ষাক্ষে । জিলাই কলে ক্ষেজার সম্ভ নিধন। এমত উপার দৈকা করিয়ে

চিত্তম।। দেবতার বল হয়্যত দ্বিজ্ঞাণ। তাহার বিনাশ সদা করেন চিত্তন।। তদপরে বিচার করেন চুক্তমভি। কোথা দিলগণ বন্ধ আছে অবস্থিতি।। কাশীপুরে খান করে হিজ বছতর। সন্ধান পাইয়া দৈত্য চলিল সত্ত্ব।। कामीटक याहेशा देवता यात्रा अकामत्र । पिटन पिटन कारनक खान्तान धति খাষ।। গোপনে থাকেন দৈত্য ফিজ নাহি **জানে। দৃষ্টি**মাত্র দ্বিজ ধরি করয়ে উক্ষণে । শিবরাঞ্জ দিনে এক শিবের মন্দিরে। ধ্যান করি শিবপুরা करत फिक्वरत । जोश (पृथि प्रुष्ठे रेम्फा भाषा अकाशिन । विकृष्ठे मुभन अक ব্যান্ত যে হটল।। ত্বিজবরে ভক্ষিবারে যায় মন্দিরেতে। জন্তর্যামী সদানন্দ জানিল ছরিতে ৷ ভক্ত বংগল শিব অতি দয়াময় ৷ শিবলিক হৈতে এক কল্ডকপ হয়। মারা বাছি ধরিষা যে চাপরে কক্ষেতে। শঙ্কটে পভিন্না भक्त करत विश्वीत्छ। भक्तस्थिति विष्याग शाल तारे काता। मन्मित्व तार्थस्य জাছে দেব ত্রিলোচনে।। স্তব করেসদাশিবে সব ভিন্সবর। সদয় হইয়া দিলে কহেন শক্ষর।। মম ধান গেইজন করে নিরস্তর। তাকে রক্ষা করি আমি শুনহ সহব !। তদপরে মহাদেব বাছি প্রাণে মারি। শুক্ত মিত্র পক্ষে শিব সমাদুর। করি। রূপা করি বাাত্রেশর হৈয়া দর্যানয়। জৈতেশর নিক টেতে লিক্সকপে রয়।। যেই জনে ব্যাছেশ্বর লিক্সার্চন করে। জনায়াশে সেই জন সর্বা পাপে তরে ।। তদস্তরে মহাদেব অন্তর্ধ্যান হৈল । ছিজগণ আগনার আলমেতে গেল।। কাশীখণ্ডামূত কথা অপুর্ব আখাান। ভক্তি ভাবে শুনে যেই সেই পুণ্যবান।। শঞ্চৰ্ফি অধ্যায় কথা হইল সমাপ্ত। শুদ্ধ। खक तूर्यक्रम मा खाविश हिछ।।

পরার। অগত্য বলেন শুন গিরিজা নক্ষন। কৈটেশ্বরে কি করিল দেব পঞ্চানন । ষড়ানন কংগ্র শুনহ মুনিবর। জৈটেশ্বরে কাশীনাথ থাকে নির স্থর।। আর এক কথা বলি শুন তপোধন। হিমালয় রাজার যে অপুর্বি কথন।।

### -

অথ হিমালর প্রতি মেনকার কথন শৈলেশ্বর উপাধ্যান।

ত্রিপদী। একদিন হিমালয়,মেনকা তুঃবিভাশয়,রোদন করেন বহুতর বহুদিন গত হৈল, গৌরী তত্ম না পাইল, কি হইল ভাবেন জন্তর। জা-মাত! ভিক্ষুক হয়, গৌরীকে লইয়া যাম, গৌরী মোর জাছেন কিমতে।

## कामीश्रेष्ठ।

জামভামোর যেমন,ধুতুরা ভাক ডকণ,সদা কাল বাহন হবেতে।। পরিধান वाशि ছान, भारत हो एवं माल, औं थि मना पुन पून करत । उन्य नव মাথে অঙ্গে, ভুতগণ जला সঙ্গে, भागोदमध्य राज निवसदा ।। जिका सुवि ককোকরি, ভিক্ষাকরে ত্রিপুরারী, ভাহাতে বে<sup>®</sup>দর পোন্। শুনিরাহি लाक मूर्य, मना भोती थारक फुःर्य, मन नर्ह कि कति ज्यन ॥ तिक्रि রাবে ডাকি রাণী, সকরণে কহে বাণী, পাবণি ভোমার ভরু মর। কভ श्रुण श्रुक्त करल, तोही धन शाह कारल, जुनि कारल देवहा किन्द्र।। यञ्चिम गठ देवल, भोती उद्य मा शाहेल, मरवाम विद्दान आग यात्र। भौती cक विमाध मिटल, श्रूनऋखु मा कतिरल, शायारगटळ वाश्विरल अवस्था নোণার কমল গৌরী, ভার ভত্ত্ব নাহি করি, কিমতে ধৈরজ ধরে মার। ভূমি ত किंग कार्ति, जनारव शाबान मूर्जि, कि कतिय मा एमधि जेशामा। शृहं কর্ম যত করি, উমা না দেখিয়া মরি, সংবাদ পাইব কিন্ধপেতে। একপো মেনক। কান্দে, কেশ পাশ নাহি বান্ধে, চিত্ত ছির নছে কোন মতে।। क्षम धटए शिविवाक, कार्यक मा मटेश गाक, मिटक पूमि कवह अपन । কাশীপুরে আছে হর, তথাতে চল সম্বন্ধ উমার করিতে অস্বেদ্ধ ।। রাণী বাকা শুনি দৈল, অভিশয় ছুঃখী হৈল, কাহে গিরি মেনকার প্রক্রি। হিমালয় কতে বাণী, জঃখ না ভাবিহ রাণী, আমি তথা চলি শীন্তগতি।। कम्भारत रेमलताक, कर्णक ना करत ताक, छांक्षारतरक कतिल श्रममें। नीलकां ह जानि यक, अवालानि नानायक, लहेल बाका विधित विमा। ভারে ভারে রতু লয়, শৈলরাজ অগ্রে যায়, ফাশীর নিকটে উপনীতা तुष्ट्रापि निर्मिष्ठ भूती, नम् त्थर्ष्ट मार्थ शिति, अस्तत्य देश्म वमक्टि। ছাট্টালিক। শত শত, মণি মুক্তা বিরাকিত, মানারত্বে গ্রান্থিত নকল। ধ্বৰ পতাকা নিশান, হৈতেছে উত্ভীয়মান, নানা শব্দে বাদ্য কোলাহল। त्मरथे अव विश्वींक, रेनलवाका मत्म खीक, ना क्रांमि कांशव भूती इतन। সন্ধান করিয়া ভার, ভবে হবে অগ্রসার, ভদপরে পুরে প্রবেশিবে॥

भन्नोत । मत्मरण जिन्नि जिन्नि दिशानिय। कारत बिज्ञानिय अहै भूती कात हम।। (इनकारण अक विज्ञ कशरहेत विरम। जिन्नोक देहन यथा रेमन ताल देवरम।। विज्ञ विरम्भ कतिया गिति कम। ममुद्रथ(छ भूती कात मतमन इत्र।। विज्ञ करह जब हिन्न मिनि तीका गामि। कान

1 4 7 5

কালে তুমি নাহি আইন হেথায়।। একি জনন্তুৰ কথা তব মুখে শুনি। এই পুরী শিবের যে হয় রাজধানী।। কাশীপুরী এই হয় শুন মতিমান। अहेन्हादन महादम्य नमा व्यथिकान ।। हिमालव कना। कात्र नाम त्य शास्त्रकी । সদা বিরাক্ষিত শিব ভাহার সংহতি॥ জামাতা বৈতব দেখি শুনি হিমালর ছুঃখ দূর গেল অঞ্চ পুলকিত ময়। ইন্দ্রের ঐশ্বর্য্য তার তুলা নাহি হব। দেখিয়া যে কাশীপুরী জুংখ গেল সব।। ধন কিছু আনিছিলাম করি বছ युष्ठ । क्ला कामाजात श्रीक मिन किना तुष्ठ ।। (य अभर्या इहेन्नाटक मिनिनाटत शाहै। जल्म तुषु कि अकादा मिव मिव ठां खि।। अठविन रेमन शक्षममी ভীবে যার। স্লান দান সব কর্মা করিয়া তথার।। হিমালেরে যে সকল রত্ত ক্ষানিছিল। দণ্ডেশ্বর শিৰলিক নিকটে রাখিল।। তদন্তরে শৈলরাকা গিয়া निकालम । कामाका देवज्य गव स्मनकादक कम ।। शसंख्वांगीरक ताका ডাকিয়া আনিল। মহাবলবস্ত তারা রাজ অপ্রে আইল।। শত শত লোক লইয়া শৈল যে চলিল। পুনর্ঝার কাশীপুরে উপনীত হৈল। একরাত্র মধ্যে রভুপরী 👣 নির্মাল। তার মধ্যে নানারত্বে মন্দির করিল।। মণিযুক্তা প্রবালেতে করিল নিশ্মাণ। কুন্দর হইল পুরী অতি শোভমান।। অতি রম্য স্থান হৈল দেখিতে সুন্দর। তাহার নিকটে করে এক সরোবর।। সরোবর চতুপান্ধে নামাবিধ মণি। বিরাজিত নানা পক্ষী করে মহা ধ্বনি॥ রত্তের मिम्द्रि निर्वतिक एर अभिन। निर्वायत भारे निक काथान कतिन। একবাত মধ্যে সব ক্রিল সমাপন। নিজ প্রায়ে শৈলরাল করিল গমন।। ব্রজনী প্রভাতে দেখি নবা রতুপুরী। কাশীর রক্ষক গেল শিবের সন্থরি।। শীপ্র করি সংবাদ যেশিবে জানাইল। রজনীতে এক পুরী কেবা নির্মাইল রত্ত্তে নির্মিত পুরী অতি সুশোভন। তার মধ্যে মন্দিরেতে শিবের क्वालन।। मीलकास स्वाकास मिल्ल गांधन। भूती (मिथ वमरकात एटन খলপাণি।। অন্তর্বামী সদানন্দ সকল জানেন। দুত মুখে শুনি অনুপূর্ণাকে বলেন।। শুন প্রিয়ে কিবা শুনি তুত মুখে বার্তা। তুইজনে শীস্ত্র করি চলি-लन कार्डा ।। এতবলি হরগৌরী नच्दत চলিল। পুরীর নিকটে গিয়া छिश्चिक देश्त । असे निका सिथि शत्राती हम कात । श्रीत मधारक <u>ाल (मश्रिष्ठ विस्त्रात ।। अन्नश्रुनी महत्र किंद्र एमंब अश्रताती । कारम कारम</u> ভ্ৰমণ করিয়া দেখে পুরী।। চিত্তেতে বিচিত্ত মণি সাণিকা প্রবালে। হর-भीदी दिश्वता इहेल कुकुहल।। मिलरद्राक रेमलम्ब निरमद काशन। भागताज नाम जाटक मिलादि निर्धन।। शार्सकी करहन श्रेष्ट्र किति निर्दरन কে করিল এই পুরী-অভি মুশোতন। যদবিধি দৈবিরাছি রত্মর পুরী।
তালা স্থানে মন নহে শুন ত্রিপুরারী।। ভূতনাথ ভবিষ্যতি ভূত বর্ত্তমার্ম।
তাজবামি সদানকা সব হৈল জান।। তত্রাপিই মন্দিরের লিখন পঠিয়া।
পার্মতীকে বলে হর হর্ষমুক্ত হৈয়।। তব পিতা শৈলরাজ পুরী এই হয়।
শৈলেশ্বর শিবলিক স্থাপিত করয়।। শুনি তৃষ্ঠ হৈল বড় পর্মত-নন্দিনী।
তাতি রম্য স্থান এই শুন প্লপাণি।। শিব কছে মম বাক্য শুন বরাননে।
পুরী দেখি বড় ভূফ হইয়াছি মনে।। ভক্তিভাবে করে শৈল লিকের
স্থাপন। এই লিক আমার হবে সদা বিরাক্ষন।। অমপুর্ণা সম্বোধিয়া কছে
পঞ্চাননে। তব পিতা শৈলরাজ বড় পুণাবানে। শৈলেশ্বর শিবলিক অতি
মনোহর। এই স্থানে হইলেক অতি পুণাকর।। শৈলেশ্বর শিবলিক পুতে
যেই জন। আনায়াসে মুক্তি তার নাহিক খণ্ডন।। শৈলেশ্বর শিবলিক পুতে
দেব পঞ্চানন। অমপুর্ণা সহ প্রভু করিছে ভ্রমণ।। ভ্রমণ করিতে উপনীত
দণ্ডেশ্বরে। তদপরে শুন মুনি প্রসক্ষ অস্তরে।। ছয় বর্ষ অধ্যার যে অপুর্ব

### অধ রত্নেশ্বর উপাখ্যান।

পয়ার। য়ড়ানন কছেন জগন্তা মূনিবরে। আশ্চর্যা জাধ্যান কছি তোমার গোচরে। পুর্বে গিরিরাজ যত রত্ন আনি ছিল। অশ্প রত্ন বলি শিব জরো নাহি দিল।। সেই পরা রত্ন দগুপাণির জরোডে। রাখিলেন শৈলরাজ পরম ভক্তিতে।। শিবলিপ হৈল সেই সকল রত্নেতে। দেখিতে সুন্দর বড় জতি প্রথালিতে।। শৈলেশর হৈতে শিব গোরীর সহিত। ভামিতে ভামিতে দোঁহে তথা উপস্থিত।। অতি মনোহর লিক প্রকাশিত হয়। পাতাল পর্যান্ত লিক মণি জ্যোতির্মার।। শৈল মুতা ভক্তিশ্বরি জিজ্ঞানে শল্পরে। কি বুপেতে রত্নলিক কহিবে জামারে। শুনিরা পৌরীর থাকা দেব ত্রিপুরারী। মুখে হাসি মৃত্বভামী কহেন বিস্তারি।। তব পিতা হিমালয় ভোমার লাগিয়া। রত্ন কিছু আনি ছিল বত্ন যে করিয়া।। কাশীর সম্পত্তি সব দেখিয়া নয়নে। জাপনে জানিত রত্ন করি জম্পা জানে।। তোমাকে না দিয়া রত্ন ও স্থানে রাখিল। সে সব রত্নেতে দেখা শিবলিক হৈল।। শুনিরা সম্ভব্ন বড় বড় স্থান স্থানি সাক্ষরী কাহেন পরিরা সম্ভব্নর

বে করম। তদপরে ভূতনাথ পার্মভীকে কন। তব পিতা হিমালয় শুদ্ধ
মন হল। তাহার পুণোতে শিবলিঞ্জ যে উদিত। সন্তুষ্ঠ হই স্থামি দেথিয়া নির্মিত। ভূমি এক কর্ম কর শুন বরাননে। রত্নের মন্দির এক দেহ
এই স্থানে। শিলার মন্দির যে বিস্তার হইবে। হিমালয় কীর্ত্তি সব জগতে
মুখিবে।। শুনিয়া শঙ্করী চিত্তে অভি হর্ষ হৈল। মন্দির করিতে বিশ্বকর্মে
আজা দিল। আভা মাত্র বিশ্বকর্মা করিল নির্মিত। মণি মুক্তা প্রবালেতে
মন্দির রচিত। দেখি পুরী হয়-গৌরী হর্ষ চিত্ত হৈল। রত্নেশ্বর সেই লিঙ্ক
আখান করিল। পরেতে পার্মভী প্রতি বলেন শঙ্করে। সদাকাল আমি
বিয়াজিব রত্নেখরে। ভক্তিভাবে রত্নেশ্বরে যে জন পুলয়। মনোরথ সিদ্ধি
ভার অন্তে মুক্তি হয়। কার্ত্তিক কহেন শুন মুনি তপোধন। রত্নেশ্বর লিঙ্ক
পুকে বন্তুসিজ হন। হর-গৌরী স্থানান্তরে করেন ভ্রমণ। ইতিহাস কথা
কহি শুন বিবরণ।

### -3484-

# অথ কলাবতী কন্যার উপাখ্যান।

পরার। কলাবতী নামে কন্যা পরম সুক্ষরী। ভক্তিভাবে রড়েশ্বর লিক্স পুরুষা করি।। এইমত প্রতি দিন করে গতায়াত। একদিন গৃহে গিয়া মৃত্যু অকশ্বং ॥

পিত্রদী। পুণাবভী কলাবভী, ভক্তি ছিল শিব প্রতি, বমুভ্তি নামেতে গদ্ধনি। ভারগৃহে জন্মাইল, রত্নাবভী নাম কৈল, মুন্দর যে হইল অপুর্বা। দিনে দিনে বৃদ্ধি কনা।, কপে গুণে ইলে ধনা।, পূর্ণ চক্ত জিনি মুথ শোভা বিছাত যে বর্ণ জিনি, পজরাজ গানিধনী, দেখি হয় মুনি মনলোভা।। তিন কন সথী সঙ্গে, ভাছেন পরম রঙ্গে, এক স্থী নাম শশীলেখা। চিত্র-রেখা গুণবভী, সর্বা কর্মে শুদ্ধমতি, ভৃতীয় সথী যে চক্তারেখা।। পূর্ব জন্ম পুণাকলে, রত্নাবভী কুভূহলে, তিন স্থী সঙ্গেতে লইয়া। প্রভাতে উঠিয়া নিতি, কাশী যায় শীল্পতি, রঙ্গেশ্বর পুত্রু হর্ম হর্ম ইহ্যা।। মুনির্মাল গঙ্গাজল, জাতে দিয়া বিল্লুক, সুপদ্ধি চন্দন পুল্প আর । মালা পুল্প বহু রূপ, আর দিল দীপ-ধুপ, নৈবিদ্যাদি নানা উপহার।। ভক্তি ভাবেরশ্বাবভী, রক্ষেরে পুঞ্জে নিভি, ভক্তিযোগ সর্বান ক্রম। ভুক্তি হৈয়া দ্যাময়, রহাবভী প্রতি কয়, বর শহু যথাইছে। হয়।। তব সনগত যাহা, আমিত জানি যে ভাহা,

রুষ্টুড় হবে তব পদ্ম। নাগলোক বাস তার, শিবপুজা যাত্র সায়, সদা करत जामारक मिन्छि॥ द्रश्रवि छन्। अशाम क्रिया इट्रक, मधी गटक शृंदराज भगत । उपहारक मना जादन, कि श्राकादि (मथा १८न, महिम्सी के किसा অনুক্র। রজনী প্রভাত কালে, রড়েড়ে প্রশ্ন ছলে, দেখি প্রাতে রহে মৌন ভাবে। মথী সকলেতে মেলি, প্রস্পর বলাবলি, একি একি দেখি অসম্ভব।। শুন রহাবভী বাণী, কি কারণে মৌন ভুমি, বলহ উপায় করি তারি। রুখাবতী বলে দ্বী, নিশিবোরে স্বপ্ন দেখি, তাহাকে দেখাছ শীত্র করি।। সথী সলে গুণবতী, অসম্ভব কথা অতি, কি প্রকারে নিশ্চয় জানিব। শিবপুজা বেলা হৈল, শীঘ্রগতি কাশী চলা, সেই স্থানে বিস্তার कित्व।। भिवश्रुका नाम एक्ति, अर्थान छे हिल धनी, नथी मदक लाल कामी-পুরে। জাসনাদি যোড়দেতে, নানা উপহার ভাঙে, ভক্তি করি পু**লে** রছে-श्रद्ध ।। यथी गर कवाविकी, अवाम कतिया छिक, भनितादाक अमिकन कदत शांद्रभाषक कृति शांन, देश्ल हिन्दु देशवामान, व्यवद्यद्य विनल मन्द्रत ॥ রহাবতী ভদপরে, স্থীগণে মৃত্র স্বরে, ক্রু-গতে ক্ছেন ব্লা স্থান্থ কথ। देश्य मत्न, देशकी नांशि গরে আবে উপ্যেকরখ স্থীলন । শুনি বাণী भव मथी, **खेशा**त्र नाविक मिथि। खित किन्नू किन्निक मा शास्त्र । विल्लालका चटल भागि, कहिटकटर मुख् आसि, अञ्चावकी समस् मक्टत । शहेरिक कति আমি, স্বৰ্গ মন্ত্য আদি ভূমি, পাভালাদি যত ত্ৰিভূবনে : ভূমি সৰ ক্ৰমে करम, शहि ध्वयं विषामातम, शहित जुमि ध्विरेटन द्वशह्म। शहि योष দেখ তারে, কহিবে সন্থরে সোরে, উপায় করিব তদন্তরে। এতশুনি রত্বাবতী, আনন্দ হইল অভি, চিত্রলেখা চিত্রপট করে ।। ত্রিভূবনে যুচ স্থান প্রটেতে করে লিখন, রন্ধাবটো দকল দেখিল। স্বর্গ মন্ট্য দেখি ধনী, প্রমাদ যে মনে গণি, অন্তরেতে থেকিত হইল।। পরেতে পাতালপুরী, সুক্রী সম্বনে হেরি, ক্রন্মে ক্রন্মে বকলি দেখিল। মণিময় একপুর ভার মধ্যে রম্ব-ছক, মনোহর বলে যে হেরিল।। ভাহাকে দেখিয়া রামা, স্বপ্ন ভাষ মনকামা, लिष्किष्ठ इरेल श्रुवमनी। नथी नव किकानिता, तृषि कर्म निष्का देवल, র হাবতী পরে করে বাণী।। এই দেখ চিক্রচোর, পুরুষ মনোজ মেনুর, ভোমরা যে দেখার সকলে। তদপরে সব স্থা, বছচুতে দেখি স্থী, নিজা-লয় যায় কুতৃহলে।। সুবাছ নামেতে দৈতা, অক্সাৎ আদি মত্যা হরণ कतिल कमाशिश। कमाशिश एमशि देवट्या, हमद्कात देशल हिट्या, निव निव করিছে স্মরণ।। নিজ পরী পাতালেতে, ক্রতগাঁত চলে পথে, কন্যাগণ

রোদন করর। শিরে করাঘাত হানি, বলে রক্ষ খূলপাণি, রাক্ষসের হস্তে প্রাণ যায়।। রম্চুড় শুনি শব্দ, হইল মনেতে ক্ষুর, ধমুর্বাণ লইয়া চলিল एपथि देव**ा स्वाह**रत, कमानन क्रियात, निवश्ती नमन क्रिल॥ রন্ধচ্ভ কোধ করি, দানবেরে অস্ত্রমারি, তৎক্ষণেতে সংহার করিল। তদ-পরে কন্যাগণে, করি ভয় নিবারণে, বিশেষ করিয়া জিজাসিল ॥ ছুই দান বের ভর, চিত্রের পুর্ত্তলী ন্যায়, দাগুটিয়া আছে কন্যাগণ। রহচ্ছ বলে বাণী, চিত্তে ভর তাজ ধনী, দানবেরে করেছি নিধন।। শুনি তাহার वहन, नरव देशल मरहजन, त्रवहूर्ष्ण हिज्ञालाथ। यल। श्वन श्रद्ध मश्रामात्र, দেহ নিজ পরিচয়, সমূহ যে বিপদে তারিলে। আপনার পরিচয়, রছচ্ছ সব কয়, শুনি সলভিজ্ঞ হা রামাবতী। শুন সবসূবদনী, রত্নচূড়কবে বাণী, ভোমরা কে কহ শীত্রগতি।। চিত্র লেখা স্থির মন্তি, সবিনয় কহে चिंह, भृष्ठ् शास्त्र मधूत वहन। शक्तर्य त्यू जृति, छात র্জাবতি, সঙ্গে দখী মোরা তিনজন । নিত্য ঘাই কাশী পুরে, শিবপুঞ্জি त्रात्रश्रदत, शृद्द त्याता कतिव शयन । एहनकाटन अकन्याद, अमा देहन वाकू-घाक, मानद्वत इटल्डटक शकन।। मानद्व लहेन इति, लानिन शाकानश्रुती, कुमि नवात वाँ हाइटल आ। आमता अवना वाला, नाहि कानि छःथ चाला, বিপদেতে তুমি কৈলে ত্রাণ।। তব হৈতে পাই রক্ষা, মোরা চাহি এই जिका, त्रश्चित कि काल लाइत। ताका खनि कनागरन, हुःथ नाहि जाति মনে, বলে শীন্ত কাশী পুরে যাব !৷ অনারাদে তদস্তর, যথা শিব রত্নেশ্বর, ক্রনাগণে আনিল স্থারিত। দেখি রভ্রেশ্বর লিস্ক, হৈল সবে মৌনভঙ্গ্রভ্রেশ্বর দেখি আনন্দিত।।

পরার। কন্যা সব না দেখি গন্ধর্ম রমুভূতি। স্থীসহ কোথা গেল কন্যারত্বতী।। গন্ধর্ম রাজন হৈল বড়ই চিন্তিত। হেনকালে তথাতে নারদ উপস্থিত।। রত্বাবতী হৃত্তাস্থ যে সকল কহিল। অতি শীস্ত্র বমুভূতি কাশীতে চলিল।। পরেতে গন্ধর্ম রাজ গিয়া রত্বেশ্বরে। রত্বাবতী কন্যা দেখি প্রকুল অন্তরে। স্থীগণ সহ তথা বসি রত্বাবতি। রত্বচূড় নামে নাগ তথা অবস্থিত।। রত্বাবতী পিতা দেখি আনন্দিতা হৈল। আদ্য অন্ত বিবরণ পিতাকে বলিল।। সকল হৃত্তান্ত শুনি হর্ম বমুভূতি। রত্বচূড়ে কন্যা দিল করি শাস্ত্রনীতি। রত্বাবতী সঙ্গেছিল স্থা তিন জন। তাবতের পিতা আনে গন্ধর্ম রাজন।। সে সকল কন্যাদান দিল র্মচ্ছে। স্থীসহ

রত্রবিতী প্রমোদ অন্তরে।। তদপরে চারি কনা লইয়া রহচ্ছ। পাতা লেতে গেল শীন্ত আপনার পুর।। বহাবতী আখ্যান যে করেন প্রবেণ। ধন ধান্য সর্বকাল সুখী দেই জন।। সর্ব পাপক্ষয় তার শুল্ক কলেবর। অন্তে মুক্ত হয় তার কহিল বিস্তার।। কাশীখণ্ড পুণাকথা অমৃত ভাষণ। সপ্তম্ফি অধ্যায় যে হইল সমাপণ।।

ইতি শ্রীকাশীরণ্ডে পঞ্চনদ পাদোদক বৈশ্বব তীর্থ

মন্দার হইতে মহাদেবের কাশী আগমন

জৈচেষ্ঠারের ভগবতীর সহিত অব

ক্রিতি দণ্ডখাত তীর্থ শৈলেশরে

রজ্মের শিবলিক্স স্থাপনা

র্থাবতী । আখ্যান

ভাইমঃসর্গঃ।

-3484-

# अथ शकासूरतत छेन।थानि ।

পরার। অগস্তের কছেন শুন পার্ব্বতী নন্দন। ওদপরে কি করিল দেখ পঞ্চানন।। কার্ত্তিক কহেন শুন মুমি মহাশয়। হরগৌরী কাশীপুরে জমণ করম।। হেন কালে কোলাহল কাশীর উত্তরে। ব্যস্ত হৈয়া তথার চলিল মহেশ্বরে। মহিষামুরের পুজ হয় গজাসুর। প্রচণ্ড শরীর তার অভিভয়স্কর নব সহস্র যোজন শরীর ভাহার। কেশজাল মেঘ তুল্য অতি সুবিস্তার।। निश्वादम्दर्भ ममुम त्य करङ्गाल श्टेल । अमानिध क्लिनिध सूच्छित ना श्टेल ॥ কাশীপুরী ত্রাদে বীর বভ়ই ছর্কার। ছুই হল্তে জীব সব করেন আহার॥ সর্বলোক ভীক হৈয়া কোলাহল করে। ডাহা দেখি মহাদেব কুপিত তাস্তরে। ত্রিপুল সারিল শিব অস্তুরের বুকে। মুখে তার রক্ত পড়ে ঝলকে ঝলকে।। ত্রিশূলে গাঁথিয়া গজাস্কুরের শ্রারে। মহাদেব বাম হস্তে উদ্ধ্ করি ধরে।। মস্তকেতে ছত্র যেন ধরে বামহাতে। অসুর গাঁথিয়া শূলে ধরে সেই মতে।। গজামুর জানিলা যে নিজ মুক্ত হয়। তদপরে মহাদেব স্তব করি কয়।। অপ্যর যোনিতে প্রভো উত্তব আমার। নব সহত্র যোজন শরীর বিস্তার।। আনার শরীর তুমি গাঁথিয়া ত্রিপুলে। আপন মস্তক হৈতে উর্জ্বে করিলে।। আমা সন ভাগাবান নাহি ত্রিভুবন। প্রভুর হস্তেতে হৈল আমার মরণ।। এফগত কর্ত্তা তার এই ৰূপে দয়া। জোধবর সমভাব ঈশ্বরের মারা।। দেব পঞ্চানন তুমি সকলের মূল। চরাচর পর্বভাদি ভুমি সুক্ষা স্থল।। তোনার মহিমা প্রভো আমি কিবা জানি। কিঞ্ছিৎ জানেন দামোদর পদ্ময়েনি।। এইৰূপ বস্তু স্তব করিল অসুরে। আশুতোষ ভোলা নাথ তৃষ্ট হৈল তারে।। বর লহ গজাসুর যথা ইচ্ছা হয়। অসুর কহিল প্রস্তু শুন দমাময়।। যদি বর দিবে প্রভোকরি নিবেদন। আমার শরীর চর্ম করিবে বসন।। প্রসন্ম হইর। শিব বর দিল তারে। তব চর্ম্ম ধারণ করিব কলেবরে ।। তদপরে গজামুর হইলা নিধন। অমুরের চর্মা প্রভু করিল ধারণ ভক্ত বলি অমুর শরীরে বিরাছিল। কীর্ত্তিবাদেশর লিঙ্গ উদিত হইল।। कीर्खिराँन माश्राषा य महिमा जलात। अविमुख्क नर्सनिक देश्ट देशन সার।। তৈত্র পুর্ণিমাতে বাল্ডি যাত্রা যেবা করে। কাশীকৃত পাপনাশী জ্ঞান প্রান্তি পরে।। মাঘমাসে কুকার্চদশী তিথি হয়। তাতে উপবাসী হৈয়া ষেবা জনে রয়।। রাত্র জাগরণ করি পুজে কীর্ত্তিবাস। পরম সুগতি লাভ किश्न निर्मात ।!

# কাশীখণ্ড।

### षाथ इर्मछीर्थ कथन।

পয়ার। কীর্ত্তিবাস সন্মুখেতে দেব ত্রিপুরারী। নিজগতে মৃত্তিকা খননে কুণ্ড করি।। এই স্থানে কুণ্ড হইল অতি পুণ্য কর। তাহার মাহাস্ক্র কথা শুন মুনিবর ।। অললোভে কাক নব করমে বিবাদ। পরস্পর বিবা-দেতে পড়িল প্রমাদ।। মৃত এক কাক সেই কুণ্ডেতে পড়িল। দর্কপাপে মুক্ত হৈরা হংসক্রপ হৈল।। তদব্দি হংসভীর্থ নাম হৈল তার। স্নান দানে সহাপুণা মহিমা অপার।। হংসভীর্থে চতুর্দিনে যত থাবিগণ। প্রত্তাকে করিল দবে লিক্ষের স্থাপন। ত্রয়োদশ শত আছে চতুদিলো তার। কীর্ত্তিনাসেশ্বর আদি চাবনেশ আর॥ কীর্ত্তি ত্রাস পশ্চিমেতে আছে লোমেশ্বর। ঈভ্রাপশে মালভীশ্বর আছে সর্ক্ষর।। ঈশান কোণেত্তে অন্তকেশ্বর নিশ্চিত। তার পাশেতে জনকেশ্বর বিরাজিত।। অশিতাঙ্গ ভৈরব আছে জার উন্তরেছে। সনাক্ল অবস্থিতি দেবীর সাক্ষাতে।। শুজোদরী দেবী বিরাজিত জিহ্মতাল। দেবীর নৈথত কোণে কুও আছে ভাল।। এই কুণ্ডে স্থান যেই সব নর করে। সর্ববাপে মুক্ত হয় সেই সব নরে।। বিভুজ চতুপ্সদ পঞ্চমুগুনিন। তাহার উত্তরে আছে ভয় বিবর্জন। চতুঃশ্স র্বাকার ত্রিপদ ভাষার। ত্র শীর্ষ সপ্ত হস্ত ত্রিধাবদ্ধ ভার।। নাদ্ধতায় পেচহয় প্রণব আকার। কাশী পাপচ্ছেদ হেডু হস্তেতে কুঠার। র্ষ রুদ্র নাম ভার অতি দীপ্তমান। দর্শন মাত্রেতে সর্ব্ব পাপ নাশ পান।। মণির প্রদীপ নাগ ভথাতে আছেন। ততুত্তরে মণিকুণ্ড সদা বিরাজেন 🏨 যে সকলে স্লান করে মণিকুগু জলে। মহৈশর্য্য প্রাপ্ত হয় মুক্তি অন্ত কালে নমাপ্ত হইল যে অফ ষষ্ঠ অধ্যায়। শুনিলে সকল পাপ শীঘ্ৰ নাশ পায়।।

# व्यथ व्यक्तिश्री औरर्थत वात्रमन।

পরার। ক্ষন্দ বলে শুন মুনি কাশী বিবরণ। যে সকল শিবলিঞ্কু মুথাতে ভাপন।। গজচর্ম পরিধান করিল যে স্থানে। ক্ষুদ্রাবাস নাম তার হইল স্থানে। শিবা সঙ্গে শিব তথা বিষয়া কৌতুকে। নন্দী আসি সেই স্থানে মিলিল সন্মুখে।। প্রণাম করিয়া নন্দী করে নিবেদন। অইঘটি প্রসাদের শুভ জাগমন।। স্বর্গ মর্তা পাতালে মতেক পুঞ্জান। কাশীপুরে সে সকল

टेश्न अधिर्छान।। स्थान नाम मशानिक क्क़रकट्य टेश्टण। कर्गामां उथा রাখি আদিল কোশীতে।। সমিহিত নাম বাপী মহা পুণ্য জম। লোলাক পশ্চিমভাগে কুরুকেত্র স্থান।। সেইস্থানে স্লান আদি যত কর্ম করে। কুরুক্তেত হৈতে কোটিগুণ ফল ধরে।। নৈমিষ হইতে দেব দেব আগমন। हु खि तांक छेखाउर निमियांथा वन ॥ एमव एमविक खन्मांवर्ख महावत । स्रोम श्रुंबर्गरण क्लिक्षेण कलकत्र।। महावल नाम लिक्स शांकर्ग इहेरछ। नं सामिका निकटि इक्त जिनस्थित ॥ तिक मनी जूबन প्राचान कीर्य रिश्क খাণ মোচনের পূর্ব্ব হৈল প্রতিষ্ঠিতে ॥ উর্জ্জনী হৈতে লিক নামে মহাকাল প্রণবেশ্বরের পূর্বে আসিল বিশাল।। পুত্তর হইতে লিক আযে। গন্ধেশ্বর আবিভূতি মৎস্যোদরী উদ্ভবে সম্বর।। অউহাস হৈতে লিঞ্ক মহানাদেশ্বর। ত্রিলোচন উত্তরে হইল স্থিতিকর । মহোৎকটেশ্বর লিক মক্সৎকেট হৈতে জাবিভূতি কামেশ্বর উত্তর ভাগেতে।। জাসিল বিমলেশ্বর বিশ্বস্থান হৈতে স্নিন পশ্চিমভাগে হৈল প্রতিষ্ঠিতে।। মাহেক্র হইতে লিফ নামে মহাবত ক্ষেশ্বর সমীমে স্ইল উপস্থিত।। সত্য কালে স্তব করে দেবঞ্জিগণ পৃথিবী ভেদিয়া লিঙ্গ উঠিল তথন।। মহাদেব নাম লিঙ্গ অভি চমৎকার। मुक्तिका देशन कांगी व्यविक्षान छात ॥ हित्रगुगरबुँत अन्तिमाश्यम निव-ছান। মহাদেব লিঙ্গ কাশীপুরীর প্রধান।। পিতামহেশর লিঞ্গ গরাভীর্থ হৈতে। ধর্মেশ্বর নিকটে হইল উপস্থিতে । প্ররাগ হইতে শ্লটক্ষ মহেশ্বর निर्द्याग मन्द्रेक प्रक्रिया रूग महाराष्ट्रका नाम निक्र मञ्जूकर्ग হৈতে। বিনায়কেখন পুর্বে আসিল স্বরিতে।। ক্লক্তকোটি ভীর্থ হৈতে মহাযোগীশ্বর। পার্বেভীশ্বরের পাশে অধিষ্ঠিত কর।। কাশীপুরে রুদ্রন্থলি খ্যাতি সেই স্থান। সেই স্থানে মৃত্যু হৈলে লভয়ে নির্বাণ।। একান হইতে কীর্ত্তিবাস আগমন। কীর্ত্তিবাসে রহিলেন হইয়া মিলন।। চণ্ডীশ্বর আসিল মরুকাঙ্গল হৈতে। পাশপাণি গণেশ্বর স্থিতি নিকটেতে ।। কালাঞ্জর হৈতে নীলকণ্ঠ আগমন। কুটদন্ত গণেশ নিকটে সংস্থাপন।। কাশ্মীর হইতে বিজয়েশ্বর উদয়। শালক টক্ষট পূর্বভাগে স্থিতি হয়।। ত্রিদণ্ডা হইতে উদ্বিতা লিক নাম। কুষাও গণেশ পাশে করিল বিজ্ঞান।। একও नारमण्ड लिक मल्डलम टेस्टड। नःश्वाभित्र मूल विमानक छेखदारह ॥ · ছাগকুণ্ড হৈতে কপদীশর আসিল। পিশাচ মোচন ভীর্থে প্রতিষ্ঠিত হৈল আত্রাতকৈশ্বর ক্ষেত্র হৈতে সুক্রেশ্বর। আসিল বিকটণ্ট গণেশ উত্তর।। আনিল অমস্তীশ্বর মধুকেশ হৈতে। সংস্থাপিত লম্বোদর গণেশ সাক্ষাতে ।

আসি ত্রিপুরাস্ত কেশ এইশন ক্টছে। শ্র্মিক্টিভ বিশ্বের পরিচমকারেছে आंत्रित कुकुरिश्वद्र तोमत्क्रव देहरक। वज्जु कुछ शर्मा निकटि कविष्टरक ! আলেখন হৈতে লিক ত্রিশ্রী আদিল। কুটদন্ত গণেশ সাক্ষাতে স্থিত হৈব রামেশ্বর হৈতে ধৃজ্জটি লিক আগত। একদন্ত গণেশের উত্তরে সংক্রিয়া আদিল ত্রায়কেশ্বর ত্রিসন্ধ্যা হইতে। ত্রিমুখ গণেশ পুর্বভাগে প্রভিষ্ঠিতে 🛊 ভবিশ্চন্দ্র ক্ষেত্র হৈতে লিঞ্চ হরেশ্বর। হরিশ্চন্দ্রেম্বর সাক্ষাতে স্থিতি কর ।। সর্বব নাম লিক মধ্যমেশ্বর ইইতে। সংস্থাপিত চতুর্কেদেশ্বরের সাক্ষাতে।। ভলেশ্বর হৈতে মহালিক আগমন। য**েশ্ব**র নিকটেতে হইল স্থাপন। নুবর্ণাখ্যক্ষেত্র হৈতে সহস্রাক্ষেশ্বর। বৈশেশ্বর দক্ষিণেতে হৈলে স্থিতিকর कांत्रिल इर्षिएक्यत इर्यकीर्थ देहरू । मरस्यत निकंदिए इहेन दानिएक।। ক্রতীর্থ হৈতে লিক আসি ক্রডেশ্বর। ত্রিপুরেশ সমীপে স্থাপিত মনো-इत । त्रयक्षक देशक त्रयश्वत आश्रमन। वार्ष्यत मभीत्य इहेन मः खाना। আসিল উশানেশ্ব কেদার হইতে। সংস্থাপিত প্রহলাদকেশ্বর পশ্চি स्मरक ।। मः हातं रेखत्व **काहरम** रेखत्व महिरक। धर्म विमान्नक श्रम-ভাগে ভাবস্থিতে। কন থল হৈতে উগ্র লিম্ম আগমন। অর্ক বিনায়ক পুর্বস্থানে সংস্থাপন। বস্ত্রাপথ হৈতে ভবেশ্বর আগমন। ভীমচণ্ডী নিকটে रुहेल नःश्वाशन । स्वमाङ वन टेर्ट लिक मधीश्व । नामक्लि विनांत्रक পুর্বে স্থিতি কর।। ভদ্রকর্ণ হুদ হৈতে লিক শির নাম। উদ্ধৃপ্ত গণেশ পুর্বেক করিল বিজ্ঞাম।। শঙ্কর নামেতে লিক হরিষ্টক্র পাশে। ভাঁহাকে श्रीकटल नाहि देवरम शर्डवारम।। यम छोर्थ देशक कालनिक व्यक्तिम। চল্লেশ পশ্চিমে কলদেশ্বর **ভা**খ্যান ॥ কুজবারে চতুর্দ শী ভিথি বলি হয়। প্রস্থান করিলে ভাতে হয় পাপকর।। নেপাল হইতে লিঞ্পশুপতীশ্বর। পাশুপত ক্ষেত্রে অবৃত্বিতি নিরস্কর।। করবীর হৈতে কলাপীশ আগমন। क्शाल स्मान्न छीटर्थ इहेल मः द्वाभन ॥ द्वितीका हहेट सामि लिक खेमा-পতি। পশুপতিখর পুর্বেক করিল সংস্থিতি।। নহেশ্ব ক্ষেত্র হৈছে লিঞ দীজেশ্ব । উমাপতিশ্ব শাশেক্তি নিরস্তর । কেয়ারোহণ হইতে আশ্চর্য্য আসিল। শশীশন কুলস্থর অভি কুনির্মাল।। মহাদেব দক্তিণে ভাহার অধিষ্ঠান। দর্শন করিলে নরে প্রাপ্ত হয় জ্ঞান। অমরেশ জাসি গঙ্গাসাগর হইতে। সেই স্থানে অধিষ্ঠাত পাতক নাশিতে। সপ্ত গোদাবর তীর্থ হৈতে ভীমেশর। নুকুলীশ সাক্ষাতে সংস্থিতি নিরস্তর॥ ভূতেশ্বর ট্রুতে ভস্ম গাত্র

আখ্যান। প্রকট হইল মহালক্ষীখ্র স্থান।। ধরণী বরাহ বিক্লপ্রক্ত হইছে। কাশীতে আদিল ভক্ত আপদ নাশিতে।। কণিকার হৈতে কর্ণি-কার গণপতি। ধরণী বরাহ পশ্চিমেতে অবস্থিত।। ছেমকুট হৈছে লিজ বিৰূপাক নাম। সংহশ্বর দক্ষিণেতে করিল বিশ্রাম।। পঞ্চাদার হৈতে হিমন্তেশ আগমন। জন্মনাল পৈশ্চিমাংশে হইল ভাপন।। সপ্ত কোটি গণসক্তে আপ্তন গণেশ। কৈলাস হইতে কাশীনগবে প্রবেশ।। সপ্ত দুর্গ নির্মাত যে সপ্তার্থন সম। ভার যত্ত্র কণাট প্রভৃতি অনুপম।। প্রতি দ্রুর্গে নিরূপিত কোটি কোটগণ। চতুদ্রি গৈ পরিখতে করিল খনন। গঙ্গা বিপথ গার মৎগোদরী যায়। মৎস্যোদরী ভীর্থ অভি পুণাবলে পায়।। চন্দু সুর্ব্য গ্রহ কোটি গুণ ফল হয়। গঙ্গাবাসি মৎস্যোদর ভীর্থেতে মিলয়।। গ্রন্থাজলে খবিমুক্ত ভাবে মৎস্যোকার। অতি পুণাবলে দুষ্ট হয় চমৎকার।। কৈলাস হইতে কাশী আসি গণপতি। মৎস্যোদরী ভীবের করিল অবশ্বিভি।। ভুঞ্বিং সক্ষক লিক্ষ গন্ধমাদন হৈতে। গণপতি পুর্বভাগে হৈল আবিত তে।। আমিল হাটকেশ্বর পাতাল হইতে। ঈশা-নেশ্বরের পুর্নের আছে নিয়মিতে॥ আসিল তারকেশ্বর আকাশ হইতে অবস্থিতি হৈল জ্ঞানবাপির অগ্নেতে 🖰 আসিল কিরাতেখর কিরাত হইতে অব্দিত ভারভূতেশ্বর নিকটেতে।। লক্ষাপুর হইতে মরুকেশ্বর আদিল। भोजप्य वाघव भिकारमण्ड किछ रेहन ॥ उन रेहण्ड कन निक्र रेहन অধিষ্ঠান। গঞাজল মধ্যে তার মন্দির নিশা।। অন্তাপি কখন কেহ দেখে পুণ্যবার্টন। ভাগির্থী অল মধ্যে আছেন মজ্জনে।। কোটাশ্বর হৈতে अर्थ लिक जानमन। (कार्छभात शिक्तमाः त इहेल स्थानन। जानिन জনহোশর বয়বাসা হৈতে। অবস্থিত হৈল নলেশবের নাক্ষাতে।। আনিল বিরজা ভীর্য হৈতে ত্রিলোচন। ত্রিপিষ্টপ লিঙ্গে তার ইইল স্থাপন।। অমর क्लेंक देश्राठ लिक अनुरक्ता। शिलिल्लिला छीएर्थ खिछ इडेल विरम्य।। স্বসংক্ষতে কলা মাত্র রাখি অবশেষ। সর্বভাবে কাশীপুরে করিল প্রবেশ সকল আনিয়া আমি কাশীতে রাখিল। অইম্টি আয়তন আগত ইইল।। এখন করিব কিবা করছ আচেশ। সাবিব প্রা**ভুর কার্য্য করিয়া বিশেষ** গুনির। নন্দির বাকা দেব মহেশর। প্রসন্ন হইরা তাকে বলিল বিস্তর।। সাধু কর্ম করিয়াছে আনি আধতন। নবকোটি চণ্ডী পুনঃ কর আনরন।। ৈভর ৰ বোলাল ভূত লেবতা সহিত। প্রতি ছুর্গে ছুর্গা আনি করছ স্থাপিত। মিলিকে ভা দেশ করি দেব ভগবান। পার্কিতী সহিতে গেল ত্রিপিউপ স্থান।। নীনাদ তনয় শিব আজ্ঞা মাথে করি। আজ্ঞান করিয়: ছগে আনে কাশীপুরী।। প্রতি ছগে ছগা মূর্ত্তি করিল স্থাপন। উত্তর অধ্যয়ে তার বিস্তর কথন।। পুণা আয়তন গর্ত্ত এইত অধ্যায়। ভক্তিভাবে শুনি স্বর্গ অপবর্গ পায়।। অইবর্চ আয়তন কথা সুশোভন। শুনিলে পাতক নাশে গর্ত্ত বিমোচন।। অমিকা নিবাস কাশীভক্ত অতিশয়। সীতানাথ বস্তু কাশীপপ্ত ভাষা কয়।। ব্রহ্মানন্দ সঙ্গে ব্রহ্মানন্দের উদয়। এক উনভিত্তম অধ্যায় ভাষায়॥

### - 3155HE-

# অথ শক্তিস্থান কথন।

পরার। অগস্তা বলেন শুন দেব বড়ানন। ইন্দার আচেশে নিন্দ আনি দেবগণ।। যে স্থানে যাহাকে নন্দি করিল স্থাপন। প্রশন্ত হইয়া কহ তার বিবরণ।। অগস্ত্যের হেন কম্প শুনি যড়।নন। যে স্থানে যে দেবী তার কহে নিৰপণ।। ক্ষন্দ বলে শুন মুনি বলি তব তরে। কাশীপুরে বিশালাক্ষী ক্ষেত্র রক্ষা করে ।। গঙ্গাতে বিশাল তীর্থ রাখি পুর্বভাগে। বনিয়াছে বিশালক্ষী নিজ অনুরাগে।। ভাত্র ক্লফাভূভীয়াতে করি উপায়ণ। বিশা-লাক্ষী নিকটে করিবে জাগরণ।। চতুর্দ্দশ কুমারী প্রভাতে পুজা করি। বস্ত্র মাল্য অলস্কার দিবেক বিস্তারি।। পশ্চাতে কুটুর সঞ্চে করিরে পারণ। कामीवान कल भूगा क्षाल तिहे जन ॥ कामीवानी बदन याजा कतिरव सम দিন। পাইবে নিৰ্কাণ মুক্তি উপদৰ্গ খীন। ললীতা তীৰ্থেতে গঙ্গা কেশব নিকটে। আছেন ললীতা গৌরী কেত্র বিঘু তটে।। আশ্বিনের রুঞ্পকে দ্বিভীয়া দিবলে। করিলে বার্ষিক যাত্রা মহাপাপ নাশে।। বিশ্ব ছুজা গৌরী विभावकी मेंत्रिधारमा भद्रश्कारम मन ताल याला रमसे थारम । मस्यवदारस्त পার্লে বারাহী আছেন। শিবতভী সেই খানে বসতি করেন।। বক্তহত্তা ঐন্ত্রী ইল্রেশ্বের দক্ষিণে। কৌমারী আছেন কন্দেশ্বর নলিধানে॥ মহাশ্ব-ती जार्ह गर्दश्यतिह पक्तित्व। मान्निश्र निर्वाण मुगिरर गनिवादन।। खरक म शम्हित्य खाक्ती बाट्ह विषायात्म ॥ श्रीकी शावित्यव शम्हिमाश्तम मा-রারণী। বিৰূপাক্ষী দেবজানি উর্ভুরেতে পুথি।। গৈলেশ্বর নিফটে আছেন শৈলেশ্বরী। চিত্রকোপে চিত্র**য়ক্টা আছেন সুন্দরী।। ১**চৈত্র শুক্ল তৃতীয়াজে यांजात विधान। कांगीवात्र कतिरंवक यांजा अनुकीन ।। विजाय रायत श्रुर्क

ভদ্ৰ নাগপালে। সিদ্ধি বিনায়ক পূর্বে হর সিদ্ধি বলে।। বিধীশ্বর সমীপে- एक त्मरी विधि नाम। निश्कृ क्श्रानि एकी श्राप्तांक थाम । घनछेक कड़ा ছীর্থরাজের নিকটে। বসতী অমৃতেশ্বরী কামপাশ কাটে।। পিতামহ লিজ भार्य निष्क नक्योधाय । नल कृत्वत्र निकर्षे एमवी कृत्वा नाम ।। कृत्वप्रदत-श्रुत नग कूटवत शिक्टम। जिल्लाक स्टब्सती (पती आट्ड त्रहे श्राटम । मिश्रानाम मुश्मालि चापिट्या शार्म। बीक्ष्र निकटि मश लक्षीत मिवादम।। महालक्षी भीठे मम अना भीठे नहा। अखेबीएक महा-লক্ষী যাত্র। তাতে হয়। মহালক্ষী উত্তেতে হয় কপ্রিনাম। মহালক্ষী मक्निगारम कोर्मिमकि थाम।। थिथि छ्छीतमती महासकी बायुत्कारन। जीम क्**छीटम**री जीटमश्रद निवधाटन ।। इयक्ष**म मक्तिगांश्टम हानवरकुश्र**दी। महारो में फिटन यां का कित्र नामती। काल कर अवसी नक्त मांकर्ग। यम मः के। छेन्द्रान रक्यत मन्निशास्त ।। हर्म्म खा स्मरी नाक्र रक्यत निकटि । লোলার্ক উত্তরে নহা রুখা প প কাটে ॥ চর্মমুখা মহারুখা উভর মধ্যে তে। খাছেন চামুপ্তাদেবী পানপাত্ত হাতে।। মহারুপ্তাপে শিচমেতে দেবী স্বপ্নেমরী। স্বভিলে শরন রাত্তে উপবাস করি।। দেখিবে স্বপ্রেডে ঘাছা क्रिटन मानम । जनानि প্রভার তথা আছেন সরস।। অইমী নবমী চতু र्फली विवासिनि । एरश्रयती भूका कृति लट्ट खानज्ञानि ॥ एरश्रयती शन्छ মাংশে ছুর্গাবেবী স্থান। উত্তর অধ্যায় তার করিবে ব্যাখ্যান।। সুধাভাগু কাশীখণ্ড ভাষাতে উল্ল । সন্তম অধ্যায় তাতে সমাপন হয়।।

### -384-

# অথ ছুর্গাস্থরের উপাধ্যান।

ত্রিপদী। কহিছের বড়ানন, শুন মুনি তপোধন, দশভুলা তুর্গার বর্ণন। বারাণসী অবস্থিতি, মুর্গা সুরম্বতী মতি, ভাহারে করিয়া সংহারণ । সংখ্যখারী পশ্চিমেতে, মুর্গাদেবী বিশেষেতে, অবস্থিতা তুর্গতি নাশিনী। মিত্রা বরুণ ভনর, জিঞ্জাসেকার্ত্তিকে কর, বিস্তার করিয়া সব বাণি॥ দুর্গা দেবী কি প্রকারে, তুর্গাস্থরে নইকরে, শুনিব যে বিশেষ করিয়া। গুহু করে ভনপরে, মুর্গামান ভরস্করে, তপাসা করিছে বনে গিয়া॥ লক্ষারে ভপস্যা করে, বার্ভোজি মিরাহারে,ভূতী হৈল পশ্বযোদি ভারে। লক্ষা অস্করাজ, চিন্তা মন্ত্র, অসুরের ক্ষপ্রেকর, বরুলই ইচ্ছিড় ক্ষেত্রের। শুনিয়া অসুরেরাজ, চিন্তা করি ক্ষিমাক, কর চাহে করিয়া বিনয়। পুরুষের বধ্য প্রভু, আমি না इड्रेंच क्फू, धड्डे वर्त पिटवन निक्तत्र। छनिया हजूतीयम, यह जिल छख्यान, भूकृत्वत ना इहेरव विथा।। खन्ता लिल कि क्षारम, प्रशीसूत क्येमरम, निक মৃত্যু জামিল অসাধ্য। ভদপরে ছুর্গাসুরে, দেব সহ যুদ্ধ করে, দেবপদ श्वांकिक देश्ल। छुर्जासूत महावीत, त्मरव देक्ल अञ्चित, द्म युक्क क्कू ना (पथिल।। छमखदत कूर्तासूदत ताका देशल वर्तभूदत, हेस्सदमक देश्य ताका ভ্রক। সর্ববেদৰ প্রলায়ণ, স্থান নাছিনিরুপণ, অতি গোপনেতে উপবিই ॥ স্থর্গভাগী দেবগণ, মত্তে কৈল আগমন, ভয়েছে কম্পিত কলেবর। যদি কারে বাটা পার, ভরে তথা নাহি যার, ভাবে দৈত্য আসিবে সম্বর ।। ছেন মতে দেবগণ,সর্বদা কাত হন উপার নাহিক দেখে আর। নিজ মূর্ত্তি দেব , গণ, সর্ছেতে করি গোপন, ভ্রমে ভ্রমে সব বনস্তার।। দেখি তুর্গাস্থর চর, কাতর হয় অন্তর, কুত্রাপি মা পারে স্থিতি হৈতে। মিক্ষ টকে ছুর্গাস্থর, রাজা হৈয়া ভিনপুর, অভিশয় করিল শাসিতে।। অগ্নি যম চক্র স্থা, धति जात्म महावीर्वा, वद्भग श्रवतम जात्म धति। ताजात निकंटि যথন যেমতে কয়, সেইমত সর্বাদ। আচরি।। চন্দ্র নিত্য, মন্দ্রভেক্ষ তথা দিজ্য, আঞ্চাক্রমে তথাতে চলয়! প্রন থে আঞাকারী, সদানক গতি করি, মলয়। প্রন নিত্যাবর ।। তুর্গ অসুর রাজন এমত করি শাসন, তার তুলা কভু মাহি হবে। বিনা জলে পৃথিবীতে, শুসা হয় নানামতে, সভোগ খাকেন নিজগর্কে। সভাষুগে রাম যথা, গ্রহা পালনেতে তথা, ছুফাগণ সর্বন্দা সংহারে। ব্রহ্মার বরেতে দৈত্য, জহ স্কারে মহা মন্ত, নিজ বলে ভয় নাহি করে। বিধি বিষ্ণু দুইজনে, চিন্তাধুক্ত नमा भरन, किरन इरव मान छुशीसूत। विना (मव भरहश्वरत, अ विशरम কেবা তারে, চল সবে যাই হরপুর ।। বিধি বিষ্ণু দেবগণে, গেল শিব সৃত্তি-थारम, मकरलएड अनाम कतिल। इशीसूत विवतन, भिरव करइ रमवनन, में कल रय बृङ्गांख करिल ॥ शुनि नव शक्षानन, रमरव रेकल आधानम, वनिरक कहिल नकटलदा। शदा कटह जिल्लाईन, सुन विधि नांत्रांत्रण, महा वसवस्र ছুর্গাস্থরে।। পুরুষের নহে বধ্য, হইতে হৈল অসাধ্য, উপায় নাহিক শক্তি विदन । खन ह (प्रवर्ण गरव, जन्म किदम क्रिम यादव, जात क्रुश्च नी जिविह मत्न ॥ এত अनि (मनश्न, ज्या देश्ट इर्थ मन, विधि विकु निकशूद्र यान । তদপরে ত্রিপুরারী, ভগবতী ছুর্গা মরি, মহামারা আবিভাব পান।। ত্রি-लांग्न करू वानी, अन श्रित्त जिल्लांग्रेनी, हुनीसूत अठि अनिवात । श्रुक-

ভোমা বিনে, কে করিবে পরিত্রাণে, শীপ্ত কর ইহার উপায়। রক্ষাম্বরী রক্ষা কর, দেব ছাথ পরিহর, বাহাতে দেবতা ভয় যায়।। শুনিয়া যে ভগ্ন-বতী, চলিলেন শীশ্রগতি, তুর্গাস্ত্র যথাতে আছেন। তাহার নিকটে গিরী, অতি রুমায়ান ুহরি, মহামারা তথা বসিলেন। তগবতী ইচ্ছামতে, এক কন্যা আচ্মিতে, বাহিত্র হুইল অফ হৈতে। কালৰূপা নাম ভার, ৰূপ অভি চনৎকার, প্রজ্জলিত যেমত বিজ্ঞাতে ॥ তুর্গাস্কর সলিহিত, হৈল তথা উপ-নীত, নিভ'রে অসুর প্রতি কর। শুন ওচে মহাশয়, তবেচিত কর্ম নয়, কি कातरन देशत छतानम। स्वन्यन श्रीकाद्यत, ताका देशत यमे शृद्य, वृश्चि মৃত্যু জাসিল নিকটে। চিত্তে ত্রি হৈয়া বৈর্য্য, তার্গ কর দেবরাজ্য, নত্রা ষে পাড়িলে সঙ্কটে ।। মহামায়া আদ্যা শক্তি, তাঁর আমি আভ্রাবরী, আ-য়িলাম তোমা বুঝাইতে। কহিলাম বাক্য হিত, নাহি ভাব বিপরীত, বি-চারিয়া দেখা হিত্তেতে। কালৰুপা দেখি ৰূপ, মনঃকুৰা হৈল ভুপ, তার ৰূপে যোহিত হইল। ছুৰ্গাসুর ভাবে চিত্তে, অদ্য হৈল সুপ্ৰভাতে, ৰূপবতী क्वा आनि मिल्।। (य गुक्त कथा कटर, अधिएक भौतत मरर, मुख्य आ-🕶 দিল ধরিবারে। ুকালব্রপা মায়া করি, ভগবতী সহচরী, মৃত্রভাবে করে তুর্গাসুরে।। শুন ভূমি মহারাজা, হও বলবন্ত ভেজা, আমাকে ধরিলে কিবা হবে। যার দাসী হই আমি, তার যোগ্য বট তুমি, চল সঙ্গে তাহারে দেখিবে ॥ দুভ কর্ম করে যেবা, তারে বা ধরেণ কেবা, বল নাছি দুভের পীড়তে। কাল্ড্রপা কথা শুনি, তুর্গান্তর মনে গণি, কছে কথা মধুর বচনে শুন বাক্য ৰূপবভী,ভূমি দেখ মম শক্তি, আমার সদৃশ নহে কেহ। অজী-কার মোরে করি, যাহ ভূমি অন্তঃপুরী, সুখে সদা বিরাজ করছ।। অন্তঃপু-র রক্ষাকারী, তাহাদিলে বলে হৈরি, নাপবতী ধরহ যড়েতে। যথা কন্যা বিরাজয়, শত শত বার ধায়, কালৰূপা কন্যারে ধরিতে।। সায়াশক্তি ভা-রপর, বিচার করি অন্তর, স্থল মার্মে গমন করিল। বীর পাছে চলে, ছরন্ত य महातल, क्लब्ला (छोमिता (धतिल।। क्लब्ला कम्लब्र, विष्तुंत क्बि खक्कत निःश्वारमरू वीत खन्म करत। अर्ककन खन्म देशन, वक्कन ना. त्रहिन, মায়াশক্তি প্রফুল অন্তবে॥ মায়াশক্তি নিজ স্থানে, চলিলেন ছতক্ষ্বণ, ছুগ প্রিতি সব নিবেদিল। ভগদুত মুখে বাণী, ছুগাঁহুর সৰ শুনি, সহা জোধে কম্পিত হইল ॥ দৈনো কংখ সাজ সাজ, ক্ষণেক না কর ব্যাজ, শক্র ধরি আনহ সত্ত্ব। নানারূপা তুর ধার, বিকট দশন কার, আকার-দেখিতে **चत्रक्षत् । भर्छा** शक्ष मण हास, थर्स कीच कीम वास, थारक थारक हरन वर्छ-

कत्। जनवजी दमिय देनमा, जून जूना करत भना, क्या देवम निःश्वादन मध्य करम करम यक योत्र, नकन मश्हांत शांत्र, वाङ्ख्ति नाहि काहरम घरत है ছুর্গাসুর ভদপরে, কোপাবিষ্ট মান্ন ভরে, শতকোটি গৈন্য সাজে পরে ৮ पूर्तासूत करत मन्क, शृथिवी इहेन कण्य, मिन इस्ती इहेन काफरत। खनस কণার পর, কম্পে পৃথী থরে থর, অমস্ত যে কাতর অন্তরে ॥ বছতর দৈন্য नाटक, मानाविथ योगा बाटक, कटर्न किছू छना नाहि योत्र। अनम्र इटेन ষেন, অস্কৃত্ব হর ভেন, পৃথী রসাতল অভিপ্রায়।। দৈন্য মধ্যে ছুর্গাস্কুর, ভেজঃপুঞ্জ অভি ক্র, বুদ্ধ সজো গমন করিল।। প্রথম শরীর তার, দেখি লাগে চমৎকার, আকাশেতে মুকুট ঠেলিল। মহানার। ভারপরে, ছুর্সুত্র पृक्षिक्टत, गर्क रेमना कति नित्रक्रण। इर्गाटमवी महावटन, रमह रेहटल क्यव হেলে, নবকোটি শক্তি প্রকাশন।। শক্তি সব ছছস্কারে, ঘোরতর শব্দ करत, अनी वर्ष धातन कतिया। कालाखक यम आय, रागिनी धारेश यात्र, ছুর্গান্তরে নিঃশস্তা হইয়া॥ ছুই সৈন্য এক স্থানে, যুদ্ধ করে কোধ মনে, পরাজয় কেহ নাহি হয়। নবকোটি মায়াশক্তি, অতি বিপর্জয় মূর্ত্তি, অনুরে ধরিয়া আকর্ষয়।। বদন বিস্তার করি, পভক্তে অনলে পড়ি, অনায়াশে সংহার করর। মার মার ঘোর রব, করিছে যোগিনী সব, মহা ভয়স্কর যুদ্ধ হয়।। তুর্গাস্থর দৈন্য ধরি, বদন যে উদ্ধৃ করি, মন্ত হৈয়া রক্ত করে পান। भाश्य धारी आपि काँनि, मृतक स्माठक वाँभी, त्राक्षात इम्र वाना शाना পরিপুর্ণ তমোগুণে, নৃত্য করে শক্তি গণে, ছ্ডাশন করিছে নয়নে। অকালে প্রলয় প্রায়, ধরা রমান্তল যার, চমৎকার লাগে ত্রিভূবনে 🕹 তুর্গা-সুর দৈন্য সব, পতিত যে জ্বসম্ভব, ছুর্গাসুর দেখি ক্রে'বে ছলে। হস্তে ধরি थसूर्वान, हिला मात्य पित्रा भाग, लकः हर्गाञ्चि कात्न। हर्गासूत कञ्च ষত, অন্ধ পথে হয় হত, বাণে বাণ কাটিয়া পাড়েন। মহামায়া বাণ ছাজে তুর্গাস্থুর কাটি পাভে, অনায়াদে করে নিবারণ।। উভয়েতে ছাড়ে বাণ, বাণে নিবারণ বাণ, এইবলে যুক্ষ ঘোরতর। কেহ নহে পরাভব, নিজ্ঞ ২ শক্তি সব, প্রকাশ করেন পরস্পর।। নবকোটি শক্তিগণ, যুদ্ধ করে অনুক্ষন त्रश्चारन मना इसमरन । दनवी युक्त विवत्रन, नाहि इत्र ममाशन, अक मश्चकि अधात्र कथरम्॥

भग्नात्। जनस्या करहन **छन** भार्सकी नम्मन। किंद्राभित्व जनवि সরকোটি হন । প্রগাসুর দৈন।সব মারে কি রূপেতে। বিস্তার করিয়া কহ আমার সাক্ষতে। কার্ত্তিক করেন শুন মুনি তপোধন। যেরপেতে মহা-মায়া শক্তি প্রকাশন।। ত্রিলোক বিজয়ী ভারা ত্রিলোক স্বন্ধরী। ত্রিপুরা ত্রিজগম্মাতা ধৃতি ক্ষমাধারি।। ত্রিপুরা ভৈরবী ভীমা ক্মলাক্ষী রূপা।। कांभाका जातिनी जाका आतं विश्वका।। अता अत्रही गारमणी विकत्र। মঞ্জা। গজবক্ষা পরাতীতা শংখিনী সকলা।। মহিষাদ্বী রণপ্রিয়া হড়া-নন্দ সারা। কেটিবাক্ষী বিছাৎ বিহন। শব শিষা পরা।। তিনেতা বিজ্ঞা ছোঁরা পানপাত্র ধরা। বর্ষ তেওঁ। বর্ষময়ী তপাদ্যা সুন্দরা।। সিদ্ধি বৃদ্ধি মহানিতা স্বাসনা আর। পাশপাণি খোর মুবি বঞ্জারা সার।। যড়ননা मेंब्रुजाना नका नर्सभाश। उद्धवन अधि प्रवी नका करत क्या।। काकी তুকী ভাষী আর হয় পত্মাবভী। ত্বিপত্ম বাসিনী পত্মাশ্যা পত্ম কেশমতি। আক্ষরান্তাক্তরানস্তাভদ্রপ্রধান শী। শরাবিকাত্তিবর্গাসবর্গহীনাশশী। অজপা যশো হারিণী অপ সিদ্ধি জার। ধান সিদ্ধি যোগসিছি পরামৃত নার।। দৈতাকুত মিত্র নেত্রা দলুক দলনী। স্তান্ত্রিনী মোহিনী সারা বছ মায়া পনি খলোৎকটা উচ্চাটনি নুসিংহ ৰূপিণী। দনুজেন্দ্র ক্ষয় করি ক্ষেমন্তরী বাণী निश्चिकाती हिन्नमञ्जा रमवी एकानना। भाकञ्जती महालक्षी वर्क कलकना । बिवर्ग कलमायिनी वर्ष, लामस्तिनी। खगाफीका खगगरी मक्य विनानिनी। क्रीव ष्यथाक्षा जनाम्यी प्रत्यती। अहेबरश नवरकां मिकि मूर्खिधति॥ মভান্তবে নবকোটি নামেতে বিস্তার। কুমারী তন্ত্রতে তার আছেন প্রচার।। প্রতি নাম মন্ত্র স্কব কবচ আছয়। তুর্গানুর সহ আদ্যাশক্তি যুদ্ধ হর।। ছুর্গাসূর নানামভ বুদ্ধ যে করিল । অবংহলে মায়াবলে মেদে প্রবে-শিল। ভগবভী দেখি মারা অসুরের গভি। বানে কাটি মেঘজাল কেলিল দম্প্রতি।। তার পর হস্তীরূপ হয় মহাস্কুর। হস্তীগৃগু কাটাগেল বাণেতে প্রচর । পরেতে মহীয় রূপ ধরি মহাধীর । আক্ষালনে পৃথিবী যে বিশারে অভিত। ত্রিপুলেতে মহামায়। তারে সিদ্ধ করি। অবশেষে মহাস্কুর দিবা মূর্ত্তিবরি । দশ শত ভুক বীর মারাতে করিল। ভগবতী খড়া লৈয়া মুখ্ত-াছ ন কৈল।। ছুর্গামুর পৃথিবীতে পজিল সম্বর। দেখিয়া দেবভাসুর প্রসম অন্তর । পুষ্পার্টি করে আর ছুদ্ধবি বাজন। স্তবকরেছর্গা প্রতি যত দেবগণ ভূমি আলা সর্বশক্তি পরাৎপর তারা। পরম প্রকৃতি ভূমি মাতা সৃষ্টিধরা ত্রিগুণাধার তুমি ত্রিশ্রণাঠীত হয়। গুণের আধার তুমি কারণ আশয়।।

ব্রন্ধা বিষ্ণু শিব আদি যত দেব আর। সকলের মূল তুমি দেব শাস্ত্র ।! **बहैकाल तम् छत करत (मतराग। लक्षांक कतर जांत करतम वर्गन।। मछक** भर्षास अन्यक्रम स्य जानम्। ऋटिमश्य ग्रहाटमयी नितास क्तमः। দেষভার स्टब কৰচেতে মহামায়। দেবতার প্রতি কহে বড় তৃষ্ট হৈয়।। এই স্তব কৰচ পঠেন ঘেই মরে। সকল আপদে যুক্ত হইবে সম্বরে॥ ভক্তি করি সমুক্ সর যেবা পাঠ করে। তাহার নির্মাণ যুক্তি কে খণ্ডিতে পারে।। এরণ करंत्रम रचता (जह मुक्त इत । जांत्र गर्स्त शाशकत्र व्यक्तिक निम्हत्र । शृहमरस्य প্রধার যে রাখে যত্ন করি। অচলা প্রমালক্ষী গৃহেতে তাহারি।। আর আর ফলশ্রুতি আছেন জনেক। ভাষাতে বর্ণন তাহা করিব কতেক। व्यानमात्र भरमर्क (भरतन रमकान) नित्रभम देवत रवस व्यानम्बद्ध मन।। वक्काल शरत गव शृद्दरक कांत्रिल। मुखा शोक वारमामाम महीश स्कालाः इत ।। जानरफत नीमा नाइ स्वयंशिकान । जनवजी जाइरलम जानक कानस रतिशोती अक स्थारन विनिध्न मचत्र। विभाग स्थान मान स्ट्रेस भारत । ব্রকানদের পদ ভাবি বসু সীতানাধ। ভাষাতে রচিল পদ ছক্ষ সনোরখ । যেবা শুনে যেবা পাঠ করে ভক্তি করি। শ্লনারাসে দর্শন: ছইবে কাশীপুরী॥

> ইতি জীকাশীখণ্ডে কার্ত্তিকাগস্ত্য সংবাদে মহাদেবের কাশী প্রবেশ অবিমৃক্ত বর্ণন সবমঃ সর্গ্য সমাপ্তঃ।

> > --

## ज्यथे जिवलिटकत वर्गमा

পরার। অগন্তা ববেদ শুন দেব বড়ানন। ত্রিলোচনে বনি কি করিল जिल्लाहम ॥ ऋष वटल खन सूनि कत व्यवधान । याश विकानित कृति खारांत्र वहाशान ॥ वित्रका मात्म एक शीर्व मरानिक्ति कत् । मर्गत्न एक बारांत्र वित्रका इत्र महा। कानीत्क त्य शास जाट्य निक्रवित्नाहन। शिनिन्त्रिना ভীৰ্ষ যথ। গঙ্গাতে মিলন । সৰ্ব ভীৰ্ষময় তীৰ্থ কাশীতে বিখ্যাত। ত্ৰিজগতে মক্তভাতে গৰ অতুগত ।। অতএব ত্ৰিপিউপ নাম দেই স্থানে। ত্ৰিপিউপ नाम त्रहे निरम्द क्षशंत्न। त्र निरम्द महिमा (प्रवीटक बल (प्रव) य करले ता करण विश्व अर्थ अर्थ ।। (करो बर्ट अन स्व करिन निरव-মনণ প্রির পূরী বারাণসী তব অমুক্ষণ।। যাহার ধূলির ভুল্য ত্রিলোকি ন হয়। অপার মহিমা সার কেছ না জানর।। কাশীতে যতেক লিক নির্বাণ कांत्र। ७थांशि विद्रमेषकांत्रकेष्ट् जिल्लाहन । कांभीएक बनानि दकानर लिक হর। প্রবার সমর দেব যাহাতে থাকর।। সে সকল লিক হৈতে কাশী मुक्ति शुरी। याद्यांत जातरा शांश मकल मध्दाति॥ पर्मन न्शर्भरन चर्म অপবর্গময়। থাহাতে পুজাতে দর্ম লিঞ্চ পুজা হয়। রূপাকরি কহ প্রভো থরি তব পার। কহিলেক মহাদেব দেবী জিঞাসয়।। মহাদেব বলে দেবী কর অবধান। লিম্পের বিশেষ কথা বলি ছব স্থান॥ কলিকাল নিদ্যলিক হইবে গোপন। মহিমা সহিবে স্থান সাত্র স্বাঞ্জয়ণ।। নাস্তিক দুষিত বঠে না কানিবে মান। যেনাম শুনিয়া লাভ হবে শিবধাম।। প্রথমে প্রণবেশ্বর লিক্ত অনুস্তম। দ্বিতীয়ে গণিতালিক ত্রিলোচন সম।। তৃতীরেতে সহাদেব हर्ष कीर्डियाम। तर्डम शक्षाम मार्ड हर्ममा। किमात मध्यम निक्र धरमान कक्षेत्र। नरत्मरक वीत्त्रश्वत कारमन मनम।। अकामरन विश्वक-র্ষেশ্বর লিঙ্গগণে। মণিকর্ণিশ্বর লিঞ্জ ভাষশে জাখ্যানে।। অবিমুক্তেশ্ব লিক হয়। চতুদ্দিশ লিকৰিখেখবসমার্ভন্ন।। এই চতুদ্দিশ লিক মুক্তির কারণ। ইহাতে জন্যথা নাহি জান নিরপণ।। ক্ষেত্র অধিষ্ঠাত্তি अहे नकल (मवका। निकांत अमान करत इहेश श्रृष्टिका।। हक्किम याजा চতুদিশ লিক্ষেত্র। প্রতি মাসে শুরুপক্ষে করিবে নিশ্চর।। প্রতিপদাবধি यस डिथि हर्फ़्मी। इर्फ़्म यांबा कतिरवक कांभीवात्री।। अहे नव लिक আরাধনা না করিয়া। কেছ না পাইবে মুক্তি কাশীতে থাকিয়া। কাশী-পুরে মুক্তি ইচ্ছা যাহার আছম। এই সব লিক পূজা আবশাক হয়।।

জগন্তা বলেন গুন সহেশ ভনর। এই লিঙ্গ কাশীপুরে কি জাছর। কল বলে গুন মুনি লিঞ্জ বিবরণ। ফলিকালে মহালিক ফ্রনৈ প্রোণন।। বিশেশরে সদা ভক্তি বাহার আছর। সেই সে জানিকে সহালিদের কিন্দ্র অমূর্র্তেশতার কেশ জার জানেশর। বক্লণেশর মোক্ষ জারেশ লিক্ষর।। স্বর্গজারেশর রেজেশর লাকু জীশ। বৃদ্ধকালেশর ব্বেশর কে চণ্ডীশ।। নিজি কেশ মহেশর জ্যোভি রূপেশর। এই চতুর্দ্ধশ লিঞ্জ কাশীতে জপর।। এই চতুর্দ্ধশ লিঞ্জ কাশীর হৃদ্ধ। এই চতুর্দ্ধশ লিঞ্জ কাশীর হৃদ্ধ।। এই চতুর্দ্ধশ লিঞ্জ কাশীতে জপর।। এই চতুর্দ্ধশ লিঞ্জ কাশীর হৃদ্ধ।। একৈকল ভূষনের সার এক হয়।। ক্ষম্ম বলে গুন অন্য লিঞ্জ জার। নৈলেশর সক্রেশ মহিদা জপার।। স্থানিন মধ্যমেশর পিতামহেশর। ইশান গোপ্রেশর বৃদ্ধক লিঞ্জবর।। উপশস্তি লিব আর লিঞ্জ কৈরে।। নিবাশেন গুক্তেশর লিক্ষের প্রবরণ।। বাজেশর জম্বুকেশ লিঞ্জ চতুর্দ্ধশ। সেবিলে এ সব লিঞ্চ হয় মুক্তিকশ।। ইচত্র ক্রকা প্রতিপাদে জারন্ত করিয়া। চতুর্দ্ধশ যাত্রা চতুর্দ্ধশী দীমা দিয়।।। এ সক্ষল লিঞ্জ তান্ত জম্ব বিষক্ষিত। যথার্শত জান কোর আছরে নিশ্চিত।)

### -31816-

### व्यथ अन्दिश्चद्वत कथन।

পরার। হেন শুনি দেবী কছে দেব প্রণমিয়া। প্রত্যেক লিক্সের কথা কহ বিস্তানিরা। অতি পুণ্য অমর কন্টক ক্ষেত্রি হৈতে। কি রূপে প্রণবেশ্বর আসিল কাশীতে।। ইহার মহিলা কিবা কেবা আরাধিল। আরাধিজ হৈরা সে কাহাকে কিবা দিল। হেন কথা পার্কতীর শুনি মহেশ্বর। বলিছে প্রণবেশ্বর সমাদ বিস্তার।। পুর্ককালে ব্রহ্মা কাশীপুরে ধ্যান করে। সম্পূর্ব সহস্র যুগ হইল ভাহারে।। উঠিল পাভাল হৈতে লিঙ্গ জ্যোভির্মার। ব্রহ্মার মানস মধ্যে যাহার উদয়।। ভূমিভেদ হৈয়া চট চট শব্দ হয়। ব্রহ্মার সমাধি ভঙ্গ সে শব্দে করের। ধ্যান ভঙ্গ হৈলে ব্রহ্মা দেলিলে নয়ন। ক্ষম্মর মালিকা মাত্র হইল দর্শন।। আকার সাজিক প্রগবেদের নিবান। সৃষ্টিরক্ষা কর নারামণ অভিধান।। রাজবাপ আকার যত্ত্ব ক্ষেত্র হয়। নিক্রপমার্থবিশ খেন বিধাতা উদয়।। নীল অক করে যেন সামদের স্থান। সংহারক ভন্ম মূর্ত্তি স্ক্রমান্তর অভিধান।। ভাহার অপ্রেভে ব্রহ্মা হেনিল নহনে। বিশ্বরূপ প্রাণ্য যে স্বর্গ নির্জিশ নির্জিশ প্রাণ্য যে জনানির লাভিবর মান জনক্ষ বির্জিশ নির্জিশ প্রাণ্য যে স্বর্গ নির্জিশে।। আনাদ্য লাদের ধাম জনক্ষ বির্জিশ। শক্ষ ব্রহ্মা হাত্যে

न अवस्मत रमया केंद्र ।। अकिने संकान यस विश्वादा दिवित । मः मात्र जातक ভাতে ভার খ্যাভি হৈল । প্রকৃষ্ট করেন মুক্তি মির্মাণ কামুকে। প্রণ্য হই ল খ্যাত সকল অধিকে।। জন্মীমন তৃত্তীয় যে সুর্যোর অভীত। অধিমাতা मान विन्छ क्ल मिनिक ।। याहा देहक मान (पर परेन केमत। विमान প্রাণব ব্রহ্মা সাক্ষাতে দেখায়।। ত্রিধাবদ্ধ রুব তরে অভিরব করে। সেইত পরম ব্রহ্ম দেখিল সেচিরে।। হস্তাস যাহার সপ্তশৃক চতুকীর। ছিলিরা ত্রি-পাদদেব বিধাতা দেখন । যার মধ্যে লীন ভুঠভাবি বর্ত্তমান। সেই বীজ বীজহীন দেখ দিবামান।। আত্রন্ধ স্তত্তের পাত্র অশলীল যার। সেই লিঙ্গ বিধাতী দেখিল চমৎকার। পঞ্চ অর্থ ভাষে যাতে পঞ্চ ব্রক্ষঃ ময়। আদি পঞ্জ স্বৰূপেতে বিধাতা দেখন।। লিক্সৰপী পঞ্চাকর পর্ম জন্মর্টা দেখি ছভি করে বিধি প্রপঞ্জের পর। নানা বাক্যে वर्ग रखर खें कि जगरमस्य। प्रश्वद अगाम कवित्र अगरवरमा। मिव কহে পার্বতী ত্রন্ধার স্তবে আমি। ভুক্ত হৈরা লিঞ্চ হৈতে সূর্ত্তিমন্ত পুনি।। বিধাতা করহ তুমি বরের প্রার্থন। বলিল ব্রহ্মাকে পরে উঠিল আপন।। জর জয় শব্দ করি পুনঃ প্রণমিল। গদ গদ স্বরে ব্রহ্মা বলিতে লাগিল। বর যোগ্য আদি ভূমি যদি দেহ বর। এই মহালিকে স্থিতি কর नित्रखत्।। এই মাত্র বর মোর অন্য নাহি চাই। এ লিফ প্রণবেশ্বর নাম इन्छक छ। है।। खन्नात्र धार्थमा एक छनि जिनत्रम। তথান্ত বলিয়া বর কৈল क्यर्ज्य ॥ कुर्ये टेश्या ज्या जना वक् वत किन । मकल जायाय निधि खकाटक ৰবিল।। সৃষ্টির কারণে শক্তি হৈতে দিল বর। সকলের পিতামহ হইবে প্রস্তুর।। তব তপস্যাতে প্রণবেশ্বর উদিত। এই লিক আরাধনে পাইবে বা-প্রিভঃ অকার উকার জার মকার জকর। নাদ বিল্ফু পঞ্চ আরতন পরাৎ-পর।। মহক্ষোদরী জলে সাম করে যেই মর। দেখিলে প্রণবেশ্বর মা দেখে छेषत्र ॥ मध्दमाषती छीदंत धरे लिक मादमधत । मर्भटन न्मर्भटन महामूकि শক্তে নর । দেবত কপিল বর্ণ লিকেতে উদর। তাহাতে কপিলেখর নামে श्रीक रहा। य कार्य किंग्यान त्र ने जान जाने मन। मर त्या मद्री यांचा त्यहे क्षरेल निक्षणेगा। यक्रमा श्रकांत्र क्रमा विक्रिक इरेता। नारमध्य काल्टम কাশীংবর্তন করিয়া গাংলেই জলে স্থান করি দেখে নালেইব দ এজ হত্যা कान देशम मुख एक नक्ष म एक मिली कार्कको विधी एक मर्द्र माने क्षेत्र विके क्यां महत्या चीर्षत्र अधिकाती । श्वान मान स्रश होम (सर्वेश श्रुजन । भेरत्यावित्रीकृष्ठ कर्ज जन्म नन्ता अन्ता छवा छव भूगकरन निरम्त छेन्त्र। ই হার প্রভাবে সব জানিবে নিশ্রুর ।। চরাটর বত ইকি করছ নির্মাণ। হেন বলি মহাদেব হৈল অন্তর্ধান ।। কল্প কলে জন মুনিসর তপোধন। তদর্ধি বিধি করে সে লিক ভজন ।। ত্রিকালে ক্রন্সার স্তৃতি যে করে পঠন। অক্ত জান লভে তব বন্ধন থণ্ডন ।। অধিকা নিবাসী সীতানাথ রমু দান। স্থতা ঘাতে কাশীখণ্ড করেন প্রকাশ।। ত্রজানন্দে ভাবে ক্রন্ধানন্দের উদয়। ত্রিসপ্ততি অধ্যায় সমাপ্ত ভাতে হয়।।

অথ দম নামক দ্বিকের উপাধ্যান।

পরার। কার্ত্তিক কহেন শুন কলস নক্ষন। কাদীর মাহাত্মা ত্মার কহি তপোধন।! ভরত্রাজ তনম দমন বিজবর। বহু বিদ্যা অভ্যাদ করেন মির-खत ।। সংসারেতে বছ তুঃখ জানিরা সম্বর । গৃহ হৈতে গমন করিল স্থানাল স্তর।। ভীর্থ আদি যত আছে পৃথিবী মণ্ডলে। সকল ভ্রমণ করে বিজ নিক বলে।। কুত্রাপি ভাহার মন স্থির নাহি হয়। তদন্তরে রেবাতটে গমন ক্রয় অপর কণ্টক তীর্থ দর্শন করিয়া। মনস্থির হৈল তথা খাঘি সব পাইয়া।। সকলেতে পশুপতি ভক্তি আচরয়। ভাহামধ্যে গর্মানি সর্বভার্ত হয়।। বুল্লভেন তপে জীর্ণ শরীর বিশাল। শিবলিঙ্গ অর্চ্চনাতে গত হৈল। কাল। शर्भभृति (मथित्रा मयम अनिमल। (पाष्ट्रकदत सूनि ऋद्धा कें।कार्रेश तिहल।। मर्श्य किलाना करत अन विश्ववत । वरत्रम नवीन मिर्च काथा विकि कर्त्र है কি নাম কোথায় হৈছে আদিলে সন্থর। দমন কহেন প্রভা শুনহ বিস্তার কোন তীর্থে মনজ্বি না হৈল আমার। তব দর্শনেতে গেল চিত্তের বিকার नागांवित प्रक्ष याना मः गारत्राक इन। यगतीरत मुक्क इस वनह कांद्रव हा **एटत छेलटमन बाटका क्लाटनत छेन्न। এই च्हित मम हिटल कतिम**्सिम्हम्। कम्भारत अञ्जयूनि बर्लान वहन । ७८६ वर्षण खन मात्र विरूपय क्षान ॥ कवि-মুক্ত মহাক্ষেত্ৰ সৰ্ব্ধ সিদ্ধি হয়। ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ সে স্থানে আছয়।! যে সকল জীবে, বারাণদী কোনা করে ৷ জন্ম জন্মান্তরে পাপ হৈতে সেই कदतः। कामीतं माराया क्वा वर्तिवादत भारत । अता जना यु ठ छीर्थ आ-ছেন্ত্র সংসারেন। আনন্দকাননে আদি জীর্থ সে সকল। কামা শুদ্ধ করি ক্লন্ত্র ক্রেন সফল্ব। বারাণসী বাস দেৱা করে নিরন্তর। ভাহার কলের কথা গুনহ সন্তর।। জীব রপে সমুটীব রক্ষাদি সংসার। বিজ্ঞান কুটারে অভে कदबन मरश्राम भृषिवीरङ मर्स यूक्त रूक्त भूक इस । कानीरकवरामी वर्ष

বীজ নাহি রয় ।। কাশীকেত্রে ক্ষমি জাদিপ্রাণ তাগে এরে। তার সম পুণ্য বান নাহিক সংসারে ।। বারণিসী পুর্বভাগে মণিকর্ণি হয় । দক্ষিণ ভাগেতে তার এক্ষেশ্বর রয় ।। পশ্চিম গোকর্ণ তার ভূত উত্তরেতে। অবিমৃক্ত তীর্থ আছে তাহার মধ্যেতে।। যেই নর মণিকর্ণি স্লান করি পরে । বিশ্বেশ্বর শিবলিক্ষ প্রদক্ষিণ করে ॥ ক্ষেত্র প্রদক্ষিণ করি ভ্রমণ করয় । রাজস্বয় যজ্ঞ কল জনারাশে হয় ॥ অবিমৃক্তে আদ্ধ যেবা বিধিমতে করে । মাতৃ পিতৃক্ত তার জনারাশে ভরে ।। কাশীক্ষেত্র সম তীর্থ নাহি প্রজাণ্ডেতে। সভ্য গতা এই বাকা জানিহ নিশ্চিতে ॥ অবিমৃক্ত রক্ষাকরে সর্ব্ব রুজাণ্ডতে। সভ্য গতা এই বাকা জানিহ নিশ্চিতে ॥ অবিমৃক্ত রক্ষাকরে সর্ব্ব রুজাণ । হস্তে জাসী সর্ববাপ করেন ছেদন ॥ মহাভয়ক্বর মূর্ত্তি ভ্রমণ করেন । কাশীবাসী জীব সব নির্ভরে রাঝেন ॥ কগজাত্রী দেবী যে দক্ষিণে রক্ষা করে । গোকর্ণ গণকোটি পশ্চিমের ছারে ॥ উত্তর ভারেতে জাছে ঘণ্টাকর্ণ গণ। এই রূপ চতুর্দ্দিণে জাছেন রক্ষণ ॥ ক্ষেত্রমধ্যে প্রণব লিক্ষ সর্ব্বসিদ্ধি কর । এইস্থানে যোগসিদ্ধ হৈল বহুতর ॥ কপিল জাবালি যে জ্ঞীকণ্ঠ পশুপতে। এই সব মৃনি সিজ্ঞ হইল ভথাতে ॥

# অথ ভেকির উপাধ্যান।

कनाडीड बेबी मेर्क्ड इंबन क्षेत्र शहर क्षेत्र क्षेत्र विधेक्ष साह । त्यार्थ इन मेर्क् বীজ বর্কল আধার।। নির্কিশেব নিরাকার নিরঞ্জন আর। অনন্ত প্রকাশ আত্মা সর্ব্ব সারোদ্ধার । সৃষ্টিস্থিতি সংহারক বেদ অগোচর। এই ৰূপ সমা धान करत नित्रस्त ॥ अकिनिन माधवीत छन्छ विटम्ब । देवभाधमात्र सङ्क हकू দশীর দিবস। উপবাস করে রাত্র জ্ঞাগরণ করি। প্রাতঃকালে প্রাতঃস্থান कंत्रित्र। सुष्पत्री ॥ প্রণব লিকের পুজা বিধিমতে করে। অভীঙ্গ প্রণাম করি-लिक जांद्र शर्त ।। भर्त वञ्च (योष्ड्र हर्ष्क वट्ट बांही । महायट श्रीमक्ट्र ভক্তিতে সুন্দরী।। প্রণবেশ প্রসর হইয়া দরাময়। লিক্সরপ জ্যোতিশ্বর প্রকাশ করয়। ভাষারে প্রবেশ কৈল মাধবী যে কনা। স্বশরীরে নির্বাণ পাইল মহাধন্যা ।। বৈশাখের শুকুপক চতুর্দ শী ভিথি । যেইজন স্থান করে देश्या क्छेमिछ ॥ अन्दिम निन्निज भूजा त्यता कदत । निर्मान त्य सुक्रि পায় সেই সব নরে।। কর্মবশে যদি মৃত্যু স্থানান্তরে হয়। তাহার পরম গতি শুনহ নিশ্চর ।। আরু কৃষ্টি শুন দমন দ্বিজ্বর । সর্বভীর্থ ঐ দিনে আ-ইসেন সত্ত্বর।। প্রণবেশ লিক্ষে সব করেন বস্তি। তার অপ্রভাগেতে আয়ু-খি ভীর্থ খ্যাতি।। গুহার মধ্যেতে তীর্থ দিদ্ধিগণ স্থাম। অতি পুণাকর হয় অতি শোভাবান।। পঞ্জাত বাস সেই স্থানে নেব। করে। নাগকন্যা মনোরমা দেখেন অন্তরে।। ও ভাওত বলে সবু গুন ভিজবর । সদক নামে-তে তীর্থ তাহার উত্তর । সেই কুণ্ড জল যদি করেন ভক্ষণ। স্বরা ব্যাধি মন্ত इम्र निर्दर्भ शमन।। छात्र निक्टिंग्ड भारत्यत निक्र इम्र । पर्भन कतिन्तुः कोटन मुक्त इत्य गांव ! स्थानती कृटल झान कटत यह नत !- त्नांक हाथ সর্বি পাপ নাশর সম্বর।। অবিমুক্ত ক্ষেত্র যে একাণ্ড শ্রেষ্ঠ ভর। ভার সধ্যে প্রণবেশ লিক্স পরাৎপর।। বিক্ষরর গর্মমুনি সর বাক্য শুনি। প্রণাম করি-রা পরে বলিলেন বাণী।। দাহাতে আমার মুক্তি রয় স্থানিবর। ভাহার উ-পার মুনি বলছ সন্থর ॥ তদপরে পর্যযুনি দ্বিক্ষের সহিত। অবিযুক্ত কেত্রে যে ত্রন্ধাও প্রেষ্ঠ তর। তার মধ্যে প্রণবেশ লিক পরাৎপর।। ছিলাবর গর্গ-মুনি সব বাক্য শুনি। প্রণাম করিরা পাছে বলিলেন বাণী।। বাহাতে আ-মার মুক্তি হয় মুনিবর। তাহার উপায় মুনিবলহ সন্ত্র।। তদপরে গর্গমুনি বিজের সহিত। অবিমুক্ত কেত্রে শীঘ্র হৈল উপনীত।। প্রণবেশ সিবলিক कतिता मर्गन । प्रदेखन निक्तित रहेन ७० करा। ठकुःमश्च व्यथा कथा कथा

मत्नांहत । नमांखं हरेंग क्यां छन्ह नवत ॥ अमृष्ठ कथिक कथा शटन शटन योग ! छनिता मख्दत मुख्ति कमादत आंख्नांग ॥

# অথ ত্রিপিফ পীঠ কথন।

পরাব। কার্ত্তিকের ছানেতে অগস্ত্যা মুনিবর। পুনরপি জিল্লাসিল যোড় করি কর।। প্রণবেশ্বর মাহাত্মা শুনিরা মম চিত। অপর শুনিতে ইচ্ছা হৈল উপস্থিত।। এত শুনি বড়ানন কহে পুনর্কার। ত্রিপিইপ পীঠ-কথা মাহাত্মা যে সার।। মন্দাকিনী দলিখানে ত্রিপিইপ ধাম। তথাতে বিরাজে লিঙ্গ ত্রিলোচন নাম।। সরস্থতী যমুনা নর্মানা তীর্থ মিলে। স্বস্থ-নামে শিবলিঙ্গ স্থাপিল সকলে।। এই স্থান মাহাত্মা যে শুনহ বিস্তার। ইম্পান কহেন ভগবতীরে সম্বর।। ত্রিপিইপ হুদে স্নান করে যেই নর। জনপরে পিতৃত্রান্ধ করয়ে সম্বর।। গরাত্রান্ধ কোটি অংশে তুলা ফল হয়। যেবা ত্রিলোচনেশ্বর অর্চনা করয়।। যমুনেশ্বরাদি লিঙ্গ দর্শন যে করি। সর্বপাপে মুক্তি হৈয়া লভে হরপুরী।। বৈশাখেতে শীতপক তৃতীয়া যে তিথি। ত্রিপিইপ হুদে যেবা করে স্নান নিতি।। ত্রিলোচনেশ্বর লিজ পুজয়ে তথাতে। ভাহার ফলের কথা কে পারে বর্ণিতে।। কাশীপাপ হৈলে
রুদ্ধ পিশাচ যে হয়। ত্রিলোচন দর্শনেতে তাহা সব কয়।।

### -31 F14-

### णथ जिल्ला हत्मश्र कथन।

রিপদী। একদিন ভগবতী, কহিলেন শিব প্রতি, ত্রিলোচন কিমতে উদয়। শস্তু, কহে শুন দেবী, এই স্থানে যোগ সেবি, যোগে মোর বছকাল যায়॥ তৎকালে পাতাল হৈতে, মহালিক্ষ প্রজ্ঞালতে, উদয় হইল এই স্থানে। লিক্ষ তেজপুঞ্জ হেরি, ভোমাকে স্মরণ করি, ভূমি আসি দিলে দরশনে।। তব চক্ষুদ্ধর ছিল, তৃতীর নয়ন হৈল, শিবলিক্ষ দৃষ্টির কারণ। প্রজ্ঞালিত লিক্ষ দেখি, আপনে হইল সুখী, একারণে নাম ত্রিলোচন।। মহালিক্ষ অবিমৃক্ত, তদবধি হৈল বাক্ত, কারণ শুনহ ভগবতী। এই ত্রিলোচনেশ্বর, আনস্দ কানন বর,দর্শনেতে জীবে মুক্তি গতি॥ ত্রিলোচন দেখি নরে, ঘরে মরে স্থানান্তরে, তাহার নির্বাণ অচিরাত। ব্রক্ষহতা। আদি পাপ্রারে, ঘরে মরে স্থানান্তরে, তাহার নির্বাণ অচিরাত। ব্রক্ষহতা। আদি পাপ্রারের দহিছে তাপ, ত্রিলোচন ছেদেন বিঘাত।। শিব নিন্দা বেবা করে,

### -31814-

# অথ পারাবভাব্যান।

जिल्ली। कार्डिक कट्टन खन, अन्न स्वास्त्रा स्व कटलाधन, जिल्लाहरनभूत বিবরণ। রথাগ্র কম্পনে কথা, ইতিহাসে উত্তমতা, শুনিলে অপুর্বি হয় छान।। कुछ क वरलन वांगी, मन्नांकति वल खनि, यङ्गिन छम्भारत कन्ना ত্রিপিষ্টপ নঠ হয়, মণি রত্নে গ্রন্থিময়, বিশ্বকর্মা নির্দাণ করর। রত্নগণ জলে অতি, দেখিতে বিছাৎ জ্যোতি, কি কহিব তাহার বাখান। ধ্বজ পভাকা সুদার, উজিতেছে মনোহর, গগণেতে স্পর্ন যেন হন ॥ কোঠর যে মন্দিরেতে, আছে সব বছুমতে, চিত্রবিচিত্র রত্নময়। পারাবত পারাবতী, কোঠরে করেন স্থিতি, প্রতিদিন মন্দিরে থাক্র।। উজিয়া যাবার কালে, পাখার ব'তানে হেলে, মন্দিরের ধুলি উভি যার।। পক্ষীর স্বভাব ভার, हक्कांकारत के कि गांस, हक्कांकारत देवरगंग छथात्र । छाट्ट सम अिं मिन, মন্দিরেতে প্রদক্ষিণ, হেনমতে নিতা যায় আশো। মন্দিরের আক্রিনার, कक्षन मिथिएक शाय, कृष्टे शकी जारा थुए खारम ॥ उर्छ नाहि छैट यारा, পাখাতে উড়ার ভাহা, দেখিতে মুন্দর আসিনার দা নাহি পক্ষী জ্ঞানোদর, कित्म इत्व धर्मान्त्र, देनवत्वादश अहै नव छोत्र। खिल्लांग्न शूटल योता, छूटै शको त्मरथ छोता, उछ लामि था हैवादत त्मन ॥ शकी गरन मक धान्न,करणार्क দেখিতে পার, মনে ভাবে কিবপেতে নায়।। সচান যে সদাচিত্তে, নাহি शास्त्र काम मर्ड, मर्कम समन मन्मिरत्र है। छोड़ा स्मिथ शांत्रांवडी, छा-विक रहेल कार्क, शांतांवटक करिल खुतिहरू।। महान खमन करत, आमा गरत पत्तिवादत, पतिदल्ला मा इर्द स्मावन । भाक मिथि वलवाम, किरम तका

केरिक व स्थान का जिनादत । भूर्न देश्यक देश कार्ट्स, यिन भव्य दस कार्ट्स, বলবান হর্ত সন্ত্রে !৷ ভবেত ছাড়িবে স্থান, ইথে নাহি অপমান, ছেন বিধি আছে পুর্বাপর। শুনি পারাবতী কথা, পরাবত বলে তথা, অন্থির বে না হবে অন্তর ।। কোন ছার যে সচান, ধরিয়া বধিব প্রাণ, কেন ভূমি टेर्नाइ विश्विष । भारा चाहि त्य कर्ठाद्य, कांत्र माधा धतिवाद्य, कि कतित्व ज्ञान मुतिष् ॥ अन थिएम कमाहिष्, नाहि इत्त मत्न चौच, तथा हुःथ दकन काव हिटल । श्रुमः धकनिम शद्य, महाम शक्कीएक छाद्य, शादावकी विलल স্বামীতে।। শুন স্বামী মোর কথা, পূর্বাপর আছি হেথ, উপস্থিত কণ্টক रहेल। निरंतमन कति आमि, शैक गहि मान जूमि, तूर्विन रमतक। विज्ञिन विश्राप्त नगरप्रतक, ठिखा करत विधिमतक, जूमि मतन, किছू नह जीक। পারাবত বলে তবে, আপদেতে স্থির হবে, উচ্চাটিত না হবে নিশ্চিত॥ স্বামী বাক্য শুনি সব, মৌন ধরে অসম্ভব, নিরস্ত যে হৈল ততক্ষণ। সচান নাহিক যায়, স্বার বন্ধ করি ভায়, এইৰূপে গত ভিনদিন।। কোঠরেতে দুই জন, রহিল ভাবিত মন, উড়িবার নাহি দেখে পথ। ধুর্ত্ত যে পক্ষী সচান, কপোতেরে অপমান, করিতে লাগিল নানা মত।। শুন ওরে পারাবত, ক্রীবাক্যে হৃদর হত, বুঝি ভাবে ছোমার হইলে। যদি শক্তি থাকে ভোর, সন্মুখেতে আইস মোর, লুকাইয়া জীবাক্যে রহিলে।। যদি কার মান যায়, যেহ যান মৃত্যু প্রায়, হেন প্রাণ কি কারণে রাখ্য। সচানের वाका क्रिन, शातावक, हिल्ल कानि, क्रशमाति देशल क्रांध मूथ ॥ शाहर क्तिष्ठ इय, श्रमायन जान नत्र, मृज्य थाक रहेरव निन्छत्र। करशास्त्र माहम कति, वाहित देश्ल मध्ति, महात्माट अमनि धत्य।। नत्थ शाता-বত ধরি, পারাবতী মুখে করি, পুনাপথে বেগেতে উদ্ধিল। তৎ ক্ষণে-তে পারাবতী, বলে পারাবত প্রতি, এইক্লণে সচান ধরিল।। সচা-ब्बत शरम जुमि, जाघार कत्र जामी, हक्षु निम्ना कर आवशन। अरु श्रीत शाहाबक, वृक्षि बाका अधिमन् नहारमत शरमरण छेरका।। मद्भारत काल कार्ति, हिटल क्य नाटि मानि, आंग्लान कद्व कामकिया। ক্রপোত্তি ভাজির। পরে, বিপরীত শব্দ করে, মরি মরি দেহত ছাত্তি**র।**।। কপোত কামড়ে ভীত, মুখে ছাড়ে পারাবত, সচান যে হইল অন্থির। शातांवकी शातांवक, देववरगांक वस मुख्य, देवता क्षण नम्दातात कीत ।। कथा कल्लान कति, शूनकात त्वन धति, ठिन्दक एम एम्मास्टल । शूर्वक्रम कृत देश्टक, हिन यात्र अत्याधारक, सत्यदक त्त्रतन नव्दत् ॥ कथा थाटक

क्रेकन, नत्यू वाति अक्ता, वस्कान बात कथा देशन। शदत क्रेकन मदत, সমিবি সরষু ভীরে, মুক্তি পুরী ভন্নভাগ কৈল।। পারাবত মহাভাগ, মুক্তিপুরী ভমুত্যাগ, কথা হৈল বিজ্ঞাধর ঘরে। পারাবভী নাগকন্যা, রূপে ঞ্বে বড় ধন্যা, রত্বাবতী নাম সেই ধরে॥ এক নথী প্রভাবতী, বিতীয় स्व वकी, वहे किन वक्त स्थारक। अधारनरक ताजावकी, बहे प्रशी শিষ্টমতী, এই ভিন অভিশয় সুখে।। বাল্যক্রীড়া ভিনজনে, সুদা থাকে এक স্থানে, বাল্যকাল করিল যাপন। একদিন রত্বাবতী, সহচরী সঙ্গে গভি, कांगीशृद्ध क्रिल गमन।। डिनकन वक्कारन, वित्वाहन शूटक क्राल, टेनरिमामि नाना छेलहारत। निर्माण रा भक्तांबल, कार्क मिश्रा रिमुक्ल, सूर्वाक्ष भूष्ट्राट भूषा करत्।। जिन कन अरकवाद्य, गालवमा नृका करत्। व्यगाम कतिल विधिमटक। श्रुषा शादक किनकदम, यात्र निक निरुक्तरम, প্রতিদিন করে গভায়ত।। মেধে শুক্ল ভূতীয়ায়, বার্ষিকীয় যাত্র। পারু, ত্রিলোচনেশ্বরের অত্যেতে। বহু লোক তথা আইসে, পুজুন করে বিশেবে, উপহার দিয়া নানা মতে।। প্রাতে উঠি রহাবতী, চুই সধী শুল্কমতি, নঙ্গে করি কাশীতে চলিল। তিন জন এককালে, পিশ্পিলা তীর্থের জলে, হানু कति श्रुकाएक विश्वा । श्रुकांकदत्र दर्धमानः अमक्किण जिल्लाहरनः, शांत्रह्मा कतिल ज्थार्छ। शालवाना सूमधूत, नक शिल वक्ष्मूत, इत इत व्रत्व সুস্থরেতে। ত্রিলোচনেশ্বর কিরে, তিন জনে নৃত্য করে, লান ধরে কো-কীল রবেতে। শুনিরা সকল জন, মোহিত হট্ল মন, প্রশংসা ক্রিল বছমতে ॥ তিন জন ভদপরে, প্রণমিল বছতরে, করি কৈল পুজা সমর্গ্র। নিনে উপবাস করি, রাজ জাগরণ করি, পত্তরে ভাবিষা ত্রিলোচন্ত্র। প্রাতঃকালে তিন জন, পিলিম্পিলা করি হানি, পরে কৈল মন্দির মার্জন। পুর্বের নিয়ম মত, পুজ। সারি মনোগত, তদস্তরে করিল পারণ।। মণ্ডপে জাঞ্চল কেলি, তিন জনে গলাগলি, শয়ন করিল তার পরে। নিত্রা উপস্থিত इम्र, इनकृत्व मम्रामम्, निक देशक यात्रिय मुख्द ।। निजा दर्शय किम ছনে, গঙ্গাধর ভাবে মনে, চেতন করিল ভার পরে। নিদ্রা ভাঙ্গি ছিন खन, कतिल निव मर्गन, अवाम कतिया खन् करता। कम्परत जिल्लाहन, ভিনকনা প্রতি কন, বর অহ যথা মনোনীত। রত্বাবভী হেন শুনি, বিনয়ে कहिट्ह वांगी, वत यनि निटवन निक्ठिश शूर्कज्ञात कथन, अनिवादा ইচ্ছা মন, কুপাকরি কহ ভগৰান। তার পর পশুপতি, শুন বলি রমাবভী, ভোষার পুর্বজন্মের কথন।। পারাবতী ছিলে ভূমি, পারাবত তব

यामी, जिटलांचन मन्त्रिद्ध जीहिट्य। नहाम शकी देश्टक, প্রाণ तका किन মতে, সরযুতে প্রাণ ত্যাগ কৈলে।। তুমি সেই পুণাফলে, র্মাবতী কন্যা হৈলে, পারাবত হৈল বিদ্যাধর। ছুই স্থী তব সক্ষে আছুরে প্রম রক্ষে বিবরণ শুনহ সত্মর ।। ভবানী গৌতনী নামে, দ্বিজ গৃহে পু গলমে, নারায়ণ चिटक विजा देवल। मर्नचाटक शिंह देमल, कुर श्री मांख देवल, य्वदर्माटक রুছে বক্তকাল । সর্কশাস্ত্রে এই কয়, স্ত্রীলোকের নাম হয়, দেবনদী নামেতে সম্বরে। তারে বিভা করা ময়, করিলে আপদ হয়, নিষেণ আছে সর্ব প্রকারে।। নারায়ণ দ্বিজবর, মা ভাবিল পুর্ব্বাপ্ত, শান্তের অনীত কর্মা করে। উপযুক্ত কাল হৈল, সর্পাছাতে প্রাণ গেল. উচিত যে পাইল সন্থরে क्र कना कान पितन, मूनि श्रुका कल आतन, कोर्या कति जकन कितल। **এই মাত্র পাপ ভার, ইহা বিনা নাহি ভার. এই পাণে বাদরী হইল।।** নারারণ মুনি ছিল, পারাবত জন্ম হৈল, চারি জন্ম শুন বিবরণ। বানরী **জম্মের পর, তব মুখ অভ্যান্তর, একত্রমে বিরাজে তথন।। ছিজ নারা**য়ণ ছিল, বিদ্যাধর জ্বপ হৈল, এথা সেই অবশ্য আসিবে। ভূমি আর স্থী লুই, বিষাহ করিবে সেই, ইথে নাহি অন্যথা হইবে ৷ বিভাপরে চারিজনে, निर्वा । य जिल्लाहरन, अहे वत मिल मटक्षरत । वत मित्रा जिल्लाहन, জন্তর্ধ্যান ততক্ষণ, পরেতে আসিল বিদ্যাধর । করি দিন শুভক্ষণে, বিবাহ যে তিন জনে, বিদ্যাধর হর্ষেতে করিল। পুর্বজন্ম পুণ্যফলে, তাতে শিব कुभावतन, हाति चरन निर्वाण भारत।। अभातीरत मुक्क रुप्त, जिल्लाहरन পার লয়, অমুভ অধিক বিবরণ। কাশীথপ্রামৃত শর, ইহা ভিন্ন নাহি আরু, यर्कमश्च व्यथा भनाश्म ॥

পরার। পার্বতী মন্দন বলে অগন্তা মুনিবর। কহিব অপুর্ব কথা শুনহ সন্থা। বিশিষ্ঠ নামেতে খ্যাত এক দ্বিজ্ঞবরে। ব্রহ্ম চর্বা আচরণ সদাকাল করে। ব্রহ্ম চর্বা আচরণ ভঙ্গা নাহি হয়। তদন্তরে তীর্থবারা সভত করয়। বারাণদী আসি দ্বিজ্ঞ হৈল উপানত। মণিকনি মান করি হৈল আনন্দিত। তদপরে ভ্রমণ করেম কাশীপুরে। পশুপতি লিজগণে দর্শন যে করে। গ্রহ্মাযুক্ত হৈয়া দ্বিজ্ঞ প্রণাম কলি। দ্বিজ্ঞবর চিপ্ত মধ্যে এই স্থির কৈলে। পাশুপতি সিদ্ধিসক্ত ভ্রমণ করিব। সাধু সঙ্গে মনোরজে স্বক্তি পদ পাব। পাশুপতি সিদ্ধিসতে ভ্রমণ করিব। সাধু সঙ্গে মনোরজে স্বক্তি পদ পাব। পাশুপতি সিদ্ধিসধ্যে কোম মহাজনে। আচার্য্য করিয়া দ্বিজ্ঞ করেম সাধ্যে। পাশুপতি সিদ্ধিসণ বছ্ছিম পর। মহালয় পর্বতেতি

চলিল সত্তর।। তথাতে আছেন শিব কেদার ঈশ্বর। কি কব মাহাত্ম। ভার অভ্যস্ত বিস্তার । চৈত্রমান শুক্লপকে চতুদর্শী ভিথি। সেই দিন সেই স্থানে শিব্যাতা ভাতি।। তেকারণে দকলেতে করেন গমন। পথমধ্যে দ্বিত্র গুরু হুইল নিধন।। দিবা রথ আসি শীঘ্র তথাতে মিলন। পাশুপত দিবামুর্ত্তি করিল ধারণ। সঙ্গে লইয়া শিবগণ কৈলাসে চলিল। পাশুপতি যে,গসিন্ধি করি মুক্তি হৈল।। ইহা দেখি বশিষ্ঠ দ্বিজের ভক্তি হয়। পাশুপতি জাগ্র-মেতে কভ দিন রয়।। একাস্ত চিত্তেতে ছিল গেল কেল্রেভে। নিয়মা করিয়া যাত্রা করিল তথাতে। পুনরপি পাশুপতি সঙ্গে ঘিজবর। কাশীকে অবিষয় ভবে কেদার ঈশ্বর।। হিমালয়ে কেদারেশ্বরে মাহাল্যা। দর্শ-নেতে পুনক্ষ্মানা হয় নিভাস্ত।। প্রভিবৎসর কেদারে **যায়েন বশির্ক।** এইকপে গত হৈল বংশর শতশর্ষ।। অতি রুদ্ধ হয়ে দ্বিজ্ঞ গমন ৰজ্জিত। হেনকালে কেদারেতে যাত্রা উপস্থিত।। **অশক্ত তথাচ ছিল্ল নিরস্ত না হয়** বার্যিক যাত্রতিভ যাব ভবনে হৃদয়।। সেই রাত্রে দ্বিজ প্রতি প্রসম শক্ষর। নিশি শেষে স্বপ্নাদেশে শুন বিজ্বর । অশক্ত দৈয়াছ তুমি যাইতে কেদার কাশীপুরে আছে কেদারেশ জনিবার।। কেদার হইতে কাশী নাহি হয় ভান। কাশীতে হইবে সিন্ধি ফল কোটিগুণ। খনি স্বপ্ন বোধ করি মিখ্যা। त्य स्थान । अन्याष्ट्रांद्र चक्क मिन्ना भारता अगान ॥ अन्य मर्भन कतः কেদার ঈশ্বর। ত*্*পরে দ্বিজ্বর চেতন অন্তর। কেদার ঈশ্বর শিব **প্রতক্ষ**্ দেখিল। ভক্তিভাবে প্রণাম করিয়া স্তৃতি কৈল। কেদারেশ দর্শন করিয়া দ্বিজ্বর। কুতার্য হইল দ্বিজ শুন্ত সন্থ্য।। গৌরী স্থানে এছা**দেব শুনিয়া** : বচন। কেলার মহিত্যা দেবী না বর্ণন।। একবার দরশন করে যে সকলো। পুন জ্বা নাহি ভার ভূবন মণ্ডলে। তব নাসে গৌরীকুণ্ড আছেন জ্পার। ছংসতীর্থ আর গঙ্গা এক স্থানে পার।। সে সকলে স্থান করে মিলিড ভীর্থেতে। কোটিশতভ্রমাপাপ ক্ষয়হয় তাতে। পুর্মকালে ছইকাক বিবার করিয়া। মিলিত তার্থেতে হইল পতন আদিয়া।। কাক সংহ হৈয়া তথা চলিল সম্বর ! গৌরীতীর্থ সম নাহি ভুবন ভিতর ।। মহাভীর্থ গঙ্গাদেবী তথা বিলাজিত। মহামোহ অজকার নাশেন নিশ্চিত।। সে স্থানে মানস ভীর্থ আছেন নির্মান। ভাতে স্নাম মাত্র মুক্তি জান ভার ফল।।

#### **ज्य क्ला**द्रणद्रां भारतान ।

পয়ার। কেশার কুণ্ডেতে স্নান থেই জীব করে। তমুস্তাগে তার মুক্তি रुरम्भ म बदा ।। किनातकू एक एक को मा करत यह अम । अक भाक कूल कात इतः निञ्चात्रगः। व्यामावना। ट्रिमवादत युकायनि इतः। क्लात्रकीर्यटक আছি করিবে নিশ্চর। তাহার কলের কথা কি কহিব আর । গয়াক্ত আছি देश्रक काणि कल जात्र।। देऽज क्रुक जरमामनी जिथि य जिनम् । जिल्क कति কেলারেশ পুজা থে করয়। জন্ম জন্ম শুর পাপ ভার হয় কর। অস্তেতে निर्काण मुख्य जानिक निष्कत्र॥ मक्ताकाटन क्यमादाण बटन किनदात्। অন্তকালে যুক্তি কল জানিহ তাহার।। বিশেষতঃ কলিকালে কেদার মহিমা कल भूटल भूकिटन ना इस कल नीमा । अक्तिकति ताहे निक्र भूटक (यह नद्र। च्दर्भ दिवताक देश्या नाला सूच कद्रा। वर्ष मामाविध द्यवा शुक्रद्र কেদার। ত্রিকাল নিয়ম করি করে সমস্কার।। লোকপাল যমরাজ ष्ट्रारत शुक्का करत । कान्छ मिहे यमालटत्र स्थित क्षेत्र भएत ॥ धकदात किन्।-রেশ দৃষ্টি করেবেবা। মমঅসুচর হৈয়া করেমমসেবা॥ ভক্তিভেকেদারেশ্বর পুঞ্জিবে কাশীতে। ভিত্রাঙ্গনেখর লিঞ্জার উদ্ভরেতে॥ তাহার দক্ষিণে নীলকণ্ঠ বিরাজিত। বায়ুকোণে অযুরীশ আছেন নিশ্চিত।। সন্মুখেতে ইক্সফুরেম্বর লিজ লার। দক্ষিণে আছেন লিঞ্চ কালপ্তারেম্বর।। ক্ষেমেশ্বর भिष्ठ प्रथा विदाक्षित इव। এই गव निक ८५ थि इत शिवमस्।। । त्मेर द्यारन **शिक्षिक्र (य** कटत व्हालन । मश्यात योजना जात नाहिक जावन । मुख मधुषााक्र कथा अंडि मरनांर्त । मीठाराथ कर**र भित खा**ति निदस्त ॥ **टक्सिट्सम व्याशान एर मगारा इहेल। डिक्टिन गुनिटन शांश नामरम** मक्ल ॥

#### --

#### जय यटमद छल्छ।

পরার। কার্ত্তিক কছেন শুন মুনি তপোধন। অতিশয় পুণাকথা বলি । এতক্ষণ।। যে সকল মহামারা জিঞ্জাদে শক্ষরে। তাহাতে দেউক্ত হৈল দেব মহেশবে।। সেই গোপা কথা মুনি কহি যে তোমারে। ভক্তিভাব করি শুন একান্ত অন্তরে। এক দিন ভবানী কছেন ত্রিলোচনে। এক নিবেদ দন প্রভো তোমার চরণে।। সেই কথা যদি মোরে কছ কুপা করি। তবেত

মানসে ছাথ হয় পরিছরি॥ কাশীকেত্রে কোট কোট লিকের উদয়। পরস্পর সর্ক লিঙ্গ পুণ্যকর হয়।। এক হৈতে আর ত্রেষ্ঠ ক্রমেতে আছম। সকলি ভোমার ইচ্ছা শুন জগন্মর। কোন লিঙ্গে প্রীত সদা আছরে ভোমার। যাহা দর্শনেতে জীব হয়ত নিস্তার।। ধর্ম তীর্থ কাম মোক প্রাপ্ত জনায়াসে। যার যেই মদক্ষাম পুরাণ বিশেষে।। যাহার জপনে যোগধর্ম দিদ্ধিহয়। সে নকল বল প্রভো হইয়া সদয় 🛭 শুনি প্রভু ত্রিলো-চন অতি আনন্দিত। কহিছেন, উমা প্রতি হৈয়া বড় প্রীত।। অতি গুষ্ কথা তুমি জিঞাসা করিলে। এ সকল কেহ নাহি কহে কোনকালে।। ভূমিত জগৎকর্ত্রী দর্ম পরাৎপরা। প্রিয় কথা জিঞাদিলা অতি গুছ তরা। আনন্দ কানন মোর অতি প্রিয় স্থান। কৈলাস ছইতে শ্রেষ্ঠ যাহাতে নির্ফাণ।। কাশীমধ্যে শিবলিঞ্জাছে বছতর। সমুদন্ধ লিঞ্ছয় ভাজি পুণ্যকর ।। একচক্র রথ যার নামেন্ডে তপ্র । তাহার তনর যম ধর্ম প্রায়ণ সভাবুগে যে স্থানেতে আমি যোগ করি। গঞ্জানন পুজাতে বধিল :দেক বৈরী।। দারুণ ত্রিপুরাত্ত্র মহাবলবস্ত। গণপতি সেবি ভারে করিলাম ছান্ত । বেত্রাস্থ্য বধি ইন্দ্র বন্ধ পায়। আমার তপসা স্থানে পাপক্ষ্ বায়। সেই স্থানে বিশালাকী এক মূর্ত্তি তব। মহাপীঠস্থান সেই মাহাজ্য কি কব। সেই স্থানে যম আসি তপসা। করম। উৎকট তগসা। অতি ছোর-ভর হয়।। আপন সন্মুধে শিব লিক্সের স্থাপন। যমরাজ সদা করে যোগ আচরণ।। যোগবলে সেই লিঙ্গ অভি প্রজালিত। চন্দ্র আভা যিনি শোভা রত্নেতে নির্মিত। নানাবিধ পুপ্প মাল্য ধূপ গন্ধ আরে। বছবিধ মোদকাদি বছ উপহার। বছকাল এইরূপে পুজন করিল। তদপরে মহান্বোর যোগ আরম্ভিল।। হেমন্ত শিশির কালে সদা জলে থাকে। জ্রাজ্বেপ নাছি করে নিঃশব্দ যে মুখে। বসস্ত গ্রীয়েতে অগ্নি জালি চারিদিনে। তার মধ্যে বনি যোগ করে মহাভাগে।। বর্ষা শরতে সদা থাকে নিরাঞায়। মহা ঘোরতর র্ষ্টি মস্তকে পড়য়।। নিরাহারে যোগ করে তপন-তনয়। তৃষ্ণা হৈংলে কুশাত্রেতে বারি যে ভক্ষয়।। বছকাল এইরূপে হইলেক গভ। তথাপি না হর ভার চিত্ত যে নির্ভা। মন্তক অধোতে করি উর্জা পদে রয়। একাদৃশ বহুকাল তাতে গত হয়।। এক পদে দাণ্ডাইয়া যোড করি হাত। অন্তরেতে সদা ধ্যান করে জগম্বাথ। পাদাঙ্গুর্ছে ভর করি দাগুইয়া রয়। মোর সদৃশ যোগ কেহ না করর।। অচল গিরির ন্যার বসিয়া যোগেতে। তৃণ আছি

প্রতার হৈয়াছে অঙ্গেতে।। দেহের আকার তার জানা নাহি যায়। না-িকারে বায়ু সাত্র কিঞ্ছিৎ আছয়।। তার ধানে হৈয়া তৃষ্ট দেব ত্রিলোচন প্রাঞ্চাৎ হইয়া শিব মম প্রতি কন।। বছ যতু করি ভার শব্দ নাহিং পান। ূদ্যাময় অঙ্গে তাব কৈল হস্ত দান।। হস্ত স্পর্শে সূর্যা-সুত্ত চেতন পাইয়া। গ্রুণাম করিল ভূমে দণ্ডন্যাথ হৈয়া। ভদপরে কর্যোভে সন্মুখেতে রয়। বছবিখ লভে যম স্তবন ক্রয়।। তুমি ব্রক্ষা তুমি বিফু তুমি মহেশ্বর। পর্বস্তৃত জান্মা প্রভোজগত ঈশ্বরা: নিরাকার সাকার সকল ইচ্ছা তব ত্রিগুণ ধারণ প্রভো অংগভীত সব।। সন্ধ্রক স্তম এই তিন অংগ হয়। ভূমিত সকল প্রভে: ভোমা ছাড়া নয়।। অবিদ্যা যে বিজ্ঞা চুই শরীরে আবার। শুভাশুভ ধর্মা আর যেবা কিছু হয় ।। করণের কারণ ভূমিত জগ-লাখ । সৃষ্টি স্থিতি প্রলম্ন সকল তব হাত।। চন্দ্র স্কর্য্য তব তেজ করিয়া গারণ স্বৰ্গ মন্ত্য প্ৰবিবীতে তেজ প্ৰকাশন।। অগ্নি বায়ু বক্সপদি যত দেবগণ। সকল ভোমাতে জন্ম শুন প্রধানন।। বিধি বিষ্ণু তোমার মহিমা নাহি জানে। ছামি কি করিব ত্তব ভতি অল্য জানে।। এতাদুশ বহু স্তব শ্যন ক্ষরিল। গলে বাস দিবে অত্যে দাগুয়ে রাহল।। ভূট হৈয়া শিব ভারে काहन मध्य । यथा देखा पालावीक हादि लह बद्र ॥ धर्मामील दक्ष कृति मन। থকে মভি। ধর্মারাজ নাম তব হইল সম্প্রতি । লোক বর্মা অধিকার হইল ভোমার। বিচার করিবে ভুমি ধর্মাধর্ম আর ।। আর যাহা ইচ্ছা বর দিব এইক্ষা। শুনিয়া সূর্ণোয় সুত কছেন বচন।। তুনি যারে সাক্ষাৎ হইলে বিলোচন। ইহাতে অধিক ববে কোন প্রয়োজন। ধর্ম অর্থ কাম মোক দ্রশ্বে হয় , ইহার প্রিক ফল আয় কি আছম।। এই বর দান কর শুন দ্যান্য। তব পাদ্পয়ে মোর স্থির ভক্তি হয়।। এত কৃথি প্রণাম করিল ধর্মারাজ। বস্তু শত প্রণামল নাহি করে ব্যাজ। শিবরূপ দেখিতে আ-কাজ্জা হৈল অভি। এক দুফে চাহিয়া রহিল শিব প্রভি।। নিঃশন্দ হইয়। रेतल निव विविधारम । व्यक्तिश्राधां प्र कथा अन मर्खक्रम ॥

# ছাথ যমের বর প্রাপ্ত ও পশ্চীর মুক্তি।

পরার। কার্ত্তিক ক্রেন মুনি শুন তদপর। ধর্মারাজ বিবরণ প্রম স্থানর।। ধ্যরাজ খানস্যেতে বাক্য নাহি স্বরে। জানিমিষে সহাদেব মান্তাকার।। পিনাকী দেখিয়া ধর্মারাজের চরিত্র। হস্তে স্পর্গ করিলেন

যম সর্ক পাত্র।। দিরাময় স্পর্শে যম চেতন পাইল। প্রেমেতে প্রফুল ভয়ু ভূমিতে পড়িল।। হস্তে ধরি সদাশিব ভুলি ধর্মরাজে। বর লহ যথ। ইচ্ছা তাছে হৃদি মাঝে।। ধর্মরাজ কছে প্রভা করি নিবেদন। তোমার ম্পা-র্শেতে মুক্ত হইল এখন।। অন্য বর নাহি চাহি শুন দয়াসর। ভাষার নিকটে তুই পক্ষীর তনম।। অওহৈতে তার জন্ম চইয়া অন্তরে। দৈবল যোগে মাতা পিতা অপেকালে মরে।। অনাথ হইয়া পক্ষী থাকে মম কাছে। ভূত ভাবি বর্ত্তমান অবগত আছে।। ছুই পক্ষী নিস্তার করছ ভগ-বান। শুনি তৃষ্ট হৈল বড় দেব পঞ্চানন।। ধর্মারাজে প্রশংসা করিয়া বভতর। পক্ষী প্রতি কহে শিব চাহি লহ বর ॥ ব্রতার্থ হইয়া পক্ষী কহে মৃত্রস্বরে। জ্ঞান হীন পক্ষীযোনী কি চাহিব বরে।। ধর্মরাজ নিকটেডে: ব্ৰুকাল আছি। ভাঁহার তপ্যা। বলে নিম্পাপ হৈয়াছি।। ভব পদ पर्भाति इहेन यात्। श्रुक्त को जिया कथा कहि विवत्।। (नवटनारक কতবার জন্ম যে হইল। গন্ধর্ক অপ্রর ঋষি বহু জন্ম গেল ॥ সিদ্ধবানপ্রস্ত জন্ম হৈল কত বার। ত্রক্ষচারি দণ্ডধারী হৈল বারেবান।। সমুষ্য রাক্ষ্য-(यानी ज्ञमन कतिया। शक्ष शक्ती कीं है ज्ञानि ज्ञानि क्रिया। एक जुड़ **कुछ (मर्. इंग् कछवात । कान करमा निवात । मा मर्म मर्मात ।। छूटे शको** এইক্রে কহি বিবৰণ। নানামতে স্তব করে নিস্তার কারণ। জুমি ব্রন্ধ পরাৎপর সকলের মূল। সৃষ্টি স্থিতি লয় কর তুমি স্থক্ষ স্থুল।। তদন্তরে, তুই পক্ষী কৰে হর প্রতি। এই বর বাঞ্চা মোর শুন পশুপতি।। যাহাতে সংসার মধ্যে জন্ম নাহি হয়। এই উপদেশ প্রভু শুন দয়াময়।। ইঞা চক্র আদি পদ বাঞ্ছা নাহি করি। অনায়াদে তত্ন ত্যাগ হয় কাশীপুরী।। ধর্মের নিকটে যেবা করেন বসতি। সেই জ্ঞান প্রাপ্ত হয় শুন পশুপতি।। যেমত চন্দন গুণ প্রকাশ করয়। অসার সকল রুক্ষ হয় গন্ধময়।। দেহ পরি জাগ তব আনন্দ কাননে। সংসার নিবর্ত্ত হয় এই দেহ জ্ঞানে।। একা। মুখে এই বাক্য হয়ত প্রমাণ । অবিমুক্তে প্রাণ তাংগ দেবের বচন ॥ কাশীতে কৈবলা মুনি অষ্টাবক্র কয়। বিষ্ণু উক্তি মুনি পদ কাশীতে নিশ্চয়। যাজবনকা মুনি বলে কাশী মৃত্যু সার। কাশী মৃত্যু মৃক্তি লাভ আজ্ঞ। বে ছোমার।। ক্লফ ছৈপায়ন কংহ এইত বচন। কাশীতে জীবের মুক্তি করে পঞ্চানন।। যে স্থানে সাক্ষাৎকার সর্বজ ঈশ্বর। তাহাতে জীবের মুক্তি হয় নিরস্তর ।। লোমসাদিয়নিআরপুন্য যেবিশেষে। কাশীযে নির্কাণকে এ সর্ক্ষতে ভালে শুক পক্ষী বলে প্রভু আমরাহ জানি। ভূচ ভবিষাতি বর্ত্তমান যে আপনি।

# কাশীৰ্যন্ত !

অবিমুক্ত মহাক্ষেত্র নির্মাণের স্থান। এই বর দেহ প্রভো যাতে হয় জ্ঞান। পক্ষীর বচন শুনি শস্তর বিশায়। পক্ষী হৈয়া জভীতাদি অবহেলে কয়।। त्रक्व नाथ दर्भ वर्ष शीरतेत्र माश्या। साम श्राट शकी देश्य मुक्तिए नमर्थ সুষ্ঠ্য সুত সংখ্যবিষ্ট্য কন পঞ্চানন। মাজগুতে কাশীক্ষেত্রে সমবাস স্থান।। মোক লক্ষী বিদাল মন্দিরমম হয়। ভাহাতে আমার বাস আছরে নিশ্চয় এ মন্দির প্রদক্ষিণ যেই জীব করে। অনায়াসে মুক্তি পদ কে খণ্ডিতে পারে মন্দির দকল আর ধ্রজ যে দেখর! সুখভোগ করি অন্তে কাশী প্রাপ্ত হয় নির্মাণ মণ্ডল আছে ইহার দক্ষিণে। নিমিষেকে বাস ফল শুন তপোধনে। व्यमान्हारम वेष्परतक (यांश यक्ति करत्। मिमिरयरक वाग कल शाह राष्ट्र मरत यमि अकवातुक्वशकटत्रत्यहे कारन। क्रांतास्त्रत् कारिस्थ नाहश्त्रमारन॥ अहे कारि वर्ष साम बाक्याद आहा। पर्यत्माल मुक्ति मांच कहि एव कारह।। র্বন্দরাক অতঃপর শুনহ বচন। যেং স্থান মম প্রিয় তাহার কথন।। চক্র-छीर्य मनिकर्नि कवियुद्धकथत। शंक्ष्यम विमानाको त्योही शोठेशत।। প্রেণবেশ্বর নিঙ্গ আর কীর্ত্তিবাস। স্বত তথাতে মোর হয় অভিলাষ।। লৈতিক্ষর ত্রিলোচন ত্রিপিষ্টপ আর। যয়না নর্মদা গঙ্গা সরস্বতী সার॥ একত্র মিলিত হয় পিলিন্সিলা নাম। বিন্দুগুরা যথা পিতৃলোকের নির্দ্ধাণ রভেশ্বর কেদারেশ অভি চমৎকার। এই যে সকল হয় নির্বাণের সার।। অবিমুক্ত পঞ্চক্রোলি নির্কাণের ভূমি। ভনুত্যাগ যেবা করে নিস্তারি যে আমি।। ধর্ম স্থান মাহাত্মা দেখহ ধর্মারাজ। শুক্পক্ষী স্থার্থে হইয়া বিরাজ। দিব।মূর্ত্তি ধারণ করিয়া ততক্ষণে। চলিলেক কৈলানেতে দেখহ নয়নে ।। হেনকালে বিমানে চভিয়া বিদ্যাধরী। শুক্পকী নিকটে আইসে শীজ করি॥ ছুই পক্ষী দিবামূর্ত্তি ধারণ করিল। ধর্মারাজ সন্মুখেতে বছ अगिमल ॥ जमभारत (मननार्थ पूरे भक्ती करा। आत रमम महाश्राण कना नाहि इत्र।। पुटे शक्ती अठि ए करहन शक्तानन। श्रनकांत्र कानी जानि পাইবে নিৰ্বাণ।। ধর্মক্ষেত্তে মাহাত্ম যে না হয় বৰ্ণনে। সদাকাল ছেথা আমি আছি অধিষ্ঠানে।। যেবা এই অধায় প্রত্যহ পাঠ করে। কাশীকেত্র প্রাপ্ত ভার জনায়ালে পারে।। উনাশি অধ্যায় কাশীখণ্ড মনোহর। বেদ-बाम डेक वह मन भुगकत ॥

## কাশীখণ্ড।

## व्यथ धर्मभीठे छेभाशान।

श्रात। ऋक्ष करह कुछक धनह निरंतमन। धर्मशीठ कथा (मदी शक्षांनरन कन।। शीर्फत माधाबा (नव जाम्बर्गा कथन। शकी चर्ता तंत्रव রুখে করি আরোহণ।। এই পীঠস্থানে আমি সতত রহিব। ধর্মপীঠ মম প্রিয় আর কি কহিব।। ভগবতী হেন বাক্য শুনিয়া শঙ্কর। প্রসংশা করিয়া পরে কহেন সন্থর । ধর্মপীঠ সম স্থান নাহিক ভগবতী। তব অধিষ্ঠান হৈলে মাহাতা যে অভি।। শুনহ আশ্চর্য্য স্থান মাহাত্ম যে আর। চৈত্র শুক্ল তৃতীয়াতে ব্রতের বিস্তার।। এই দিনে পুরুষ যে কিমা নারী হয়। মনোরশ ত্রত থেবা ভক্তিতে করর। তার মনোর্থ সিদ্ধি জানিহ মাছেশী। জচি-রাতে মুক্তি হয় সর্ক্রপাপ রাশি॥ মহামায়। জিল্পানেন দেব জগলাখে কিৰপেতে কেবা আচরিবে মনোরথে।। ভগবতী প্রতি তবে শঙ্কর কহিল শচীদেবী এই ব্রত পুর্বের আচরিল।। তাহার বিশেষ ক**হি শুন ভগ্নবডী।** আমার তথানা শচীদেবীকরে অতি।। তথানার বলে আমি হইরা সাক্ষাত वत्रलङ् यथा इष्ट्रा निय व्यव्तिष्ठ ॥ जम्भात् भहोतन्वी वर्तन बहन। अह বর দেহ প্রভাে করি নিবেদন।। সর্বদেব শ্রেঠ প্রভাে মার স্বামী হয়। স্থিরতর যৌবণী আমি তার নাহি কর।। স্তীত্ম স্বধর্ম মোর কন্থু নাহি যার এই বর দেহ প্রভো বলি তব পায় !! শঢীবাকা শুনে যেন রহিলাস পরে নিয়ম করিয়া মনোরথ এত করে।। চৈত্র শুক্ল দিভীয়াতে সংযম করিবে। शादा इंडोश मिरन शोदोद श्रीकार ।। विश्म पूजा मूर्ख उर अह পুজাকালে। অশোক পুজোর সহ নৈবিদ্যাদি জলে। চণ্ডী বিনায়ক পুজা कतिरव लाफ फुरक। शरत विश्मकुका रमवी शुक्रिय खिकरक।। शुक्र मांग মত আর সুগন্ধি চন্দন। প্রতি মাসে শুকু পক্ষে তৃতীয়া পুজন। কাল্ডণ পর্যান্ত ব্রত করিবেক ব্রতী। বিধান আছেন গ্রন্থে অবগভ মাত।। এই ব্রত गठीएनवी क्रिया आंठात । মনোর্থ সিধ্বি হৈল সকল ভারার ॥ ভদপরে প্ৰশ্নত ভ্ৰত আচরিল। সুনীতি সুগন্ধ দ্ৰব্য বিধিমতে দিল।। শক্ষরী करहन প্রভোকর অবধান। এই স্থান বিনে এত নহে জনাস্থান।। धुर्ब्छाउँ वर्णन श्रिरत्र खनर वहन। स्थानास्टरत वह खंड य करत रमवन।। विश्मांक যে পুজা জার গণেশ স্বর্গেতে। যথা সাধ্য পরিমাণ করিবে নির্দািতে।। পুজাবিধি পুর্ব্বমন্ত সব আচরিত। ভক্তিতে সেবিলে ফল পায় মনোনীত। ব্রতের ফলের কথা শুনহ শক্ষরী। ব্রত ক্রিবেক নারী হৈয়া সদাচারী।।

শচী সম হয় জার সৌভাগ্য অপার। পুজ্ঞহীনা পুজ্ঞ পায় শুন কহি আর ॥
বিধবাতে যদি ব্রত আচরণ করে। অবৈধবা পায় সে নিশ্চয় জন্মান্তরে
জন্য ফল ব্রতের যে আছমে জনেক। আক্ষাবতী হৈয়া ব্রতী ব্রত করিবেক
ধর্মা পীঠ স্থান আর ভোমার বস্তি। এই স্থানে ব্রত ফল মাহাত্মা যে অভি
ব্রতসেবা করে যেবা সেই বুদ্ধিমতি। অস্তে কাশী প্রাপ্ত তার নাহি জন্যগতি॥ জমৃত সমান কথা অসীতি অধ্যায়। শুনিলে সকল পাপ নফ্ট
হৈয়া যায়॥

#### 

# অথ ধর্মপীঠ মাহাত্য।

প্রার। অগন্তা বলেন প্রভো শুন মড়ানন। ধর্মপ্রীঠ মার্ড্র যে হটল প্রবণ। এ অতি আশ্চর্য্য প্রভো হৈল পীঠ কথা। প্রফী বলে ভূত ভাবি বর্ত্তমান যথা।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গ আরু পীঠ বিবরণ। শুনিয়া বিস্মৃত প্রভা হৈল ততক্ষণ।। ধর্মাপীঠ কুপ যে আছরে বড়ানন। তাহার মাহা-আ প্রভা করিব আবণ।। প্রশ্ন শুনি কার্ত্তিকেয় অতি ভুষ্ট হৈল। কুন্তংখানী প্রতি ক্ষম্ম বলিতে লাগিল।। মনোরমা কথা তমি কৈলে আলাপন। জড়ি গুহুতর কথা শুনদিয়া নন।। বেই কথা মহামায়া জিল্ডাসে শস্করে। জা-হাতে যে উক্ত হৈল দেব মহেশবে।। চেই কথা ভোমার নিকটে আমি কর। ধর্ম ভীর্থ মাহাজ্যের ইতিহাস সব।। ধর্মতীর্থে স্লান দান যেই নর করে। অন্যত্র ২উতে কেটি গুণফল ধরে।। সর্বর পাপে মুক্ত সেই না আ हैरत नःमात । जात कल नाहि रमर्थ जननी कठेत ॥ धर्म जीर्थ (यवा करत ঞাদ্ধানি তর্প।। গয়াআদ্ধ করা তার কিবা প্রয়োজন।। কুরুক্ষেত্র হরিছার প্রভাষ পুষ্কর। ইত্যাদি আন্দ্রেতে তীর্থ ফল বস্থতর । ধর্মাতীর্থে পিগুদান করে যেবা জন। ধর্মতীর্থ সমান যে নত্তে কথন।। গয়। পিগুদান ফল ধশ্যকুপে হয়। পিতৃ মাতৃ ুল মুক্তি নাহিক সংশয়॥ সতা যুগে এক রুথা **ए**क उटलापन । हे<u>स्प्रदा</u>ञ देकन त्वजासूद्ध**रक नियन** ॥ ब्रह्मद्भ**टक क्या त्वजा** সুবের আছিল। তাহার নিধনে ত্রন্ধবিধি ইন্দু হৈল।। অকমাৎ হৈল রুষ্ণ-বৰ্ণ কলেবর। শরীরেতে ছুগন্ধ ছাড়ুয়ে নিরন্তর । মহাত্বঃখী ইন্দ্রদেব হইল সত্র । কি করিব কোথা বাব ভাবে নিরন্তর ।। বুদ্ধের সাগর দেব গুরু বৃহ ম্পতি। ভাঁহার নিকটে ইন্দ্ গেল শীঘ্রগতি।। নিবেদন করি গুরো শুনহ নিশ্চর। বেলাসুর সরণেতে এক্ষরণ হয়।। শ্রীরেতে বছ কর্ম সহিতে নঃ

পারি। कह দেখি গুরুদেব উপায় कि করি।। গুরুদেব কহে বাণী শুন ইক্সরাজ। কাশীতে গমন কর না করছ ব্যাজ।। পুর্বের কালভৈরব যে ত্রন্ধ মুগু ছেদি। ব্রহ্মহত্যা মুগু হল্জে ভ্রমে নির্বধি।। কোন তীর্থে হস্ত হৈতে মুগু নাহি পড়ে। ভ্রমিতে ভ্রমিতে গেল কাশীপুরী পরে।। কাশীপুরে একা বধ পাপে মুক্ত হৈল। হস্তে হৈতে ব্রহ্মমুগু সহসা পড়িল।। কাশীর মাহা-আ নাহি জানে কোন জন। শীঘ্রগতি কাশী তুমি করহ গমন।। এই উপ-দেশ যদি ইক্রদেব পাইল। অতি ত্রান্থিত কাশী ডংক্ষণে চলিল।। কাশীপুরে ইন্দ্রদেব উপস্থিত হৈয়া। উত্তরবাহিনী গঙ্গা স্নানাদি করিয়া।। নিকটেতে ধর্মেশ্বর লিঙ্গের স্থাপন। তথাতে বসিল ইন্দ্র হৈয়া ক্ষীমন।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গ দেখি চমৎকৃত হৈল। ভাহার সন্মুখে ইন্দু শিব ধ্যান কৈল ইন্দ্রদেব ভক্তি দেখি অভি তুই হর। লিঙ্গ হৈতে বহিভূতি হৈল মহেশ্বর। বজ্ঞপাণি প্রতি তবে কহে পঞ্চানন। বর লহ ইন্দ্র তব যথা ইচ্ছা মন।। ইন্দ্রদেব কহে প্রভো শুন ত্রিপুরারে। সকল আপনে জান যা আছে অন্ত-রে। তব অত্যে কহিব শুনহ জগনাথ। মনোগত যত কিছু সব তব হাত । क्शिलन हेन्स्र क्षेत्रि जिन्नगर क्ला। दिजासूत वर्ष खन्नवर भाभ वाला।। ধর্মতীর্থে স্নান ইন্দ্র কর শীঘ্রগতি। ব্রহ্মংত্যা পাপ হৈতে পাবে অব্যাহতি শুনি ভুষ্ট অভিশয় হৈল দেবরাজ। ধমাকুণ্ডে স্নান কৈল না করিল ব্যাজ।। বক্ষহতা। পাপ তার নব দূরে গেল। পুর্কাবৎ শরীরাভা ইচ্ছের হইল।। भतीरतत सूर्भाम य रहेन ७९कन। जांच दर्स हेस्स करत हरतत स्वयन।। कांश दिन नातमानि सुनित विच्यत्र। वक्षकीर्थ स्नान कति कर्नन कतत्र ॥. পিতৃত্রাদ্ধ করিলেক হৈয়া হর্ষ চিত্ত। মনে ভাবে সব মুনি হইল পবিত্র।। কোটিশত কলস করিয়া তীর্থে দেখা। ধর্মেশ্বর মন্তকেতে দিল অসজ্যাক।। তদপরে ইন্দ্রদেব গেল স্বর্গপুরে। দেবের স্বভাবে সবে প্রশংসা যে করে।। কাশীক্ষেত্রে ধর্মেশ্বর লিঙ্গের বিস্মৃত। ধর্ম পীঠ ধর্মকুণ্ড অভি চমৎকৃত। ধর্মকুণ্ডে মান করি এক্ষহত্যা গেল। এইমত কৃহি ইন্দ্র বছ প্রশংসিল।। ভদপরে কভদিনে দেব বজ্ঞপাণি। দেবগণ বহু কাশী চলিল আপমি॥ স্বনানেতে শিবলিঙ্গ করিয়া স্থাপন। পুজা ক্রব্য নানাবিধ আনিল তথ্য।। নানারত দিয়া শিবলিঙ্গ পূজা করে। ইন্দ্রপ্রতি অভি ভুষ্ট হইল শঙ্করে।। ধর্মেশ্বরে প্রদক্ষিণ দেবগণে করি। নিজ পুরে দেবসহ গেল বজ্ঞধারী।। ষ্ডুবিন কহেন অগস্তা মুলিবরে। ধর্মতীর্থ হৈতে ইন্দ্র ভ্রহ্মবধে তরে।।

### কাশীখণ্ড।

## ष्यथ पन ताकात छेलाशान।

প্রার। স্থার এক ইতিহাস স্থতি গুরুত্র। ভোমার সাঞ্চাতে কছি শুন মুনিবর।। বিশ্বুগিরি নিকটেতে কদম শিখব। দম নামে রাজা ছিল অতি পুণাতর ॥ ছদিন তাহার পুত্র বড়ই ছজেন। পুত্রে রাজা দিয়া দমে হ**ইল** মরণ।। কদ**ম শিথরে** রাজা ছুন্ত ম হইল। বড়ই ছুর্নিত কর্ম করিতে লাগিল।। ভ্রাক্ষণের কর গ্রহ হচ্ছে দেয় দান। পীড়েন সাধুরে বড় ছর্জ্জনে দ্মান।। যেই জনে পাপ করে ছাড়ি দেয় তারে। অপাপ জনেরে ধরি বছ শান্তি করে। নিজ দারা পরিত্যাগ প্রদারে রত। প্রজা পত্নী হরণেতে বর্মদা সন্মত।। জীবহিংসা সতত মুগরা করি ফিরে। ব্রোক্ষণ বৈক্ষব হিংসা অবিরত করে। সদালাপ ত্যাগ করি সতত কুসঙ্গ। কুপথ গমনে সদা রহে রাগ রক।। শ্রীনাগ শ্রীকণ্ঠ নাম কন্তু নীহি লয়। যোগীগণ তপস্যাতে সূদত পীভ্র।। একদিন সঙ্গে করি বছু সৈন্যগণ। মুগরা করিতে গেল ঘোরতর বন।। অখে চড়ি চলিল ভুদ্ধম নরপতি। সকলের অগ্রে গেল অভি শীঘ্র-গতি। তার সঙ্গে ফেছ নাহি যাইতে পারিল। সৈনা ত্যাগি একাকী অর-भा अदयभिन । देमदर छेशन्डिक देहन जामक कामदम । सूभीकन छाम प्रिय व्यक्ति क्षीक मतन।। महारमव हेक्का कांत्र ऋतिनत माश्या। क्रक्र म नुश्रकि তথা হৈল শুদ্ধচিত।। আম দূর করিল বসিয়া রুক্ষ তলে।। তথা এক মন্দির দেখিল হেনকালে।। রত্মাদি নির্মিত হয় অতি উচ্চঃতর। মন্দির উপরে রতে থাক থারে থার। মনোহর সে মন্দির দেখিয়া রাজন। অতি শীঘ্র সেই স্থানে করিল গমন।। ধর্মেশ্বর লিঙ্গের মন্দির সেই হয়। নুপতি নন্দন দেখি হইল বিম্ময়।। ভানের উদয় তার অক্সাৎ হয়। ভাষাকে নিন্দা করি বক্সতে কয়।। সংসারেতে আমা সম নাহিক পাতকী। পাপেতে হইরা মগ্ন চিরকাল সুখী।। আখ্যা বন্ধবর্গ সব হিংসি চিরদিন। ভাবাণ অপস্থীগণে হৈয়া দয়া হীন।। প্রদার প্রদ্রুব্য করিছে হরণ। কোনকালে দেব নাম না করি সারণ। সংগারেতে রুখা জন্ম হইল আমার। কেবল ক-রেছি আমি পৃথিবীর ভার।। ধর্মপীঠে যে সকল লোক আসিছিল। তাহা-র মুখেতে পীঠ মাহাত্মা গুনিল।। মাহাত্মা গুনিয়া তথা হুর্ড ম নুপতি। অশ্ব আরোহণে গৃতহ চলে শীঘ্রণতি।। আত্মা বন্ধুগণ আর কুটুর ভাকিল। ব্রাহ্মণ ভপস্বীগণ তাবৎ আনিল।। সকলের প্রতি কছে করিয়া বিনয়। তো মাস্তব আমা প্রতি হইবে সদয় ॥ না বুর্ঝিরা ভোমা সবে ছিংসেছি সর্বদা প্রাক্ষণ বৈষ্ণবগণে দান নাহি কদা।। বছস্ত কি করি সবে করিল সন্ধান।।
প্রাক্ষণাদি গৃহিতাকে দিল বহুদান।। প্রগণ সকল কুপণ গামী ছিল।
সকল শাসন করি অধর্মে আনিল।। নগর মধ্যেকে ছিল যতেক ছুক্জান।
বিধিমতে সকলেরে করিল শাসন।। দীনহীন অকিঞ্চনে নগুধন দিল।
রাজা ভাগে করি রাজা পুজে রাজা কৈল।। রাজ্যধন নারী আদি সব ভাগি
করি। সমর্পণ সকল করিল পুজেশরি।। অতি ভুক্ত হৈয়া রাজা চলিল স্বরিভ
ধর্মেশ্বর লিক্ষ যথা তথা উপস্থিত।। ধর্মজীর্থে মান করি খানেতে বসিল।
ধর্মেশ্বর লিক্ষ যথা তথা উপস্থিত।। ধর্মজীর্থে মান করি খানেতে বসিল।
ধর্মেশ্বর লিক্ষ সদা ক্রদরে ভাবিল।। এইকপ তপসাতে বহুদিন যার।
ভেজপুঞ্জ হৈয়া লিক্ষ মধ্যে লয় পার।। ধর্মজীর্থ মাহাল্যা যে অতি চমৎকার। ইহার বর্ণনে শক্তি আছ্যেকাহার॥ বিধি বিষ্ণু আদি দেব না পারে
বর্ণিতে। একাশীত অধ্যায় কথা হুইল সমান্তেঃ

ইতি জ্রীকাশীখণ্ডে পিলিন্সিতাভীর্থ গর্গমূলি দম ত্বিজের মুক্তি মাধবীকন্যার নির্কাণ কেদারেশ্বর ধর্মোশ্বর আখ্যাতি দশমসর্গ নামে। সমাধ্যঃ।

### व्यथं वीद्यश्रद्याशाशान।

পরার। কার্ত্তিক বলেন শুন মুনি ভপোধন। যে সকল শস্তুদেবদেবী প্রতি কন ।। ভগৰতী জিঞাসেন শুন পঞ্চানন ॥ তোমার নিকটে প্রভু করি নিবেদন।। বীরেশ্বর মাহাত্ম যে শুনি চমৎকার। কি নাপেতে হৈল প্রভূ উদ্ভব ভাছার । মহাদেব বলেন শুনহ বরাননে। বীরেশ্বর প্রসঙ্গ যে অপুর্বর श्राधारिन ।। भिवक्ति जारम ताका हिल कानी श्रुरत । क्रक छक्ति मनाकाल कांडात व्यख्टत ॥ ऋक विदन मार्डे तांका काम माहि कादन । निवासिन क्रुक নাম আছে যে বদনে।। বাছদ্বয় বক্ষে তার ক্লফ নামান্তিত। ক্লফ খ্যান क्रुक क्लान क्रुक गरनानी है।। छोहांत तारबात क्ष्मा गर्व क्रुक ख्का गरकरन স্কাঙ্গে করে কৃষ্ণ নাম যুক্ত।। একাৰ্ণী দিনেতে সকলে উপবাস। ছন্তী काश कामि गतन माहि एकारण घांग।। वालटकत कम्म यमि हतित वागतत। হইলেহ স্তন মুশ্ব নাহি দেয় ভারে।। প্রস্কার পালন রাজা করে পুত্রবত। সদাকাল এইরপ নাজি অন্যমত।। অধর্মের লেশ নাহি পুরেতে তাহার। শিষ্ঠের পালন করে ছফের সংহার॥ ভাল্পণের সম্মান সন্তোষে দিয়া ধন। टमर ज्ला अध्यागदक करतन श्रृजन ।। सानि राज्जि सान जङ कर्जू नाहि करत পর উপকার তার সর্বদা অন্তরে।। তীর্ষে স্লান আচরণে সদা কেশে জল। পরন পবিত্র রাজা শরীর নির্মাল।। পরম সুখেতে সদা করে রাজ্যভোগ। কুবের জিনিয়া ধন ভাণ্ডারেতে যোগ।। এক দিন দেবঋষি আসিল ভথায়। वीना इटल मना यूट्य कृष्य खन नात्र ॥ पूत देश्टक नात्र एटत कतिया पर्णन। অগ্রসার নরপতি করিল গনন।। নারদেরে আনিয়া বসায় সিংহাসনে। করিল পুজন মধুপদ্ধ আচমনে।। দণ্ডেলার পড়ি ভূমে প্রণাম করিল। রাজা প্রতি তপোধন কহিতে লাগিল।। ওহে নৃপবর শুন আমার বচনে। कर मम भूगामील ना जिथि नयुरन।। आमात शमन तोका मर्क मिन्नधारन। তব সম নাহি দেখি ত্রিভূবন স্থানে।। ক্লফ ভক্ত অতিশয় সদা ক্লফ ধ্যান। স্বৰ্গ মতা পাভালেতে ভোমার বাধান।। মোর ইচ্ছা হয় কিছু হিত করি ভব। পাতাল পুরীর এক রুৱান্ত যে কব।। হাট কেশ দিব লিঞ্চ পাতাল পুরিতে। দর্শন করিতে আমি গেলাম তথাতে। তথা হৈতে শিব লিঞ্চ ক-রিয়া দর্শন। আসিবার কালে যাই দানব ভুবন। কলাপ কেভুর পুক্ত দানব কস্কাল। মহাবলী হয় সে দ্বিতীয় দিক্পাল।। হস্তেতে ত্রিখুল করি সদা-কাল ফিরে। দেবতা ত্রাহ্মণে দদাকাল ছিংসা করে। স্বর্গেতে দেবতাপুরী

व्यवटरत्न शिहा । नानांतपु धन वटन ब्यानरत्र रुतिश्रा ।। प्रुब्ध न नार्रिक एमधि তাহার সমান। তাহাকে দেখিয়া সর ভয়ে কম্প্রমান। ব্যর্জ ভীত ভার ত্তিখুল দেখিয়া। মদ্য মাংদে সদা কাল থাকে মন্ত হৈয়া।। তাহার পুরেতে আমি উপস্থিত হৈত্ব। বিদ্যাধরী এক কন্যা কথাতে দেখিত্ব।। ভাহার ৰূপের কথা নাহিক ভুলনা। চন্দ্র জিনি মুখ শশী কি কর বর্ণনা।। আমান্তে দেখিয়া কন্যা প্রণাম করিয়া। আপন রুক্তান্ত কতে কাতর হইয়া।। বিদ্যা ধর কন্যা আমি শুন মহাশয়। গন্ধমাদনেতে মোর পিতার আলয় ॥ বালা कोष्ण यात्रि छथी कति मर्बक्ता (इनकाटन मानव य कतिन इत्। इत्। করিয়া আনে সাপন পুরেতে। বিবাহ করিবে মোরে তৃতীয় দিনেতে ।। **७३ ऋित कतिशाद्य मानव कुर्व्यन । विभागत्य त्रका कत्र श्रुनि उद्याधन ॥** পুর্বকালে মহামায়া বর দেন মোকে। বিষ্ণু পরায়ণ বিভ: করিবে জো-মাকে। মিখ্যা না হইতে পারে গৌরীবাকা কভু। উপায় কি করি আমি শীষ্ড বল প্রভু । দানবের মৃত্যু এক নিয়মিত আছে। যে ত্রিশূল হস্তে সেই ধারণ করেছে। ত্রিখুল আঘাতে বিনে মৃত্যু নাহি তার। ত্রিখুল হস্তেতে ভার আছে অনিবার। ভাগে নাহি করে শুল শগুনের কালে। নিদ্রাতে থা-কম্নে ভাহা ধরি কক্ষস্থলে। যদি হেডা বিষ্ণুভক্ত করেন গমন। এিখুল আ-নিতে পারি শুন তপোধন।। কনাকে আশ্বাস করি আসিলাম হেথা। শীঘ্র করি নরপতি ভূমি চল তথা।। পাতালেতে গিয়া ভূমি নানবে বধিবে। মোর বাক্য মিখ্যা নুপ কছু না করিবে।। পাছাল গমন পথ শুনহ সহর। ভাহার সক্ষান কহি ভোমার গোচর।। সমুদ্র মধ্যতে র্ভুর্থ মনোছর। রত্বেতে নির্মিত রথ তাহার উপর।। তাতে উপবিষ্ট এক পরম সুন্দরী। সমুদ্রেতে আসিয়া প্রভাহ ক্রীড়া করি। পুনর্জার সমুদ্রের কলে স্থা হয়। পাতাল পুরেতে যার জাপন জালয়।। প্রতিদিন এই ৰূপ করে ব্যবহার। অতি শীয় ভুমি চল নিকটে তাহার॥ যে কালেতে সেই কন্যা জলে মগ্ন হন। তুমিহ তাহার দক্ষে করিবে গমন।। তাহাতে ভূমিহ ভীত কভু নাছি रत। **अवरर्ग शांकालारक गमन क**तिरव।। এटकक शुनिया बाका मुनिव বচন। অতি শীক্ষ সমুদ্রেতে করিল গমন।। সমুদ্র মধ্যেতে রবরথের উপ্রি বিরাজিত কন্যা দেখে পরম সুক্ষরী। রাজাকে দেখিয়া কন্যা সমুদ্রে ম-वर्षन। পৃষ্ঠদেশে নরপতি সমুদ্রে পতন। তাবহেলে পাতালে গেলেন নর-পভি। উপস্থিত হৈল যথা দানবের স্থিতি।। তৎক্ষণে দানব নাহি ছিল নিকেডনে। ছেনকালে উপনীত হইত রাগনে। রাজাকে দেখিয়া কন্য

মলয়াগিদ্ধিনী। কুষ্ণ ভক্ত উপস্থিত চিত্তে হেন মানি।। কুষ্ণ নামান্ধিত অঞ্চলেখিল তাহার। রুঞ্নাম স্দা জপ এই ব্যবহার।। তাহা দেখি কন্যা অভি বিস্মৃতা হইল। তদপরে রাজা প্রতি বলিতে লাগিল।। ছুক্জ'ন কঙ্কা-ল নাম ভার পুরী হয়। হেথা কেন মরিতে আইলা মহাশয়।। নরপতি भारतपत द्रव्यां करिल। मलश्रांशिक्षानी श्विन खिं हर्ष देहल।। जनभद्र কন্যা কহে নরপতি প্রতি। সন্ধ্যাকালে দানব আসিবে শীঘ্রগতি॥ সন্ধু-ষ্যের রক্ত মাংস করিয়া ভক্ষণ। মন্ত হৈয়া দানব জাসিবে নিকেতন।। স্মাসিয়া কন্ধাল দৈত্য শর্ম করিবে॥ মরণ ত্রিশূল কক্ষে চাপিয়া ধরিবে॥ শুন রাজা আমি যাহা করি নিবেদন। অস্ত্রাগারে তুমি শীন্ত করহ গমন। এক গর্ত্ত অন্ত্রাগারে আছে গোপনেতে। লুকাইয়া নরপতি থাকহ তথাতে ভার মৃত্যু খূল আনি দিব তব স্থানে। কড়ু নাহি ভার মৃত্যু খূলাঘাত বিনে এত শুনি নরপতিগোপনে রহিল। সন্ধ্যাকালে দানব যেপুরীতে আইল।। बहुत्त आनि हिल कमा उद्देश मिल। कमाविष्ठी मानव य कहिए लाजिल ॥ এই স্ব রুছ আনি দেবগণে মারি। আনিয়া দিলাম স্ব নিরুটে ভোমারি। ভাগুরেতে আছে দেখ বহু রত্নধন। সকল তোমার জান শুনহ বচন।। কল্য আনি দিব হৈ সহত্র দাসীগণ। অহর্নি শ ভারা ভব করিবে সেবন।। পরশ্র দিবদে বিভা করিব কোমারে। বিভা হৈলে সর্ব্ব ছুঃখ যাইবেক দ্বুরে। ইত্যাদি অনেক কথা কন্যাকে কহিল। ত্রিশূল কক্ষেতে ধরি শয়ন ক্রিল।। অসুরের নিজ্র। হৈলঅতি ঘোরতর। হেনকালে কন্যা তথা গেলে-ন সম্বর । দানবের কক্ষে হৈতে ত্রিখুল আনিল। নুপতির নিকটেতে অতি ক্ষত গেল। এভাত হইল তবু দানব শন্ধনে। ত্রিশূল লইয়ারাজা গেল সেই স্থানে। দেখিল দানব আছে নিদ্রাতে বিভোর। বামপদাঘাত করে তা-ছার উপর। পদাঘাতে দানবের নিদ্রা দূর যায়। সম্মুখে পুরুষ এক দেখি বারে পায়। ভাহাকে দানব কহে অভি দম্ভ করি। মরিবারে আইলে কেন ভুমি মম পূরী। কে ভুমি কোখার বাস কহ সভা করি। প্রাণ নিরা পলাইয়া যাহ নিজ পুরী।। রাজা বলে তব সহ যুদ্ধ যে করিব। জয় পরা-জয় জানি তবে দে যাইব। শুনিয়া দানব অতি কুপিত হইল। রাজার ক-ক্ষেতে মুখ্টি প্রহার করিল।। রাজার জদয়ে আছে ক্লম্ড নামান্ধিত। বিশে ষতঃ অন্তরেতে ক্লম্ড বিচিঞ্চিত। দানবের মুষ্টাঘাতে কি করিতে পারে। কিঞ্ছিৎ বেদনা নাহ পাইল শ্রীরে॥ তদপরে নরপতি অতি ক্রোধ হন। দানবেরে কৈন এক চণেটা ঘাতন ।। চণেটাঘাতেতে দৈতা মোহ অতি

হৈল। অবনীতে পজি দৈতা অচেতন রৈল।। তদপরে চেতন পাইল ফত-**करा। अखि मर्श करत रेमका रकाथ रेश्या मरन।। मझ युद्ध छे अरमरक दय** ঘোরতর। পরাভব দানবেত হইল সত্বর।। ত্রিপুল আঘাতে রাজা দানবে সংহারে। ভাহাদেখি কন্যা হৈল প্রফুল অন্তরে।। রাজার অগ্রেতে কন্যা হৈরা উপস্থিত। সমাধে দাঙায়ে রহে হইরালজ্জিত।। মৃত্পরে কতে কথা শুন মহাশ্য। ঘোরতর বিপদেতে মোর রক্ষা হয়।। হেনকালে তথা-তে নারদ মুনি গেল। উভরেতে উভরের পরিচয় দিল।। অতি ভৃষ্ট তদ-পরে হৈল ছুই জনে। বিবাহের দিন ধার্য্য কর তপোধনে ॥ গন্ধর্ক বিবাহ मुनि कुरे करन निया। कांभीटक शमरनत পथ (मन (नशारेखा।। तिरे भरध তুই জনে গমন করিল। অতিশীঘ্র কাশীপুরে উপন্নীত হইল। আপনপুরী-তে রাজা করিলগমন। পুরবাদী দবে কৈল মঞ্চলাচরণ।। তদন্তরে মরপতি ছর্য কলেবরে। মলমাগন্ধিনী সহ নানাভোগ করে॥ স্বামীপ্রতি ভক্তি অতি मलद्वाशिक्तिने। जनक स्वामीटक दानी तनत जुला मानि ॥ এक निन दानी কহে রাজার গোচরে। এক নিবেদন প্রভো বলেছি ভোমারে। পুত ক্ষমে এই চিত্তে হয়েছে বাঞ্ছিত। অপ্তিসাব্য তাহা নহে ঈশ্বর নিশ্চিত।। কিন্তু এক নিবেদন শুন মহাশয়। অভীষ্ট ভূতীয় ব্ৰভ উত্তম আছয়।। পুর্বের এই ত্রত করি কুবেরের নারী। অনেকেতে সেই ত্রত আচরণ করি।। চিত্তে হয় সেই ব্রত করি আচরণ। তব আজা বিনে প্রভো না পারি কখন এত শুনি অতি তুই হৈল নরপতি। এত আচরণে রালা হইল সম্মতি।। কোন দেব পুজা ভাতে করিতে হইবে। ভাহার বিধান সব আমাকে বলি-द्य ॥ तांकातानी अहे मत कर्याशकथरक । हा निक कथा। म कथा देश्ल मर्मा-भट्न ॥

# অথ মলয়াগিশ্বিনীর তৃতীয়া ব্রত।

পরার। কার্ত্তিকেয় বলেন জগস্তঃ মুনিবরে। রাজপত্নী যে প্রকারে ব্রতাচার করে।। বিশেষতঃ বলি শুন মুনি তপোধন। অভীষ্ট ভৃতীয় ব্রত অপুর্ব্ব কথন।। কুল পুরোহিত রাজা ডাকাইয়া আনে। কহিল ব্রতের কথা তার বিদ্যমানে।। পুরোহিত বিধান যে সকলি কহিল। সেই মত নরপতি বমস্ত করিল।। মাঘ শুক্ল ভৃতীয়'য় আরম্ভন হয়। রাজারাণী পূর্ব দিনে সং থম করর।। পূর্ণ কুন্ত স্থাপন করির। ত্রত দিলে। তছপরি তাত্রপাত্র রাখিল যতনে।। আত্তব তণ্ডুল তাত্র পাত্র উপরেতে। আচ্ছাদন করিলেন হরিতা বস্ত্রেতে।। চারি ভোলা স্বর্ণে পরিমিত ব্রদ্ধা করি। ভাছার স্থাপন কৈল ভাত্রপাত্রপরি।: পুজাতে বসিল দ্বিজ হইয়া ভৎপর। কায়মন বাক্যে শুদ্ধ নির্মাণ অন্তর ।। আশনাকুরী মধুপকু বস্ত্র আর । সুগন্ধি চন্দন পুষ্প নানা উপহার । যোড়শোপচারে পুকা যেমত বিধান। সহস্র বিকাশ পচ্মে ছোম নমাধান।। দক্ষিণান্তে ভোষণ আচার্য্য ছিজবরে। ত্রত দিনে রাজ त्रांभी अनमन करत्।। शतकिन तांकताभी कति श्रांकःसान। महत्स्रक खांकर्ष যে করিল আহ্বান।। নানাবিধ উপহার আনিল ভতক্ষ। ভক্তি করি করা ইল ত্রাহ্মণ ভোজন।। ত্রাহ্মণে দক্ষিণা দিয়া সন্তোধ করিল। ভোজনাব-শিষ্ট বৃতি প্রদাদ লইল।। বিধিমতে বৃত সাক্ষ করিয়া যত্নেতে। মলয়।-গ্রন্ধিনী রাণী হর্ষ হৈল চিত্তে। তদপরে রাজরাণী ক্লভাঞ্জলি হয়। গৌরীকে অন্তরে ভাবি প্রার্থনা করর।। বৃত সাঞ্চ হৈল মাতা ভোমার প্রসাদে। মম मरनांगक वाक चाट्ड कव शरम।। अहे वह रमह मांडा कहि निरंतमन। मत्र शुक्त रहा भिव विकू शताहर । जना माज वर्श द्वान कतिरवनर्गन । याएग বর্ষের শিশু হইবে ভতক্ষণ। ভোমার চরণে মাতা এই নিবেদন। রুপা ফরি কর মাভা মানস পুরণ। হেমকালে দৈববাণী অকস্মাৎ হয়। তব মনোগত পুত হইবে নিক্ষয় । রাজা রাণী ছুই জনে পরম হবিতে। নিতা নিতা ক্রীড়া করে নানাবিধিমতে।। কত দিন পরে রাণী গর্ত্ত रग अतिल । काल भूर्न देश्या तांनी भूख अमितिल।। महासूची तांका जत्य গণকে ডাকিয়া। শুভাশুভ দেখে যব গণনা কয়িয়া। গণনা করিয়া পরে কয়। মূলাকেতে জম্মে শিশু ইহা ভাল নয়।। রাজার বিনাশ হয় পুজ্র না ত্যজিলে। রাজা ওনে হেন কথা রাণীকে কহি-লে।। ত্রতের সাধনে পুতা হইল সত্মর। বিশেষতঃ পুতা হৈলে হয় বংশধর॥ পুজ ত্যাগ করা নহে আপন কারণে। জন্ম হৈলে মৃত্যু হয় আছেন নিয়মে মন্ত্রীগণ বলে রাজা শান্ত্রে যাহা কয়। তদতুসারেতে কর্ম করিতে যে হয়।। ৰুদ্ধ মন্ত্ৰী সবে বলে গিয়া রাণী স্থানে। মনোযোগ কর মাতা করি নিবে-দনে। রাজার অনিষ্ট হর গণকে কহিল। স্তত্ত্ব পুজ ত্যাগ উচিত ছইল স্থামী পরায়ণা অতি রাজ্যাণী হয়। দেবতা অধিক করি স্থামীকে জানয়। রাজার অনিষ্ট যদি পুত্র হৈতে হবে। ইহাকে অবশ্য ত্যাগ এক্ষণে করি-বে ॥ शाजीवन छाकि तानी करहम तहम। शुख लहेता नकरलटक कत्रह नमन কালীকেত্রে পঞ্চ মুদ্রা পীঠ আছে মাথা। পূজ লৈয়া শীঘ্রগতি চলি যাহ ভথা।। তথাতে বিকটা দেবী প্রকাশিতা আছে। পুত্রকে রাখিবে সেই বিকটার কাছে।। পুঞ্জরিষ্টি যে ৰূপ শুনিলে বিবরণ। দেবী নিকটেতে সব कतिदव काश्रम ॥ जमश्रद थाजीशन शुख्यक लहेल । दिक्छ। प्रवीत श्रादम छेशनी छ देशन । अभी यांका नकन कहिल एनवी आदि । शुक्रादक आधिता বাত্রী আইল ভতক্ষণে।। তদপরে বিকটা যে যোগিনীকে বলে। স্বর্গেভে লইয়া যাহ মাতৃগণ হলে।। শিশুর রুরান্ত সর কহিলে বিস্তার। মাতৃগণ যথাবিধি করিবে ভাহার।। এই বাক্য জনি ভবে যতেক যে গিনী। মাতৃগণ निक छिटक हिन्दा कथनि । उन्हीं मार्ट् भ्री कानि यक माक्श्व। साशिनी-রে পুত্র লইয়া উপস্থিত হন।। পুজের রন্থান্ত সব করিয়া প্রবণ। তদপরে মাতৃগণ কৰিল বচন।। কাশীকেনে পুদ্ধ লইয়া চলত্ত্বিতে। ৰোড্শ বংশর পুঞ্ছ হবে গভ মাতে ॥ বীর নাম খ্যান্ত হবে শুনহ্বচন। এই পুঞ্ শিবভক্ত হবে প্রারণ।। ভদপ্তে যোগিনীরে কাশীতে আইল। গভ্যাত্তি থোড়শ বর্ষের পুজ্র হৈল।। শিলধানে শিবজান করিয়া সম্বর। ঘোরভর फ्रभगा कृतिन दीवत्व।। सङ्हित अभन्न इंहेन्ना फ्रम्भट्ट। तत्र लङ्ग्या ইক্ষা আছে ভবান্তরে।। বীর কহে গুন প্রভো করি নিবেদন। ভব পাদ-शास्त्र किंख तरह मर्कक्षा । अहे कथा भारत कर बाक्तर्या हहेल। शास्त्राल ভেদিয়া শিবলিক যে উঠিল।। তদন্তরে বীর প্রতি কছেন শস্তর। এই দেখ শিবলিঙ্গ অতি মনোহর।। অখ্যান হইল লিঞ্গ বিরেশ্বর নাম। ইংার সাহাত্ম কহি তব বিদ্যমান ।। বিনে মুদ্রা বিনে পত্তে পুজে বীরেশ্বর । অনা য়াদে তার মুক্তি হইবে সত্তর।। কলিতে মাহাম তার না বুঝিবে নরে। वृक्तित्व की झात कथ व्यविक् करता। आंत्र कोर अन वीत आंभात वहन। बाब रहाती श्रुमः रहशा कतित्व भ्रममः समहीत्व अहे विरम्भ शहित्व मिका। ৰীর**প্রতি মহাদেব কৈল ব**্দান । তদন্তরে বীর ক্তে শুন পঞ্চানম। কা-भीत माहाञ्च প্রভে। করিব অবণ ৫ কোন ভীর্থ কোন স্থানে ভারেন প্রকাশ কুপাকরি ভূতনাথ কহিবে নির্যাস।। বীর বাক্য শুনি শৃন্ত, অতি তুই হয়। তীर्धित बृङ्खि यव वीत अधि क्या। वीरतत अनम कथा अर्थुक कथन। अन-শীতি অধায় যে হইল সমাপণ।।

### णथ वीत् श्रक्ति महारम्दवत् **की**र्थ कथ्न !

পায়ার। শুনহ অগস্তা মুনি কহে যড়ানন। বীর প্রতি তীর্থ কথা কহে जिल्लाहन ।। शका बक्रण नमी मक्रमानि श्वान । य मकल छीर्थ आहर करंम শুন নাম।। গজা বরুণা সঙ্গন এই প্রথমতঃ। তদপর পাদোদক ভীর্থ চমৎ কত। মন্দ্র হুইতে যথে দেব নারারণ। যাহাতে করিল আসি পাদ প্রকা-क्षम ।। जनवरि त्मरे छीर्थ मकत्वत मात्र । वर्गमा ना रह जात्र माराज अभात সেই স্থানে শ্বেভদ্বীপ আছেন প্রকাশ। তদপরে করারি যে ভীর্থের আ-ভাষ। ভাষার দক্ষিণে আছে শংখতীর্থ সার। চক্র গদাপত্ম ভীর্থ ক্রমাব্রধি আর । গরুডের তীর্থ আছে তাহার দক্ষিণে। নারদ প্রহলাদ তীর্থ আছেন সে ভানে।। তাহার দক্ষিণে অম্বরীশ ভীর্থ হয়। আদিতা কেশব ভীর্থ ভীর্থ मालाज्य ।। शत्रांत निकट्डे डीर्थ क्रमभः मिक्ट्र । अत्री मक्रम शर्याख आ ছেন নিয়মে।। অনেক আছেন ভীর্থ ইহার মধ্যেতে। পুর্কেভে বর্ণনা হয় তীর্থ অধ্যায়েতে। এসকল তীর্থ মধ্যে শ্রেষ্ঠ পঞ্চতীর্থ। প্রথমতঃ অসী গঞা বড়ই মাহাআ।। দ্বিতীয় দশাশ্বমেধ নাম তীর্থ আর। ততীয়েতে পাদোদক ভীর্থ সারাৎ হার ॥ চতুর্থে পঞ্চনদ পঞ্চমে মণিকর্ণি। এই পঞ ভীর্থে স্থান পুরাণেতে বণি।। পঞ্চভুতি দেহের ধারণ নাহি হয়। অন্য অন্য ফলতার্ভি বছত আছর । বীর প্রতি বরদান করি **দয়াময়। কহিলেন ভীর্থ** লব যথ য়ে আছুর। বীর আপেনার মনে যথা বাঞ্ছা ছিল। বিরেশবে পুজিষা সে সব বর পাইল।। বীর বছ স্তব করে দেব ভূতনাথে। অফাঙ্গে অধাম করে পভিয়া ভূমেতে । মহাদেব অন্তর্ধান হৈল তদপরে। গমন করিল বীর আপন নগরে। মাতা পিতা প্রতি বীর সকল কহিল। শুনিরা যে রাজা রাণী আনন্দ আইল।। অভি ভূষ্ট হৈল রাজা বীরকে দেখিরা। खान्त्र पिल धन अष्ट्रत कतिहा।। जात शरत वीरतत त्य विवाह इहेन। স্বরাক্যে পুরেরে রাজা অভিবিক্ত কৈল। পুরে রাজ্য দিয়া পরে রাজা গেল বন। তার সহ রাণী তবে করিল গমন।। রাজা হৈয়া বীর তবে পালে अकार्यमा वीदात मात्रदन जुके देशन नस्तकन ॥ धर्म कीर्जि नानामण कदत मिटन मिटन । वीव ब्रांका व्याकाटक एमव जूना माटन । मीन हीन व्यक्तिश्राटन জানে ডাক দিয়া। সে সকলে ধন দিয়া প্রচুর করিয়া।। বছকাল পর্যন্ত যে নানাভোগ কৈল। স্থাপন পুজকে বীর রাজ্য ভাল দিল।। বিশেশর বিখেশর বচন যে হইল সার্ণ। ও ভক্ষণে করে রাজা কাশীতে গমন।।

কাশী নিয়া মনিকর্নি মানাদি করিল। ক্রান্ম ক্রমে সর্ব্ব স্থানে প্রমণ করিল ভদপবে বীরেশ্বর আছেন যথায়। অতি শীঘ্র করি বীর গেলেন তথায়।। নানা উপহারে হর পুজন করিয়া। প্রণাম করিল বল্ল ভূমেতে পজিয়া। জদপরে বীরেশ্বর অগ্রেডে বালা। নায়মন প্রকা করি ধ্যানেতে রহিল।। এইমত বীরে তথা থাকে করি ধ্যানা স্থানারির বীরেশ্বর হউল নির্কাণ।। বীরেশ্বর আখ্যান যে অসুর্ধী কথন। প্রবণ পাঠেতে হয় পাপ বিমোচন।। বিশ্বেশ্বর আখ্যানেতে প্রস্কু তীর্বের। প্রবণেতে ভূরে যায় মালিনা চিত্তের যে সকলে ভক্তি ভাবে নিতা পাঠ করে। কাশী প্রাণ্ড হয় সবে ভবসিন্ধ হরে কামেশ্বর প্রান্ত ভাব স্থানামী অধ্যায়। সীতানাথ বস্তুদাস তাদিল ভাষায়।। বীরেশ্বর প্রস্কুত্রির মাগ্রামানী অধ্যায়। সীতানাথ বস্তুদাস তাদিল ভাষায়।। বীরেশ্বর প্রস্কুত্র যে অতি পুণা কর: চোরাশি স্থ্যায় নাক্ষ হইল সপ্তর।।

#### অথ কামেখনোপাখ্যান।

প্রার। ক'র্ত্তিক কছেন যে অগন্তা তপোধন। কামেশ্বর শিবলিঞ্চ গুন বিবরণ।। জুর্কাসা মুনি যে বছু ভীর্থ ঘাত্রা করি। কোন কর্মো মন ডুষ্টি না হৈল ভাহারি। তদপরে কাশীপুরে আদি মুনিবর। তপ্রদার স্থান দেখি अनुकु अनुत् । अनुत्न **आत्म ज्ञान ज्ञान अत्या**पिकः । मर्जकी**र्य मित**-शिक्र (प्रशिक्ष काशिक।। काराभाष सुनिवत शक्ष्मम कर्षे। भिविधिक की-পিত করিতে চিত্তে ঘটে । কুণ্ড করি ভাহার গম্বে তপোধন। বছকালা-विवि शांत कत्राय माधन ।। क्यान कर्मा महाटमर ध्यमन न। देश्य । कृष्णिक হুইয়া মুনি ভাবিতে লাগিল।। অদা অংমি কভিশাপ করিব কাশীতে। তী-থের মাহাল মব হইবে বাজে তে।। এইন্দপ চুকাসার কোপানল হৈল। অতি প্রজ্ঞানত অ্রি কাশীতে ব্যাপিল । কাশীবাদী সকলেতে হৈল চমৎ-কার। অগ্নির উত্তরেশ কারো রক্ষা নাহি আর।। তমো অংশ মহাঝ্যি প্র-বল প্রতাপি। মনোবাঞ্চা সিদ্ধানতে বড়ই উত্তাপি।। বিশ্বেশ্বর উৎক্ষিত তুর্বাসার কোপে। কি জানি তুর্বাসা যদি কাশী পুরী শাপে।। অতি শীস্ত कति শिव यथ। मूनिवरत । विक देश्ट विश्व ट्रिंट निक मूर्खि धरत ॥ नन्मी আদি করিয়া যে কোটি শিবগণ। মহাবল ভার। কাশী করেন রক্ষণ।। কা-শীর শাপের কথা শুনি শিবগণ। শরতের মেঘ যেন করয়ে গর্জন।। ছুর্বা-

সার শাপ ভরে দেবতা ভাবিত।। শিবগণ সিংহনাদে পৃথিবী কম্পিত।। মহা এলয় কাল উপস্থিত হইল। আক্ষালনে শিবগণ বলিতে লাগিল।। সমুদ্র শোষণ করি পৃথী রসাভল। স্বর্গের উপরি করি পাতাল সকল।। একে চুঠ্নাসার আগ্রাহয় প্রস্থলিত। ত্বিতীয়েতে শিবগণ করিল কম্পিত।! ছুর্দাসংকে মহাদেব কংহন সত্ত্ব। তব তপসাতে ভূষী আমার অন্তর।। वत लह महाश्वविषय। हेक्हा इत। (इनकाटल क्रुकीमा (य स्वय कृति कन्ना। তব দর্খনেতে মুক্তি হইল আমার। ইহা টেখন্ডে অন্যবর দাছি কিছু জার।। ক্লপা করি এই বর দেহত শক্ষর। মম চিন্ত ভব পদে রহে নিরস্কর।। আর এক নিখেদন শুন পঞ্চানন। কাশী প্রতি হৈয়াছিল সমক্রোধ মন॥ আমার যে মনোগত স্ব জান ভূমি। স্কল বিলিড কিয়া নিষেদিব আনি॥ মম क्लारभ कामीबागी পाইल रा जाम। এই अश्रताव स्मात क्रम कीर्खिवाम। **শুনিরা যে ভূতনাথ ক্তেন বচন। ভোমার সমান ওকে নাহি ত্রিভুবন।।** তোমার স্থাপিত লিম্ম অতি পুণাকর। কানেখর খ্যাত লিম্ম হটল সম্বর।। কামকৃপ বলি এই যুষিবে জগতে। কুপের মাহাত্ম কহি শুন মহামতে।। এই কাম কূপে যেবা স্লাম কবি পরে। ভোমার স্থাপিত নিঙ্গ পুস্কে নিব-স্তরে।। সর্ক কাম বিদ্ধি তার জানিহ সম্বর। অবশেষে নির্বাণ পাবেন সেই मत ॥ अहे दाका विल इत टेडल अखर्गाटन। प्रकीमात व्यागिष्कि देशल কাশী স্থানে। কামেশ্বর প্রসঙ্গ যে অতি পুরাকর। পঞ্চশীতি অধ্যায় সমাপ্ত জ্বস্থার। বেবা পাট করে কি**য়া করেন জ্ঞারণ। সকল পালেতে মুক্ত হয়** (महेकन ।

#### ---

### ভাগ বিশ্বকর্মেশ্বরোপ্রধান।

পার্বার। বিশ্বকর্মেশ্বর লিফ যেমত প্রকাশ। পার্বাতী নন্দন করে অগভ্যোর পাশ। ব্রাটা একাপতি পুজ বিশ্বকর্মানাম। গুরু স্থানে যেদ-পঠে গুণে ভরুপাম। কিছুকাল গত হয় বেদ পাঠ করে। গুরুজদেব বলিজেক বিশ্বকর্মার ববে।। পত্রের কুঠীর দেহ করিয়া নির্মাণ। তথাতে থাকিব আমি শুন মতিমান। বর্ধাকালে তথাতে যে নাহি পড়ে জল। বিচক্ষণ করিয়া যে নির্মাবে সকল।। গুরুপারী বিশ্বকর্মে বলেন বচন। ভাসের কাঁচলি বন্ধ্র দেহ পুরাতন। কাচলির বন্ধ্র করি দেহত আমারে। ভদপরেগুরুকনা) বলেন সমুবে। গুইকর্ন ফুলত্বর্গ গঠন করিয়া। চিত্র বিচিত্র করিদেহত

আনিয়া। গুরুপুত্ত কহে শুন আমার বচন। পাছকা যুগল দেহ করিয়া जुबन । कर्मगांनि कटलट्ड পाङ्का शर्मिता। क्रनातारा जात मरधा যাব যে চলিয়া। বিশ্বকর্মা শুনিয়া সকল মনোনীত। স্বীকার হইয়া চিন্তে ছইল ভাবিত।। এ সকল বস্তু আমি কভু নাহি করি। কি প্রকারে গুরু আঞা হৈতে আমি তার ।। বিনা সাধনেতে ইহা সিদ্ধি নাহি হব। অতথ্য বনে পিয়া ভপস্যা করিব ।। বনমধ্যে বিশ্বকর্মা প্রবেশ করিল। ভার মধ্যে धक मूनि मन्यन शांकेल ।। मुनित प्रतर्भ नव करत निरंतपन । कर श्रुर्शिक জ্বপেতে করিব মাধন ।। মুান কহে বিশ্বকর্মা শুনহ বচন। কাশীপুরে গিয়া ভূমি করহ সাধন । এই উপদেশ বিশ্বকর্মা যে পাইয়া। কাশীপুরে অভি শীঘ্র গেলেন চলিয়া।। বিশ্বকর্মা শিবলিক করিয়া স্থাপন। অভিশয় তপ-স্যা করেন সর্বাক্ষণ।। পুপ্প আদি দিয়া পূজা করে নিরন্তর। সম্ভূষ্ট হইয়া শিব দেন ভারে বর ।। এক্ষা ঘণা সৃষ্টিকর্ত্তা মম আঞ্চাবত। নির্মাণেতে কর্ত্ত। ভূমি হবে সেই মত।। সর্ব্ধ কর্ম্ম পারকতা তোমাতে হইবে। সকলের সনোনীত নিৰ্মাণ করিবে।। রজত কাঞ্চন মণি মুক্তাদি প্রবাল। সণিগণ आफि कति य नकल जाल।। निर्माण कतिएक यादा मानम कतिएत। स्म সকলে পারকত। অবশ্য হইবে॥ ভবিষাতি আর এক কহি ভব হানে। কাশী পুরে বিবোদাস ভোগ অবসানে । সক্ষরেতে গিয়া আমি পুনঃ কাশী আসি। সেইকালে সন্দির নির্মাবে বারাণ্দী ॥ তোমার নির্মিত দেই হই: বে সুন্দর। উমাসহ মম বাস হবে নিরস্তঃ । তংকালেতে বিশ্বকর্মা নির্কাণ পাইবে। স্বশরীরে শিবলিক্ষে প্রবেশ করিবে।। তোগার স্থাপিত লিস বেবাজনে পুজে। সর্বকর্ম ক্ষম হৈয়া লিকে যমরাজে।। পতে তার মুক্তি লাভ হইবে সত্তর। বর্তাশীতি অধ্যা সাক্ষ হৈল মুনিবর ।।

#### ---

#### अथ मक्ष्यक ७ मटक्यंद्राशी गान।

जिल्मी। खनखा करहन श्रूनः, शार्वछी नम्मन छन, कामीत गांशंख हम्दकात। छनित्त ना यात्र एकः छ, खिक वाष्ट्रा त्यांछ, वित्मय छिनिव श्रू खात्र। छनित केश्वत सामि, खामम तिक गमापि, छनिताम अश्रूमी कथन। मत्कश्वत हर्ष्ट्रम्म, भिवित्तक य श्रुकाम, विद्यातिष्ठ कह विवत्न।। खात এक निर्वनन, छन श्रंकू यछानन, मकताल निम्म। कति हरत। भिव-निम्मा कति यहे, कामीश्रूने खाशि सह, तिस्वाशा करत कि श्रेकारत।। শুহ কছে তপোধন, করি শুন নিবেদন, দক্ষ প্রজাপতির প্রদক্ষ। শুন মুনি षूषि धनाः शरतरङ कहिव खना, आहुर्ভाव हर्जुमन लिखा। এक निन नाता-मन, माल कति श्रमामन, हेला कानि यक प्रवच्या। अकटा मकटन हटन, মহা রক্ষ কৃতৃহলে, কৈলাদেতে গমন করয়।। হর গৌরী দৃষ্টি করি, প্রণাম করিল হরি, ত্রক্ষামাদি পবে প্রণমিল। দেবতা সকলে হেরি, উঠিলেন बिश्ववाती, बच्चा विकृ श्टास्टाट धतिल ॥ अणि नमामत छाव, वमाहेला की-र्खिवान, देश्यक्षानि (मरव कार्यामिया । तकरल नरेश्वाच मरन, मरहरभंत निज्ञ थाटन, क्रार्थ क्रार्थ विश्व कारिया । मश्राह्म तरल श्राह्म, नाह्म महाह्म महाह्म ভূমি সৃষ্টি করিত্ব পালন। তাহার কুশল নহ, গোলোকের বার্ত্ত। কহু, 🍇 মতে আছেন সর্বক্ষ। পরে কহে নারায়ণ, শুন দেব পঞ্চানন, কুশল যে তব ক্লপাৰন। ভলপতে ত্ৰিলোচনে, কহিলেনা পদাসনে, কহ ভুমি আপন মলল।। জুমি আছ সৃষ্টিকর্তা, বিশেষতঃ বেদবেতা, ভাছে বিশ্ব আছে উপাসত। শুনিয়া চতুরানন, কর্যে'ড় করি কন, বিশ্ব নাহি আছে क्रकें हिन्द । कामा क्रमा रभनगरन, काश्चामित खिरत्त हिरम, मलदमरव मरन्त्राय করেব। নানাবিধি মিষ্ট ভাষে, কথোপকথনে শেষে, বিফু জাদি বিদায় হলেন। পথ্যপ্রে দক্ষপতি, অভিনানী হৈয়া অভি, মনোমধ্যে বিচার ক্ষরয়। ক্রামাভা যে মহেশ্বরে, কিছু না জিলোসা করে, ক্ষের মধ্যে অপমান হয়।। আমি তার নহি অনা, খাড়র গুরুতে গণা,আমাকে সম্ভাষ নাতি করে কৈবা দিব দেয়ে তারে, না ব্কিলা আপনারে, কন্যা দান করেছি কুবরে।। বাস যার শ্বাশানেতে, চিতাভক্ষ শরীরেতে, রূবে যার হয় আরোহণ। ফণী भुधः शृष्यात, किका मार्श्य मनाकात, नाना श्वादन करतन खमन ॥ **महत्व** পাগল শিবে, মোর মান কি জানিবে, দেব মধ্যে কেবা গণ্য করে। যথো-हिंछ कल मित, उटत छु:थ निदादित, छ।ति एक ठटल निक घटत्।। छाटत দক্ষ প্রজাপতি, দেখিবে কি করি গতি, স্থির যে করিল মনে মন। যঞ এক আরম্ভিব, শিবে মাহি নিমন্ত্রিব, অপমান পাবে ত্রিলোচন।। দফ্রপতি ভূষ্ট মনে, বিশ্বকর্ষে ডাকি আনে, যুক্ত স্থান আরম্ভ করিল। স্থানে এত্তন হয়, মরকত মণিময়, নানারত্নে নির্মিত হইল।। রত্নেতে নির্মিত ঘর, ধ্রেলা ভাতে থরেথর, নানাবিধ প্রতাকা উড়িছে। নীলখেত রক্তবর্ণ তাহাতে জড়িত স্বৰ্ণ, সৰ্বদিগ আন্দোলিত হৈয়াছে।। তদপয়ে দক্ষপতি, যজ আর দ্বিল অভি, নারামণে অত্যে আনাইল। একা আদি যত দেবে, মুনি থাই-श्व महत्व योष्कामि निमञ्जव देखन ॥ यर्श-मर्जा श्रीकाह्मत्व, निमञ्जिन वर्ष

हिएक, भिव विमा जकरत कहिन। (वंबका जकरत वाब, यरकरक वतन शांबी চমৎকৃত যভ আরম্ভিল।। যতেক দক্ষের কন্যা, রূপে গুণে অভি ধন্যা, मक्र शक्ति नामत्त आनाम। कामाणा नकत्ल आनि, मिल नत्त शानित्जायी, মণি মুক্তা রত্নাদি যোগার। দক্ষের জামাত্রগণ, সকলেতে হর্ষ মন, ভার মধ্যে চন্দ্রের বাছলা। রূপের গৌরব বড়, মান্যমান অতি দৃঢ়, উপমাতে (कर नट् जुला।। नर्सानत जाभमन, मुनि श्विम नर्सकन, हर्जुमि (भ (पम-ध्वनि छात्र । यक द्वारन निक्तिशन, यात इत्र य जानन, विनटलन आनिक्र ख्याद्र ।। दक्वल क्रेमानटकारण, णूना व्य ट्र ट्र खारन, मिरवत जामन ख्या इस । পরেতে দ্ধিটি श्रायि. मक्स्यटक इटर चानि, नर्कक्य न नर्मन कत्स एमरथ नर्ख (मवशन, करियादि निमञ्जन, वित्न मित अशि मकरणादि । क-পিত দ্বিতি মুনি, দক্ষ প্রতি কহে বাণী, বড় যজ্ঞ কর সহামতে !! দেখি-हाहि युक्क दृष्ट्, द्वन नाहि (पश्चि कडू, नाहि इस ना इहेद्द जात । युक्क खाने শোভা অতি, কি কহিব মহাসতি, দেখিয়া হৈয়াছে চমৎকার।। যজেশ্বর नाताव्रण, रा यद्ञारक व्याणमन, उत जारगानिस हेश करणा। यक कथा। কিবা কব, আমোদিত সর্বাদেব, প্রবর্ত আছেন সর্ব কর্মে। বেদধান চতুদ্ধিরে, করিতেছে ঋষিভাগে, ত্রদ্ধা করে বেদ অধ্যায়ন। তাগ্রি প্রস্থানিত হয়, মৃত ঢালে অতিশয়, হন্দীপুণ্ড করিয়া প্রসাণ। মন্ত হৈয়া দেবগণ, সভত আনন্দ মন, আপন বিভাগ সবে লয়। কিন্তু এক চমৎকার শুন দক্ষ কহি সার, ঈশ্বর বিহীন যক্ষ হয়।। যে যক্ষেতে ত্রিলোচন, নাহি करत जाशमन, यक कल नाहि इस शरत । जुलि मक अवाशिक, मर्स कर्स्य শুদ্ধ মতি, হেন বৃদ্ধি কে দিল তোমারে।। এই বাক্য দক্ষ শুনি,কোপচিত্র करह वानी, वृद्धिलाल इहेल ভোমার। চিতাতম্ম মাথে অঙ্গে, ভূত প্রেত मना मटक, मित इस शांशरकत मात्र।। कात कामा व यरकरक, रयाना नरह কোনমতে, ইহাতে ভোমার কিবা কতি। ঋষি শিবনিন্দা শুনি, গমন करतन यूनि, करवक ना तरह महामिछ।। पूर्वाम। कूशिक मन, हिल्लन ভতক্ষণ, সজে করি যত শিষাগণ। শিবভক্ত যত ছিল, সকলেতে চলিরা পেল, ত্রন্ধা গেল আপন জুবন। যজভঙ্গ উপস্থিত, দেখিদক্ষ বিপরীত, নান. विक अञ्चलत करता बाका। यरकक हिल, त्रमता छेना क रेन्स, धरन कुविरसकः **অনেকেরে ।। বহু মুনি গতি কৈল, কেহ কেহ তথা রৈল, দ্বিল** রহে ধনের लाट्डिट । यटब्ट्ट नांत्र हिन, रेकनार्यंट गर्डि रेकन, इक्छ । बीनांत्र গাইতে।। কাশীখণ্ডামৃত সার, পান করে অনিবার, এই আমি করি

निर्देशन। अवर्ष क्ष्यूष इरत, कामी श्रांश इस शरत, मश्रामी जिल्लामा नमाश्रम।

## अथ मछीत प्रकालदा गमन।

जिल्ली। महादनव देकनात्मद्र, नही नत्त्र हर्य विदन्त, लामाकी छा কবেন কুজুগলে। ভগা নিয়া ভলোগন, প্রণমিয়া পঞ্চনল, কুতাঞ্জলি করি মুনি বলে। নারদ দেখিয়া হব, করিলেন সমাদার, বনিবাবে দিলেন আসন कुमतल चाहर मृति, सूगक्रल वार्छ। श्विन, कर मृति गमन कार्त्।। कटर भूनि फर्लाधन, खन आएल निर्देशन, यहा कार्यि क्रुक्त कारम । मात्रह বলেন প্রভু, হেন নাচি গু'ন হজু, দক্ষজ হয় তব বিনে।। বভূ যঞ্জার-खिल, मन तमन निमाञ्चित, एक छाल लग्न धर्य हिछ। एक कना। यह हिल, मक्क शक्ति, यदक्क निल, रमिश्राम मदव आमिन्मिक । एक्कोनि को नाया रमिश्री, **एक পতি অতি সুখী,** जिल भटन मामा **जा**जत्य। मर्क्ट एव शुक्रा कटन, माना-বিধ উপহারে, কত তাব কহিব কথন।। আমি গিয়াছিত্র তথা পাইলাম मन व था, जित्रनिष्मा घारतक कतिल। जित्र निष्मा खन्ना छनि, विलेतीछ চিত্তে প্রতি। অন্থানেতে স্করে চলিল।। চুর্বাসা দ্বিচি মুনি, শিবভক্ত শিরোমণি, আর যত চিল মুনিবর। যজ্ঞ স্থান ত্যাগা করি, গেল কেহ নিল-পুরী, জরু যাজ হয় নিরস্তর ! যাজ কথা শুনি সভী, চইলেন হর্ষ।ভি, পিতৃ ষ্টা চমৎক্রত হয় ৷ কিন্তু মনে অভিমান, না করিল নিমন্ত্রা, ননে অভি ক্রোর উপলয়। ভাষা করি সম্বরণ, স্থির করিলেন মন, পিতা মোর দক্ষ প্রকাপতি । মঞ্জের যে আয়োজনে, পিতা বিশ্বরিল মনে, একারণে হইল জানীতি।। হর্ষ মন হৈয়া সভী, কন কথা শিব প্রতি, পিতা ভানে করহ বিদাব। কি রূপেতে যজ্ঞ করে, দেখিব পিভার খরে, বিলম্বের দাহিক नमप्र । मित करह बतानरन, ना कतिल निमयुर्ग, छथा श्राल यांन कि थाकित्व। उथा यात्रा अञ्चित्र, घिटिक विश्वींड, मडी वृत्त अवभा यारेट्य ।। পর্বত শিথববাদী, নাহি মন প্রতিবাদী গীমন্তে দিতে करहा निक शृंदर निवस्त्रत, याजा नाहि कांत्र घव, वाख वृष प्रार्थ मना हेंर।। मड़ी थांडि उन्द्रश्च मन, रमधि रमन जिल्लाहन, असुरत्र ड डाविट्ड माजिल। मित करह. अन मठी, अमान इहेरत चिंड, वड यह आरताथ एए ्षित ॥ अमा मिन जान नरह, भूर्समिता भनि वरह, नक्दबर्ड का छ। याकि

इत । मक्षमभ योगमत्र, नवमी ভिधिट इत्र, भूटर्स शांत आल्वतम्भन्न যদি তুমি যাত্রা কর, পুলঃ না আসিবে ঘর, অভগ্র যাত্রা মত নর। সভী কলে শুন ভব, পিছার গৃহেতে যাব, ইথে কিবা ভালমন্দ হয়।। ভালমন্দ ফলোদর, সকল কণালে হয়, অনুমতি কর পশুপতি। আমার বচন শুন, করি এই নিবেদন, পিতৃষক্ষে যাব শীত্রগতি।। বুকি শিব সতী রী**ত**় চিল্তিলেন বিপরীত, সভী ভ্যাগ হইবে কিশ্চয়। হর রহে মৌনভাবে, সভী প্রণমিয়া তবে, দক্ষগৃহে গমন কায়।। এই স্থানে মতান্তবে, বিভ্যন করি हरत, प्रमागश्विमा इन मछी। कामीथश्वापुष्ठ अहे, जाशत विश्वात कहे, পিতা যজে গেল ভগবতী।। যক্তত্বৰে দক্ষপতি, তথাতে গেলেন স্তী, প্রণমিল পিতার চরণে। শিবস্থান দেখি খুনা, নাহি হয় শিব মানা, বিপরীত ভাবিলেন মনে।। ক্রোধেতে কম্পিত হয়, প্রস্থালিত ভারিচর, স্মে বিয়া পিতাকে বলিল। अन পিতা নিবেদন, একি দেখি ছ कार्यक বুঝি তব মতি খুন্য হৈল।। শিবের পুজন বিনে, যজ্ঞ কব অকারণে, বিশে-ষতঃ নতে নিমন্ত্রণ। সম্পদে হইলে মন্ত, বিশ্বরিলে ধর্ম ছজু, ভোমাকে বিধাতা বিভয়ন।। বভী দেখি দক বলে, দাখাইরা ফলস্থলে, বড় ছঃখ পাইরাছ তুমি। বিধাতার মনে যাহা, অবশা হইবে তাহা, বল সভী কি করিব স্থামি॥ দকল কপালে করে, ভিক্সুকের ছিলে ঘরে, তোমার धुः (थट छु:थी मन। विवाह मित्राहि गांत, शांशन बलात छा त, कशां-लाएक या हिलं लिथन ॥ व्यादताइन इत्यानित, निका या एमूत थति, ভক্ষ যার ধৃস্কুরার কল। সমিদাতে অভিলাষ, ভুজক্ষ উত্তরী বাস, কণি ছার মালার কুণ্ডল।। গলেতে হাড়ের মাল, পরিধান বাাম্রছাল, চিভাতক্ষ মাথে সদা অঙ্গে। শাশানে যাহার খ্বন, কেবা করে ভার মান, ভুত প্রেত সদা আছে সঙ্গে। শুনহ আ্যার বাণী, যদি যজে শিব আনি, यक्कनांभ खत्मा इहेत। (मिर्वित्र मिर्वित् तीए, मन (मन हर्द जीक, जार्द्र या आनि कि कविवा। नहीं वाल अन शिहा, निव नक कनमाहा. ठाँत निका ना इत छेिछ। किছू नट भिव विदन, यक इत्र कान मिरन, এই উক্ত বেদের বিহিত।। ত্রন্ধা বিষ্ণু যত দেব, সকলের আদি শিব, ভাঁর निष्मा कता नदर जाता। श्वनि एक अबाशिक, खित नारि इत मिक, उक्तांध टेश्ल (यम श्रृंबेक्श्ल ।। भ्विषात मिर्मातम, प्रकामिक्क् मार्टम, स्विविक्क्ष व्यक्षिक कविता। मठी श्रमि निवित्तित्या, कृत्य त्यम त्यन वित्या, मदनामाधाः চিস্তিতে লাগিল।। শিবনিক্ষা যেবা করে, অসশ্য শাসন ভারে, আর্মি

ডাকে হইনু বজিল্ল। পাতক যে অভিশয়, শহ্বট উভদ্ন হয়। প্রাণতাগ এট প্রার্গিছে।। শিবনিদ্ধা করে পিতা, সেহ হন ভশ্মদাতা, ভাকে আমি ফি করিতে পারি। পিত। হৈতে যে শরীর, রাখা নহে এই স্থিক, পতিনিন্দা ना श्वनित्त नाती । श्वित कतिरलम मदम, हिस्ति एक्व जिदलाहरन, व भातीत क्ष ना ताथिक। एकप्राप्त विक प्रकी, मनिष्ठत निवधिक, असदि कार्यन मणानित । निरुक्त काश्रिकानि, नर्काटक निटमन छालि, निकाप र नमानि कतिल। काष्ट्रिक कतिल अञ्च, मारि इत काउन, महामात्रा महीत काबिल।। कांत तका नाहि खात, मृद्य करत हा हा कांत्र, मर्क्स कहे न किन्त्र के। एम-বিয়া দেবতা গ্ৰু ভয়েতে কম্পিত হন, অক্সাৎ একি উপস্থিত। মঞ্চল शाध्या मात्र, अमञ्जल कड इस, नाहि इत् छाडांत वर्गन। विना त्यद्य वक्क:चाक, जमा दश जेन्दाशाङ, अक्याद तुछ एए वर्षन ॥ एक्रिन वृधिनी উড়ে, যঞ্জানে আনি পড়ে, শিবাগণ করে মহারব। মহাবাত ঘোরতর, बहिर्द्या नित्रकत, काकि अवक्रम दाने गर । अलास्त काल स्थन, छेलिक क हेरल (दन, अर्व्यक्ति अमान छावित। (पश्चिम्न) नात्रक मृति, हिट्छ विश्वीक भागि, कार्ड मीख टेकनाटम हिनन।। अखे बनी कि खाताब, मधाख इडेन धार, अनक रा बढि मतारह। एकस्क देश्य उक्ष, गठी ठाटक निक कक. व्यवदर्भाष्य श्रम म मध्य ॥

#### --4816--

#### व्यथ पक्तराकः ध्वःन।

ত্রিপদী। কৈলাদে নারদ আসি, দুন্দির নিকটে বসি, সভী বার্ছা ক্রেম ক্রমে কর। শুনি নন্দী রিবরণ, অভিশর চুঃগ্রমন, কাতরেতে রোদন করে ॥ কান্দে নন্দী জুমে পড়ি, জননা গেলেন ছাড়ি, লানামত করি বিলাপন। ক্রণেক হয় মুডিছত, একি হৈল বিপরীত, শোকসিক্সু উথলে ছখন।। শিব দেখি নারদেরে, কুশল জিজাসা করে, দ্বনি বলে করি নির্দেশন। তব মারা পঞ্চানন, শ্রীরাদি অকারণ, কার্যার অনেক ভ্রমণ।। শ্রীর ভাজিলে শোক, নাহি করে সাধুলোক, এই জ্ঞান সর্ব জ্ঞার্হ হয়। মকল উপার ভূমি, আদি অস্ত অস্তর্যাসি, সকল জানহ দরাময়।। সক্ষয়জে পেত্র সভী, ভোমা নিন্দে দক্ষণতি, শুনি নিন্দা ভাজিলেন প্রাণ। যোগ ক্রি ছালি ভ্রান প্রথাকি হয় ভ্রান্য

হয়, ভয়ে বাক্য নাহি কয়, কাত্র হইল শিব অতি।। ক্রোধে কিছু নাহি বলে, চক্ষু রক্তবর্ণ স্থলে, ক্রোধানল প্রস্থলিত হৈল। তাতে ক্ষমে এক রক্ত তার নাম বীরভত্ত, শিবের সমাথে দাওাইল।। অঙ্গ তার বিপরীত, पिथि गरव हमकिन्छ, जिपृक्ष पिक्कि करत धरत। তারে, কম্পামান হয় ডরে, শিবপ্রতি নিবেদন করে॥ কছ শেষ্ পঞ্চাননে, কি করিব এইক্ষণে, করি আমি আঞাকর মোরে ! তব আঞা यमि शाहे, ममूज शर्धु त्व थाहे, कह चर्त जानि मर्छा भूत ।। एक पूर्वा जानि ধরি, কিম। যে পাতাল পুরী, উলটিয়া পৃথী করি তল। কিমা যে সুমের, ধরি, হস্তে তাহা চূর্ণ করি, যে কর্ম উচিত ছয় বল।। শিব কচে দক্ষারে, गर्तरप्त ভार्तार, आमा ছाजा नहेबारह शुका। नाहि हिश्म प्यवजात, कि पांच **कारांत करत, क्रशतांध करत मक्**रतांका ॥ इत कर इ मक्रमक निमित्य कतर ७७, हैरथं वित किर युक्त करत । अमुहिष कल निरंद, हैरथ ना अमाश्री হবে, সমুচিত করিবে তাহারে ॥ বীরভত্র বলে বার্ত্তা, জাপনে যে সর্ববর্ত্তা, তোমার রূপাতে বব হয়। বীরভক্ত তার পরে, প্রদক্ষিণ করে হরে, বারে বারে প্রণাম করয়।। চলিলেন বীরভক্ত, কোপে যেন মহারুদ্র, দক্ষ যজে कतिल शमन। চলে वीत कति एकः, शमज्यत जूमिकस्थ, वासूकित श्रेम কম্পন।। আপনার অঙ্গল'ত, দৈনা হৈল শত শত, অত্যে তারা করিছ গমন। মহাঘোরতর রবে, প্রমাদ গণিল সবে, ত্রাদেতে কম্পিত দেবগণ। नमी जुकी जूठ महक्र, घटका मत हत्वा तरक्र, उथाय इहेन छेशन्दिछ। यथा নানা উপহারে, দেবগণে যজ করে, অগ্নিমধ্যে দিতেছে আছতি॥ তেন-कर्ल मिवशन, उथा मिलम तमन, स्मिश गव कन्शिक समझ। वीत्रक्त मा যাইতে, যজ ভঙ্গ করে ভূতে, ছিন্ন ভিন্ন সকল করেয়।। নানামূর্ত্তি শিবগণ, কেহ হয় ষ্ডানন, সপ্তমুখ দশমুখ আর। ছুই তিন একপ্দ, স্দাই অপ্রিয়-यन, शक्षरेख में रेख कांत्र।। विक्रि में में कांत्र, क्रूकिवर्ग मीर्घाकांत्र, भीय किं। मखक उभद्र। दनिय गर्वात्वत्रान, आत्र भूत्रवामी सनः, किल्लिक হইল সবে ডরে।। যজ স্থানে ছিল করী, বিপরীক্ত মূর্ত্তিধরি, ভাহার শুণ্ডেতে কেহ ধরে। ওপ্তেধরি দিল পাক, যথা কুডকার চাক, যুরাইয়া ফেলে পুনাপরে।। দক্ষের রক্ষক যারা, ত্রানিত হইল তারা, চিত্রমূর্ত্তি হৈয়া যেন थाटक। त्यहे भलाहेक्क यांत्र, फर्कानका भटत कांत्र, भटन यति त्यत्र घन পাকে। प्रित मूनियावि शन, पंति इंडवृद्धि इन, यख जाति প्रालाहिया गाप्त

मीय विके कार्त भटत, तृरंक तक कीन माटत, मति मति भंक रच कत्य।। व्यक्ति बृक्ष भूनिशद्य, किंदू भाव कति मत्न, व्यानिष्टिल मत्कत कृत्तन। त्मारव दमिश विश्रतीं है, देशन गर्क हमिक्छ, शालाई हा यात्र निष्क श्रादन ॥ প্রকর্ম জটার ভার, এলাইয়া পড়ে কার, আরো তাহে অভিশন্ন দাড়ি। পাছি পানে নরক্ষীতে, কণ্টক লাগিল তাতে, প্রাণগণে টানাটানি পাড়ি। দৌবি দক্ষ প্রজাপতি, ত্রাসেতে কল্পিত জতি, প্রকাইয়া রহে একপাশে यक हिल (परभए), विभवीक कांकि मत्न, त्कर तकर भलाहेन जारन।! ধরিরা যে ভুতগণ, কারে করে বিজ্ঞন, চাপড়েতে কার দন্ত ভাঙ্গে। আভি নাশা ভালে কার, সবে করে হাছাকার, ভূতে নৃত্য করে মহারকে।। श्रुवंतात्री कानकरम, कुंछ नव काथमरन, शरम ध्रति श्नामार्श करन। कांत रुख एक करत, कारत श्रमांचार करत, कात हक नव मित्रा (थाटन।। বীরভার ভদপরে, মঞ্জাহলে আসি ধরে, সুর্য্য দন্ত ভাঙ্গিলেক বীর। অগ্রি জিলা ছিন্তি কেলে, খানিগণ ধরি গলে, যজ যুত করেন বাহির। মার মার वहने महत्व, किटम खान तका शहत, मिटन मिटन व्यक्त महत्व यांत्र। यत यत वरक शर्म, शिष्ट शिष्ट धारमारम, याल श्राम त्रक महाभन्न।। वीत्र ख জভিরঞ্জ, মঞ্জন্ম দেখি ভক্ষ, অন্তঃপুরে প্রবেশ করয়। হেনকালে নারামণ जानि जानात इस, विश्वकत मूर्जि विश्वकत ॥ वीत्रज्ज मिथि क्रकः, विर्जुटक হইল রুফী, ঘোরতর যুদ্ধ যে করিল। পরাত্ত হৈয়া হরি, গেলেন বৈকুণ্ঠ-श्रुती, वीतज्ञ मक्करक (मधिन । श्रिव निन्मा करत्रिंस, मक्क मुख एस किन, বীরভদ্র অতি ক্রোধ সন। ব্রহ্মা দেখে চমৎকার, করে রক্ষা নাহি আর, टेंकजारमर्क कविन गमन ।। अगाम कवित्रा इरत, मन निर्देशन करत, एक-यक छक्र विवत्भा महावीत वीत्रज्य, काल्य चल महाक्रम, प्रार्थ हत শ্রীর কম্পন। বীরভদ্র অবহেলে, দক্ষেরে ধরিয়া চুলে, হস্তে কৈল মক্তক ছেমন। আর আর যত গণ, দেবখাৰি বিভয়ন, কতবা করিব নিবেদন সিংহ প্রায় হস্তী ধরি, গণ্ড শুগু নাই করি, সেইমত অনেক সংহার। बीइज्झ व्यक्ति काल, वृक्ति कदत मृथि लाल, दमन प्रका कत गरम्यत !! मक्रभिक स्य क्रिय, स्थाहिक मध देश्ल, ब्राट्मका बादात किছू नाई। ভূমি কর্ম ভূমি কর্ত্তা, ভূমি কর্মকল বেন্ডা, ভব ভিন্ন নহেভ গোসাঞি ॥ करं कातन जूमि, विटम्स कि कंव आमि, शृष्टिलाश इत्र तका करा। निव আশুভোষ হন, ক্রোধ করি সম্বরণ, জ্বার সঙ্গেতে গেল হর।। রুষপরী আরোহণ, করি প্রস্থ পঞ্চানন, উপনীত দক্ষের পুরেতে। বীরভদ্র দেখি

হর, সাক্ষাতে হৈল সম্বর, প্রণতি করিল করণেতে।। বীরভতে প্লপালি, जुर्ये रेश्या वटन वानी, रेमनाभन कहा निवाहन । अवस्थि नाहि जाह, छेठिछ হৈয়াছে তার, ইথে ভূট হৈল মন মন।। ভদন্তরে ৃসভীমাতা, অভিশয় यनवाथा, खरुः भूत कति ছ कन्मन। खिमन्ना खाइन इत, गमन देवन नष्त्र, यथा आदि एनव जिटलाहम।। चंद्या त्मचि मटश्चत, अक्रिमंत लाज्याकत, षार्थामुर्थ तरह गृनशानि॥ श्रमुष्टि बलम मित, स्नामि छव कि कतिय, मात्रीकां कि कि जारि कार्नि ॥ विश्व शिष् शामि करि, एमि गव जिश्वताती, ভোমার মহিমা কেবা জানে। অহস্কার বৃদ্ধি মন, তুমি সব তিলোচন, मम यानी तकाकत आदम ॥ यानी उस निका देवन, यद्य हिन्छ कल देवन, রক্ষা এবে কর্ছ লপ্তর । শুনিয়া প্রসূতি ন্তব, সব ক্ষমাদিল ভব, দল্য দেহ আদিল সম্বর।। দেখি তাকে মহাক্সন্তে, আক্রা করে বীরভন্তে, ছাগমুগ্র করছ অর্পণ। ইঙ্গিতে বুঝিয়া কথা, ছাগমুগু আনে তথা, সক্ষান্দে করিল साक्त। প্রাণদান পাইল দক্ষ, তদপরে বিরপাক্ষ, ধীরভত্তে কংখন বচন क्क श्रुती हिल यथा, जुमि कति एक्ट ज्था, देश नाहि कत जनायन ॥ भक्क-রের আজামাত্র, দকল যে বীরভন্ত, আজা অনুদারে করে দব। দক্ষ পায় প্রাণদান, মনে ভাবি অপমান, শিবে করে বছবিধ তার ॥ জুমি বর্গতের পতি, তোমা বিনে নাহি গতি, ভুমি প্রভো সকল কারণ। যাহ। বলাইলে ज्ञि, काहार विवस जामि, अश्रताध कत्र माहन।। मक्पणिक एव असि, ব্ৰহ্মাকে কহেন বাণী, ৰুশৌপুৱে যাইতে যে বল। শিব আঞা ব্ৰহ্মা শুনি, मक्राक करहन वानी।कामीएक याहिएक लाख्ना देशल ।। छथा। शतहरत हुन्छ, अह त्य निरंतत छेळ, खनात्रारम शाहरत निर्वत्। एकश्वि खकावाका, विरंखरक করিয়া ঐক্য, কাশী পুরে করিল প্রস্থান ।। এখা শিব সভী বিনে, চিন্তিতান **बहे मत्न, शृहक मनामी आंग्रा वित्न। बहे आवित्सन इत्रांश करि** खाडाशत, खाद इटन मानम शुंतर्ग ।। इडेल खाकाशवानी, हिमालत निक्ती, সতীদেবী হইবে পর্বিতী। এই বাকা শুনি তবে, তপদ্যা করেন ভাবে, পর্বত গুহার মধ্যে স্থিতি।। দক্ষপতি বিবরণ, যেবা গুলি শুদ্ধমন, সর্কাত পাপে হবে সে মোচন। সুধাহৈতে আসাদন, শুন দৰে অনুক্ৰা, উনলবৈ क्य मम्भागन।।

# व्यथ (भनकात शद्ध गडीत वस्र।

প্রার । অগস্তা করেন শুন পার্কতী-নন্দর। দক্ষপতি কি করিল কহ বিবরণ।। কার্ত্তিক কছেন কুন্তজ যে ঋষি। দক্ষপতি করিল তপাস্যা কাশী আসি।। শিবলিক স্থাপন করিয়া মহামতি। অচল চিত্তেতে আরাধিল পশুপতি।। এই রূপে বহুকাল গত হৈয়া গেল। তথাপিছ শস্তুনাথে দরা না হইল। হেথা শুন মেনকা গৱেতি ভগবতী। পর্বতের কন্যা হয়ে জন্মিলেন সভী। কন্যানান পার্কভী রাখিল হিমালয়। দিনে দিনে যোগ-সায়া তেনো রুদ্ধি হয়। ভাঁহার ৰূপের কথা কে করে কর্ণন। অভসী পুপের জাভা হয় প্রকাশন।। মুখপ্রেণী কিবা শোভা অভি নুফোনল। কোটি চন্দ্র জিনি আভা করে ঋলমল।। পূর্বভাগে পড়ে রুক্ষবর্ণ কেশজাল नवरमध्य क्या राम विद्वार जेक्का ॥ कार्क विमालय तानी मानन कर्यरक । সিঁথিতে দিয়াছে হার অনেক রত্ত্তে।। কপালে অলকা শোভা কুকুম ভাবন। চন্দনের বিন্দু তাতে অতি সুশোভন।। জবুগ ভঙ্গিমা কপ না यात्र कथरन। जमदात (अनी रच जाकर्ग शतिमारण।। शरमत म्यान जिन হস্তের বলনি। অঙ্গ শোভা নানামত কি কব কাহিনী।। পাদপত্ম শোভা সীমা নাহিঞ্জগড়ে। পদেরজ মুর্ব্য যেন প্রভাত কালেতে।। ততুপরি नव्हान नवत्व ध्यकारम्। ज्याखा जूख देश्या नथ मार्क जारम्। जारक অধ্ৰণ পাসি অত্নীরবর্ণ। ত্রিগুণ মিলিত শক্তি সকলের মান্য।। প্র-ভাতে উটিহা নিভা মেনকা যে রাণী। শ্রীয়থেতে দের কীর সর যে নবনী সাহাইল গোকুলেতে ধশোদা ব্যক্ত। প্রত্যত মেনকা রাণী সাজান ভেনক। কোনদিন চূড়া বান্ধি ধড়া যে পরায়। গলাতে ওঞ্জের মালা অভি শোভা পার।।রত্নের ভূপুর স্কুই চরণেতে দের। সুসধুর শব্দে সব কর্ণ বে মুড়ায়।। বিবাহ যোগা পর্কতী দেখি হিমালয়। বিবাহ কাহাকে দিব खादिन क्रम्य !!

#### ---

# পার্মভীর বিবাহ।

পরার। অনামত বিবাহেকে নারদ গমন। তাহার বিশেষ কহি শুন স্কালন। কত দিন পরেতে নারদ তপোধন। হিমালয় পর্কতেতে করিল গমন। গিরীরাজ পাতালঘ দিয়া বসাইল। স্তব স্ততি করি স্ততি সমাদর देक्न।। कनार्व द्वास्त्र नव कटर सुनिवदत । छेशस्त्रिक मरामात्रा पानिनः অন্তরে।। ভত্তাপি নারদ মুনি করিয়া ছেলন। আন দেখি ভব কন্যা হারিব मर्गन।। असर्वामी जगवजी कानिया अस्टतः। अमन कतिन अट्या शिकांत्रः সত্বরে।। দেখিরা নারদ মুনি সস্তোয হইল। মানসেতে মুনিবর প্রণাম . করিল। মানসিক স্তব বছ করে ছপোধন। অস্তা মোর সিদ্ধি ংইল যো-গের সাধন।। ভুমি ত্রিজগৎ মাতা শুন গো জননী। ত্রিঞা কপিণী ভূমি ত্রিশুণ ধারিণী।। বেদ অগোচর মাতা তোমার মহিমা। বিধি বিষ্ণু শিব निट्छ नाहि शांद्र मौमा॥ **এইमछ् उड्ड उ**द क्ट्र क्ट्रांसन्। कनात বিবাহ কথা হিমালয় কন। তদপরে নারদ কহেন গিরীরাকে। এদ্ধলোক যাই আমি আসিব অব্যাকে। যোগ্যবর স্থির আমি করিয়াহি মনে। কন্যা फेशयक वत इत्व जिल्लाहरन।। एनिया महर्के करिक हिमालय देशन। তথা হৈছে তপোধন ব্রহ্মলোকে গেল।। ব্রহ্মার নিকটে সব করেনিবেরন শুনিরা যে চতুর্ম্মুখ হৈল ক্ষমন ৷ দেবগণ দহ ব্রহ্মা বৈকুপ্তেতে গেল। বিবাহের বার্ত্ত। সূত্র নারারণে কৈল ॥ মহা যোগে মহাদেব আছেন তৎপর छेहिछ एर इन्न व्यक्त कत भनाधत । जना कात माधा नरह रयान जक करता কিমতে বিৰাহ হবে দেব মহেশরে॥ ভদপরে নারাহণ প্রথম করিয়া। ধোগ ভঙ্গ করে কামদেব পাঠাইয়া।। তদন্তরে সর্বদেব সহ লক্ষ্মীপতি। হিমালয়ে শিব সহ গেল শীঘ্রগতি। শুভক্ষণ দিন দেখি দিল বুহস্পতি। ক্ষটিচন্ত হইলেন পর্বতের পতি॥ বিবাহের রাত্রে হয় প্রীলোক আচার। আছমে যেমত নীতি পুর্ব ব্যবহার।। সভাতে বসিল আসি সব দেবগুণ। ভারমধ্যে বরপাত্র আছে ত্রিলোচন।। সকলের শ্রেষ্ঠ শিব হয় সর্বমতে। অঙ্গের আভাতে। প্রজ্বলিত রখা হৈতে।। তক্ত্রকে জিনিয়া মুখ মৃদ্ধ হাস্য ভার। দেবভার মধ্যে শিব অভি শোভা পার।। ত্রিলোচন চুল চুল দেন পড়ে খনি। আকাশ হইতে যেন চক্ত ড়েনে আনি।। দেখি সব নাবীগণ प्रक्रिक्ष सुवी देश्य। जी ब्यांगांत मध्या मगटमर ब्यनांश्या अोगण मट्याटक निव माश्राहेश वण । श्रामिश्रा स्मिक्तिशी बन्न कत्रश्र । वन्नराव शास्त्रहरू **ইশেরমূল ছিল। ইশেরমূলের গল্পে দর্গ পলাইল** । শিবের যে ব্যাছ্রচর্ম্ম गर्ल खाँछ। इता। इत्मत्रमुरलत शर्क गर्न एवं योगन । छेलक इहेन भित ञ्जीनन मर्सारक। दश्नकारल खन्ता कथा देशन जेशनीए है। शताहेल निवाबक्क **হাবে দেব দেব। বস্ত্র পরাইল অকে** একি অসম্ভব।। ত্রকা কহে সদানদ **क्षत मग्रामग्र। विवादश्त काटन वञ्च शतिधान श्रः। एषशाद्य शिमानग्र कर्ति** 

কন্যাদান। সকল দেবতাগণে করিল সম্মান।। বরকন্যা পরেতে গেলেম রাসঘরে। দেবগণ গেল সব যার যেই পুরে।। তদপরে নহাদেষ গৌরীর সহিত। গিরিরাজ গৃহে সদা রহে আনন্দিত।। এইমত বছকাল গত হৈয়া যায়। কথোপকথনে কথা উপস্থিত হয়।।

#### ---

# অথ হর পার্কতীর কাশী যাত্রা।

শয়র। একদিন কৌভুকে আছেন নারীগণ। হেনকালে সেনকা যে পার্কাভীকে কন।। গৌরী তব শশুর জালয় কোথা হয়। বিশেষ জানিয়া ভুমি কহিবে নিশ্চর। মাতা শ্বানে হেন বাক্য শুনিয়া পার্কাভী। মনোমধ্যে থেদ করি কহে শশুপ্রপ্রতি।। পিতৃগৃহে কন্যা যবি বছ দিন থাকে। ক্রমে ক্রমে অপসান পায় অবশ্যকে।। জামাভার উচিত না হয় সর্কাশণ। শশুর গৃহেতে বাস নিশার কারণ।। পার্কাভীর হেন কথা শুনিয়া শঙ্কর। কাশী-পুরে আফিলেন শীপ্রগতি হর।। গৌরী সঙ্গে সদানশ্দে আনন্দিত মন। কুতৃহলে আগিলেন আনন্দ কানন। কাশীপুরী দেখি হয়বিত মহামায়া। আনন্দের সীমা নাই কাশীপুরে গিয়া।। প্রতিদিন দ্রমণ করেন তুইজন।। মহাদশ্দে আনন্দ কাননে সর্কাশণ। পিতার আলয় গৌরী বিশারণ হৈল।

#### ----

### अथ एक श्राष्ट्र व्यवनान।

পরার। কাশীতে ভপসা করে দক্ষ মহাশর। শিব কুপা নহে এক যুগ গভ হর। শীর্ণকার রক্ষনার ন্থির চিত্তে রর। দেখি গৌরী মহাদেবে
জিজ্ঞাসা করে । গোরভর ধ্যান করে দেখি প্রশংসর। শিব বলে ভব
পিডা দক্ষপতি হর।। এই বাক্য শুনি উনা শক্ষরে কহিল। কুপারুর
দক্ষরাজে ভবানী বলিল।। তদপরে মহাদেব প্রসন্ন বদনে। বর লছ দক্ষপতি বলে পঞ্চাননে।। সমাধি ভাঙ্গিয়া দক্ষ দেখেন শক্ষর। বছবিধ স্তব্
দক্ষ করেন গড়র।। জন্য বর লাহি চাহি শুন রুপামর। সর্ব জপরাধ ক্ষমা
কর দরামর।। দক্ষের করুণা শুনি শিব ক্রউমতি। সম্ভর্ম হইরা ভারে
কহে পশুপতি।। নিজপুরে যাহ দক্ষ কর জবধান। দেহাস্তে ভোমার হবে
জবশা নির্কাণ।। জার কহি দক্ষপতি শুনহ সহর। ভোমার স্থাপিত লিক্ষ

হর দক্ষেশ্বর।। দ্রী কিয়া পুরুষ খদি দৃষ্টিমান্ত্র করে। সর্ক অপরাধ হৈছে মুক্ত কলেবরে।। ভাচিরাতে মুক্তি পদ সেই নরে পার। এতবলি মহাদেব নিজালয়ে যায়।। করিল গমন দক্ষণতি নিজালয়। সীতানাথ বসুদাস সদত চিন্তর।। কিসে ত্রাণ হব ভব ছরন্ত অলধি। রূপাকরি যদি কাশী লয় রূপানিবি॥ সর্কি শাস্ত্র মতে এই আছ্রে প্রচার। প্রাণভাগি কাশীপুরে হইলে নিক্তার।। কোনমতে অবিমুক্তে যদি প্রাণ যায়। ভজন সাধন বিনে তাতে মুক্তি পার।। এই আশা করি ভাষা কাশীপুত ভাষি। যদি তন্ত্র গোগহর সেই বারাণসী। নবতি অধ্যায় কথা সমান্ত হইল। শুনিলে লভরে মুক্তি বালি যে বলিল।।

ইতি শ্রীকাশীখণ্ডে অভীষ্টত্ততের প্রকরণ বিখেশ্বর কামেশ্বর বিশ্বকর্মেরশ্বর দক্ষ্যক্ত
ভক্ত দক্ষেশ্বর আদি লিক্সের
উদয় একদিশ সর্বা

# ष्ण পাৰ্কতীশ্বোপাখান।

भत्रात । कार्खित्कत्र कर्षम अगुष्ठा मूनिवत्त । श्रांस्की मिनिश्रम स्त्र (य विद्धारत ।। महारमय मह कामी श्रुरत व्याप्त (कारती । कक्की थं करहे मिनिवाम स्वाप्त करित ।। क्ष्मणा करति ।। क्ष्मणा करति ।। क्ष्मणा करति । क्ष्मणा करति । क्ष्मणा करति । क्ष्मणा करति । क्ष्मणा करति भिन्न श्रुष्ठा । यथा हेक्का मरमानीक (कोरती लह वरत ।। कोरती वरल कानावत नाहि हाहि मञ्जू । क्ष्म अपदार हिन्छ शारक स्वन श्रुष्ठा ॥ क्ष्मणात स्व कहे लाख्य हिन्छ शारक स्वन श्रुष्ठा ॥ क्ष्मणात स्व कहे लिक्च हहेल स्वाप्तिक स्व करह स्व मृज्यक्षत्र ॥ क्ष्मणात स्व कहे लिक्च हहेल स्वाप्तिक स्व करता । क्ष्मणात स्व क्ष्मणा करता करता । क्ष्मणात स्व ।। क्ष्मणात स्व ।। क्ष्मणात स्व । क्ष्मणात स्व ।। क्ष्मणात स्व । क्ष्मणात स्व ।। क्ष्मणात करता क्ष्मणात स्व ।।

<del>-31814--</del>

#### व्यथ शक्त्रभटतां भाषान।

প্রার। গঙ্গের শবলিঙ্গ যে প্রকারে হৈল। কার্ত্তিক বলেন ইহা
অগন্তা শুনিল।। যে কালেন্ডে ভগীরথ গঙ্গাদেবী আনে। কাশীক্ষেত্রে
আনি গঙ্গা ভাবেন আপনে।। চক্রতীর্থে গঙ্গাদেবী গিয়া তদপরে।
শুপিত করিল শিবলিঙ্গ মনোহরে।। সদর হইয়া শিব কহেন গঙ্গাকে।
ভব আগমনে ক্ষেত্র মাহাআ অধিকে।। চক্রতীর্থ আর মনিকর্নি ফে
আখাতি। দর্শনেতে হইবেক সব জীব মুক্তি।। গঙ্গের যেই নর অর্চনা
করিবে। দশ অশ্বনেধ কল জনারাসে পাবে।। অন্তে মুক্তি হৈয়া ভারা
আনি বে কৈলাসে। ইহার অন্যথা নাহি কহিল নির্যাসে।। ইহা
শুনি গঙ্গেশ্বরে শিব প্রবেশিল। ভদবধি গঙ্গেশ্বর প্রকাশ হইল।।
জিনবতী অধ্যায় হইল সমাপন। কাশীথণ্ড ভাষাতে শুনহ সর্বজন।।

### चार मही चारत शिक्षान ।

भगात । यहानन यहल खन भून करणांधन । महीखत लिय लिक देखन कप्त । का नी पूरत शिया जही खालिल स्टरण । मरक्ष्यत शिक्टिस्ट किप्त । खातांधन दहत मही एवं विश्वानी । मही निकरिस्ट किर तिक विद्या । खातांधन दहत मही एवं विश्वानी । मही निकरिस्ट किर तिक निवास कित । किर एक्षि सहारमवी खय एवं कित । धानम हर्षेत्र लिय मही कि विवास । का मही वहल खन खाल कि खीं । यहणांकि वह लह कर महानानी है। मही वहल खन खाल एक्स खाल कि श्री । यहणांकि वह खाल कि कि श्री मही कि श्री कि श्री कि श्री कि श्री कि श्री कि । यहणांकि । का श्री कि श्री कि । का श्री कि श्री कि । का मिल कि श्री कि हिल खालि मिल कि । महाना कि विश्री कि विवास कि । महाना कि विश्री कि कि । महाना कि विश्री कि विश्री कि कि । महाना कि विश्री कि श्री कि कि । महाना कि विश्री कि श्री कि कि । महाना कि विश्री कि श्री कि श्री कि विश्री कि स्था कि । महाना कि विश्री कि श्री कि श्री कि सिल कि स्था कि स्था कि । मही खार कि विश्री कि श्री कि सिल कि स्था कि सिल क

#### -

# कथ कपूरकश्रदां भाषान अ क्यू विस्कृत कथन।

পাগা। গুরু কছে গুন নিত্রা বরুণ গুনা। অমৃত্যেশ শিবনিক স্থা প্রের্ড হয়। যে প্রকারে শিবনিক হটল এক'শ। বিশো শুনহ ও'র কাইব নির্বাল। সম্বানে এক ছিল কাশীতে লালি। অতি বৃদ্ধ লিলেতে জংগ্র পুরু তৈপ। আচমিতে দ্বিলপুজ্ঞ সাল হ'তে মরে। আশাল লাটেতে পুজ্ঞ আনে দ্বিলবরে। যথা পঞ্চনদতীর্য কাছে বিরাজিত। তাহার পশ্চিশে ঘাট হয় প্রকাশিত। দ্বিলবর পুজ্ঞে র থে খাশান মাতেতে। নক্তবিধ শোক করে সন্থান নিমিত্তে । মতনামধো বিহাব করেন দ্বিশ্বব । পুর্বাপরক্পরা আহে এইত বিচার । সূর্গাঘাতে যেই জীবে দণ্ড হয় প্রাণ। বিলম্ব করিয়া ভারে করিবে দাহন ।। ইলা ভাবি দ্বিজবর বিলম্ব করিয়া ভারে করিবে দাহন ।। ইলা ভাবি দ্বিজবর বিলম্ব করিয়া ভারে করিবে দাহন ।। মুল্ল স্বীক্ষ স্বিক্ত দেখিয়া রাজ্বলে। স্থাক্ষ চিত্তেতে দৃষ্টি রাধেন সন্থার। হেনকালে এক পিণ্টালিকা সেই স্থানে। স্থান স্ব্রুগ ফেলিয়া রাখিল ভাষা দেখে আক্ষানেতে ।। মৃষ্ট পিণীলিকা বাঁচে ভতি চমৎকার। স্থানের মাহাত্ম হবে করিল বিচার।। যে স্থানেতে ভিজপুত বঁটিয়া উঠিল। গেস্থানে মৃত্তিকা দ্বিল খনন করিল।। দেখে এক জ্যোতি র্মণ শিক্ষ বিল্যাকার। দেখিয়া বিক্ষয় হৈল আনক্ষে অপার।। অমৃতেতে শিষলিক জ্যোভিৰ্ময় হয়। মৃত জন বাঁচে তথা আছমে নিশ্চয়ণ কাশীতে অন্তর্ভেশ্বর লিঙ্ক খ্রেষ্ঠ হয়। দর্শনেতে মুক্তিলাভ সর্বর পাপক্ষয়। কলিবুরো এই লিখ ধণ্ড যে হইবে। স্থানের মাহাত্ম কলে মুক্তিপদ পাবে।। অরিমুক্ত মনিকর্মি রান করি নহ। বরুণেশ্বর শিবলিক পুজিবে সম্বর। তার সম পুণ্যবস্ত ন্যাহিক সংসারে। **ঘুক্তিলাভ অনা্যাসে ছবে সেই নরে। সোমবার** ব্রত যদি সম্বংসর করে। ভাছার মানস সিদ্ধা হইবে সম্বরে। স্বর্গেশ্বর জ্যোতীশ্বর আর মক্ত্রশির। সভীশ্বর পার্বভীশ্বর অমৃতেশ্বর পর। গঙ্গেশ্বর ব্রুণেশ্বর এই অফলিজ। না থাকে পালের লেশ শুনিলে প্রসঙ্গ। সর্ব-ইলিক পরাপর এই অফ হর। দর্শনেতে মুক্তিপদ কানিহ নিশ্চয়।। দক্ষে-भात रेमाटक भात ज्यानि छ दुर्फिम। अस्त्रामम काणि लिक्न स्टब्स सरक्मा। अस् স্ব লিক হয় কেরেতে তারক। তথন জীবের হয় তুর্গতি আশক্ত।। তাব-শেবে অনায়াসে মুক্তিলাভ হয়। শিবের বচন এই নাছিক সংশয়। মোক-ক্ষেত্র বারাণসী লিজ সব ময়। দুর্শনৈতে মুক্তি পদ অনাগাসে হয়।। এই খাকা শিবউক্ত সভা জান করি। সমত যে চিস্তা করে মৃক্তি কাশীপুরী।। চহুৰ্বতী অধ্যায় চইল সমাপ্ত। অবণেতে অনায়াসে কাশীপুরী প্রাপ্ত।।

---

## অথ বেদনাশের কাশী যায়। ও সুজ্ভত্ত।

ারার। অগস্তাকে করে পরে পার্মতী মন্দন। রাাদের আধানি শুল শ্বনি দংগাধন। একদিন বাাগদেব অতি ভূম-হৈলা। নৈমিষারশ্বেতে গেল শিষাগণ গৈলা।। তথাতে আছিল যক্ত মহাথাবিশা। বিধিয়তে বিচার করি-আ তপোধন।। তদপরে কহে বাাস থাবির সাক্ষাতে। বার্মদের জেওঁ কেছে, আছিক শাজেতে।। নৈমিষারগোতে বাল করিছে বতের্ফ্ । পাল্ডপার্ফ সিন্তু ধোনী আছেন অনেক।। সকলে বলেন লাস বুজিনালি হলা। শুল্জার লার শিব এইত নির্ণর।। তদপরে বাাসদেব বলেন বচনার্ক রামান্ত্রের সেগ শুলা কল্প নারারণ । তদপরে আর্থিবাসী, বোগীগণ বলে। শুন নারারণ দুলি-মার্ক প্রতিত সকলে।। কালীপুরে গিনা এই বাকা যদি কছে। বার্মদেব

एक्टर जूमि निष्ठत यगर ॥ फेटर वामि वैदेवीनिति, एवर नाहेकिन । दरमराकर्र ওনি ব্যাস চলিত তৎক্ষণ। দৃশ্সহক্রশিষা সঙ্গে অতি ছুপ্নোর্ডন। নারান क्षन शांतांक्षण भारत नियाशन it कोमी भूरत शांत वान कांब क समा : वासून त्वय क्वीरकम भवष विख्या। वाजानी मर्था वाम निया मर्प कति र অঙ্গুলি উপানে বলে বল হার হার। মুকুন্দ অচ্যুত বিকু দান্দেদর পার 🕫 क्षेरिकन यहनार्थ नर्ने नाञ्ज नात । (भवका मत्यादक व्यर्क स्व नात। प्रक । **क्षरे वाता दलि गाम उर्फ, वंक्ट एन ॥ उपलद्य मन्दी बाक्टि, देश्वेदशंय** जहन्न ह উन् वाङ् देशा तदर मार्थ रख गरत । आगरमव अमाष अधिका ४०००। হাদ্বে চিন্তিয়া বলে রক্ষ মারায়ণ।। ছেনকালে নারায়ণ আসি সেই ভারেষ मूक्त रुति वटन यात्र छन मावधारन । मक्टलत मून काम रहव जिल्लाउन ई र्काशंत अत्रग कत व्हेटन तक्का। यह खेलामा छनि द्वि उटलायम। मस्ना र्यार्श वटल ट्रक्लाकत शकानम । जुमि काटला नर्कत्वर्क (बरवत वहन । जन्द-त्राध करा कति कत्र इक्षा । शांगरमय रून खन खनि मन्द्रदार । मन्द्रीरक নেরেন আঞা ভুতনাথ তবে।। ব্যাদদেব সান্ধতে আছেব করিরিব। হস্ত কণ্ঠ ভূমি শীন্ত করছ মোতম।। তদপরে সন্দীবর শিবভান্স নিকার ব্যাস इन्ड कर**।** मिल रगांकन कतिया।। जनशरत वर्गन रेक्न मित श्रद्धाद्वगः। यास्ट्री-कर्ग इतम देक्ता-निक्कित ऋभिम ।। धानीकर्व ऋष्य साम करत राष्ट्रि महा नार् रमचंत्र भिविष्यक्र काळेना अखता। **खाइ**।त करणत कथा निश्रदर मा ४।इ ६, অত্তে কাশীপ্রান্তি হয় শুনহ মিশ্চয় ॥ পঞ্চনবতি মধ্যার সমাপ্ত হইন ই 🖲 िटन म ५८४ मुख्यि वाम या विजित्त ॥

#### ----

बाग कर्ड्ड कीर्ब क्षणत्या हामात्रम खड कथनन

वामि आंद्रश्चां किदि। निर्मा क्षेत्र्य गित महिमा कार्या हि।। गिरसन बाक्नाटक कामी माराष्प्र वर्तम । करतम गठक बाग मिन शहाबन ॥ बह क्तिता कुछक्यी कहा नाहि इत्राध्याक्षक धव कथा मुस्मा करता। क्या निक इन्हा (यदा करत (यह नरत । यादेक्की व मिनक विक् माहि होस्स ।) हैक-कीद्र शक्ति कतित्वक सामी श्वा भूका कन सन विष्यपति सामी। वर्शकीय दर्गन अर्थ ना कतिदक जीका। निष्ण कोभी मोहाश्र छनिएव महा-জাগ ॥ বখাশ জি দান দিবে অভি পুলোকিছে। করিবেক অম দান বিম বিনাশিতে। জনত করিবে ক্লেতে পর উপকার। পর্কেতে বিশেষ মান मानामि विकात ॥ भदा मदश्य न्या भारति विकास भूकन । कतिरव वक्त याजा (मनक) अर्थन H ना करिटन (मुर्धन करूतांका कात क्षकि। शतमात शतकत्वा मा कतिद्व मिछ।। श्रतीश्रवीन श्रदेत छाष मा कतिद्व । क्ष्यिमद्धा मिथान कथा राष्ट्र मा कहिएक। उट्य निया कहिटबंक आनत्का कटत । देवत्नाका বুক্ষণ হল এক বৃক্ষা করে।। কেন্তেতি সন্নাম করি বাস কাশীপুরে। ক্লড্র-भूखि जीक्या क सामित्व काशात ॥ (म मकल नमकार्या भूकनीत एत । (म সব ভৃষ্টিতে বিশেষর ভূষ্ট হর॥ ভূরে থাকি কাশীবাসীলন উপকার। ক্ষরিবেক কাশীপ্রাণ্ডি ইচ্ছা থাকে যার।। ইন্দ্রিরের প্রশারণ করিবে বারণ মানস চাপলা দুরে করিবে তাজন।। না করিবে মরণ আকাজ্জা কদাচিত। মোক ইচ্ছা মা করিবে হবে বাবহিত।। না করিবে শরীর পোষণ সমুদায় করিবে শরীর পুঞ্চি চেফা বর্কদার। ব্রক মান সিছ হেতু শরীর সামর্থ। भीष आत्र, विखिद्दक छशनाति अर्थ।। आधा तका कतिद्दक धर्मा दृष्टि छत धकिनित एवर श्रुण नटल कामी भुद्र ।। मक वर्गातत तो से श्रुण कनास्त्रात खबीवन बनाज व्यात्त्रक बागरन ॥ अरु अधार्मामा कामी एरे कन इस । हेहाटक क्षत्राथा नाहि कहिल निम्ह्य । य পूना आक्ष्य धीर्य साम काँते हरू । अक सारत ठका कीटर्ब रंग केन लक्त । शुक्रिया गर्कत नित्र स केन आहरू। बकवात विरम्भाद श्रीम ताहे इत । जनांच महत्त बर्म ए शूरणाशिकान। ভাছাতে ভাষিক জান বিশেষর দরশন। কোটি গোদানেতে যেই পুণালাভ इत । तिहे भूग इत वित्थायत वर्ष प्रथम । यहा मान व्याप्रण क्तिका द्वे क्ल । विश्वभंत भूष्णमात्न तम भूग मकल । अधरमध आमि वस कहि अधि-कल । शकाशृष्ट विध्ययसं सारम (गरे कन । वाजरंशस न हत्यर । स्व क्त II जिरमदि देनतिश्व प्रांटन तम भूगा चक्रित । कक्काश्वश्र व्यक्ति सम्बाह्य र्भात क्या विवा वामा कात शहेर परेट्य महार्थका कैनरात ते करत

धर्मन । गण्यकि मञ्जाब छोत्त मा होएए क्यान । गर्सम् कृत्यू व छातिहा २ इत (यथा। ऋणावृक्त कार्यात कावात करव रगवी । क्रा दिवान करत व्यस्ता हार्य माम करव। टेन्टम शिङ्टनोक कीत मसुटखत फीटक्रश विद्यापत सन्तिख्या हा bिक्र लिभि करत । विभिन्न भिष्मत कों इ देवनारम्य भारत । अन्यायी जासूत्र कां कि कर्शास्त्र (जाकर । अकल्यन कांकि क्रम कन एवं सम्बद्ध । विश्वसद्धः ঙপ জপ দান কাদি যত। জার কোটি**গুণ ফল জানিবে বিহিত। প্রণ**ব किस्तर रह पूरा रहमन्न। कात्व अविधि कामिन। स्वांनि निम्हन । केस्त वारिनी ज्ञान क'भीवात निका। आशरमह ना शाखिरन कामी क्राहिक है সর্মাপদ হয়। বিশেষৰ প্রভু যাতে। বিষয় মাপদ তথা নাহি থাকে ভারে खुन मान कानि रर्गत कवार्य कारस्य कामी क्वकर्य रूट व महादेश वार का खक श्लापन भानि भगद्भ कदित । है जिस किकाब वाक्ष गांदक मून हत्व प ৰ'শীপুৰে ২য় যদি ই'ন্দ্ৰৰ বিকাশ। তবে কাশীবাস সিদ্ধি ন'খটে ভাচাব फर्फ़्करर नन राज शांक्रहो सम्भन । ४,५५ भग खानि अक शांग करशांवन । যে ৰূপ কহিবে তাহ। কহ লোগ প্ৰতি। ক্ষম বলে শুনহ জগন্ত। মঙ্গামতি । य गरु- खड १८० (१९ भक्ति इस। विश्वादिक कृषि स्वत शकां क्रान्य क अरु भिन अकाशत अवभिन नला। अर्ग भन टाकन व रह सुराधिक । क किन छेश्यान' प्रविध्व मायुका शाम कृष नाम अहे भार खरा । विश्व 🛚 नके शक महा नांन की। दक पिरन। अक मिन छेड़बर शक दल शहर है अक निम कमल म्दात का प्रात्त। अक भिन कुर्का भूरकूष ७८२ । ११८६क গোণ্ড তক্ষ জল শক্তবু পার। প্রতিদিন দকৈকশ বরিবে লাগান। স্বাধা মৰো এক এক করি উপৰাস। সৌন, কুছু নাম এই বিশ্বির প্র দাবা । ও ১ং প্রতিত বরিবেক ছবির গ্রাশন। তামা ৬ দিনত্রয় করিবে ভোলাং করি-विव स्कृतिका जन छेलनाम। शूरु समानत्म थादि धक शक आम। ७५. পরে দিনতাম করি উপোছণ। ভাতরত, শাস্তেতে ধনিতে নিন্দাণ। अक विश्म पिरम ५.६। ८४ वन कतिरत। खोममार नेन्यवात नातक व्यक्तिरत । भिन्नक्रम क अभिन्द रिजन कविर्दा निन्न स्रोधः फिनजुष ध्यांठिक करित्व Columbi कार्ल एकाक्षम कानिद्व। विस्तान विश्वान व्यक्तिया इन । तम्ब तम्म प्रक विश्व प्रक चाह्न (क्ट्रकाद्म क्र निन कड़िरव चारात। बक वांति, क्रेश्वनाम क्रम् चास भार । का क्षेत्र दिश्वक साद समह दहन । भारतभन वर्ष सामा कार्कित थाटन । विभागत विभागिक का अन्य स्टब । छक्का किम क्ष किल्डिक मान । वन

अब अकाशत क्षेत्रिय जामानं व अकंश् कं मिनलेस थाहेत्व नामति। मिनलेस थाकिरवक शवन कांश्रांति । जनकीत अक शन घृष्ठशा सप्त। अहे मॉरन পাবে সগুত্বৰ ভাকে কী ।। গোসুত্ৰ সহিত লব লবার ভক্ষণ। ঐকাহিক कृष् थरे भरीतं (भाषन । इरेश छेथान इन्छ वात्र जन पिटन । अर्जियादन অলেতে থাকিকে সাবধানে। প্রাকাপতা ত্রত পুণা সম পুণা হয়। হেন দিরুপণ দেখ শান্তেতে দিশ্রা। কুঞ্পক্ষে এক এক গ্রাস হাস করে। **ওল্ল পক্ষে এক এক গ্রাস বাড়ে পরে। উপস্পর্ণ করিবেক মিডা** গ্রিসবন। বিধান করিল এই ভ্রেড চাক্রদায়ণ। ভরুপক্ষে গ্রাস বৃদ্ধি কুকপক্ষে হু সি। हास्तांत्ररंग क्यांवित्रा कित्न केशवात । हजूश्तक शिक्ष क्षीत्रः क्षाहःकाटन ধাবে। শিশু চাৰু।রণ নাম প্রত এই ্র।। নধা,⊋ সমযে গ'বে পিও ছবিষার। প্রতিদিম অই অই অতি চাক্রায়ণ॥ যে কোন ব্রণেতে পিও আিরশীতি থার। একমান আহারেতে চক্ত্র-লাক পায়।। জলে দেহ শুদ্ধি সত্ত্র চিত্ত শুন্দি কর। বিনা; তপস্থাতে ভূত আ্মাতেক শোধর।। অঞানে-তে বৃদ্ধির শুদ্ধি হয় সেই জ্ঞান। কাশীবাদে ঘটে এই শান্তের প্রমাণ। विष्यंत्रक्रम्राः पत्र काणी त्रवि द्या कर्षा निर्मा लं नक्ष लट्ड मर्द्शक्त ॥ অতি যতে কাশীতে করিবে স্থান দান। তথ জপ এত আর শুনিবে পুরাণ। শ্বভাক্ত বর্ত্তের সদা করিবে সেবল। অমুক্ষণ করিবেক বিশ্বের চিস্কন।। किकारम श्रीकरव निक्र मिरक्त कांभन। माधु मरक मर्समा कतिरव 'बामां-প্রম।। শিব শিব জম্পা মদা অভিথি সংকার। ভীর্থবাসী সঙ্গে নৈ ন করি। বে বিস্তার।। অভি বৃধি মানামানে সমান বোধর। অকামিতা অলৌ-কিতা সভত বিনয় । অবানিয়া অছিংদন অযুগ্রহ মতি। এতিগ্রহ পরা ছার্য অপত্তিতা অতি।। অযোচিত সমাগম মাশ্চর্য্য বিহীন। অলোভিতা অমা-लगा वः अया कारीन। क्लाजवानी करें नव भाधुत्रुखि वर्षा। आहत्रन कति विक পদা সাঞ্জবর্ম।। প্রভাছ ুশিবোর প্রতি সংশ্র কথন। ত্রসবন স্নান নিষ্ঠা ভিকা স্কুপাশন।। লিজ পুজা পর কাশীবার্গ করে ব্যাস। ভাছাতে জানিতে मर्ग देकल कीर्खियान ।।

### -1811-

# অথ বাাসের ভিক্না বারণ।

পরার। অন্ধর্ণা প্রতি নাবেশিলা বিষেশ্বরে। শ্রাক্তিরালে ভিজা বন্দ কর জানী পুরে । তবে শিবর্বাকো শিষা করি আইনিরার ব্যাক্তিক। হন্দ করিলেক প্রতিষ্ঠার । শিষা কল বাট্ন মতে বিশ্বস্থিত ক্রিক श्रह जिल्ला ना भारेन अर्भाधन ॥ अना किस्ट्राक किसा अकि श्रह পার। সশিষ্য বসের ভিক্ষা না ঘটিল ভার ॥ সারাফ্টের কর্মা করি শিখা হুত্ कानि। मिता तां उपन न तिहरलन स्नि।। शतकिन मधारूक योह न र्लिया। जिक्का बहुना हत्व बागि शियाशंग रेलया। जिमिल गकल शुरी क्षेत्रि क्षारत छात्र। क्लानश्रास्त ना शाहेल नक्षाम किकात्। अभिन्ना रहेल आह বাাস তপোধন। চিন্তিত ছইল জতি ভিক্ষার কারণ্যা শিষাগণ সংঘাধিয়া यनिष्ठ नाशिन। वृश्वि स्नामा नर्त किना शाश्च में पूरेन। कि इजार নগরে জানহ জিজাসিয়া। ছই দিন ভিকা কম কিবের লাগিয়া।। ছডিক इर्ल किया तालमंख देश्ल । केवा कति किर किया जिला वस्म देवला। छेन-श्रदर्भ किन्न ग्रुष्ट देश्न श्रक्तांश्व । बानिन्ना नक्त वार्डा बारेन विथन ।। कुरे ভিন জন শিধা গুরু আক্ষামতে। নগরে জানিয়া বার্ত্তা কহিছে গুরুতে।। नियान्। यदा स्थन सङ्ग महागत्। काभीशूद्र ना दम्बिस छु किक छेनत्।। যথাতে আছেন বিশেশর সুরধনী। তথাতে তোমার বাস করে ঋণি মুনি।। নগরেতে দেখি ধন ধানোর সঞ্জ। ভোগ মোক্ষ প্রিপুণ হইল বিকায়।। ত্রিজগতে ছন্ত্র তি যে সব বস্তু হয়। সুলভ কাশীতে সেহ দেখিল নিশ্চয়।। বিজ্ঞার সদন কাশী গ্রহ্মীর আলয়। মুক্তিকেত্র কাশীপুরী কাশী ত্রহীমুর্

#### -NON-

### অথ কাশীতে ব্যাদের শাপ ও অন্ন ভিকা।

পরার। কদেবলে জগন্তা গুনহ সাবধানে। শিষাকথা গুনি রাসি কোধ হৈল মনে।। ক্ষুধানলে জলিত হইয়া তপোধন। কাশীপ্রতি অভিশাপ করিল তৎক্ষণ।। কাশীপুরে ত্রৈপুরুষ বিদ্যানা হইবে। ত্রৈপুরুষ লক্ষ্মীর বসতি না থাকিবে।। ত্রৈপুরুষে যুক্তি না হইবে কাশীপুরে। বিদ্যাধন মুক্তি গর্কে গর্কিত হইয়া। জিল্লা নাহে দিল লোকে অবিজ্ঞা করিয়া।। হেলম্ভি হৈয়া শাপ বা।সদেব ক্রিয়া লাহে দিরা পুনরপি ভিক্ষার চলিল।। উর্দ্ধ দৃষ্টি হইয়া জমিল সব পুরী। ক্ষেম্পুরানে ভিক্ষা কেহ না দিল সাদরী।। দিবাদেশ হেথিয়া লোক্ষি দিবারে। ভিক্ষা পাত্র ক্ষেপণ করিল মুনিবর।। আজমে চলিল মুনি বিশ্বিক ইন্না। দেখিবেন দেবী ছাকে ঘারেতে বসিয়া।। দেবাবাল জন্য জিল্লা ক্রিয়া। ক্রিয়া জিল্লা ক্রিয়া ভিক্ষা। বলি বৈশ্ব জিলাবে জিলাবার জন্য বিশ্ব বিশ্ব ক্রিয়া ভিক্ষা। বলি বৈশ্ব জালাবে জন্মি কর এথা জিলা। বলি বৈশ্ব জালাবে জন্মিন জিলিজ ক্রেয়া। বলি বিশ্ব জালাবে জন্মিন ক্রিয়া জালেন গুটী কর এথা জিলা। বলি বৈশ্ব জালাবে জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বলি বৈশ্ব জালাবে জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বলি বিশ্ব জ্বানানে জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বলি বিশ্ব জ্বানানে জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বলি বিশ্ব জ্বানানে জন্মিন ক্রিয়া জালেন গুটী কর এথা জিলা। বলি বিশ্ব জ্বানানিক জন্মিন ক্রিয়া জালেন গুটী কর এথা জিলা। বিশ্ব বিশ্ব জ্বানানিক জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বিশ্ব বিশ্ব জ্বানানিক জন্ম বিশ্ব কর এথা জিলা। বিশ্ব বিশ্ব জ্বানানিক জন্ম কর এথা জিলা।

খি না কবি গৃহী আম দদি থার। পিতৃগণ সহিত নরতক সেই যায়।। শীয় করি আগমদ কর মুনিবর। পতি মম হৃদ্ধ অতি কুঙাতে কাতর।। অতিথি স্ট্রা শীঘ্র রাধহ জীবন। হেন কথা শুনি গত জোধ তপোধন।। বিষ্ময় क्रिया छाटक क्रिक्षांमा कत्र । असमी त्क बढे जूमि क्र ह क्रिया। मा त्न-বেছি কথন ভোমাকে কোনস্থানে। ধর্মময়ী মুর্ত্তি ভূমি লগ্ন মোর মনে।। ना इटर ज्यन कृति आकृष्ठ तमनी। कृति इसेटनरी माका सन्द त्माहिनी।। ে ংবে সে হবে ভূমি কি মম চিস্তনে। আহলাদ হইন অভি ভোষার দণ্টেন। তব বাকা রক্ষা আমি অবশা করিব। তপ্যাম বিলে যাছা বল ভা করিব।। ভোষা সকলের বাক্য ऋতি মাছি করে। কে তুমি বটছ সূভ্য वल र आभारत ।। এक कृति गृहिशी विलिल सूनिवरत । धाँहे गृहरञ्जत कार्या। লানহ আমারে।। শিষা এহ তিকা পর্যাটন করি নিজে। আমি ভোনা দেখি ज्ञाम नटक ब्लाफ किटले।। वह वाका श्रादमांबन विद्यू न'शि करता अलाहन धायर मा सहस्य निवाकरता। ভावक व्यक्तिश देश्या कत्रव क्षांप्रसा व्यक्ति नुष्ठ अंकि भग तथिह की वन। अष्टकोते सूनि वन्ध ल्वेनह वरन । क्रांक्ट्र নিয়স মোর করি নিবেদন ।। কামাব নিয়ম যে গ্র'তে হা রক্ষা। জনাথা मा इब फर्ट कृति धक जिका।। एशकी वहम एक करह खनवरी , खब कि নিয়ম শীপ্ত বল মহামতি।। পতির প্রসালে মোর ক্রটি কিছু নাই। হেন গুনি মুনি বলে ভব'নীর ট ই ।। অষ্ত শিষ্যের সহ আমার ভোজন। সুর্য্য अक्षर ग इटेटर नित्त (यहेक्स ॥ ठत्त जिक्का कृति आर्थि १३ ५ निम्न ॥ धाउस्थित वर्षा रमवी हल अस्थाम।। विषय मा कत भी त जान भिषानग क्षिम द्वाने शूनकात करत निरंत्रमन।। याश्टि आंगात निवालन कुछ इत्। अञ्चलाम आमि छांद कि आदि नक्षत्र ॥ क्रेयन श्वित्रा (मनी कटक्समिवद्र । পতির প্রসাদে সর্ব্ধ সিম্ব মোর ঘরে।। চলু শীম্ব কবি আন অনার্থী সকল। विकि इक्ष शकि देश्म क्रूपंटिक निकल ॥ सूर्या काल ना इहेटक नहर रहासम र्श्व ६४ २८३ सूमि आर्टन भियानन ॥ जकन अर्र ।, वटन ४ मह जकटन। धातक मा यात्र मियांकत अञ्चाहरले ।। अञ्चर्तः श्रीमाधा अरबन कतिन। राम शाकालान कति (डांबरन वरिता। अधि अ: १म यह साता शतिशाहि। লোজন কবিল নৰে না হইল জটি।। ধ্ইতে মা পারি জার না ধরে छैमटन । दहन विन बांखि बाल्य शांखित छैशहत ॥ कथेम लिक्स दहन मा করেছি আর। পরশ্পর হেন বলি খাইল অপার।। ভদপরে পাত্র জাগ पति दि। हमत । **कायून हम्मना**नि कद्रिल अर्ग । भावत्रेम्या कदिया यनिल

धिकान। आनीसान कतिया नगरन टेकेंस मन । बुकिया नृष्य गृहीनीटक मध्याधिल। देनिक वृक्षिया (मवी व्याप्त किकामिला। कीर्थवानी स्मान धर्म কহ মুনিবর। যেমতে করিব ভীর্থবাস নিরস্তর ॥ বার্ণি বলে শুন মাতা করি নিবেদন। পতি পরিচার্য্য মোক ধর্মেতে গণন।। সর্ব্ধ ধর্ম জান ভূমি পতি সেবাবলে। যদি জিলাসিলে মোরে শুন কুভূহলে।। ছব পতি বৃদ্ধ পতি सूच् योट इस । जकन धर्माट जिस् त्योक धर्मा हम ॥ शृहिशी वरतन महा পভিসেবা ধর্ম। बिक्कांनि नामाना धर्म कर छात्र मर्म्य। वानि यता छन्। विन धर्म माधातन। मान धान नम्रा धर्म आपि आहत्न।। काम व्हार्थ বিনিগ্রহ অনুদ্রেগ বাণী। পরে ংকর্ষ সহিষ্ণতা ধর্মেতে বাখানি।। বিচার্য্য করিয়া আদি ধর্মেতে গণন। সদাকাল নিজভাগ্য উদয় চিন্তন।। গৃহস্ত বলেন শুন মুনি মহাশয়। তোমাতে এসব ধর্মো কি কর্ম আছর।। শুনি त्रुनि इति इहेन वाका गाँहै। शृह्य विनन श्रुनः वेनेनी (श्रीमाधिः।। कृतिः य कहिल। यनि अ≷ धर्मा इस । তোমাতে এসব धर्मा जाटक स्व निम्हस ॥ দাস্ততা তোমাতে দেখি আছে শাপ দান। দয়া ধর্ম তোমাতে উত্তম অ-ধিষ্ঠান !! কাম জোধ বিগ্ৰহে ভোমার সম্ভাবনা। উদ্বেগ বিশ্বত বাকঃ ভোমাতে ভাষণা।। বিচার্যা করিতা পর উৎকর্ম সহন। ভোমাতে ভাছে যে ভাগা উরদ চিন্তন।। যা হৌক ছা হৌক মোর এক কথা বল। আপনা অভাগ্য অর্থ সিদ্ধি নাহি হৈল।। তাতে ক্রোধ হৈয়া যেবা দেয় অভিশাপ। সে শাপ কাহাকে হবে কে ভুঞ্জিবে পাপ।। ব্যাস বলে অভাগোতে অর্থ না লভয়। এই ক্রোধ করে যদি অভিশাপ দেয়।। সে শাপ হইবে অভি-সন্তার উপরে। হেন শুনি গৃহত্ব কহিছে মুনিবরে।। তমি পর্যাটয়া ভিকা না পাইলে যদি। কাশীবাসিজন সব কিবা অপরাধি।। শুনহ তপস্বী সম রাজধানী কাশী। উৎকর্ষণা নহে যেবা এই স্থানে বসি।। মত অভিশাপ সব সে জনে ঘটর। আমার নগতে কভু শাপ নাছি হয়॥ না থাক প্রস্থানে ভূমি চল স্বন্য ঠাই। কাশীবাস যোগ্য ধর্মা তুমি কর নাই।। এই কণে রিনি-র্গত হও ক্ষেত্র হৈতে। মোক্ষের সাধন ক্ষেত্র অযোগ্য ভোমাতে।। কাশী-বাসি প্রতি যেবা দৌরাজ করর। তার পরিপাক রুদ্র পিশাচেতে হর।। হেন শুনি কম্পিত হইল তপোধন। গৌরীর চরণে ধরি লইল সার্গ।। আহি তাহি বলি মুনি কান্দিতে লাগিল। স্ততিবাদ করি মুনি কার্ডর ছইল বল সাতা শজুবাণী র্থা নাহি হয়। গানিহ শরণাগত সধ্ম তনর ॥ তবে Carl

এক সংস্থান কর্জ মোর ভরে। চতুর্দণী অফুমীতে আদি কাশীপুরে।। ভববাকা মহাদেব না করে লঙ্কন। এতবলি দৃঢ় ক্রি ধরিল চরণ। তবে শিবা শিবমুখ ইক্সিতে দেখিল। তথাস্ক বলিয়া দোঁতে স্কুর্ধান হৈল।।

### ----

## অথ বাংষের কাশীতারি।

প্রার। তবে বাস কেত্রহৈতে বাহির হইল। কাশী দুর্ফ হৈর। অভি
নিক্টেডে রৈল।। চতুর্দশী অইমী তিথিতে নিরস্তর। কাশীতে আসিরা
বাস করে মুনিবর।। লোলাকের অগ্নিকোণে গঙ্গা পূর্বভীয়ে। অদ্যাপি
রহিরা ব্যাস দেখে কাশীপুরে।। ক্ষন্ম বলে অগস্তা করহ অবধান। এই
নতে কাশীপুরে ব্যাস শাপ দেন।। ক্ষেত্রে শাপ করি ক্ষেত্রে বাহির হইবে
অতএব ক্ষেত্র স্তুতি সম্বত করিবে।। কাশীর স্তবনে শুভকর্মের উদর।
অভিশাপে অভিশাপ ভাহাতে কি হয়। ব্যাস শাপ বিমোচন এই যে
অ্যার। শুনি হুর্গ উপ্সর্গ ভর মুক্তি পায়।। অধিকানিবাসী সীভানাথ
বর্ষাস। করিল ভাষাতে কাশীথণ্ডের প্রকাশ।। ব্রহ্মানন্দে ভাবে ব্রহ্মান্দ্র ক্রন্দ্র পায়। সমাপিত হইল বয়বতি অধ্যায়।।

ইতি বপ্লবতি অধ্যায় নামঃ সমাপ্তঃ!

### ---

### अथ रक्तिश निक्रकथन।

প্রার। অগন্তা বলেন শুন দেব বড়ানন। ব্যাদের তপ্রা শুনি হৈল চিন্তমন।। আনন্দ কাননে তীর্থ যতেক আছর। যতেক আছর লিঙ্গকর মহাশয়।। এই কংল পুর্বে শিবা শিবে কিঞ্জাসিল। কহি শুন সেই কলা শক্ষর কহিল।। দেব বলেশুন দেবী লির্গতীর্থ নাম। জলাশর হর তীর্থ লিঙ্গ সন্ধিনান। এক্ষা বিষ্ণু অর্ক শিব গণেশ প্রভৃতি। শিবলিঙ্গ ছিতি মধা সেই ভার্থ ব্যাভি॥ এক্ষা বিষ্ণু শিব মুর্য্য চন্দী লম্মেদর। এই সব মূর্ত্তি শিব লিঙ্গ মূর্ত্তিধর॥ এস্কল সন্ধিনান তীর্থের কারণ। কাশীতে প্রথম ভীর্থ মহাদেব হন।। তাহার উত্তরে সারস্বত তীর্থ আছে। মূর্ত্তিমতি পশ্চি-মাংলে কাশী তারাকাছে।। মহাদেব পুর্বে লিঙ্গ গোঞ্জেক নামেতে। আ-ছমে দ্বিটাশ্বর তার দক্ষিণেতে।। আহার ক্ষিণে আছে লিঙ্গ অনীশ্বর।

তি। তাহার উত্তরে আদি কেশবের স্থিতি। উত্তরে সঙ্গদেশর আছে হয় ভাহার। প্রয়াগ সঙ্গক লিঙ্গ তার পুর্বসার ॥ শান্তি করি গৌরীর তথাতে অধিষ্ঠান। বরুণাবতীর পুর্বেক কুত্তেশ্বর স্থান। তেইতেরে কৃপিল ধারীর স্থাদ আছে। আছমে রুষমাজ লিঞ্জারকাছে।। গোপ্তেক উত্তরে লিঞ্জনুর্মে খর। সিদ্ধি বিনায়ক তার পুর্বে ভ্রেষ্ঠবর।। হিরণাকশিপু লিস গণেশ পশ্চিমে। তাহার পশ্চিমে মৃত্যাসুরেশ্বর ধামে।। গোঞ্জেক্স নৈথতে বুর-ভেগর সংস্থিতি। ক্ষম্পেশ্বর মহাদেব পশ্চিমে বসতি।। বিশার্থেশ শার্থেশ পাথেতে আছে ভার। নৈগমেশ্বর লিঞ্চ তথা আছে আর। । নন্দীশানি লিক্তগণ কোটিং পরে। দেখিতে তথাতে শিবলিক্সের বিস্তাবে।। सम्बीभन्ने পশ্চিমেতে শিলা দশ স্থানে। হিরণাক্ষেশ্বর লিঙ্গ তথা বিদ্যমানে।। ভট্টি-হাদেখন লিক তাহার দক্ষিণে। প্রদন্ম বদনেখন তছুত্তর স্থানে। উছুভরে व्यनत्त्रापक कृष्म मत्नारत । अग्रेराम श्रीकृत्यत्य क्रूरे शृगकत ॥ निक्रमितं বরুণেশ নামেতে সাক্ষাতে। বৃদ্ধ বশিষ্ঠের জাইহাসের নৈশ্পতে॥ বৃদ্ধ বশি-र्छन्त्रक्षे निकटि इटक्षमत । जाहात मिकट्न निक याख्वरत्कामतः। जाहात शिन्दिम अञ्लारमध्त आहत। नथील नारमंट लिक्क जात शूर्ट्स इत। বৈরচণেশ্বর লিঙ্গ নথীল অগ্রেতে। ততুত্তরে বলীশ্বর আছেন সাক্ষাতে গ্র বাণেশ্বর লিঞ্চ তথা আছে সন্নিহিত। চন্দ্রেশ্বর পূর্বে বিদেশ্বর সংস্থাপিত মহালিঙ্গ বিরেশ্বর ভাহার দক্ষিণে। সেই স্থানে বিকটা পাছেন বিদ্যমানে পঞ্চমুদ্রা মহাপীঠ গেই স্থানে নাম। মহামন্ত্র জপি শীঘ্র নাধে মনকার্ম পঞ্চমুত্র বায়ুকোণে আছে সগরেশ। তাহার ঈশাণে বারীশরের আবেশ আছেন স্ক্রীবেশ্বর ভাষরে উত্তবে। হতুমদীশ্বর তথা লিঙ্গপুণাতরে। জাযু বনীখার লিফ তথাতে অভিয়া গঙ্গার পশ্চিমে অশ্বিনেখার ছয়।। ভট্রজ্ঞাপ ভীর্থ আছেতাহারউত্তরে। তাহারপশ্চিমতীরেলিঞ্ভদ্রেখনে ॥তাহারনৈঞ্জে উপশাস্তশিব আছে। নতু হতের চক্রেশ্বর লিঙ্গ বিরাজিছে। চক্রজেদ নামজীর্থ আছেতছ্ত্তরে। তাহার নৈথাতে শূলেশ্ব লিক্কবরে। প্রজেদনাম কুও আছে त्तरे शातक। **७**०श्रुटर्स नार्त्रम कुछ आहर विषामीत्म।। ७थाटण मनत्रदेनथुद्ध निक्र मदनांचत्र। छात्रात्र शूदर्सटक निक्र बक्रांष्ठदक्षात्र।। क्रमद्वादक कृतिर्देश লিক অতীশার। ভাতার রায়ব্যে বিশ্ব হস্তা নগেশার।। অমদকেশার নিক্ जारात উত্তর। অসারক কুও তথা আছে গনোহরে।। আছমে বঞ্লণেধর कोशांत्र छेडदेतः। किशितं शेक्टिंग रेगटमध्य निजयुद्धः॥ क्लिपिश्वनिज्ञं बाद्ध यशित मिक्टिंग। क्लिंग्रिक्न कीर्थ कथा खाटक विमामीटन।। त्य महार्थामीन

ক্ষত্র তার অগ্নিকোণে। ফলালেশ শিবনিক আছে সেই স্থানে। কপাল মোচন জ্বত থাতে আছ্র। তত্ত্তরে কুণ্ডমন মোচন যে হর।। অসারক কুও তথা অঙ্গারকেশর। তছ্তরে, বিশ্বকর্মেশর লিক্ষরর।। নহাকুণ্ডেশর লিক তাহার দক্ষিণে। শুভোদক নাম কুও আছে বেই স্থানে।। মহাকুঙা (सर्वी क्रथा श्रेष्ठांक क्रेश्वत । छाहांत्र प्रकिट्ग छूत्वत्मश्र क्रव्यत ।। छथाटक ভূবনেখর লিক্সের সংস্থিতি। তাহার দক্ষিণে বিমলেখরের বস্তি ॥ তাহার পশ্চিমে আছে ভুগু আয়তন। শুড়েশ্বর ছাহার দক্ষিণে সংস্থাপন। ভথাতে কৃপিল জহা কপিল ঈশ্বর। যজেদক কুণ্ড তথা আছে পুণ্যকর। তাহার शक्टिय अगटवश्रत बाह्य। मर्टमामिती छेड्डत्ट बाटमम बालय।। का-পিলেশ উত্তরেতে উদ্ধানকেশ্র। তছুত্তরে বাক্ষ্ণীশ আছে লিঙ্গবর।। আছরে কৌস্তভেশ্বর তাহার দক্ষিণে। শঙ্কুকর্ণেশ্বর তায় দক্ষিণে আপনে ঞ্চত্তারে অযোরে**শ নিক পরাৎ**পর। **অযোরেশ কুণ্ড কাছে তাহার** উত্তর লর্লেশ দসনেশার জিঙ্গ সেই স্থানে। বর্তাবাস কুপ্ত আছে তাহার দক্ষিণে ক্লডেশ্বর লিক তথা অভি পুণাকর। তাহার নৈশ্লতে লিক মহালয় বর।। পি ভূকুণ্ড নাম তীর্থ ভাহার পাথেতি। তথা বৈতরণী বাপি পশ্চিম আয়তে বৃহস্পতীশর ক্লন্ত কুণ্ড পশ্চিমেতে। কামেশ্বর লিঙ্গ রুত্র বাস দক্ষিণেতে।। কামকুণ্ড মনোহর ভার দক্ষিণেতে। নল কুবেরেশ লিক কামেশ পুর্বেতে নল কুবরাখ্য কুণ্ড ভাহার দাক্ষাতে। জ্যোতির্ময় নীল নল কুবর পুর্কেতে অ্থ্যেন্দর চন্দ্রেশ্বর আছে লিক্ষর। অর্চাকেশ লিক্স তার দক্ষিণে নিশ্চর।। সিন্ধেশর নাম লিক আছে নেই স্থানে। তথাতে মঞ্লেশর লিক বিদ্যমা- त्या कामभ्य श्र्विषात बाह्म हायानम्। खन्दक्रमान्यः प्रथा बाह्म বিশেষ। তাহার পশ্চিমে আছে সন্থ্যুমারেশ। আছতীশ সেই স্থানে স্পার শনক্ষেশ। তাহার দক্ষিণে লিক্স পঞ্চ শিবেশ্বর। তৎপশ্চিমে মার্ক-ঙ্কের জব শ্নোহর।। ভত্তরে আছে লিক নাম কুরুমেশর। মার্কণ্ডের জ্ঞৰ পুর্বেষ্ট শান্তিল্য ঈশ্বর।। চণ্ডেশ্বর লিঙ্গ আছে ভাহার পশ্চিমে। কপা-লেশ দক্ষিণে 💐কুগুকুগুনামে॥ মহালক্ষ্মীশ্বর লিজ সেই কুঞ্চ কাছে। স্থৰ্গৰায় স্থাৰ নেই বিদিত যে আছে। গায়ত্ৰীশ সাবিত্ৰীশ ভাহার দক্ষিণে সভাবতীশ্বর ভার পূর্ব্ব সমিধানে।। লক্ষীশ্বর পুর্ব্বে মহালিজ উত্তোশ্ব । জাহার দক্ষিণে উত্ত কুণ্ড মনোহর॥ করবীবেশ্বর দিঙ্গ সে কুণ্ড পশ্চিমে। মরিচীশ লিককুও বায়ুকোরে ক্রমে॥ তৎপশ্চিমে চন্দ্রকুও লিক চন্দ্রেশর ইত্তেশ দক্ষিণে কর্কট্ক বালিবর।। কর্কটেশ্বর লিঙ্গ তথাতে আছ্য়।

তাহার পশ্চিমে ক্লমি চণ্ডেশ আলম।। তদকিণে ক্লিক্ও অভি পুণ্যকর। তাহার পশ্চিমে লিক্ষ নাম অগ্নিশ্বর।। ভাহার পুর্বেতে অগ্রিকুও তীর্ণবর ভাহার পুর্বেতে লিঙ্গ বাণচন্দ্রেশ্বর।। ভার চারিপাশে গণ লিঞ্গ বহুতর। বাণ্চনদ কুপ তথা আছে পুণাকর।। তাছার পুর্বেতে লিজ মস বিশ্বের। বৃদ্ধকালেশ্বর তার পুর্বের পুণ্যকর।। কামোদক নাম কুগু আছে তার কাছে কালেশ দক্ষিণে মৃত্তীশ্বর লিক্স আছে।। দক্ষেশ্বর কালোদক কুণ্ডের উত্তরে দক্ষেশ্বর পুর্বেব আছে মহাকালেশ্বরে ॥ মহাকাল কুণ্ড তথা ভীর্থ শ্রেষ্ঠ হয়: ভাহার দক্ষিণে অন্ত কেশব জালয়।। তাহার দক্ষিণে লিক হস্তী পালেশ্রর ঐরাবত কুণ্ড তথা ঐরাবতেশ্বর।। দক্ষিণে মালতীশ্বর আছেন তাহার 👫 হস্তীশ উত্তরে জয়স্তীশ্বর সংকার।। মহাকর কুণ্ডের উত্তরে নন্দীশ্বর मम्मीकृष्ट कीर्य कथा चारह शूनाकता। कथा अञ्चलीकृष्ट अञ्चलीखत । ভুঙ্গেশ্বর তৃত্য কুণ্ড আর বৈদ্যেশ্বর।। হলিকেশ লিক্স আছে তাহার উত্তরে ভূঙ্গেশ্বর দক্ষিণে আছেন শিবেশ্বরে।। যামদর্যাশ্বর লিক শিক্ষেশাদক্ষিণে। ভৈরবেশ লিঞ্চকুপ পশ্চিমে যে স্থানে।। বে কুপ পশ্চিমে সিক্ষ আছে শুকেশ্বর। তাহার নৈখতে ব্যাদেশ্বর লিজ্বর ॥ ব্যাসকুও মহাজীর্থ আছেন তথাতে। ঘণ্টাকর্ণ হুদব্যাস তীর্থ পশ্চিমেতে।। পঞ্চূড়াবর্গি ঘণ্টাকর্ণ मित्रियात्त । शक्ष्वहृद्धमार निक्रसाह्य सिर्म्हात्त ॥ स्मोत्रोकृश छीर्थ छात्र দক্ষিণে আছয়। পঞ্চতুড় উত্তরে অশোক তীর্থ হয়।। অশোক উত্তরে মহাতীর্থ সন্দাকিনী। ততুত্তর মধ্যে ক্ষেত্র মধ্যমেশ পুনি। মধ্যমেশ হৈছে ক্রোশ ক্রোশ পরিমাণ। চারিদিণে মুক্তিক্ষেত্র শাস্ত্রেতে বাখান।। यथा-মেশ দক্ষিণেতে বিশ্ববেদেশ্বর। তার পুর্বের বীতভয়েশ্বর গুভ কর।। ভাগরে, मकिटन उजनानी अधिकान। उजनानी दुम उथा बादह विमामान ॥ जाहात পুর্কেতে আপস্ততেশ্বর স্থিতি। ভঙ্কুর্তরে আপস্তম্ভ কৃপ পুণা অতি॥ আ ছয়ে শৌনক হ্রদ পশ্চিমে ভাহার। শৌনকেশ লিক্ষরুদ পশ্চিমেতে গার। তাহার দক্ষিণে অমূকেশ যে আছর। তছুত্তরে মাতকেশ আছেন নিশ্চয়। তার বায়,কোণে নানাবিধ লিক্ষ আছে। মুনি সরে লিক্ডাপি তথকা। করেছে।। মাত্তক্ষণ দক্ষিণেতে ব্রহ্মবর্ণেশ্বর। আল্পান্থেশ তথা পিভূলোক বহুতর।। তত্তকিশে সিদ্ধ কুপ লিঙ্গ সিদ্ধেশ্বর। পশ্চিমে তাহার নিদ্ধবাধী মনোহর॥ সিদ্ধকুপ পুর্বের জাছে নাম ব্যাদ্রশ্বর। জ্যেষ্টেশ্বর ভাষার দক্ষিণে স্থিতকর।। দক্ষিণে ভাহার লিঙ্গ গ্রহ সীতেখর। তত্ত্বের নিরাদেশ লিজ পুণাকর।। চতুঃসমুদ্র নানেতে কুপ সেই স্থানে। জ্যেষ্ঠাগোরী সেই স্থানে।

व्याट्सिन व्याश्रात्न ।। वर्गार्खम पिकटिन नित्र हेखीचेत माम। एक्युद्र श्रेष्ट-পতি কুঞ্বিদ্যমান। যোগীসর্ক গুরা তথা যোগী সর্কেশ্বর। ভাহার शन्तिय (प्रवरणमत जूष्मत्।। भाषकरिनामत निक्र काहात निक्रि । जाहात ্দক্ষিণে সাভাভপেশ্বর বটে।। **হেতৃকেশ ভাইার দক্ষিণে বিরাজয়**। অক্ষ शारमधेत जात प्रक्रिटगटक तथा। **जनदश्चरक कर्नाटमभ क्रमांम** वाशिका। ভূতিখর তাহার দকিলে সংস্থাপিকা ৷ অতিহন আঘাট্রাখর পশ্চিমে তাহার তৎপুর্কে তুর্কাদেশর লিঙ্গ চমৎকার।। তার্ভুতেশর লিঙ্গ তাহার দক্ষিণে यात्रियतं शुद्धं मञ्ज निथिक कांश्रदम् ।। महज्ज्यतं चाह्य कथा निथिएकम আর। তেজপাঞ্জ ছুই লিক অভি চমৎকার।। অবধুতেশ্বর লিক ভাহার ঈশানে। অবধুত কুণ্ড মহাতীর্থ সেই স্থানে॥ পশুপতীশ্বর লিজ তাহার পুর্কেতে। গোভিলেশ নাম লিঙ্গ ভার দক্ষিণেতে।। জীমুতবাছনেশ্বর পশ্চিমে তাহার। পঞ্চনদে মরুখার্দ্ধেশ্বর লিঙ্গ জার!। গভস্কীশ লিঙ্গ তথা আছে উত্তর্জ । তছ্তুরে দবি কম্প কুপ মনোহর 🏿 দবিকম্পেশ্বর গভস্তীশ উত্তরেতে। মনলা গৌরী যে গভন্তীশ দক্ষিণেতে।। মুখপ্রেকেশ্বর লিঞ তথা विशामान । তত্ত্তরে আছে মুখ্পেকণার স্থান । সর্ব্ব সিজি করি দেবী মঙ্গনা দশ্বরে। নফ্রীশ্বর রুত্তেশ্বর মুখ প্রেক্ষোপ্তরে। ভত্নপ্তরে চর্চ্চিকা গৌরীয় काम धरतः। ठक्किकार्य द्ववटखम आर्ष्ट् निज्ञवटतः।। शेक्षनरभवतः निज्ञ জদত্রে স্থাপিত। মঙ্গলোদক কুপ ভার পশ্চিমে বিস্তৃত।। উপমন্থা মহা-লিক্স আছে সেই ধামে। ব্যায়পাদেশ্বর লিক্স ভাহার পশ্চিমে।। গভস্তীশ নৈশ্বতাংশে শূলাক্ষেশ আর। চৈত্ররথেশ্বর লিঙ্গ পশ্চিমে ভাহার।। জৈমিনীশ রেবজেশ পশ্চিমে সুন্দর। নানা ঋষি স্থাপিত অনেক লিজবর ফৈমিনীশ বারব্যেতে রীবনেশ হয়। ভদ্দকিণ বরাহেশ লিঞ্জভকর।। সাগুৱাকেশ্বর লিজ ভাহার দক্ষিণে। প্রচণ্ডেশ মহালিক্স ভাদকি। স্থানে । ভদ্দক্ষিণে আপনে আছেন থোগেশর। ভক্তজ্বিণে বাভেশর অভি মনো-ছব।। যোগেরর অত্যেতে সোমেশ পুণ্যকর। কনকেশ তাহার নৈখতে স্থিতি করা। ভত্তরে পঞ্চাঙ্গ পাণ্ডব খাপিত। তদরেতে সমুক্তেশ লিঞ্চ চমকিত।। তৎ পশ্চিমে খেতেগর লিঞ্জ মনোহর। তৎপশ্চিমে কণশেষ লিম স্থিলিকর। তছ্তরে মহালিংগ চিত্রগুরেগুর । তাহার পশ্চিমে দুড়ে-यत निभवत्।। कलत्मम मिक्किरगर्फ लिक आर्ट्सत्। यमरह्यं विजयश পশ্চিমে স্কুম্বর । বাদদেবেশ্বর লিঞ্জ উত্তরে উদস্ব। প্রহেশ্বর দক্ষিণ ভাগে-তে স্থিত হয়। কমলীশভর লিঙ্গ দক্ষিণে ভাহার। ভতুত্তরে পতিবেশ

लिक ठमरकात ॥ जतारदत्रचत लिक जयाहरू जाहरू । जारहिल्लाकित शाश्मार्भम जालय । निकट्सम छाहात सम्बद्ध निक्तर विकास নৈথতে লিজ পিতামহেশর।। প্রিতামহ ঝোড়িকা নানেতে ভীর্থ তথা कष्ठिकार वक्रद्रभा विक विश्विष्ठा ॥ कारात मिक्कर निक्र नाम वाराध्रत ক্যান্দেশ পিতামহ ভোতের অন্তর। স্বাছরে রাজনেশ্র তাহার পূর্বেছে গক্ষেত্রর নামলিংগ তার দক্ষিণেতে ৷ তত্ত্তরে নিন্দগেশ লিংগ বহু আরু বৈবশ্বেতখ্র লিংগ তথা চমৎকার। ঈ্যাশুদেশরলিংগ তার দক্ষিণেতে। অভিশয় মনোহর ছাত্তেন রাক্ষাতে।। এক্ষেধ্র ভার অগ্রে পর্জবেশকর্দ্ধে তার পর্বে নছশেষ আছমে নিশেষে। বিশালকৌশ্বর লিংগ্ন বিশালকৌ তথা। অরাসম্বেশ্বর লিংগ ভতক্ষিণে ক্বিতা। ছিরণাক্ষেশ্বর লিংগভদত্ত আছর। তাহার পশ্চিমে গ্রাধীশ্বর আলর।। ভূপীর্থেশ্বর লিংশ তাহার পশ্চিমে। खत्कम পশ্চিমে তথা দিলিপেশ নামে। তথাতে জিলিপকুঙ ভীর্থ অনুভ্রম বিলা। বসু স্থাপিত লিফেশ্বর নে আঞ্চম।। মুখেশ্বর পুর্বে ভার লিক্ষের প্রবর। ভাহার দক্ষিণে আছেন যে বিধীশ্বর।। বাজিদেধে পুর লিংগ তাহার দক্ষিণে। দশাশ্বমেধিক ভীর্থ আছে সেই স্থানে।। তত্ত দ্ধরে মাত তীর্থ অতি পুণাধান। ভবকুণ্ড দক্ষে পুষ্পদত্তেমর নাম। তদ্ধি কোণেতে দেবঋষি লিংগ যক। ভূপানস্ত দক্ষিণেতে নিদ্ধীশন স্থিত। হক্ষি ক্ষেমরলিংগভাছে সেই স্থানে। তৎপক্ষিমে নৈশ্বতেশ লিজের সংখ্যানে ভাছার দক্ষিণে লিংগ আভিরসেশ্র। ভদ্দক্ষিণে কেদারেশ দক্ষিণে চঞ্জ সূৰ্ব্যবংশি যত। যে সকল প্ৰতিষ্ঠিত লিংগ আছে কত।। ন্ৰ্ৰাসা পুরুক গণ লোলার্ক দক্ষিণে। ভাহার পশ্চিমে করন্ধেশুর ত্রানে। ভাহার পশ্চিমে মহা তুর্গার বসজি। তদক্ষিণে শুকেশ্র লিগেংর শংস্থিতি। ভাহার পক্ষি-মে জনকেশ্র প্রকাশ। ভছ্তরে শস্কু কর্ণ লিগেংর নিবার । ভাছার পুর্বে-তে লিংগ মহানিদ্ধীশ্বর। বিত্তিকুও তীর্থ তথা অতি পুণাকর । শল্প কর্ণ বার ব্যেতে বারবোশ স্থিতি। তদত্রেতে বিভাওেশ নিগেংর বস্তি। ভত্নতরে करहाराम विश्वमरमाहत । द्वारतम्बविश्वदया द्वारतमी सुन्मतः ॥ त्रहेक् दव ক্ষেত্র রক্ষিণগবভ্তক। হরিদীশ্র লিংগ তথা কাজায়নেশুরের ক্সভি। জ্ঞা-श्रात शिक्त मुकू हि भूत मश्यिक । मुकू हि भ कुछ छथा छी रर्थत अधान। শ্তসহস্তার্থি লিগেংর সেই স্থান ৷ তাহার দক্ষিণে অদিতীশুর সংস্থিতি ভাহার সাক্ষাতে শতেশুরের বস্তি। ভাহার দক্ষিণে রজেশুর লিংগবর । বেই স্থানে 😘 লিংগ নাম সভীশুর 🛚 ছচ্ডরে বছলিংগ লোকপালেশুর 🖯

পর্মী গন্ধন যক্ষ অভরা কিল্লা। কেবখাৰ স্থাপিত যে লিংগ বছতর। সক্রেশ দক্ষিণে কাপ্তণেশ মনোহর।। মহা শশুপতেখন তাহার দক্ষিণে। ज्ञसूक्षेण काशतः शक्तित्म व्यविकीटन ॥ केष्ठे खटेत क्रिभाटनम निश्म मटना इत । লাংগলীশ লিংগ ভার পুর্বে প্রভাকার।। নকুলেশ কপিলেশ তথা লিংগ-স্কন্ধ। প্রতিকেশ লিংগ ভার নিকটে আভর ।। শুভোদক বাপীতথা ভাছে বিদ্যবানে। ভাহার পক্তিমে দগুপাণি সন্নিধানে। ভার পুর্বি দক্ষিণ উত্তরে লিংগ্রের। ভারে শকালেশ শিলা দিশ নাম হয়।। অবিমুক্তেগর পারে আছে মোকেশর। তাহার উত্তরে বরুণেশ লিংগ বর ।। তার পুর্বের স্থর্ণকেশ উত্তরে আনেশ। তথাতে সৌভাগ্য গৌরী আছেন বিশেষ।। বিশেষ দক্ষিন ভাগে নিকুল্ডেশ স্থান। ক্ষেত্র ক্ষেমকর গণপতি অধিষ্ঠান।। নিকুছেশ দক্ষিণেতে বিরুপাক্ষেয়র। তচ্চক্ষিণে শুক্রেখর লিংগের প্রবর্গা দেবজানী-ষর লিংগ ত'হার উত্তরে। ওকেশর অগ্রে কচেশর লিংগবরে।। ওকে কুপ मश्कि**र्थ जा**रेष्ट्र रंग शारम । ज्वांनी क्रेनीएन क्र्रे खत्कन शक्तिम ।। छत्क-বর পুর্বেক কনকেবর আলয়। মন্তানসেবর লিংগ সেই স্থানে হয়।। ভার श्रुट्स महामिश्त शर्मपत माम। नटक्रपत निश्ते छथे। महाभाभ क्रम् ॥ तिहे স্থানে লিং আছে ত্রিপুরান্তক নাম। ভাহার দক্ষিণে দন্তা ত্রিরেখর ধাম।। দক্ষিণেতে গোকর্ণেশ হরিকেশেশর। তথাতে গোকর্ণ হরিকেশ সরোবর।। ভাহার ওশ্চিমে লিংগ নামে ধ্রুবেশর। ভদত্রেতে ধ্রুবকুণ্ড অতি পুণ্যকর।। প্রিশাচেশ ভদ্পত্তরে ত্রিপিশ তথাতে। তত্তকিলে পিতৃকুও জাছেন সাক্ষা-তে।। ধ্রুবেসাত্রে তারেরর সেই বৈদানাথে। সমুপ্রতির্ভিত লিংগ নৈৠভ তথাতে।। প্রিরত্ততেখন লিংগ তারে।» অপ্রেতে। মুচুকুন্দেখর লিংগ তার দক্ষিণেতে। গৌতমেশ লিংগ আছে পার্শেতে তাহার। ভারেখর নান লিংগ জৎপশ্চিমে আর।। কাশীর উত্তর ভার্বে শিবপ্রির ধাম। তথা তেঁহ পঞ্চ-গুছে করেন বিশ্রাম। সদা সেই স্থানে মম আছর্মে বস্তি। ছেন জান যার পাপ লিপু নহে লভি।। সভা সভা সভা ত্রয় মহাদেবে ভাবে। মম পদ हैका यनि योक्स रमित्र ।। भौध कति यहिरक मम कामीश्रद । निःरभ র উদ্দেশ যাত্র কহিল বিস্তারে।। ছুই ভিন বার লিংগস্থাপিয়াছে কভি। श्रुमः श्रुमः छोत्रात य नाहिक व्याचाछि॥ छक्ति केत्रि नेकल श्रुक्तिय व्यादम-निष्ठ। इंशांट अनाथा नाहि इत्त जात्रिका। यह इंकि जिल्लकुछ वांशी कुण जानि। अञ्चाकति गकत्व कतिर्देश जाविविधि।। धमव मर्गरन स्नारन कल ্পরাৎপর। কাশীপুরে লিংগ বাপী কুপ সরোবর॥ মুর্স্তি যত ইতি শঙ্কা

### ক শীখণ্ড।

কে করিতে পারে। আনন্দ কানন গত ডুগ অর্ধন্তরে। স্থর্গগত বেশ্বর্থ ক্রণতুলা নর। সর্বতীর্থ অন্মভূমি কাশীলিক ময়। মুম্ প্রিয় হুমানেরী তপোবলে ভূমি। স্বভাৰতঃ কাশী যথ। বিজ্ঞানেয় ভূমি॥ সদামোদি হয়। काभी नाम्बद्ध रह। ऋष नक्षीभाधा विभारधत सम रह ॥ सह छङ सहक् মে মোক জান ভারে। ভক্তিভাবে কাশীপুরে যেবা বাস করে॥ সুরান্তর নর নাগ ভূমি ভাব তরে। চরম বয়সে কাশীবাস যেবা করে।। অন্যত্ত निवानी विक व्यक्ति भरायन। वानीवानी अखादकर ना इस जनन।। नर्स-छीर्थ तहना अधामान्त्रभूगामम् । श्वीन कामी मर्शरनंत श्रुगालां छ हम् ॥ श्राचिक पिन প্রাতঃকালে পাঠ করে যে। সর্ব **ভীর্ম দ**র্শনের কল লভে দে।। সর্ব-লিঙ্গ কথা এই অধায় পঠর। যম যম্পুত হতে তার নাহি ভর॥ আমাতে যাহার ভক্তি পঠিবে অধ্যায়। সর্ববিধি আচরণ ফল মেই পায়।। কাশী-ব্ৰিঙ্গ বলি নাম সতত পঠিবে। নিশ্দক মাহিক গঠে কভু নাহি দিবে।। ব্ৰহ্মবধ আদি যত পাতক সঞ্চয়। অধ্যায় পঠনে সৰ্ব্ধ পাতক সংক্ষয়।। পুঞ পৌজ ধন ধানা আদি অভিলাব। পঠিয়া অধ্যায় হবে মন্পদের বাস।। रमवी स्थारन रमवरें कि यांबक कहिएए। **कावक आ**ंत्रिया नम्बी नश्वीम विलिए मन्द्रित निर्माण अटडा देश्य ममाणन। सूनव्य रहेना तथ देश्य व्यक्तिमन् । प्तिक। नकरल (इश) कांनिया मिलिएह। शक्क वाहरन विकुष्ठात नार्खा-ইছে।। মুনিগণ সঙ্গে তব অবসর দেখে। চতুদ্দ শ লোক বাসী আদিছে ক্রৌভুকে।। অশ্য তব প্রবেশিক উৎসব শুনিরা। সুরাসুর নরগণ মিলিত আনিয়া।। ক্ষম বলে কহি শুন লোপামুক্তা প্রতি। শুনিয়া নক্ষীর বাক্য দেব পশুপতি।। দেবী নঙ্গে দিবা রংখ করি আরোহণ । ত্রিপিউপ ক্ষেত্র হতে করিল গমন।। অমিকা নিবানী নীতানাথ বসুদাস। কাশীবভ ভাষা कति कतिल क्षकांगा। जनानम भरत्य त्रांश हरेल. छेन्हाँ। नय नदकी অধার সাংগ তাতে হয় !!

ूष्य दश्त्रमण्ड इद्रश्रास्त्रहोत् तमन।

শেরার। ব্যাসদের স্থত স্থানে বলিল বচন। রংগমণ্ডে সদাশি বিপ্র-লেন তৎক্ষণ। অগন্তঃ প্রণাম করি কার্তিকে বলিল। রংগমণ্ডে মহাদের কি কর্ম করিল।। বিশেষ করিয়া মোরে কছ যভানন। অপূর্ব সাখ্যায়

थाप्रि कार्रिय धार्यना। कार्जिक कट्टम खन मूनि कटलाधन। अनिरम ज्ञूर्य कर्शा शांश विरंगांत्रम् ॥ देवज्ञात चक्रशक विश्व बरम्रामभी । मन्मत हहेटक भिव आंत्रित्यम कामी।। देवार्ष्डचरत शिकि भिव मुख्यि अर्थ देवल। सम्मिन দৈখি তবে তথাতে টলিল।। কার্ত্তিকের শুক্লপক্ষ প্রতিপদ ভিথি। বুধবার সঞ্জাত ভারাশুদ্ধি অভি।। উল্লেখনে গ্রহণৰ খাকে সেই দিনে। মহা-मक्की महारमय मध्येश शमरन।। इतरशीती मश्टश खना विकृ रमवश्य। মহর্ষি দেবর্ষি খত আর খুনিগণ।। পাতাল ছইতে নাগ সকল আসিল। গদ্ধর অপুসরাগণ আসিরা মিলিল। বিদ্যাধরে পান বর্ণা সভত কর্র। অপ্রা ইত্যাদি সবে চামর তুলায়।। স্বর্গ মন্ত্র পাতালাদি সকল মিলিল। মহাদেব অভিষেক দেখিতে আদিল। পারিকাত মলা কেং দিল শিব व्यरका। व्यक्तीत कन्नन भटन फिल मानात्तरका ।। सुभक्ति स्व ४९१ फिल ७६०न আলিয়া। নানা আতি পুলাদিল আনন্দিত হৈয়া।। মুক্তিমণ্ডে ধ্বন পার পভাকা উভুর। শ্বেত নীল রক্তবর্ণে অতি শোভা পার।। স্বর্ণকুম্ভ গৃহছারে कंषि स्टामान्त्र । मश्त्रमान्त्रण करत कूलधुराण । कामी भूरत स्ट्र श्टर आ-मण ज्ञाता न्या गीच वाणसमि वात्मासम जात ॥ युक्ति मटख तोती সহ শক্ষর বসিল। কার্ত্তিক 'গণেশ আর 'গণেতে ঘেরিল।। ত্রন্দা আদি जनभद्र जिल्हिक करत्। गकरन रुपेन मध जामन गांतरत्। उन्हा विकु নেষ সব কার্ত্তিক গণেশ। নন্দি আদি গণ যত ঋষি যে অশেষ । মুনি ঋষি তপস্বী যে যতেক আছিল। গশ্বৰ্ক কিন্তুর সৰ একত্র মিলিল।। সকলেতে মনোমত শিব পুজা কৈল। ভদপরে নারায়ণে মহেশ কহিল।। দেব সক-লেতে ভুমি মম প্রিয় অভি। তব জাকিঞ্চনে হৈল সম কাশী স্থিভি॥ দিবদার্লৈ রাজ্যুচ্যুত মম পদ দিলে। মক্ষর ছইতে তুমি আমাকে আমিলে वत लश्नातात्र यथा हैका इस। महारम्द विकू करह क्रिसा विनम्।। অনাবর নাহি চাই শুন খুলপাণি। তোমাতে অচল ভক্তি এই মম ঘাণী। শञ्चत करहन विस्का समह वहन। इति इत अक वञ्च खरम जिल्ला कन।। তব পূজা বিমে যেবা মম পূজা করে। বিক্ল হইবে পূজা কহিল ভোমারে এই ক্রেপ বছবিধ বিষ্ণুকে বলিল। তদপরে মহাদেত অন্য যে কহিল।। काभी नम जना दान गारि जिस्ता । देक्सांश बद्धाकों मन कि त्रवा दान ক্ষিণাংশে মুজিমণ্ড অভি সুণ্যকর । নিমেবার্চ বাব হল আহয়ে বিশ্বর H মণিকণি স্নাদ করি দেখে বিশ্বশ্বরে । পুনর্কার রপ্ত বাদ মাহিক আহার ।। अपेर क्यांच मान त्यवा चिक कति करता जामा शान देशक कारिश्वन कन

-

भरत ॥ ভবিষাতি ছাপরে এই মুক্তিমঙ্গ হয় । কুকু । মাধ্বসাভাতি ছইছে विभाग ॥ जमभरत राष्ट्रामय करत निरंत्रका। क्यांट कुन् हेम ए स्टबं जिल ल्यांच्य । त्यवनाथ बत्न विद्यां कत अवधान । महानम्म अक विश्व मना भाने বান। কুকর্মেকে মতি সদা হয় ছুরাচার। পর ক্রীলক্ষেতে রড খাকে আনিবার।। তাহার হইল ডুই পূজ মন্দমতি। কাশীপুরে জানি পরে করিন ল বসতি।। দ্বিল্ল যে:কপটুবেশে কল্পেরাহহার।কপালেকে দীর্ঘ ফ্রেট্রা শুল বস্ত্র আর্ব।। বৈকাশ সভাকে যদি থার দে তাব্দা। ভাষার সভের সভ करत जानार्थम । रेगव गांख्य श्वारन ज्ञिल-रच कारनर यात्र । रगरे सक রাবহার করমে তথার। এই বাপে বছকাল কাশীপুরে থাকে। ভগ্ত রূপ তপ্যাদি করেন ঘনেকে। পর্বত হইতে এক চঙাল স্থাদিক। অর্থ কিছু गटक कति कांभी शारविभव !! खाक्कारक कार्य बांच किय महत्र । माँ१-कर्नि घाटि शक्ति कतित गत्रति ॥ वस् भक विकाशन काष्ट्रत कथा स । इश्वीन যাইরা সব ত্রাক্ষণে কুধার।। মম স্থাবে অর্থ কিছু আছে তিজপণ। তোনা সকলেতে তাহা করি সমর্প। । ১৩খনের হেন বাক্য শুনিয়া নকলে। ভঞ তপস্থীর তরে দেখাইয়া দিলে।। তদপরে মহানন্দ ছিলে প্রথমিল। অর্থ किছू न ७ विन क्खान विनन ॥ क्खारनत कथा छनि महामण पिक। आर्थ · লোভে যোগতফ করিল অব্যাক্ষ । দিজ বংশ কত ধন কছত সম্বর । চণ্ডাল বলেন যত চাহ ভিজবর।। পরিপূর্ণ ধন দিব করহ গ্রাহণ। শুনি মহানক্ষ জিজ জানস্থিত মন।। কপট বচন ছিল্প বলিল ডডকণ। জনত হইকে কল মোরে দিলে দান।। প্রতিগ্রহ পামি নাহি করি কোনকালে। আইশ তপোধন আমি লইব যেবলে।।-ফুশবারি পুত্য আদি লইল ততক্ষণ। উৎ-गर्शित योका ग्रेन कृतिम तुष्टम ॥ अपूर्व अभूमा धन म्याम स्व मिन। मनिः করাইয়া সর আপুনি লইল। মহান্দে দান করি চণ্ডাল সভর। নিজা-नार्य होन लान दर्बिक कास्त्र ॥ हश्कारनात्र मान नहेमा कृषे विकरता प्रश्न ११८**७ धन लासः (शरलन ७९ शतः।। ८५वि महानमः छिल कानीवामी** यकः। চণ্ডালের দান কথা বলেন সক্ত।। কোন স্থানে দ্বিজনর ভিন্তিতে না পারে কাক ভরে পেচক যে না হয় বাহিরে।। তদপরে মহানন্দ ন্ত্রী পুত্র লইয়া। कांगी कांग कति श्रम निष्मिक इहेग्रा ।। कक्रमुद्र कांगी बाजी इहेम प्रभंग। ভাষার সঙ্গেতে দ্বিজ্ঞ করিল প্রমন।। এক দিন পুথি সংখ্য ভূষী আসি মিজে व्यर्थ व्यादक क्ष्णांट्यात कानिक जकरम ।। धन रेलग्ना श्राममध कृदन व्यवस्था । শেই বিক্স মৃত্যুকালে চিন্তিল মহেশ।। পর জ্রীতে ব্যবহার ডথ্যযোগ করে

ভিতীর বে চপ্তালের দানপ্রহ পরে। অধিকক্ত চারিজন অপমৃত্যু হৈল।।
তেকারণে কুরুটের যৌনি যে পাইল।। মৃত্যুকালে বিশেষরে মানদ করিল
অনারাদে চারিজন জাতিশার হৈল।। কতদিন এইরপে গত হৈরা যায়।
কাশী দর্শনের যাত্রী আদিল তথার।। মনোমধ্যে আদিল কুরুট চারিজন
এই সঙ্গে গেলে কাশী হবে দরশন।। পরদিন যাত্রী গঙ্গে কুরুট চলিল।
ক্রমে কাশীপুরে যকলে আদিল।। যথা বাস যাত্রীগণ করে নিরন্তর
কুরুট তথাতে থাকে শুনহ সম্বর।। দিনাস্তেতে থাদ্য বস্তু যাত্রীগণ দের।
ভাহাই ভক্ষিয়া চারি প্রাণ যে রাধর।। এইনতে বছকাল যাইল তথার।
ভাগপরে যাত্রীগণ নিজালর যায়।। চারিজন কুরুট রহিল কাশীপুরী।
ভাবশেষ প্রাণশ্যাগ অবিমুক্তে করি।। কুরুটেরা তেজারূপ করিয়া ধারণ।
মুক্তিমণ্ডে এই লিজে হবে প্রকেশন।। অভএব শুন বিফো কথা ভবিষ্যতি।
থকারণে কুরুর্দ্ধ মণ্ডপ হবে খ্যাতি।। মুক্তিমণ্ডে মহাদেহ অভিষেক কথা
শুনিলে জীবের মুক্তি হইবে সর্ক্যা।। সর্ক পাপে সেই জীব হর বিমোচন
জনায়াসে থারাণ্দী করিবে দর্শন।। কাশীনাথ পদ মম সন্ত চিন্তন। অন্ত

পারার। বড়ানন ভদন্তরে অগস্তো বলিল। মুক্তিমণ্ড হঘে শিব রক্ষ
মণ্ডে গেল।। তাহার বিশেষ শুন মুনি তপোধন। একা বিঞ্ আমি আর
সব দেবগণ।। গণেশাদি নিদিগণ মুনি থাষি যত। সকলে চলিল সক্ষে
হৈরা আনন্দিতা। রক্ষমণ্ডে নিব আসি পুর্বমুখে বিদি। বেন্তিত সকলদেব
বন্দে সব খায়। শুব করে একা বিঞ্ আদি দেবগণ। চামর চুলায় কেহ
দেবত চন্দন। অকন্মাৎ মহাজ্যোতি পাতাল হইতে। শিব সন্নিধানে তেজ
দেব আচমিতে।। মহাদেব তদপরে বলে নারায়ণে। জ্যোতিরূপ নিবলিক্ষ
দেবহ নয়নে।। পরাৎপর জ্যোতি হয় সর্ব লিক্ষ সার। বিশ্বরূপ মুর্ত্তি মম
শুনহ বিস্তার।। পশুপতি সিন্ধ হয় এই লিক্ষ পুরি। জিতেক্রিয় শুদ্ধজ্ঞান
সর্ব ছংখ তোজি।। সেই যোগী হয় ভবে শরীর নির্মাল। নিপ্পু পঞ্চ উর্জ্বরেতা হয়ত সকল।। জিত ক্রোথ হৈয়া যোগী মুক্তিপদ পার। শিবের
স্বর্গপ ধরি শিব স্থানে যায়।। আর কহি শুন বিযোঁ তেই জ্যোতির্ময়।
আক্রমার পুর্দ্ধিলেহ জন্ম নাহি হয়।। পুপ্প দিয়া পুলা যেবা করেন সন্থার।
রাজসুর ফল প্রোও হয় সেই নর।। বত্তপুত জল দিয়া এই লিক্ষ পুরে। লক্ষ

স্নাসে হয় ভার পাপ বিমোচন।। পঞ্চামৃত দিয়া পূজা করে লিকরাকে 🛦 श्रुक्रवार्थ हजूर्छव कल शांत्र (गट्य।। कर्भू देवत वर्जि नित्रा मीश मान करवा। কপুরি সুগন্ধ দেছ হয় তার পরে।। নৈবিদ্য প্রদান পুজা করেন সাধক্ষ কৈলাদেতে সুখভোগ হয় অপারক। বিশ্বেশ্বর লিঙ্গ যেবা করয়ে পুজনে। हेबलाका श्रुक्षिक इस तरफ मित्रारा।। धनोवाना राहेबरन मित श्राह्म করে। আমার স্থীপে বাস হর নিরস্তরে। জিল্লাতে বলরে ভক্তিকরি বিশ্বেশার। সংসার জাতনা হৈতে মুক্ত কলেবর । বিশ্বেশ্বর দেখি নর মরে স্থানান্তরে। জন্মান্তরে মোক্ষ লাভ কে খণ্ডিতে পাৰে।। বিবেশর লিজ तिथि व्हें बुक्क वृक्ष । नकी श्रांकि अने मस्य बक्कमा क्रेश्र ॥ जिमका। विस्त्रक বিশ্বনার্থ জপ করে। সেই জনে সদা খাকি নিয়ত অস্তরে।। দেবতা সকলে শুন অবশেষ কহি। ত্রিভুবনে বিশ্বেশ্বর সম লিজ নাহি।। তীর্থমধ্যে মনি-কৰি ছাতি শ্ৰেষ্ঠ হয়। বনমধ্যে আনন্দ কানন শ্ৰেষ্ঠ কয়।। বারাণসী ক্ষেত্র-মধ্যে সব লিক্ষ্মর। তাহার মধ্যে অতি স্ক্রম্মণিকর্ণি হয়।। রাজবানি কাশীক্ষেত্র মম প্রিয় বার। তার মধ্যে রঞ্গৃহ অভি চমৎকার।। রঞ্জ মঞ্জ मिकिट्युट श्वन निक्या । শৃত্युप्त इन्छान हाका इन ॥ वामिन्द्रि শতস্বয় হস্ত পরিমাণ। কাশীমধ্যে রাজগৃহ হয় এই স্থান। মণিকর্ণি পরি-मांग। कांगीमरशा तांकशृह इम्र ७३ ऋ.न।। श्रीकर्नि शृहिमांग कहि सन আর । পঞ্জনত হস্তদীয়ে সর্বস্থান সার ।। সপ্ত পাতাল ভেদিয়া বিশ্বেশ্বর আসি। লিঙ্গ ৰূপে বিরা**জিত দেই** বারাণসী॥ এই লিঙ্গ যেবাজনে জন্য ভাব করে। গর্ভ্রাস নিবারণ মাহি ছার তরে।। নিজ প্রির দ্রব্য ২দি দের বিশ্বেশ্বরে। ইইকালে পাপনাশি মুক্ত কলেববে। দূরে থাকি বিশ্বেশ্বরে মানসে যে পু**জে। পরজন্মে রাষ্ক্রকরে নেবতা সমাজে**। জেলা বিষ্ণু চেবগণ **শুনহ বচন। বিশ্বেশ্বর পুজা ফল বছবিধ হন।। শুদ্ধ**নক্ত উপাজ্জনি ধনে পুজা করে। নির্মাণ ভাহার হয় কে খণ্ডিতে পারে । মণিকর্ণি পঞ্জোশী আর বিশেশ্বর। গাই ত্রয় বহুবিধ পাপ নাশকর।। তদপরে নৌরীবছ দেব শূলপাণি। জ্যোতিলিক্ষে প্রবেশন করিল আপনি।। জয় এয় শক্ষ করে যত टक्ष्यभाग । श्रेटब्राइक (भीटलन गरव यांत्र (य क्रूबन । क्राफ वटल क्राइक) दक खनक বচন। ক্ষেত্রের মাহাঅ সব করিলে শ্রবণ।। যথাসাধ্য তব স্থানে সার যে বলিল। তব আগমনে মুনি ভব মুক্তি হৈল।। তদপরে মুর্ণাদেব অস্ত হৈরী। যায়। কার্ত্তিকের মৌনী হৈয়া রহিল তথায়।। ব্যাস বলে শুন স্থত অপূর্ত্ত कथन। लाभाक्र्या मह ७८५ यूमि इटलायन॥ यकान्दन अवाम किहा

वस्त्रतः। वस्ता नाधनाटक प्रति शिटलन नस्त्र।। शिक्षानि शिवकानि शिकः नर्सम्ब। काणीवाटन कित्राटक निर्माण लक्ष्य।। नवनवकी क्ष्याप्त कथा कि भटनाह्य। नीकामाथ वक्ष्वाटक यथामकि श्राः। नमाश्च क्ष्याप्त देशल कनः सायुक्तना क्षयानस्य श्राः हित्तं इत्र पिटन विद्या।।

# रेष्टि नवनवडी खशात्र ममाशः ।

भन्नात । युक् करह वर्षन द्धारम भरम अगमित्रा। जुलि देशल कांभी-খিশু প্রবণ করিয়া। কাশীর মাহাত্ম অনুক্রমনি অধ্যায়। বিস্তারিয়া কহ প্রভু পূর্ব যাছে পার।। ব্যাস বলে ওন স্থত স্থির করি মন। জাতুকর্ব শুক-আ্দিকরহ জবণ। কাশীর মাহাত্ম জন্মুক্রমনি অধ্যায়। কহিতেছে শুনি-লে পাতক কর পার।। বিশ্বঃ নারদের কথা প্রথম অধ্যার। সভালোক মহিশা বিকীয়াতে ভার ॥ ভূজীরেতে অগস্তা স্থানে দেব আগমন। পতি-জ্ঞজা চরিক্ত ভংপারেতে বর্ণন।। জনপরে কাশী হৈতে অগস্তা প্রস্থান। তৎপরে ঠার্থের প্রশংশা অভিধান।। সপ্তপুরী বর্ণন কহিছে তার পরে। ভদপরে যমপুরী নিকপণ করে।। তদন্তরে মুর্ঘালোক অপুর্ব বর্ণন। ইন্ত্র অগ্নিলোকে শিব শর্মার গমন।। অগ্নি উৎপত্তি কথা কংখ তার পরে। নৈথ্যত বরুণোপ্তর বলে তদস্তরে।। গন্ধবতী অলকা পতির অন্ম কা। ততঃ-পরে চন্দ্রনোক সংবাদ যে গাঁখা॥ উজুলোক অমন্তরে শুক্র সমুদ্রব। কুন্ধ 🤏 রু শনি লোক বর্ণনা এ শব।। সপ্তথাষি লোক কথা দ্রুব তপ পরে। দ্রুব পদপ্রব লোক হিতি অনমরে।। পরে শিবশর্মা সত্যলোক দরশন। চতু-র্জু অভিবেক ভদমু বর্ণন।। শিবশর্মা নির্দ্ধাণ বর্ণন তার পরে। কন্দ অগ-স্থিক কথা নর্ণে তদপরে।। মণিকণি সমুদ্ভব তদন্তরে অভি। গঙ্গার মহিমা পরে দশহরা স্তম্ভি। গঙ্গা আবিভাব পরে নাম সহত্রেক। বারাণসী প্রশং সন ডদফু সম্যক্ষ। ভৈরবের জাবিজাব তদফু বর্ণন। দশুপাণি জন্ম জান-বাপী বিবরণ ।। কলাবতী কথা সদাচার নিত্রপণ। আশ্রম ধর্মের যন্ত ইতি বিবরণ। একাচারি প্রকরণ স্ত্রীলক্ষণ পরে। কুত্যাক্সত্য প্রকরণ কছে জন-স্তরে। তৎ পরেতে বর্ণিয়াছে অবিমুক্তেগর। গৃহস্থাশ্রম বর্ণন জাছে তদ-ৰ্শ্বর।। যোগ নিরূপণ কাল জ্ঞান তার পরে। দিবোদান রাজার বর্ণন জ্ঞান স্তরে।। কাশীর বর্গন পরে যোগিনী বর্গন। উত্তরার্ক লোলার্কের ভদস্থ क्षम।। क्रभगंतिका जानन माद्याविका कथा। वक्रशंक शक्रदक्त विवतन

ख्या ॥ मणांवरमधिक कथा करह छात्र शहर । मणात्र हर्दे एक अन खानमन করে।। পিশাত মোচন কথা গণেশ প্রেরণ। মারাগরপতি আদি চু ভি विवद्रभा । विकू मात्रा व्यवश्रम कम्मूकथ्म । क्रम्भट्ट पिरवामाम द्रामा दिवः च्छा न ॥ छात्र शरत शक्ष्मम छेदशिख कथम । **छम्छ**रत् विकासाधरवाद्वव সংসন।। তদত্ব বৈষ্ণব ভীৰ্মাছাত্ম বণ ন। মক্ষর হইতে রুষ্ণাক্ষ আগমন জোর্চস্থানে যোগী সধা সংক্ষে সংবাদ। ক্ষেত্রের রহস্য কথা পরে অভুবাদ কলুকেশ ব্যান্তেগর কথা ভার পরে। শৈলেশ্বর রত্বেশ্বর দর্শন অস্করে।। ফুর্তিবাস সমূৎপত্তি আগমনিগম। সেব অধিষ্ঠান মুর্গান্তর পরাক্রম। মুর্গার বিজয় প্রণবেশ্বর বর্ণন। প্রণব মাহাত্ম সমুদ্রব ত্রিলোচন।। জিলোচন মহিন भा क्लात ममाथा। । धर्मीन महिमा शक्ति कथा अनुर्वत । विश्वक्का छेला খ্যান ছুৰ্গম অভ্যায়। ভদপরে বীরেশ্বর লিঞ্চ আমিভার ।। বীরেশ মহিমা গঙ্গা তীর্থের মিলন। ভদস্তরে কান্সেশ্বর মহিমা বর্ণন।। বিশ্বকর্মেশ্বর জ্বা মাছাল্ম কথন। দক্ষমত কথা সভীদেহ বিক্**ক**েন্দ, দক্ষের সমুদ্রৰ কৰে ভার পরে। তদসুপার্কতীখন মহিমা বিস্তানে।। গ্রেশ দহিমা সর্গ্রদেশর বর্ণন। সভীশ্বর অমৃতেশ আদির কথন। ব্যাস সুসত্তর ব্যাস শাশ বিমোল চন। ক্ষেত্র ভীর্থ সকল বিস্তার বিবরণ।। মূক্তি মণ্ডবের কথা কংছ ভার পরে। বিধেশ্ব আবির্ভাব কহে কদম্বরে। ধাত্রা পরিক্রম কথা ক্রম্মু वर्गन। आथान भरमक करप्र कतिन कीर्सन। नर्ने थशकां हे एन धरे स्था। হর। অনুক্রমে আছে যাতা ক্রেন্তর নিশ্চর।। শুভ কংহ শুন বভাবভীর সক্ষন। কুপা করি কহু যাত্র। বিধি নিরূপণ।। ব্যাস বলে শুন স্থভ যাত্রার विधान। स करन कहिरव लाक बाल अपूर्णन । अधरम नवज वह भूक-तिनी जान। त्मव लिङ् छर्लन डाफ्टन मिर्च मान ।। जामि छोलमी विष् দক্ষপাণি হরে। প্রণমিরা চুণ্ডি বিনারকে যাবে পরে।। ফ্লানবান্ডী কল-क्लार्भ मिल्टकम गाँछ। ভারকেশ পুদা মহাকালেশ गংহতি॥ পুনঃ मश्र-পাৰি পুৰা পঞ্চীৰ্থ এহি। প্ৰতিষদ যাত্ৰা করিবেক নিঃসম্পেহি। ভড:-লৈরে বিশেষর যাত্রা প্রদর্শন। করিবে অওরে যাত্রা দ্বিসপ্তায়তন। ক্লক অভিপদ আদি চতুদিশী সীমা। প্রতি চতুদিশী দিনে খাতার মহিমা।। সে সব ভীর্বের স্থান লিজের অর্চন। মৌনী ভৈয়া যাত্রা করিবেক সাধুজন ह মংব্যোশরী স্থান প্রণবেশন দর্শন। ত্রিপিউপে মহাদেষে করিবে প্রদন্ ক্ষুভিবাদেশ্বর রুত্বেশ্বর চন্দ্রেশ্বর। কেদারেশ দর্যন করিবে তার পর । ধর্মে-भार बोर्स्स्यत् श्रद्ध कारम्यत् । विधक्रप्रयत् भात् मनिक्रिक्यत् । अविमुर्कि-

थत शत कुतित्व मुन्त । अमस्टत विष्यत कतित्व श्रुकन ॥ कामीवाशी करन (१) है बाजा जातभाक। बाजा ना कतिरत विश्व मना मः सूरुक ॥ जात जरु जान তন যাজার বিধান। আর অন্য যাহার শুনহ অনুষ্ঠান।। শৈলেগর দর্শন ষরণা সান করি। সঙ্গন্ধে মাজ্জিত হৈয়া সঙ্গন্ধেশ হেরি।। স্থানিল তীর্থেতে कान क्रेमिन मर्भक्ष मामाकिनी ज्ञान बधादकश्चत शुक्रन । हित्रगागद्ध न ভীর্থে করিবেক স্থান । হিরণ্যগত্ত্বেশ পূজা কুরি অনুষ্ঠান ॥ মণিকর্ণি স্থান জিশানেশ্বর দর্শন । গোপ্রেক কুপেতে স্নান, গোপ্রেক পূজন ।। র্যধ্বজ দর্শন কণিল ধারা শ্লান গুপস্থান উপসাস্থ লিক সন্নিবান॥ পঞ্চুত কদি স্নান কোর্ছ স্থানীর্চন। চতুঃসমুদ্রমজ্জন দেবতা দরশন। দেবের অত্যেতে বাপি জলস্পর্কর। শুক্রকুপ স্থান দেখে শুক্রেশ সাদরি॥ দণ্ডথাত স্নানংব্যায়েশুবুরর দর্শন। সৌনকেশ কুণ্ডে স্নান জন্বুকেশার্চন॥ আবশ্যক য়াত্রা এই করে অনুষ্ঠান। সর্ব পাপে মুক্ত সেই শুনহ বিধান । কৃষ্ণ প্রতি-अम जानि हकुर्द्भन रित्न। कटम याजा इत्तर हकुर्द्भन आंत्रकतन।। अकामन জায়তনি যাত্রা কৃহি আরে। সাবধানে শুন সূত যাত্রার বিস্তার।। অগ্রিছক मर्मन अधिक्षक कुर्छ सान। उनकू छेस्नेगैथत श्रृका अबूर्धान। नकूलील আ্যাঢ়ীশ ভার ভূতেখন। ত্রিপুরাস্তকেশ লাঙ্গলীশ তারপর॥ পরে মনঃ প্রকামেশ প্রতিকের আর। তিলপদ্মেশ্বর একাদশ হাত্রা সার।। গৌরী যাক। কহি স্ত শুন দিয়া মন। শুকুপক তৃতীয়াতে করি আরম্ভন।। মুখ निर्जानका (परी रशास्त्रकु भज्जन। ब्लार्खवाशी सान ब्लार्छ। शाही [नम-র্চ্চন। সৌভাগ্ন গৌরীর পুদা জ্ঞানবাপী স্থান। শৃঙ্গার কুণ্ডেতে স্থান করিয়া বিধান। শৃস্থার গৌরীর পূজা করি অনন্তরে। বিশাল গঙ্গাতে স্নান বিশালাকী পরে ।। ললিতা তীর্থের স্নান হলিতা দর্শন। ভবার্নী তীর্থেতে সান ভবানী পুঞ্জন।। বিন্দু ভীর্থে স্কান আর মঙ্গলা অর্চ্চন। তদসু যাইবে মহালক্ষ্মীর সদন। গণেশের বরা প্রতি চতুর্থীতে লয়। ত্রাক্ষণে মোদক দানে গণেশ প্রণয় ।। কাল চৈরবের যাত্রীমঞ্ল বাসরে। রবি যাত্রা 🐂রি-বেক প্রতি রবিবারে।। রবিবারে যতীতে বিশেষ যাত্রা হয়। ইহার অন্যথা নাহি বলিল নিশ্চর।। রবি সপ্তমীতে রবি যাত্রা আবল্যক। চণ্ডীয়াত্রা আই-মী নবমী নিৰূপক।। প্ৰতি সমুৎসরে অন্তর্গৃহ বাতা হয়। প্ৰতিশ্বান করি शक्ष शराम श्रुवन ।। निर्साग मण्डल विस्थान नम्स्य न । जन्म मानान क्तिरत जात्रका। निव्रम श्रहण कति मित्रकृषिकारक क्रिक कति स्मोत्री मिनिक्षीम माखारक।। कन्नमायकत वास्कीयत एक्षा शर्कारकमा श्री

্ গঙ্গা কেশব অন্তরে।। ললিভা স্থূৰ্ণ পরে অরাসম্মেশ্র । ধ্যাপস্থে পুঞ্জ कत्र व्यवस्त ॥ श्रिक्ष मनम एर सत्मा भूमन । क्षेत्रार्थण भू किया हुन श्रतिदक नात्।। देवनामाथ श्रीक छद्द श्रद्भन नर्मम। दश्कदर्गम श्रीक शहरकथत अर्फन।। अश्विका क्षारंभरक किया । हाता वार्षा শ্র যাবে ভার পর ।। চিত্রগুরেশর ভিত্রঘণ্টা মন্ত্রশ্রন। প্রপতীশ্র পরে: করিবে পুজন।। ভার ভূতেখন সমটি ভার পর। পিভামটেখন পরে সকল केशत । विटमाधत खतीधत माद्यधत शदर्त । एति काल विद्यामनि मान গণেশবে।। দৈন। বিনায়ক জার ৰশিষ্ঠ সাক্ষাতে। বাসদেব মৃতিভুঞ্জ चाट्डन यथाटा। तीमा विमानक बक्रटेंग्येन कर्याटन जिन्द्रशाम विमान नाकी शृक्षा अवस्ततः। धर्मायतं विश्ववाहं स्वतीतं वर्गन। आमा विमात्रक बन्ता निका नमर्कन ।। ठकुर्ना रकुण र ज्ञा बालिन मेन्स्न । भूनः खेकारमन क्रमारमध्य भूकम ॥ छ्छी छ्छीश्वत भरत ख्यामी में केंद्र । ए छी विमान्नक शरत ताबतारकथत । नाजनीय मकूनीय शरीरक्य शरह शहकरवाधत পুকা প্রতি গৃহেশ্বরে।। লিজলক্ষেশ্বর মার্কণ্ডেশ্বর আর । পরে অপ্সরেন পুলার প্রজার॥ গঙ্গেশ্বর সমর্চন কামবাপী মান। নিলাকেশ ভারকেশ পুঞা অনুষ্ঠান।। মহাকালেখন দণ্ডপানি মহেশর। মেক্রের বীরভঞ্জের ছার পর।! অবিমুক্তেশ্বর পঞ্চ গণেশ পুজন। **অবন্ত**রে **বিশেশ্বর লিজে** দরশন।। মৌনী পরিহরি পরে পঠিবে মন্ত্রদায়। মুক্তিম্ভপেতে 🐃 বিশ্রাম করয়।। অন্তর্গু যাত্রার এইত পরিমাণ। সম্বংগরে আর্শ্যক ক্রি-द्वक विधान ॥ ध्वकाममी विधिष्ट देवस्थव छीटर्ब स्नाम । देवस्थवी मुर्किस भूजा याजा ज्ञान्त्रीय। क्वल्ड्ड याजारङ नवमी शक्षममी। उक्तिशास याजा कतिरवक छ भवामी।। जकन शर्मराज माजा कतिरव विर्मारवी माजा विटन मन्त्रा ना कतिरवक शिवत्म ॥ श्रीकिनिन प्रहे योज। आविभाक करत । উত্তর বাহিনী স্নান স্বার বিশ্বেশ্বরে ।। যাত্রা হীন দিনে পিতৃগণের প্রিস্নাস कालगर्भ मःगर्दा घट्य गर्सनाम।। मनिकर्गि सान जात विदेशम मर्भन। সভা সভা পুন: সভা তিসভা বচন।। নিভা বিশেশর পুকা আবশাক হয়। মণিকৰি স্নান নিত্য এই যাত্ৰাছয়।। ব্যাস যলে ওত কাশীৰপ্তের অবলে। नतक ना नटल महा महाशाशी सरन ।। गर्स छीर्थ साम कति स्वर कन इंड काभीश्रेश अवरंगत्र (म क्य मिन्छ्य ।। गर्स मान गर्स यक्य कृति बाइत्न है र्य कल (म कल थेश कतित अवेग।। महा जिन्नारिक नांच हत्र (बहु कता काभी थथ खारान त्म कल कविकल ।। उक्तिन क्यामन मान कहि बद्धन

वर कम कर किया केल अपि असमादिया अम्बाद मारम यथा िक कृति क्या क्या निकृति वेश अवत्य निकार । कानीवश सन गर्स े "एनत क्षा । नर्स र्म केल जिहे त सरने नक्षा । स्ति अकाशाम मक्ने म कारक। का नी क्षेत्र आवन का राज कि कारक मि कानी वर्ष आवटन निर्मान कुछ एत । शिक्टानर खन्दा विक्रामित भारमाम्ब । नगत मर्किक कि वक ह्यांक जाता व्यवन कत्र ता राया राष्ट्र क्या ताल विद्याल की व रस्कू जारक पिटव দান। তাহার ভূটিতে নিখেশর ছুই জন । কালীখণ্ড পাঠ যথা করে क्रिकिक । (नहें क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स अवन ক্রিয়। গাঠক ভাহারে জান রাম্যতি প্রায়।। কাদীখণ্ড লিপীকরি করে न पार्य में अधिक श्रुव कि एति श्रुव अध्यक्ष ।। कांभी थर्थ अधात्र यरकदल्लाक গ্ৰা । পদ পূৰ্ব পাৰ্ডপদ্পুৰ্ব প্ৰিনাণ । তেনে সন্ত্ৰত পঠে তন্ত্ৰ যত হয় পুত্র প্রত্ব বিশ্ব মুক্তের আহিছা। তার কুন সহস্র তাহার স্বর্গবাস।শুনি त्त व प्रभावात विविद्यानाम् ॥ अर्थकन्त्रस्य श्रृष्ट अनिविद्यालय । वर्रक কিকর্ম সর্বাদিশিক লভেন। স্থরদেশে থাকি করে খণ্ডের অবণ কাশীবাস कन तरत क्रेक्ट्र डाक्ना। गर्कत विका कामीथरक विवरं। रगोडांगा वा-काल दान कालीय अपन ।। विषयमात कृषी यात अवटनटक मछि। नकल नकत रेश्टकाक्षणकार्थि।। य जन भूखक गृहर कत्रात्र छोजन।। अठक अक्स जोत इंडेट्स लोधन ।। खन्तानमा नटक ब्रद्ध करेत्रा जेनत्र । अक्टम अ ধাার সমার ভাতে হয়। সীভানাথ বহু দাস ছগা ছগা অরি। কাশী म्हापृष्ट का कृतिना यपु कति॥

্রিক্তি প্রতিষ্ঠি নালেশ্বর জমূতেখন সভীখন বাংসের কাশীভাগি বিখেশন মৃত্যিক্তি প্রবেশ কাশীকেত্র সাহাত্যা নামে।ভাগণ বর্ম :

हैं कि कामी थंक गला, न।